FBD
बिखरे
मोती
छटा भाग
लेखक
हजरत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

बिखरे मोती

(जिल्द-6)

इंतिख़ाब व तर्तीब

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

हिन्दी रस्मुल-ख़त व तसहीह

एस० ख़ालिद निज़ामी

किताब का नाम	:	बिखरे मोती, जिल्द-6
हिन्दी रस्मुल-ख़त व तसहीह	:	एस० ख़ालिद निज़ामी
तादाद	:	1100

Published by

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off: 2158, M. P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, N Delhi-2
Ph.: 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail : farid@ndf.vsnl.in Websites : faridexport.com, faridbook.com

Bikhre Moti, Part-6
Pages : 224 Size : 23x36/16
Edition: **2014**

Branches:

DELHI : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 011-2326 5406, 2325 6590

Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
168/1, Jha House Basti Hazrat Nizamuddin (W),
N. Delhi-13. Ph.: 011-2435 1944, 5535 8122

MUMBAI : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
208, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan
Dongri, Mumbai - 400009 Ph.: 022-2373 1786, 2377 4786

Composed at : Uruf Enterprises, 09313675461, 011-65332623
Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

फ़हरिस्त मज़ामीन

तहरीर

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ज़ैद मुजद्दिहम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّىْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ أَمَّا بَعْدُ:

नहमदुहू व नुसल्लि अ़ला रसूलिहिल करीम। अम्मा बअ़द!

"बिखरे मोती' मेरी पसन्दीदा बातों का मज्मूआ है, इसके पाँच हिस्से नज़रसानी के बाद प्रकाशित हो चुके हैं। छठा हिस्सा नज़रसानी और मुफ़ीद इज़ाफ़ों के बाद प्रकाशित करने की इजाज़त हा़जी नासिर ख़ान, फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली, को दे रहा हूँ।

फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली से जो ऐडीशन प्रकाशित हो रहा है, उसमें इग़लात की तस्हीह का पूरा एहतिमाम किया गया है और मुफ़ीद इज़ाफ़े भी किए गए हैं। इसलिए नाशिर कुतुबे-साबिक़ा को प्रकाशित करने की सई न फ़रमाएं, वस्सलाम।

अल्लाह की रिज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

दुनिया और आख़िरत के ख़ज़ानों की कुंजी

عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : إِنِّيْ لَأَعْلَمُ آيَةً لَوْ أَخَذَ النَّاسُ بِهَا لَكَفَتْهُمْ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ

(مشكوٰة شريف ص : ٤٥٣)

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : बेशक मैं एक आयत जानता हूँ, अगर लोग उस पर अमल करें तो यक़ीनन वह आयत उनको काफ़ी हो जाए (आयत का तर्जुमा यह है:) "और जो शख़्स अल्लाह तआला से डरता है अल्लाह तआला उसके लिए (मज़र्रतों से) नजात की शक्ल निकाल देता है, और उनको ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुँचाता है जहाँ उसका गुमान भी नहीं होता"—इस हदीस को अहमद, इब्ने माजा और दारमी ने नक़ल किया है।

हदीस पाक में ज़िक्र-करदा आयते करीमा का मतलब यह है कि : अल्लाह से डरकर उसके अहकाम की बहरहाल तामील करो, चाहे कितनी ही मुश्किलात व शदाइद का सामना करना पड़े, हक़ तआला तमाम मुश्किलात से निकलने का रास्ता बना देगा और सख़्तियों में भी गुज़ारे का सामान कर देगा। क्योंकि अल्लाह का डर दारैन (दुनिया और आख़िरत) के ख़ज़ानों की कुंजी और तमाम कामयाबियों का ज़रीया है। इसी से मुश्किलें आसान होती हैं। बे-क़यासो-गुमान रोज़ी मिलती है, गुनाह माफ़ होते हैं, जन्नत हाथ आती है, अज्र बढ़ता है और एक अजीब क़ल्बी सुकून व इत्मीनान नसीब होता है जिसके बाद कोई सख़्ती, सख़्ती नहीं रहती और तमाम परेशानियाँ अंदर-ही-अंदर काफ़ूर हो जाती हैं।

(फ़वाइदे उसमानी, सूरह तलाक़, आयत 2,3)

तक़रीज़

मुफ़स्सिरे क़ुरआन, मुहद्दिस कबीर, फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यद अहमद साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम

(उस्ताद : हदीस दारुल उलूम देवबन्द और शारेह हुज्जतुल्लाहिल-बालिग़ा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ، وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ، أَمَّا بَعْدُ :

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वल आक़िबतु लिल्मुत्तक़ीन, वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल मुर्सलीन, व अला आलिही व सहबिही अजूमअ़ीन, अम्मा बअ़्द :

"बिखरे मोती" में जनाब मुकर्रम मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ने गुलहाए रंग-रंग चुनकर हसीन गुलदस्ता तैयार किया है। यह किताब मौलाना ज़ैद मुजद्दिहिम का कश्कूल है, जिसमें आपने क़ीमती मोती इकट्ठा किए हैं। एक हसीन दस्तरख़्वान है जिस पर अनवाअ़ व अक़साम के लज़ीज़ खाने चुने गए हैं। इस किताब में जहाँ तफ़्सीरी फ़वाइद व निकात हैं, हदीसी नसीहतें व इर्शादात भी हैं। दावती और तब्लीग़ी चाशनी लिए हुए सहाबा और बाद के अकाबिर के वाक़िआत भी हैं जिनसे दिल जल्द असरपज़ीर होता है। नीज़ ऐसी दुआएँ भी शामिले किताब की गई हैं जो गौना अमलियात का रंग लिए हुए हैं। इस तरह किताब बहुत दिलचस्प बन गई है।

नीज़ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमीन साहब पालनपुरी, उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल उलूम देवबन्द की नज़रसानी ने इसकी एतिबारियत में इज़ाफ़ा किया है, गोया किताब में चार चाँद लगाए हैं। इसलिए उम्मीद है कि किताब लोगों के लिए बेहद मुफ़ीद साबित होगी। अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाए और मुसन्निफ़ के लिए ज़ख़ीर-ए-आख़िरत बनाए और उम्मत को उससे फ़ैज़याब फ़रमाए। वस्सलाम।

कुतबा

सय्यद अहमद अफ़ाउल्लाह अन्हु पालनपुरी

तआरुफ़ व तबसिरा

अज़ हज़रत मौलाना शम्सुल हक़ साहब नदवी

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दावत व तब्लीग़ के नामवर ख़तीब व वाइज़ मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (जिन्होंने अपनी पूरी उम्र दावत व तब्लीग़ के लिए वक़्फ़ फ़रमा दी थी, जो हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के ख़ास तर्बियतयाफ़्ता थे, और हज़रत जी की वफ़ात के बाद तो बड़े इज्तिमाआत को उमूमन मौलाना ही ख़िताब फ़रमाते थे। मौलाना की तक़रीर बड़ी मुवस्सिर और आम-फ़हम होती थी। दुआ भी तवील फ़रमाते थे। मौलाना यूनुस साहब इन्हीं) के फ़रज़न्द अर्जमन्द हैं और मौलाना की वफ़ात के बाद अपने वक़्त का बड़ा हिस्सा मर्कज़ निज़ामुद्दीन में गुज़ारते हैं। मौलाना को मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि से बैअ़त व ख़िलाफ़त का शर्फ़ भी हासिल है, जिसकी वजह से हज़रत की तस्नीफ़ात का भी ज़ौक़ व शौक़ के साथ मुताला फ़रमाते हैं। बड़े इज्तिमाआत में शिर्कत का पूरा एहतिमाम रहता है। जिस वक़्त ये सतरें लिखीं जा रही हैं, दो अहम इज्तिमाआत में शिर्कत के बाद यानी 9 ज़िलहिज्जा को इश्क़ व सरमस्ती के आलम में अरफ़ात में होंगे। अल्लाह तआला हज्ज मबरूर नसीब फ़रमाए, यह एक दूर-इफ़्तादा की दुआ है।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ۔

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अंतस्-समीउल अलीम०

मौलाना अपनी तक़ारीर में अहादीस शरीफ़ा और तक़ारीर और बुज़ुर्गों के तज़्किरों में मज़्कूर मुवस्सिर वाक़िआत व हिकायात और नसायह व हुक्म को बयान करते, और सामईन के दिलों को गर्माते और दीनी ग़ैरत व हमीयत को जगाते हैं। मौलाना अर्से से ऐसे मुवस्सिर

वाक़िआत, तालीमात और बाज़ ज़रूरी मसाइल व फ़तावा की बयाज़ भी तैयार करते जाते हैं, जो वाक़ई बिखरे मोतियों का बड़ा दिलकश हार है, जो पढ़ने वाले के दिल को खींचता है और रूह को बालीदगी अता करता है, ख़ुसूसन रमज़ानुल मुबारक में मौलाना मौसूफ़ का तरावीह के बाद बम्बई में दो जगह वअ्ज़ और तफ़्सीर क़ुरआन पाक बयान करने का मामूल है, जिसका सिलसिला बारह बजे रात तक जारी रहता है और इख़्तिताम गुलूगीर आवाज़ में तवील दुआ पर होता है। लोगों ने दूर-दूर कनेक्शन ले रखे हैं जिससे घरों में मस्तूरात भी शौक़ के साथ मौलाना के मुवस्सिर वअ्ज़ को सुनती हैं, उन तक़रीरों और बयान में मौलाना के उन्हीं बिखरे मोतियों को मौक़ा व मुनासिबत से ज़ीनते बयान व तक़रीर बनाते जाते हैं; जो अब किताबी शक्ल में आ गए हैं, उन बिखरे मोतियों का मुताला बड़ा मुफ़ीद और दिल को गर्माने वाला है, ज़बान व बयान असान व रवाँ है। अल्लाह तआला से दुआ है कि इससे ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

तक़रीज़

मौलाना मुफ़्ती अमीन साहब पालनपुरी

(उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल उलूम देवबन्द)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَحْدَهٗ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ لَا نَبِيَّ بَعْدَهٗ، اَمَّا بَعْدُ :

अलहम्दुलिल्लाहि वहदहू, वस्सलातु वस्सलामु अला मन ला नबिय-य बअ़दहू, अम्मा बअ़द :

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी; हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स-सिर्रहू के बड़े साहबज़ादे हैं। मौसूफ़ ने सन् 1393 हि० मुताबिक़ सन् 1973 ई० में मज़ाहिर उलूम सहारनपुर से उलूमे मुतदावला से फ़राग़त हासिल की है। तालिबे इल्मी के ज़माने से आपका महबूब मश्ग़ला अस्लाफ़ व अकाबिर की किताबों का मुताला और पसन्दीदा बातों को कापी में महफ़ूज़ करना है।

उलूम मुतदावला से फ़राग़त के बाद एक तवील अर्से तक वालिद मुहतरम के ज़ेरे साया दावत व तब्लीग़ के काम में शबो-रोज़ लगे रहे और वालिद मुहतरम के औसाफ़ व कमालात को जज़्ब करते रहे। जिन हज़रात ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स सिर्रहू के बयानात सुने हैं और उसको क़रीब से देखा है, वह इस बात की खुले दिल से गवाही देंगे कि मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब अख़्लाक़ व आदात और औसाफ़ व कमालात में उमरसानी हैं।

दावत व तब्लीग़ के काम से मौलाना जो दिलचस्पी रखते हैं वह 'अज़हर मिनश्शम्स' है, और रमज़ानुल मुबारक में तरावीह के बाद मुम्बई में मौसूफ़ के जो बयानात होते हैं उनसे आपकी उलूमे-क़ुरआन के साथ मुनासिबत अयां है। हज़ारों आदमी अपने घरों में कनेक्शन सिर्फ़ मौलाना

के बयानात सुनने के लिए रखते हैं। इस तरह मर्दों के साथ-साथ मस्तूरात भी आपके बयानों से ख़ूब इस्तिफ़ादा करती हैं।

दूसरी तरफ़ मौलाना उन पसन्दीदा बातों को जो आप तालिबे इल्मी के ज़माने से अब तक मुंतख़ब व महफ़ूज़ फ़रमा रहे हैं 'बिखरे मोती' के नाम से शाये फ़रमा कर पूरी उम्मते मुस्लिमा को फ़ैज़ पहुंचा रहे हैं। बिला शुब्हा यह किताब इस्मे-बामुसम्मा है, जो ख़ुशक़िस्मत उसको देखता है, ख़त्म किए बग़ैर दम नहीं लेता।

इस किताब के कई हिस्से 'फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली' से शाये (प्रकाशित) हो चुके हैं, अब चौथा हिस्सा पहली बार हिन्दी में 'फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली' से प्रकाशित हो रहा है, साबिक़ा हिस्सों की तरह इस हिस्से में भी मौलाना ने इबरतआमेज़ वाक़िआत, निहायत मुफ़ीद मज़ामीन और कारआमद बातें जमा कर दी हैं। अल्लाह तआला इस किताब को उम्मत के लिए रुश्दो-हिदायत का ज़रीया बनाए और मौसूफ़ को अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए, आमीन या रब्बुल आलमीन!

मुहम्मद अमीन पालनपुरी

ख़ादिम हदीस व फ़िक़ह

दारुल उलूम देवबन्द

अरज़े नाशिर

इस किताब (बिखरे मोती) के सभी तसहीह शुदा हिस्से उर्दू में फ़रीद बुक डिपो, नई दिल्ली से शाया हो चुके हैं। हिन्दुस्तान के कई नाशिराने कुतुब ने पाकिस्तानी ऐडीशन को जूं का तूं शाया किया है। उन ऐडीशनों में बहुत ज़्यादा ग़लतियाँ हैं, नीज़ अक्सर अरबी इबारतों पर आराब भी नहीं हैं, और बाज़ जगह सिर्फ़ अरबी इबारत है, उसका तर्जुमा नहीं है। मगर किसी नाशिर ने उसकी इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह नहीं की।

बिल आख़िर साहिबे किताब हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम ने नाशिर से राब्ता किया और इग़लात की तस्हीह, अरबी इबारतों पर आराब लगाने और उनके तर्जुमे करने की फ़रमाइश की। इसी फ़रमाइश का नतीजा है कि बिखरे मोती (उर्दू) के सभी हिस्से और हिन्दी के तीन हिस्से शाया हो चुके हैं। चौथा हिस्सा आपके हाथ में है।

अलग़र्ज़ किताब को आसान और उमदा बनाने की पूरी कोशिश की गई है, यह महज़ अल्लाह जल्ले शानुहू का फ़ज़्ल व करम और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम की दुआओं की बरकत है। अल्लाह तआला इस किताब को मौलाना और उनके अहले ख़ाना के लिए सदक़-ए-जारियह और क़ारईन के लिए रुश्द व हिदायत का ज़रिआ बनाए। आमीन या रब्बल आलमीन!

मुहम्मद नासिर ख़ान

फ़रीद बुक डिपो,

नई दिल्ली-2

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

दुआ की क़बूलियत का मुजर्रब नुस्ख़ा

अइम्म-ए-हदीस और उलम-ए-सीर ने अपनी-अपनी तसानीफ़ में असमा-ए-बदरैन के ज़िक्र का ख़ास एहतिमाम फ़रमाया है, मगर हुरूफ़े तहज्जी के लिहाज़ से सबसे पहले इमाम बुख़ारी रह० ने असमा-ए-बदरैन को मुरत्तब फ़रमाया और अहले बदरैन से सिर्फ़ चवालीस (44) नाम अपनी जामे सहीह में ज़िक्र फ़रमाए जो उनकी शराइते सेहत व इस्तिनाद के मुताबिक़ थे। अल्लामा दव्वानी रह० फ़रमाते हैं: हमने मशाइख़-ए-हदीस से सुना है कि सहीह बुख़ारी में मनक़ूल असमा-ए-बदरैन के ज़िक्र के वक़्त दुआ मक़बूल होती है और बारहा इसका तजुर्बा हो चुका है।

हज़राते बदरीयीन मुहाजिरीन रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन

सय्यदुल मुहाजिरीन, इमामुल बदरैन, अशरफ़ुल ख़लाइक़ अज्मईन, ख़ातिमुल अम्बिया वल मुर्सलीन सय्यदना व मौलाना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन

1. अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०
2. अबू हफ़्स उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०
3. अबू अब्दुल्लाह उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि०
4. अबुल हसन अली बिन अबी तालिब रज़ि०
5. हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि०
6. ज़ैद बिन हारिसा रज़ि०
7. अन्सा हब्सी मौला रसूलुल्लाह सल्ल०
8. अबू कब्शा फ़ारसी मौला रसूलुल्लाह सल्ल०
9. अबू मुरसद कन्नाज़ बिन हसन रज़ि०
10. मुरसिद बिन अबी मुरसिद रज़ि० यानी कन्नाज़ बिन इब्ने हसन

11. उबैदा बिन हारिस रज़ि०

12. तुफ़ैल बिन हारिस रज़ि०

13. हसीन बिन हारिस रज़ि०

14. मुस्तह औफ़ बिन असासा रज़ि०

15. अबू हुज़ैफ़ा बिन उतबा बिन रबीआ रज़ि०

16. सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा रज़ि०

17. सबीह मौला अबी अल-आस उमैया रज़ि०

18. अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि०

19. उक्काशा बिन मुहसिन रज़ि०

20. शुजाअ बिन वहब रज़ि०

21. उक़बा बिन वहब रज़ि०

22. यज़ीद बिन रक़ीश रज़ि०

23. अबू सनान बिन मुहसिन रज़ि०(अक्काशा बिन मुहसिन के भाई)

24. सनान बिन अबी सनान रज़ि० (अबू सनान बिन मुहसिन के बेटे और उक्काशा के भतीजे)

25. मुहरज़ बिन नुज़ला रज़ि०

26. रबीआ बिन अकतम रज़ि०

27. सक़फ़ बिन अम्र रज़ि०

28. मालिक बिन अम्र रज़ि०

29. मुदलिज बिन अम्र रज़ि०

30. सुवैद बिन मख़शी रज़ि०

31. उतबा बिन ग़ज़वान रज़ि०

32. जनाब मौला उतबा बिन ग़ज़वान रज़ि०

33. ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि०

34. हातिब बिन अबी बल्तआ रज़ि०

35. सअ़्द कलबी मौला हातिब बिन अबी बल्तआ रज़ि०

36. मुसअब बिन उमैर रज़ि०

37. सुवैबत बिन सअ़्द रज़ि०

38. अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०

39. सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०

40. उमैर बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०

41. मिक़दाद बिन अम्र रज़ि०

42. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि०

43. मसऊद बिन रबीआ रज़ि०

44. ज़ुलशमालीन बिन अब्द अम्र रज़ि०

45. ख़ब्बाब बिन अल-अरत रज़ि०

46. बिलाल बिन रिबाह मौला अबी बक्र रज़ि०

47. आमिर बिन फ़ुहैरह रज़ि०

48. सुहेब बिन सनान रूमी रज़ि०

49. तलहा बिन अब्दुल्लाह रज़ि०

50. अबू सलमा बिन अब्दुल असद रज़ि०

51. शमाश बिन उसमान रज़ि०

52. अरक़म बिन अबी अल-अरक़म रज़ि०

53. अम्मार बिन यासिर रज़ि०

54. मोअतिब बिन औफ़ रज़ि०

55. ज़ैद बिन अल-ख़त्ताब रज़ि० (हज़रत उमर बिन अल-ख़त्ताब रज़ि० के भाई)

56. मुहजअ मौला उमर बिन अल-ख़त्ताब रज़ि०

57. अम्र बिन सुराक़ा रज़ि०

58. अब्दुल्लाह बिन सुराक़ा रज़ि०

59. वाक़िद बिन अब्दुल्लाह रज़ि०

60. ख़ौला बिन अबी ख़ौला रज़ि०

61. मालिक बिन अबी ख़ौला रज़ि०

62. आमिर बिन रबीआ रज़ि०।

63. आमिर बिन बकीर रज़ि०

64. आक़िल बिन बकीर रज़ि०

65. ख़ालिद बिन बकीर रज़ि०

66. अयास बिन बकीर रज़ि०

67. सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ेल रज़ि०

68. उसमान बिन मज़ऊन जहही रज़ि०

69. साइब बिन उसमान रज़ि०

70. क़दामा बिन मज़ऊन रज़ि०

71. अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि०

72. मामर बिन हारिस रज़ि०

73. ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा रज़ि०

74. अबू सबरा बिन अबी रहम रज़ि०

75. अब्दुल्लाह बिन मुख़र्रमा रज़ि०

76. अब्दुल्लाह बिन सुहैल बिन अमर रज़ि०

77. उमैर बिन औफ़ मौला सुहैल बिन अमर रज़ि०

78. सअ्द बिन ख़ौला रज़ि०

79. अबू उबैदा आमिर बिन अल-जराह रज़ि०

80. अमर बिन अल-हारिस रज़ि०

81. सुहैल बिन वहब रज़ि०

82. सफ़वान बिन वहब रज़ि०

83. अमर बिन अबी सुरह रज़ि०

84. वहब बिन सअ्द रज़ि०

85. हातिब बिन अमर रज़ि०

86. अयाज़ बिन अबी ज़ुहैर रज़ि०

हज़रते बदरैन अंसार रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन

87. सअ्द बिन मुआज़ रज़ि०

88. अमर बिन मुआज़ रज़ि० (सअद बिन मुआज़ के भाई)

89. हारिस बिन औस बिन मुआज़ रज़ि० यानी सअ्द बिन मुआज़ के भतीजे

90. हारिस बिन अनस रज़ि०

91. सअ्द बिन ज़ैद रज़ि०

92. सलमा बिन सलामा बिन वक़श रज़ि०

93. उबाद बिन बशर बिन वक़श रज़ि०

94. सलमा बिन साबित बिन वक़श रज़ि०

95. राफ़ेअ बिन यज़ीद रज़ि०

96. हारिस बिन ख़ुज़मा रज़ि०

97. मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि०

98. सलमा बिन असलम रज़ि०

99. अबुल हैसुम बिन अल-तैहान रज़ि०

100. उबैद बिन अल-तैहान रज़ि०

101. अब्दुल्लाह बिन सहल रज़ि०

102. क़तादा बिन नोमान रज़ि०

103. उबैद बिन औस रज़ि०

104. नसर बिन अल-हारिस रज़ि०

105. मोतब बिन उबैद रज़ि०

106. अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि०

107. मसऊद बिन सअ़द रज़ि०

108. अबू अबस बिन जुबैर रज़ि०

109. अबू बरदा हाई बिन नयार रज़ि०

110. आसिम बिन साबित रज़ि०

111. मुअतिब बिन क़शीर रज़ि०

112. अम्र बिन मअबद रज़ि०

113. सहल बिन हनीफ़ रज़ि०

114. मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ि०

115. रफ़ाआ बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ि०

116. सअ़द बिन उबैद बिन नोमान रज़ि०

117. अवीम बिन साअदा रज़ि०

118. राफ़ेअ बिन अंजिदह रज़ि०

119. उबैद बिन अबी उबैद रज़ि०

120. सालबा बिन हातिब रज़ि०

121. अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ि०

122. हारिस बिन हातिब रज़ि०

123. हातिब बिन अम्र रज़ि०

124. आसिम बिन अदी रज़ि०

125. अनीस बिन क़तादा रज़ि०

126. मअन बिन अदी रज़ि०

127. साबित बिन अरक़म रज़ि०

128. अब्दुल्लाह बिन सलमा रज़ि०

129. ज़ैद बिन असलम रज़ि०

130. रूबई बिन राफ़ेअ रज़ि०

131. अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि०

132. आसिम बिन क़ैस रज़ि०

133. अबू ज़ैयाह बिन साबित रज़ि०

134. अबू हनता बिन साबित रज़ि० (अबू ज़ैयाह के भाई)

135. सालिम बिन उमैर रज़ि०

136. हारिस बिन नोमान रज़ि०

137. ख़्रवात बिन जुबैर बिन नोमान रज़ि०

138. मुन्ज़िर मुहम्मद रज़ि०

139. अबू अक़ील बिन अब्दुल्लाह रज़ि०

140. सअद बिन ख़ैशमा रज़ि०

141. मुन्ज़िर बिन क़दामा रज़ि०

142. मालिक बिन क़दामा रज़ि०

143. हारिस बिन अरफ़जा रज़ि०

144. तमीम मौला सअद बिन ख़ैशमा रज़ि०

145. जोबर बिन अतीक रज़ि०

146. मालिक बिन नुमैला रज़ि०

147. नोमान बिन असर रज़ि०

148. ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ि०

149. सअद बिन रबीअ रज़ि०

150. अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि०

151. ख़ल्लाद बिन सुवेद रज़ि०

152. बशीर बिन सअ़्द रज़ि०

153. सिमाक बिन सअ़्द रज़ि०

154. सबीअ बिन क़ैस रज़ि०

155. उबाद बिन क़ैस रज़ि०

156. अब्दुल्लाह बिन अबस रज़ि०

157. यज़ीद बिन हारिस रज़ि०

158. ख़ुबैब बिन असाफ़ रज़ि०

159. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन सालबा रज़ि०

160. हरीस बिन ज़ैद बिन सालबा रज़ि०

161. सुफ़ियान बिन बशर रज़ि०

162. तमीम बिन युआर रज़ि०

163. अब्दुल्लाह बिन उमैर रज़ि०

164. ज़ैद बिन अल-मुज़ीन रज़ि०

165. अब्दुल्लाह बिन अरफ़ता रज़ि०

166. अब्दुल्लाह बिन रबीअ रज़ि०

167. अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबई रज़ि०

168. औस बिन ख़ौला रज़ि०

169. ज़ैद बिन वदीआ रज़ि०

170. उक़बा बिन वहब रज़ि०

171. रिफ़ाआ बिन अम्र रज़ि०

172. आमिर बिन सलमा रज़ि०

173. मअबद बिन उबाद रज़ि०

174. आमिर बिन अल-बकीर रज़ि०

175. नौफ़ल बिन अब्दुल्लाह रज़ि०

176. उबादा बिन अस्सामित रज़ि०

177. औस बिन अस्सामित रज़ि०

178. नोमान बिन मालिक रज़ि०

179. साबित बिन हज़ाल रज़ि०

180. मालिक बिन दअसम रज़ि०

181. रबीअ बिन अयास रज़ि०

182. वरक़ा बिन अयास रज़ि०

183. अम्र बिन अयास रज़ि०

184. मजज़र बिन ज़ियाद रज़ि०

185. उबाद बिन ख़शख़ाश रज़ि०

186. नहाब बिन सालबा रज़ि०

187. अब्दुल्लाह बिन सालबा रज़ि०

188. उतबा बिन रबीआ रज़ि०

189. अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा रज़ि०

190. मुन्ज़िर बिन अम्र रज़ि०

191. अबू उसैद मालिक बिन रबीआ रज़ि०

192. मालिक बिन मसऊद रज़ि०

193. अब्द रबह बिन हक़ रज़ि०

194. कअ़ब बिन जम्माज़ रज़ि०

195. ज़मरा बिन अम्र रज़ि०

196. ज़ियाद बिन अम्र रज़ि०

197. बसबस बिन अम्र रज़ि०

198. अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि०

199. क़राश बिन समा रज़ि०

200. हबाब बिन मुन्ज़िर रज़ि०

201. उमैर बिन अल-हमाम रज़ि०

202. तमीम मौला ख़राश रज़ि०

203. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम रज़ि०

204. मुआज़ बिन अम्र बिन अल-जमूह रज़ि०

205. मऊज़ बिन अम्र बिन अल-जमूह रज़ि०

206. ख़ल्लाद बिन अम्र बिन अल-जमूह रज़ि०

207. उक़बा बिन आमिर रज़ि०

208. हबीब बिन असवद रज़ि०

209. साबित बिन सालबा रज़ि०

210. उमैर बिन अल-हारिस रज़ि०

211. बशर बिन अल-बराअ रज़ि०

212. तुफ़ैल बिन मालिक रज़ि०

213. तुफ़ैल बिन नोमान रज़ि०

214. सनान बिन सैफ़ी रज़ि०

215. अब्दुल्लाह बिन जज़ बिन क़ैस रज़ि०

216. उतबा बिन अब्दुल्लाह रज़ि०

217. जब्बार बिन सख़र रज़ि०

218. ख़ारजा बिन हुमैर रज़ि०

219. अब्दुल्लाह बिन हुमैर रज़ि०

220. यज़ीदुल् मुन्ज़िर रज़ि०

221. माक़िल बिन अल-मुन्ज़िर रज़ि०

222. अब्दुल्लाह बिन नोमान रज़ि०

223. ज़हहाक बिन हारिसा रज़ि०

224. सअ़्द बिन ज़रीक़ रज़ि०

225. मअबद बिन क़ैस रज़ि०

226. अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि०

227. अब्दुल्लाह बिन मनाफ़ रज़ि०

228. जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन रियाब रज़ि०

229. ख़लीद बिन क़ैस रज़ि०

230. नोमान बिन सनान रज़ि०

231. अबुल मुन्ज़िर यज़ीद बिन आमिर रज़ि०

232. सलीम बिन अम्र रज़ि०

233. क़ुतबा बिन आमिर रज़ि०

234. अन्तरह मौला सलीम बिन अम्र रज़ि०

235. ऐस बिन आमिर रज़ि०

236. सालबा बिन ग़नमा रज़ि०

237. अबुल यसर कअब बिन अम्र रज़ि०

238. सहल बिन क़ैस रज़ि०

239. अम्र बिन तलक़ रज़ि०

240. मुआज़ बिन जबल रज़ि०

241. क़ैस बिन मुहसिन रज़ि०

242. हारिस बिन क़ैस रज़ि०

243. ज़ुबैर बिन अयास रज़ि०

244. सअ़्द बिन उसमान रज़ि०

245. उक़बा बिन उसमान रज़ि०

246. ज़कवान बिन अब्द क़ैस रज़ि०

247. मसऊद बिन ख़ुलदा रज़ि०

248. उबाद बिन क़ैस रज़ि०

249. असअद बिन यज़ीद रज़ि०

250. फ़ाका बिन बशर रज़ि०

251. मुआज़ बिन माअस रज़ि०

252. आइज़ बिन माअस रज़ि०

253. मसऊद बिन सअ्द रज़ि०

254. रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ रज़ि०

255. ख़ल्लाद बिन राफ़ेअ रज़ि०

256. उबैद बिन ज़ैद रज़ि०

257. ज़ियाद बिन लबीद रज़ि०

258. फ़रवा बिन अम्र रज़ि०

259. ख़ालिद बिन क़ैस रज़ि०

260. जबला बिन सालबा रज़ि०

261. अतिया बिन नुवेरह रज़ि०

262. ख़लीफ़ा बिन अदी रज़ि०

263. ग़मारह ख़रम रज़ि०

264. सुराक़ा बिन कअ्ब रज़ि०

265. हारिस बिन नोमान रज़ि०

266. सलीम बिन क़ैस रज़ि०

267. सुहैल बिन क़ैस रज़ि०

268. अदी बिन ज़ग़बार रज़ि०

269. मसऊद बिन औस रज़ि०

270. अबू ख़ुज़ैमा बिन औस रज़ि०

271. राफ़ेअ बिन हारिस रज़ि०

272. औफ़ बिन हारिस रज़ि०

273. मऊज़ बिन हारिस रज़ि०

274. मुआज़ बिन हारिस रज़ि०

275. नोमान बिन उमर रज़ि०

276. आमिर बिन मुख़लद रज़ि०

277. अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि०

278. उसैमा अशजअी रज़ि०

279. वदीक़ा बिन अम्र रज़ि०

280. अबुल हमरा मौला हारिस बिन अफ़रा रज़ि०

281. सालबा बिन अम्र रज़ि०

282. सुहैल बिन अतीक़ रज़ि०

283. हारिस बिन समा रज़ि०

284. उबई बिन कअब रज़ि०

285. अनस बिन मुआज़ रज़ि०

286. औस बिन साबित रज़ि०

287. अबू शैख़ उबई बिन साबित रज़ि०(यानी हस्सान बिन साबित के भाई)

288. अबू तलहा ज़ैद बिन सहल रज़ि०

289. हारिसा बिन सुराक़ा रज़ि०

290. अम्र बिन सालबा रज़ि०

291. सुलैत बिन क़ैस रज़ि०

292. अबू सुलैत बिन अम्र रज़ि०

293. साबित बिन ख़नसा रज़ि०

294. आमिर बिन उमैया रज़ि०

295. मुहरज़ बिन आमिर रज़ि०

296. सुवाद बिन ग़ज़या रज़ि०

297. अबू ज़ैद क़ैस बिन सकन रज़ि०

298. अबुल आवर बिन हारिस रज़ि०

299. सलीम बिन मुल्हान रज़ि०

300. हराम बिन मुल्हान रज़ि०

301. क़ैस बिन अबी सअसआ रज़ि०

302. अब्दुल्लाह बिन कअ़ब रज़ि०

303. उसैमा असदी रज़ि०

304. अबू दाऊद उमैर बिन आमिर रज़ि०

305. सुराक़ा बिन अम्र रज़ि०

306. क़ैस बिन मख़्लद रज़ि०

307. नोमान बिन अब्दे अम्र रज़ि०

308. हिमाक बिन अब्दे अम्र रज़ि०

309. सलीम बिन हारिस रज़ि०

310. जाबिर बिन ख़ालिद रज़ि०

311. सअ़द बिन सुहैल रज़ि०

312. कअ़ब बिन ज़ैद रज़ि०

313. बुजैर बिन अबी बुजैर रज़ि०

314. उतबान बिन मालिक रज़ि०

315. मलील बिन दुबरह रज़ि०

316. असमह बिन हसीन रज़ि० और

317. बिलाल बिन अल-मुअल्ला रज़ि०

(सीरतुल-मुस्तफ़ा, जिल्द 2, पेज 136-145)

अल्लाह के रास्ते में निकलये, सूरज ग़ुरूब होते ही आपके गुनाह माफ़

روی عن سهل بن سعد رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا رَاحَ مُسْلِمٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ مُجَاهِدًا أَوْحَاجًّا مُهِلًّا أَوْ مُلَبِّيًا
غَرَبَتِ الشَّمْسُ بِذُنُوبِهِ (الترغیب والترھیب، جلد ۲ صفحہ ۲۶۹)

सहल बिन साअ़द रज़ि० से मरवी है कि हुज़ूर सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि जो मुसलमान भी अल्लाह के रास्ते में शाम करता है, इस हाल में कि वह जिहाद कर रहा हो या हज करते हुए तहलील (ला इला-ह इल्लाह) पढ़ रहा हो या तल्बिया (लब्बै-क अल्लाहुम-म लब्बैक...) पढ़ रहा हो तो सूरज उस मुसलमान के गुनाहों को लेकर डूबता है।

(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, जिल्द 2, पेज 269)

नमाज़ी की नमाज़ का असर सारे जहान पर पड़ता है

जिस तरह बच्चे के रोने का असर पूरे घर के माहौल पर पड़ता है इसी तरह नमाज़ी की नमाज़ का असर सारे जहान पर पड़ता है। बारिश न होने की सूरत में नमाज़े इस्तसक़ा पढ़ना, सूरज ग्रहण के वक़्त नमाज़े कसूफ़ पढ़ना और चांद ग्रहण के वक़्त नमाज़े ख़सूफ़ पढ़ना इसकी वाज़ेह दलील है।

इंसानी ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ मराहिल का औक़ाते-नमाज़ के साथ ख़ुसूसी मुनासिबत है। जैसे :

☆ नमाज़े फ़ज्र को बपचन के साथ मुनासिबत है। (दिन की इब्तिदा होती है।)

☆ नमाज़े ज़ुह्र को ज़वानी के साथ मुनासिबत है। (सूरज अपने उरूज पर होता है।)

☆ नमाज़े अस्र को बुढ़ापे के साथ मुनासिबत है। (दिन ढल जाता है।)

☆ नमाज़े मग़रिब को मौत के साथ मुनासिबत है। (ज़िंदगी का सूरज डूब जाता है।)

☆ नमाज़े इशा को अदम के साथ मुनासिबत है। (इंसान का दुनिया से नाम व निशान मिट जाता है।)

इसलिए नमाज़े इशा को सलस-लैल तक पढ़ना मुस्तहब है। चूंकि रौशनी का नाम व निशान मिट जाता है, और रात के बाद फिर दिन होता है, इसी लिए क़ियामत के दिन का तज़्किरा है। यौमुद्दीन और यौमुल क़ियामह के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए गए हैं। लैलुल-क़ियामह नहीं कहा गया। (नमाज़ के असरार व रमूज़, पेज 83)

हज़रत उमर रज़ि० की ज़बान पर फ़रिश्ते बात करते थे

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जिसने उमर रज़ि० से बुग़्ज़ किया, उसने मुझसे बुग़्ज़ किया और जिसने उमर रज़ि० से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और अरफ़ात की शाम को अल्लाह ने मुसलमानों पर आम तौर से फ़ख़्र किया, लेकिन उमर रज़ि० पर ख़ास तौर से फ़ख़्र किया और अल्लाह ने जो नबी भी भेजा उसकी उम्मत में एक मुहद्दस ज़रूर पैदा किया और अगर मेरी उम्मत में कोई मुहद्दस होगा तो वह उमर रज़ि० होंगे। सहाबा रज़ि० ने पूछा, या रसूलल्लाह सल्ल०! मुहद्दस कौन होता है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिसकी ज़बान पर फ़रिश्ते बात करते हैं।

(हयातुस्सहाबा, भाग 3, पेज 610)

हज़रत ज़िबरील अलैहि० ने उबई बिन कअ़ब रज़ि० को शानदार मुनाजात सिखाई

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं। एक मर्तबा उबई बिन

कअ़ूब रज़ि० ने फ़रमाया, मैं मस्जिद में जाऊंगा और अल्लाह की ऐसी तारीफ़ करूंगा कि वैसी तारीफ़ किसी ने नहीं की होगी। चुनांचे जब वह नमाज़ पढ़कर अल्लाह की हम्द व सना बयान करने के लिए बैठे तो उन्होंने अचानक अपने पीछे से एक बुलन्द आवाज़ सुनी कि कोई कहने वाला कह रहा है कि ऐ अल्लाह! तमाम तारीफ़ें तेरे लिए हैं और सारी बादशाहत तेरी है और सारी ख़ैर तेरे हाथ में हैं और सारे छुपे और पोशीदा उमूर तेरी तरफ़ ही लौटते हैं। सारी तारीफ़ें तेरे लिए हैं, तू हर चीज़ पर क़ादिर है, मेरे पिछले सारे गुनाह माफ़ फ़रमा और आइंदा ज़िन्दगी में हर गुनाह और हर नागवारी से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा और उन पाकीज़ा आमाल की मुझे तौफ़ीक़ अता फ़रमा, जिनसे तू मुझसे राज़ी हो जाए और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा। हज़रत उबई रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा वाक़िआ सुनाया। आप सल्ल० ने फ़रमाया, यह हज़रत जिबरईल अलैहि० थे।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 610)

मोमिन की मौत पर फ़रिश्ते की नर्मी

हज़रत सलमा बिन अतिया असदी रज़ि० कहते हैं, हज़रत सलमान रज़ि० एक आदमी की अयादत के लिए गए। वह नज़अ की हालत में था। तो हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ फ़रिश्ते! इनके साथ नर्मी करो। उस बीमार आदमी ने कहा, वह फ़रिश्ता कह रहा है कि मैं हर मोमिन के साथ नर्मी करता हूँ। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 609)

"या अरहमर्राहिमीन" कहकर दुआ मांगिए, ज़ालिम के ज़ुल्म से नजात मिलेगी

हज़रत लैस बिन सअद रज़ि० कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ि० ने अपना वाक़िआ इस तरह सुनाया कि मैंने ताइफ़ में एक आदमी से किराया पर ख़च्चर लिया। किराये पर देने वाले ने यह शर्त लगाई कि वह रास्ते में जिस मंज़िल पर चाहेगा मुझे

ठहराएगा। चुनांचे वह मुझे एक वीराने की तरफ़ लेकर चल पड़ा और वहाँ पहुंचकर उसने कहा, यहाँ उतर जाओ। मैं वहाँ उतर गया तो देखा कि बहुत-से लोग वहाँ क़त्ल हुए पड़े थे। जब वह मुझे क़त्ल करने लगा तो मैंने कहा कि मुझे ज़रा दो रकअत नमाज़ पढ़ने दो। उसने कहा कि पढ़ लो, तुमसे पहले इन लोगों ने भी नमाज़ पढ़ी थी, लेकिन नमाज़ से इन्हें कोई फ़ायदा न हुआ था। जब मैं नमाज़ पढ़ चुका तो वह मुझे क़त्ल करने के लिए आगे बढ़ा तो मैंने कहा, "या अरहमर्राहिमीन" तो उसने एक आवाज़ सुनी कि इसे क़त्ल न करो। वह एक दम डर गया और उस आवाज़वाले को तलाश करने गया तो उसे कोई न मिला। वह वापस आया तो मैंने ऊंची आवाज़ से कहा, "या अर्हमर्राहिमीन।" इस तरह तीन मर्तबा हुआ। फिर अचानक घोड़े पर एक सवार नमूदार हुआ, उसके हाथ में लोहे का एक नेज़ा था, उस नेज़े के सिरे से आग का शोला निकल रहा था। उस सवार ने उसको इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि पार होकर कमर की तरफ़ निकल आया और वह मर कर ज़मीन पर गिर गया। फिर मुझसे कहा, जब तुमने पहली बार या अर्हमर्राहिमीन कहकर पुकारा था तो मैं उस वक़्त सातवें आसमान पर था, जब तुमने दोबारा पुकारा था तो मैं आसमाने दुनिया पर था, जब तुमने तीसरी बार पुकारा तो मैं तुम्हारे पास पहुँच गया। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 606)

दुश्मन पर ग़ालिब होने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अबू तलहा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग एक ग़ज़वा में हुज़ूर सल्ल० के साथ थे। दुश्मन से मुक़ाबला हुआ, मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह दुआ करते हुए सुना : या मालिकि-यौमिद्दीन इय्या-क नअबुदु व इय्या-क नस्तईन "ऐ रोज़े-जज़ा के मालिक! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं।" मैंने देखा कि दुश्मन के आदमी गिरते चले जा रहे हैं और फ़रिश्ते उन्हें आगे से, पीछे से मार रहे हैं।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 602)

लोग चार क़िस्म के होते हैं

हज़रत हसन बिन अली रज़ि० ने फ़रमाया लोग चार क़िस्म के होते हैं :

1. वह जिसके अख़लाक़ भी अच्छे हैं और भलाई के कामों में उसका हिस्सा भी ख़ूब है, यह लोगों में सबसे अफ़ज़ल है।
2. वह जिसे भलाई में से बहुत हिस्सा मिला लेकिन उसके अख़लाक़ अच्छे नहीं।
3. वह जिसके अख़लाक़ अच्छे हैं, लेकिन भलाई के कामों में उसका कोई हिस्सा नहीं।
4. वह जिसके न अख़लाक़ अच्छे हैं और न भलाई के कामों में उसका कोई हिस्सा है। (यह तमाम लोगों में सबसे बुरा है)

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 590)

ऐ गुनाह करनेवाले, गुनाह के बुरे अन्जाम से मुत्मइन न हो जाना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, "ऐ गुनाह करनेवाले, गुनाह के बुरे अंजाम से मुत्मइन न हो जाना, गुनाह करने के बाद बाज़ ऐसी बातें होती हैं जो गुनाह से भी बड़ी होती हैं। गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दाएं-बाएं के फ़रिश्तों से शर्म न आई, तुमने जो गुनाह किया है, यह उससे भी ज़्यादा बड़ा गुनाह है। तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह तुम्हारे साथ क्या करेंगे, और फिर तुम हँसते हो तुम्हारा यह हंसना गुनाह से भी बड़ा है और जब तुम्हें गुनाह करने में कामेयाबी हासिल हो जाती है और तुम उस गुनाह पर ख़ुश होते हो तो तुम्हारी यह ख़ुशी उस गुनाह से भी बड़ी है और जब तुम गुनाह न कर सको और उस पर तुम ग़मगीन हो जाओ तो तुम्हारा यह ग़मगीन होना उस गुनाह के कर लेने से ज़्यादा बड़ा है। गुनाह करते हुए हवा के चलने से तुम्हारे दरवाज़े का पर्दा हिल जाए, उससे तुम डरते हो और अल्लाह तुम्हें देख रहा है उससे तुम्हारा दिल

परेशान नहीं होता तो यह कैफ़ियत उस गुनाह के कर लेने से बड़ा गुनाह है। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 588)

दुश्मन से किनाराकश रहो और दोस्त के साथ चौकन्ना होकर चलो

एक आदमी ने हज़रत उबई बिन काअूब रज़ि० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अबू मुन्ज़िर! आप मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें। फ़रमाया : लायानी वाले काम में हरगिज़ न लगो और दुश्मन से किनाराकश रहो और दोस्त के साथ चौकन्ना होकर चलो (दोस्ती में तुमसे ग़लत काम न करवा ले)। ज़िन्दा आदमी की उन्हीं बातों पर रश्क करो जिन बातों पर मर जानेवाले पर रश्क करते हो यानी नेक आमाल और अच्छी सिफ़ात पर और अपनी हाजत उस आदमी से न तलब करो जिसे तुम्हारी हाजत पूरी करने की परवाह नहीं है। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 587)

मोमिन चार हालतों के दर्मियान रहता है

हज़रत उबई बिन कअब रज़ि० ने फ़रमाया, "मोमिन चार हालतों के दर्मियान रहता है। अगर किसी तकलीफ़ में मुब्तला होता है तो सब्र करता है और अगर कोई नेमत मिलती है तो शुक्र करता है और अगर बात करता है तो सच बोलता है और अगर कोई फ़ैसला करता है तो इंसाफ़वाला फ़ैसला करता है। और ऐसे मोमिन के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : नूरुन अ़ला नूर"। (सूरह नूर, आयत 35)

मोमिन पाँच क़िस्म के नूरों में चलता-फिरता है, उसका कलाम नूर है और उसका इल्म नूर है, मोमिन अंदर जाता है तो नूर में और बाहर आता है तो नूर से और क़ियामत के दिन वह नूर की तरफ़ लौट कर जाएगा। और काफ़िर (नाफ़रमान) पाँच क़िस्म की ज़ुल्मतों (अंधेरों) में चलता-फिरता है। उसका कलाम ज़ुल्मत है, उसका अमल ज़ुल्मत है, काफ़िर अन्दर जाता है तो ज़ुल्मत में और बाहर आता है तो ज़ुल्मत से और क़ियामत के दिन वह बेशुमार ज़ुल्मतों की तरफ़ लौटकर जाएगा।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 586)

फ़ितना तीन आदमियों के ज़रिए से आता है

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने फ़रमाया, "फ़ितना तीन आदमियों के ज़रिए से आता है। एक तो उस माहिर और ताक़तवर आलिम के मुलहिद हो जाने के ज़रिए से जो उठनेवाली हर चीज़ का तलवार के ज़रिए से क़िलाक़ुमा कर देता है, दूसरे उस बयान वाले के ज़रिए से जो फ़ितना की दावत देता है, तीसरे सरदार और हाकिम के ज़रिए से। आलिम और बयान करनेवाले को तो फ़ितना मुँह के बल गिरा देता है अलबत्ता सरदार को फ़ितना ख़ूब कुरेदता है और फिर जो कुछ उसके पास होता है उस सबको फ़ितना में मुब्तला कर देता है"।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 585)

फ़ितना जब आता है तो बिल्कुल हक़ जैसा लगता है

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने फ़रमाया, "फ़ितनों से बचकर रहो और कोई आदमी ख़ुद उठकर फ़ितने की तरफ़ न जाए, क्योंकि अल्लाह की क़सम! जो भी अज़ ख़ुद उठकर फ़ितनों की तरफ़ जाएगा उसे फ़ितने ऐसे बहाकर ले जाएंगे जैसे सैलाब कूड़े के ढेर को बहाकर ले जाता है। फ़ितना जब आता है तो बिल्कुल हक़ जैसा लगता है, यहां तक कि जाहिल कहता है कि यह तो हक़ जैसा है (इस वजह से लोग फ़ितने में मुब्तला हो जाते हैं) लेकिन जब जाता है तो उस वक़्त साफ़ पता चल जाता है कि यह तो फ़ितना था। लिहाज़ा जब तुम फ़ितने को देखो तो उससे बचकर रहो और घरों में बैठ जाओ और तलवार तोड़ डालो और कमान की ताँत के टुकड़े कर दो"। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, सफ़ा 585)

दिल चार क़िस्म के होते हैं

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने फ़रमाया कि दिल चार क़िस्म के होते हैं :

1. एक वह दिल जिस पर पर्दा पड़ा हुआ है। यह तो काफ़िर का दिल है।

2. दूसरा दो मुंहवाला दिल यह मुनाफ़िक़ का दिल है।

3. तीसरा वह साफ़-सुथरा दिल है जिसमें चिराग़ रौशन है, यह मोमिन का दिल है।

4. चौथा वह दिल जिसमें निफ़ाक़ भी है और ईमान भी। ईमान की मिसाल दरख़्त जैसी है जो उम्दा पानी से बढ़ता है और निफ़ाक़ की मिसाल फोड़े जैसी है जो पीप और ख़ून से बढ़ता है। ईमान और निफ़ाक़ में से जिसकी सिफ़ात ग़ालिब आ जाएगी वही ग़ालिब आ जाएगा। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 584)

हज़रत अबू दरदा रज़ि० का दर्द भरा ख़त हज़रत सलमान रज़ि० के नाम

हज़रत मअमर रज़ि० अपने एक साथी से रिवायत करते हैं कि हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने हज़रत सलमान रज़ि० को ख़त में लिखा कि ऐ मेरे भाई! अपनी सेहत और फ़राग़त को उस बला के आने से पहले ग़नीमत समझो जिसको तमाम बन्दे मिलकर नहीं टाल सकते। (उस बला से मुराद मौत है) और मुसीबत-ज़दा की दुआ को ग़नीमत समझो। और ऐ मेरे भाई! मस्जिद तुम्हारा घर होना चाहिए, यानी मस्जिद में ज़्यादा वक़्त आमाल में गुज़रे, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है और मस्जिद जिन लोगों का घर होगी उनके लिए अल्लाह ने यह ज़िम्मेदारी ले रखी है कि उन्हें ख़ुशी और सेहत नसीब होगी, और वे पुलसिरात को पार करके अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करेंगे और ऐ मेरे भाई! यतीम पर रहम करो। उसे अपने क़रीब करो और उसे अपने खाने में से खिलाओ, क्योंकि एक मर्तबा एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारा दिल नर्म हो जाए? उसने कहा, जी हाँ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया : यतीम को अपने से क़रीब करो और उसके सर पर हाथ फेरो और उसे अपने खाने में से खिलाओ इससे तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा

और तुम्हारी हर ज़रूरत पूरी होगी। ऐ मेरे भाई! इतना जमा न करो जिसका तुम शुक्र अदा न कर सको क्योंकि मैं ने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि वह दुनियावाला इंसान जिसने इस दुनिया के ख़र्च करने में अल्लाह की इताअत की थी उसे क़ियामत के दिन इस हाल में लाया जाएगा कि वह आगे-आगे होगा और उसका माल पीछे होगा, वह जब भी पुलसिरात पर लड़खड़ाएगा तो उसका माल उससे कहेगा कि तुम बेफ़िक्र होकर चलते रहो, (तुम जहन्नम में नहीं गिर सकते क्योंकि) माल का जो हक़ तुम्हारे ज़िम्मे था वह तुमने अदा किया था। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस आदमी ने इस दुनिया के बारे में अल्लाह की इताअत नहीं की थी, उसे इस हाल में लाया जाएगा कि उसका माल उसके कंधों के दर्मियान होगा और उसका माल उसे ठोकर मारकर कहेगा, तेरा नास हो! तूने मेरे बारे में अल्लाह के हुक्म पर अमल क्यों नहीं किया? यह माल उसके साथ बार-बार ऐसा ही करता रहेगा, यहां तक कि वह हलाकत को पुकारने लगेगा। और ऐ मेरे भाई! मुझे यह बताया गया है कि तुमने एक ख़ादिम ख़रीदा है, हालाँकि मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि बन्दे का अल्लाह से और अल्लाह का बन्दे से ताल्लुक़ उस वक़्त तक रहता है जब तक कि उसकी ख़िदमत न की जाए। अपने काम वह ख़ुद करे और जब उसकी ख़िदमत होने लगती है तो उस पर हिसाब वाजिब हो जाता है। उम्मे दरदा रज़ि० ने मुझसे एक ख़ादिम मांगा था और मैं उन दिनों मालदार भी था लेकिन मैंने चूंकि हिसाब वाली हदीस सुन रखी थी इस वजह से मुझे ख़ादिम ख़रीदना पसन्द न आया और ऐ मेरे भाई! मेरे लिए और तुम्हारे लिए कौन इस बात की ज़मानत दे सकता है कि हम क़ियामत के दिन एक-दूसरे से मिल सकेंगे और हमें हिसाब का कोई डर न होगा? और ऐ मेरे भाई! हुज़ूर सल्ल० के सहाबी होने की वजह से धोके में मत आ जाना क्योंकि हमने हुज़ूर सल्ल० के बाद बहुत लम्बा अर्सा गुज़ार लिया है, और अल्लाह ही ख़ूब जानता है कि हमने हुज़ूर सल्ल० के बाद क्या किया है।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 580)

अपनी मुसीबत का किसी से शिकवा न करो

हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने फ़रमाया तीन काम ऐसे हैं जिनको करने से इब्ने आदम के सारे काम क़ाबू में आ जाएंगे :

1. तुम अपनी मुसीबत का किसी से शिकवा न करो।
2. अपनी बीमारी किसी को मत बताओ और अपनी ज़बान से अपनी ख़ूबियाँ बयान न करो।
3. अपने आपको मुक़द्दस और पाकीज़ा मत समझो।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 580)

ज़िन्दगी भर ख़ैर को तलाश करते रहो

हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने फ़रमाया : ज़िंदगी भर ख़ैर को तलाश करते रहो। अल्लाह की रहमत के झोंकों के सामने ख़ुद को लाते रहो, क्योंकि अल्लाह की रहमत के झोंके चलते रहते हैं, जिन्हें अल्लाह अपने जिन बन्दों पर चाहते हैं भेज देते हैं, और अल्लाह से यह सवाल करो कि वह तुम्हारे ऐबों पर पर्दा डाले और तुम्हारी ख़ौफ़ की जगहों को अम्नवाला बनाए। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 579)

जनाज़ा एक ज़बरदस्त और मुअस्सिर नसीहत है

हज़रत शुरहबील रह० कहते हैं, हज़रत अबू दरदा रज़ि० जब कोई जनाज़ा देखते तो फ़रमाते! तुम सुबह को जा रहे हो, शाम को हम भी तुम्हारे पास आ जाएंगे, या तुम शाम को जा रहे हो सुबह को हम भी आ जाएंगे। जनाज़ा एक ज़बरदस्त और मुअस्सिर नसीहत है लेकिन लोग कितनी जल्दी ग़ाफ़िल हो जाते हैं। नसीहत हासिल करने के लिए मौत काफ़ी है। एक-एक करके लोग जा रहे हैं और आख़िर में ऐसे लोग रहते जा रहे हैं जिन्हें कुछ समझ नहीं है। (जनाज़ा देखकर फिर अपने दुनियावी कामों में लगे रहते हैं) (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 578)

वह क़ौम जिसके घर क़ब्र में बदल गए

हज़रत अबू दरदा रज़ि० फ़रमाते थ, ऐ दमिश्क़वालो! क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? इतना माल जमा कर रहे हो जिसे तुम खा नहीं सकते और इतने घर बना रहे हो जिनमें तुम रह नहीं सकते और इतनी बड़ी उम्मीदें लगा रहे हो जिन तक तुम पहुंच नहीं सकते और तुमसे पहले की क़ौमें माल जमा करके महफ़ूज़ कर लेती थीं और उन्होंने बड़ी लम्बी उम्मीदें लगा रखी थीं और बड़ी मज़बूत इमारतें बनाई थीं, लेकिन अब वे सब हलाक हो चुकी हैं और उनकी उम्मीदें धोखा साबित हुईं और उनके घर क़ब्र बन चुके हैं। यह 'क़ौमे आद' है जिनके माल और औलाद से अदन-से उमान तक का सारा इलाक़ा भरा हुआ था लेकिन अब मुझसे 'आद' का सारा तर्का दो दिरहम में ख़रीदने के लिए कौन तैयार है?

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 577)

जो लोगों के ऐब तलाश करेगा उसका ग़म लम्बा होगा

हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने फ़रमाया, "तुम लोगों को उन चीज़ों का मुकल्लफ़ न बनाओ जिनके वे (अल्लाह की तरफ़ से) मुकल्लफ़ नहीं हैं। लोगों का रब तो उनका मुहासबा न करे और तुम उनका मुहासबा करो, यह ठीक नहीं। ऐ इब्ने आदम! तू अपनी फ़िक्र कर क्योंकि जो लोगों में नज़र आनेवाले ऐब तलाश करेगा, उसका ग़म लम्बा होगा और उसका ग़ुस्सा ठंडा नहीं हो सकेगा।" (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 576)

ज़मीन किसी को पाक नहीं बनाती,

इंसान तो अपने अलम से पाक और मुक़द्दस बनता है

हज़रत यहूया बिन सईद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अबू दरदा रज़ि० (दमिश्क़ में रहते थे, उन्होंने) हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० को ख़त में लिखा कि आप (दमिश्क़ की) पाक सरज़मीन में तशरीफ़ ले आएँ। हज़रत

सलमान रज़ि० ने उन्हें जवाब में लिखा कि ज़मीन किसी को पाक नहीं बनाती, इंसान तो अपने अमल से पाक और मुक़द्दस बनता है और मुझे यह बात प्रहुंची है कि आपको वहां तबीब (यानी क़ाज़ी) बना दिया गया है। अगर आपके ज़रिए से बीमारों को सेहत मिल रही है यानी आप अद्ल व इंसाफ़वाले फ़ैसले कर रहे हैं तो फिर तो बहुत अच्छी बात है शाबाशी हो आपको, और अगर आपको तिब्ब नहीं आती और ज़बरदस्ती हकीम व तबीब बने हुए हैं तो फिर आप किसी इंसान को (ग़लत फ़ैसला करके) मार डालने से बचें वरना आपको जहन्नम में जाना होगा। चुनांचे हज़रत अबू दरदा रज़ि० जब भी दो आदमियों में फ़ैसला करते और वे दोनों पुश्त फेरकर जाने लगते तो उन्हें देखकर फ़रमाते, मैं तो अल्लाह की क़सम! अनाड़ी हकीम हूँ। तुम दोनों मेरे पास वापस आकर अपना सारा वाक़िआ दोबारा सुनाओ (यानी बार-बार तहक़ीक़ करके फ़ैसला करते)।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 575)

तीन आदमियों पर हँसी आती है और तीन चीज़ों से रोना आता है

हज़रत जाफ़र बिन बुरक़ान रह० कहते हैं कि हमें यह बात पहुंची है कि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० फ़रमाया करते थे कि मुझे तीन आदमियों पर हँसी आती है और तीन चीज़ों से रोना आता है। एक तो उस आदमी पर हँसी आती है जो दुनिया की उम्मीदें लगा रहा है हालांकि मौत उसे तलाश कर रही है। दूसरे उस आदमी पर जो ग़फ़लत में पड़ा हुआ है और उससे ग़फ़लत नही बरती जा रही है। यानी फ़रिश्ते उसके हर बुरे अमल को लिख रहे हैं और उसे हर अमल का बदला मिलेगा। तीसरे मुंह भरकर हंसनेवाले पर जिसे मालूम नहीं है कि उसने अपने रब को ख़ुश कर रखा है या नाराज़। और मुझे तीन चीज़ों से रोना आता है। पहली चीज़ महबूब दोस्तों यानी हज़रत मुहम्मद सल्ल० और उनकी जमाअत की जुदाई, दूसरी मौत की सख़्ती के वक़्त आख़िरत के नज़र आनेवाले मनाज़िर की हौलनाकी। तीसरी अल्लाह रब्बुल आलमीन के

सामने खड़ा होना जबकि मुझे यह मालूम नहीं होगा कि मैं जहन्नम में जाऊंगा या जन्नत में। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 574)

हक़ वज़नी होता है और बातिल हल्का होता है

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, हक़ (नफ़्स पर) भारी होता है, लेकिन उसका अंजाम अच्छा होता है और बातिल हल्का लगता है लेकिन उसका अंजाम बुरा होता है, और इंसान की बहुत-सी ख़्वाहिशें ऐसी होती हैं कि जिनके नतीजे में इंसान को बड़े लम्बे ग़म उठाने पड़ते हैं।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, "कभी दिलों में नेक आमाल का बड़ा शौक़ और जज़्बा होता है और कभी शौक़ और जज़्बा बिल्कुल नहीं रहता। तो जब दिल में शौक़ और जज़्बा हो तो उसे तुम लोग ग़नीमत समझो और जब शौक़ और जज़्बा बिल्कुल न हो तो दिल को उसके हाल पर छोड़ दो।" (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 571)

दुनिया का साफ़ हिस्सा चला गया और गदला हिस्सा रह गया है

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, "मुझे उस आदमी पर बहुत ग़ुस्सा आता है जो मुझे फ़ारिग़ नज़र आता है। वह न आख़िरत के किसी अमल में लगा हुआ है और न दुनिया के किसी काम में।" हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि मुझे तुममें से कोई आदमी ऐसा नहीं मिलना चाहिए जो रात को मुर्दा पड़ा रहे और दिन को 'क़तरब' कीड़े की तरह फुदकता फिरे यानी रात भर तो पड़ा सोता रहे और दिन में दुनिया के कामों में ख़ूब भाग- दौड़ करे।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, "दुनिया का साफ़ हिस्सा तो चला गया और गदला हिस्सा रह गया है, लिहाज़ा आज तो मौत हर मुसलमान के लिए तोहफ़ा है।"

(अख़रजा अबू नुऐम फ़िल हुलिया, जिल्द 1, पेज 131)

एक रिवायत में यह है कि दुनिया तो पहाड़ की चोटी के तालाब की तरह है, जिसका साफ़ हिस्सा जा चुका है और गदला हिस्सा रह गया है।

(अख़रजा अबू नुऐम, जिल्द 1, पेज 132)

सबसे ज़्यादा डर औरतों की आज़माइश का है

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० ने फ़रमाया, "तीन काम ऐसे हैं जो उन्हें करेगा वह अपने आपको बेज़ारी और नफ़रत के लिए पेश करेगा यानी लोग उससे बेज़ार होकर नफ़रत करेंगे, ग़ैर ताज्जुब की बात पर हंसना और बग़ैर जागे रात भर सोना और बग़ैर भूख के खाना।"

(अख़रजा अबू नुऐम फ़िल-हुलिया, जिल्द 1, पेज़ 237)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० ने फ़रमाया, "तंगदस्ती की आज़माइश से तुम लोगों का इम्तिहान लिया गया। उसमें तो तुम कामयाब हो गए, तुमने सब्र से काम लिया, अब ख़ुशहाली की आज़माइश में डालकर तुम्हारा इम्तिहान लिया जाएगा और मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा डर औरतों की आज़माइश का है। जब वह सोने-चांदी के कंगन पहन लेंगी और मुल्क शाम की बारीक और यमन की फूलदार चादरें पहन लेंगी तो वह मालदार मर्द को थका देंगी और फ़क़ीर मर्द के ज़िम्मे ऐसी चीज़ें लगा देंगी जो उसे मयस्सर नहीं होंगी।"

(अख़रज़ा अबू नुऐम फ़िल-हुलिया, जिल्द 1, पेज 237)

अपने ज़िम्मेदारों की ख़ैरख़्वाही करो, उनको धोखा न दो

हज़रत सईद बिन अबी सईद मुक़बरी रज़ि० फ़रमाते हैं, "हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० की क़ब्र उर्दुन में है, जब वह ताऊन में मुब्तला हुए तो वहां जितने मुसलमान थे उन सबको बुलाकर फ़रमाया कि मैं तुम्हें वसीयत करने लगा हूं, अगर तुम इसे क़बूल करोगे तो हमेशा ख़ैर पर रहोगे। नमाज़ को क़ायम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो, सदक़ा-ख़ैरात दो, हज और उमरा करते रहो, एक-दूसरे को वसीयत करो,

अपने अमीरों (नायकों) की ख़ैर ख़्वाही करो, उनको धोखा न दो, और दुनिया तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करने पाए। अगर किसी आदमी को हज़ार साल की ज़िंदगी भी मिल जाए तो आख़िर उसे उसी जगह जाना होगा ज़हां आज तुम मुझे जाता हुआ देख रहे हो। अल्लाह तआला ने तमाम बनी आदम पर मौत को लिख दिया है। लिहाज़ा उन सबको मरना है और उनमें सबसे ज़्यादा अक़्लमंद वह है जो अपने रब की सबसे ज़्यादा इताअत करनेवाला और अपनी आख़िरत के लिए सबसे ज़्यादा अमल करनेवाला है। वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। ऐ मुआज़ बिन जबल! आप लोगों को नमाज़ पढ़ाएँ और फिर हज़रत अबू उबैदा रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया। फिर हज़रत मुआज़ रज़ि० ने लोगों में खड़े होकर फ़रमाया, "ऐ लोगो! तुम अल्लाह के सामने अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करो क्योंकि जो बन्दा भी गुनाहों से तौबा करेगा तो जब वह अल्लाह के सामने हाज़िर होगा तो उसका अल्लाह पर यह हक़ होगा कि अल्लाह उसके सारे गुनाह माफ़ कर दे, लेकिन उस तौबा से क़र्ज़ माफ़ नहीं होगा वह तो अदा ही करना होगा क्योंकि बन्दा अपने क़र्ज़े के बदले में गिरवी रख दिया जाएगा। तुममें से जिसने अपने भाई को छोड़ा हुआ है, उसे चाहिए कि वह ख़ुद जाकर अपने भाई से मुलाक़ात करे और उससे मुसाफ़ा करे। कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई को तीन दिन से ज़्यादा न छोड़े। क्योंकि यह बहुत बड़ा गुनाह है।"

(अख़रजा इब्ने असाकिर कज़ा फ़ी मुंतख़बुल कंज़, जिल्द 5, पेज 74)

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने फ़रमाया, "मोमिन के दिल की मिसाल चिड़िया जैसी है जो हर दिन न मालूम कितनी मर्तबा इधर-उधर पलटता रहता है (इसलिए आदमी मशविरा के ताबेअ होकर चले)।"

(अख़रजा अबू नुऐम फ़िल-हुलिया, जिल्द 1, पेज 102)

पुराने गुनाहों को नई नेकियों के ज़रिए से ख़त्म करो

हज़रत नमरान बिन मिख़मर अबुल हसन रह० कहते हैं कि हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० लश्कर में चले जा रहे थे, फ़रमाने लगेः बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपने कपड़ों को तो ख़ूब उजला और सफ़ेद कर

रहे हैं, लेकिन अपने दीन को गंदा कर रहे हैं, यानी दीन का नुक़्सान करके दुनिया और ज़ाहिरी शान व शौकत हासिल कर रहे हैं। ग़ौर से सुनो! बहुत-से लोग देखने में तो अपने नफ़्स का इकराम करनेवाले होते हैं, लेकिन हक़ीक़त में वे अपने नफ़्स की बेइज़्ज़ती करनेवाले होते हैं। पुराने गुनाहों को नई नेकियों के ज़रिए से ख़त्म करो। अगर तुममें से कोई इतने गुनाह कर ले जिससे ज़मीन व आसमान के दर्मियान का ख़ला भर जाए और फिर वह एक नेकी कर ले तो यह नेकी उन सब गुनाहों पर ग़ालिब हो जाएगी।

(इंदा बिनुल् समआनी कज़ा फ़िल्-कंज़, जिल्द 8, पेज 236)

अपनी राय को वह्य की तरह हक़ न समझिए

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया : "ऐ अबुल हसन! मुझे कुछ नसीहत करो!" हज़रत अली रज़ि० ने कहा : 1. आप अपने यक़ीन को शक न बनाएँ (यानी मसलन रोज़ी का मिलना यक़ीनी है, उसकी तलाश में इस तरह और इतना न लगें कि गोया आपको उसमें कुछ शक है)। 2. और अपने इल्म को जिहालत न बनाएँ (जो इल्म पर अमल नहीं करता वह और जाहिल दोनों बराबर होते हैं)। 3. और अपने गुमान को हक़ न समझें (यानी आप अपनी राय को वह्य की तरह हक़ न समझें)। और यह बात आप जान लें कि आपकी दुनिया तो सिर्फ़ इतनी है कि जो आपको मिली और आपने उसे आगे चला दिया या तक़्सीम करके बर्बाद कर दिया या पहनकर पुराना कर दिया।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, "ऐ अबुल हसन! आपने सच कहा।" (अख़रजा इब्ने असाकिर कज़ा फ़िल्-कंज़, जिल्द 8, पेज 221)

उलमाए-किराम इस मज़मून को ज़रूर पढ़ें

हमारे इस ज़माने में एक निहायत ही अहम दीनी ज़रूरत यह है कि हमारे जय्यदुल इस्तेदाद उलमा किराम छोटे-छोटे बच्चों को इंगलिश और हिन्दी और मक़ामी ज़बान सिखाने के लिए इस्लामी तर्ज़ पर एक कोर्स

तैयार करें, जिसमें जानदारों की तसावीर बिल्कुल न हों और ग़ैर इस्लामी नामों के बजाए इस्लामी नाम हों, और स्कूलों में राइज कोर्स में जो ग़ैर इस्लामी मज़ामीन होते हैं उनसे भी वह कोर्स पाक व साफ़ हो, बल्कि इस्लामी अक़ाइद और हमारे अस्लाफ़ के वाक़िआत व कारनामों से वह आरास्ता हो, जिससे बच्चे ज़बान-दानी के साथ-साथ इस्लाम के अक़ाइद व आदाब से भी वाक़िफ़ हों; बल्कि हमारे अस्लाफ़ के कारनामों से भी आगाह हों।

चुनांचे कुछ हस्सास बेदार मग़्ज़ उलमाए-किराम ने इस दीनी ज़रूरत को महसूस करके इस्लामी तर्ज़ पर मक़ामी ज़बान सिखाने वाली इब्तिदाई व बुनियादी किताबें तालीफ़ करनी शुरू भी कर दी हैं और कुछ हज़रात ने ऐसी ही कुछ किताबें शाए भी कर दी हैं। अल्लाह तआला उनकी मुबारक मेहनतों को क़बूल फ़रमाए और तक्मील तक पहुंचाए और हमारे अवाम को उनकी क़द्रदानी नसीब फ़रमाए। आमीन!

इस काम की बड़ी अहमियत इस बिना पर है कि स्कूलों में राइज कोर्स को पढ़कर हमारे बच्चों का ज़ेहन ग़ैर इस्लामी बनता है, मसलन हज़रत ईसा अलैहि० के सूली देने की तस्वीर देखकर और उनको सूली देने का मज़्मून पढ़कर बच्चों का ज़ेहन क़ुरआन के ख़िलाफ़ बनता है। क़ुरआन तो साफ़ अल्फ़ाज़ में कहता है : "वमा क़-त-लूहु वमा स-ल-बूहू" (सूरह निसा, आयत 157) यानी हज़रत ईसा अलैहि० को उनके दुश्मनों ने क़त्ल नहीं किया और न सूली दी। इसी तरह दूसरे ग़ैर इस्लामी मज़ामीन पढ़कर अक़ाइद ख़राब होते हैं, हालांकि अक़ाइद ही असल ईमान है।

अनक़रीब बच्चे हाकिम बन जाएँगे और लोगों में अपनी मर्ज़ी और ख़ाहिश के फ़ैसले करेंगे

हज़रत अबू ज़ैद मदीनी रह० कहते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने मदीना में हुज़ूर सल्ल० के मिंबर पर खड़े होकर बयान फ़रमाया और हुज़ूर सल्ल० के खड़े होने की जगह से एक सीढ़ी नीचे खड़े हुए और

इरशाद फ़रमाया कि तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने अबू हुरैरह् को इस्लाम की हिदायत दी और तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने अबू हुरैरह् को क़ुरआन सिखाया और तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सोहबत में रहने का मौक़ा इनायत फ़रमाकर अबू हुरैरह् पर बड़ा एहसान फ़रमाया। तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे ख़मीरी रोटी खिलाई और अच्छा कपड़ा पहनाया। तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने बिन्ते ग़ज़वान से मेरी शादी करा दी। हालाँकि पहले मैं पेट भर खाने के बदले उसके पास मज़दूरी पर काम करता था और वह मुझे सवारी दिया करती थीं और अब मैं उसे सवारी देता हूँ जैसे वह दिया करती थीं। फिर फ़रमाया कि अरबों के लिए हलाकत हो कि एक बहुत बड़ा शर क़रीब आ गया है और उनके लिए हलाकत हो कि अनक़रीब बच्चे हाकिम बन जाएंगे और लोगों में अपनी मर्ज़ी और ख़ाहिश के फ़ैसले करेंगे और ग़ुस्से में आकर लोगों को नाहक़ क़त्ल करेंगे। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 545)

दुनिया ने अपने ख़त्म होने का एलान कर दिया है और पीठ फेरकर तेज़ी से जा रही है

हज़रत ख़ालिद बिन उमैर अदवी रह० कहते हैं, हज़रत उतबा बिन ग़ज़वान रज़ि० बसरा के गवर्नर थे। एक मर्तबा उन्होंने हम लोगों में बयान किया तो पहले अल्लाह की हम्द व सना की, फिर फ़रमाया, अम्मा बाद! दुनिया ने अपने ख़त्म हो जाने का एलान कर दिया है और पीठ फेरकर तेज़ी से जा रही है। दुनिया में से बस थोड़ा-सा हिस्सा बाक़ी रह गया है जैसे बर्तन में अख़ीर में थोड़ा-सा रह जाता है और आदमी उसे चूस लेता है। तुम यहाँ से मुन्तक़िल होकर ऐसे जहान में चले जाओगे जो कभी ख़त्म नहीं होगी। लिहाज़ा जो अच्छे आमाल तुम्हारे पास मौजूद हैं उनको लेकर अगले जहान में जाओ, हमें यह बताया गया है कि जहन्नम के किनारे से एक पत्थर फेंका जाएगा जो सत्तर (70) साल तक जहन्नम में गिरता रहेगा लेकिन फिर भी उसकी तह तक नहीं पहुंच सकेगा।

अल्लाह की क़सम! यह जहन्नम भी एक दिन इन्सानों से भर जाएगी। क्या तुम्हें इस बात पर तअज्जुब हो रहा है? और हमें यह भी बताया गया है कि जन्नत के दरवाज़े के दो पट्टों के दर्मियान चालीस साल का फ़ासला है लेकिन एक दिन ऐसा आएगा कि जन्नतियों के हुजूम की वजह से इतना चौड़ा दरवाज़ा भी भरा हुआ होगा और मैंने वह ज़माना भी देखा है कि हम हुज़ूर सल्ल० के साथ सिर्फ़ सात आदमी थे और मैं भी उनमें शामिल था और हमें खाने को सिर्फ़ दरख़्तों के पत्ते मिलते थे जिन्हें मुसलसल खाने की वजह से हमारे जबड़े भी ज़ख़्मी हो गए थे और मुझे एक गिरी-पड़ी चादर मिली थी। मैंने उसके दो टुकड़े किए। एक टुकड़े को मैंने लुंगी बना लिया और एक को हज़रत सअद बिन मालिक रज़ि० ने। एक ज़माने में तो हमारे फ़क्र-व-फ़ाक़ा का यह हाल था और आज हममें से हर एक किसी न किसी शहर का गवर्नर बना हुआ है और मैं इस बात से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ कि मैं अपनी निगाह में तो बड़ा हूँ और अल्लाह के यहाँ छोटा।

(अख़रजा मुस्लिम कज़ा फ़ित-तर्ग़ीब, जिल्द 5, पेज 179)

हाकिम की रिवायत के आख़िर में यह मज़्मून भी है कि हर नुबूवत की लाइन दिन-ब-दिन कम होती चली गई है और बिल आख़िर इसकी जगह बादशाहत ने ले ली है और मेरे बाद तुम और गवर्नरों का तजुर्बा कर लोगे। (अख़रजा अल-हाकिम फ़िल मुस्तदरक, जिल्द 3, पेज 261)

साँप मारने की अजीब फ़ज़ीलत

हज़रत अबुल अहवस जुशमी रह० कहते हैं, एक दिन हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० बयान फ़रमा रहे थे कि इतने में उन्हें दीवार पर साँप चलता हुआ नज़र आया। उन्होंने बयान छोड़कर छड़ी से उसे इतना मारा कि वह मर गया। फिर फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि जिसने किसी साँप को मारा तो गोया उसने ऐसे मुश्रिक आदमी को मारा है, जिसका ख़ून बहाना हलाल हो गया हो।

(अख़रजा अहमद, जिल्द 1, पेज 421)

लोगों में लगकर अपने से ग़ाफ़िल न हो जाओ

एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि० ने एक आदमी को यह नसीहत फ़रमाई कि लोगों में लगकर अपने आपसे ग़ाफ़िल न हो जाओ, क्योंकि तुमसे अपने बारे में पूछा जाएगा, लोगों के बारे में नहीं पूछा जाएगा। इधर-उधर फिरकर दिन न गुज़ार दिया करो, क्योंकि तुम जो भी अमल करोगे वह महफ़ूज़ कर लिया जाएगा। जब तुमसे कोई बुरा काम हो जाया करे तो उसके बाद फ़ौरन कोई नेकी का काम कर लिया करो, क्योंकि जिस तरह नई नेकी पुराने गुनाह को बहुत ज़्यादा तलाश करती है और उसे जल्दी से पा लेती है, इस तरह इससे ज़्यादा तलाश करने वाली मैंने कोई चीज़ नहीं देखी। (अख़रजा देनूरी कज़ा फ़िल् कंज़, जिल्द 8, पेज 208)

आपस का जोड़ सरासर रहमत है और आपस का तोड़ अज़ाब है

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने मिम्बर पर इरशाद फ़रमाया कि जो थोड़े पर शुक्र नहीं करता वह ज़्यादा पर भी शुक्र नहीं कर सकता और जो इंसानों का शुक्र नहीं करता वह अल्लाह का भी नहीं कर सकता। और अल्लाह की नेमतों को बयान करना भी शुक्र है और उन्हें बयान न करना नाशुक्री है। आपस का जोड़ सरासर रहमत है और आपस का तोड़ अज़ाब है। रावी कहते हैं कि हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ि० ने कहा, "तुम सवादे आज़म से चिमटे रहो यानी उलमाए हक़ से जुड़े रहो"। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 456)

फ़र्ज़ नमाज़ों के पाँच होने की हिकमत

सवाल : नमाज़ें पाँच ही क्यों फ़र्ज़ हुईं, क्या हिकमत है?

जवाब : दस्तूर यह है कि (दाना का फ़ेअ़ल दानाई से ख़ाली नहीं होता) पाँच नमाज़ों की चन्द हिकमतें दर्जे ज़ेल हैं :

हिक्मत 1 : जब नबी करीम सल्ल० मेराज के लिए तशरीफ़ ले गए तो अल्लाह तआला ने उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० के लिए पचास नमाज़ों

का तोहफ़ा अता फ़रमाया। फिर नबी करीम सल्ल० की बार-बार शफ़ाअत पर पैंतालीस (45) नमाज़ें माफ़ कर दी गईं। मगर उसूल बना दिया गया कि, "مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا जो एक नेकी लाया उसे दस गुना अज्र दिया जाएगा"। (सूरह अनआम, आयत 160) अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की शाने रहमत का अन्दाज़ा लगाइए कि उम्मत पाँच नमाज़ें पढ़ेगी, मगर पचास का अज्र व सवाब पाएगी।

अरबी ज़बान में सिफ़र को नुक्ता की मानिन्द लिखते हैं। परवरदिगारे आलम ने नुक्ता हटा दिया और उम्मत के लिए आसानी पैदा कर दी। क़ियामत के दिन रब्बे करीम की नुक्ता-नवाज़ी का ज़हूर होगा। रहमत का नुक्ता शामिल करके पाँच के बजाए पचास नमाज़ों का सवाब होगा। उर्दू ज़बान में सख़ी की सख़ावत बयान करने के लिए नुक्ता-नवाज़ी का मुहावरा शायद इसी वाक़िये से मशहूर हुआ है। अगर पचास नमाज़ें होतीं तो हज़ारों में कोई एक नमाज़ी होता। पाँच की वजह से कमज़ोरों के लिए भी आसानी हो गई। हज़ारों लोग नमाज़ी बन गए। बड़ा बोझ गर्दनों से उठ गया।

हिक्मत 2 : इंसान के जिस्म में पाँच हवास-ख़म्सा मौजूद हैं —

1. देखने की हिस (क़ुव्वते बासिरा)
2. सुनने की हिस (क़ुव्वते सामिआ)
3. सूंघने की हिस (क़ुव्वते शाम्मा)
4. चखने की हिस (क़ुव्वते ज़ायक़ा)
5. छूने की हिस (क़ुव्वते लामिसा)

अल्लाह तआला ने पाँच हवास के बदले पाँच नमाज़ें अता फ़रमाईं ताकि हर हिस अता होने पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया जा सके।

हिक्मत 3 : इंसानी ज़िंदगी की पाँच नेमतें नुमायाँ हैं :

1. खाना-पीना, 2. लिबास, 3. मकान, 4. बीवी-बच्चे, 5. सवारी।

जान का शुक्रिया ईमान लाना और ला इला-ह इल्लल्लाहु का इक़रार करना है जबकि बक़िया पाँच नेमतों के शुक्राने के तौर पर पाँच नमाज़ें अता कर दी गईं। जो शख़्स पाँच नमाज़ें बाक़ायदगी से अदा करता है वह शख़्स अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार बन्दों में से है।

रिवायत है कि एक शख़्स तवाफ़ के दौरान दुआ माँग रहा था कि ऐ अल्लाह! मुझे क़लील लोगों में से बना दे। किसी ने पूछा कि क़लील लोगों में से का क्या मतलब है? उसने जवाब दिया कि फ़रमाने बारी तआला है : "मेरे बन्दों में से थोड़े मेरे शुक्रगुज़ार हैं।"

(सूरह सबा, आयत 13)

हिक्मत 4 : हज़रत अली रज़ि० फ़रमाया करते थे कि जिस शख़्स को पाँच नेमतें मिल गईं वह समझ ले कि मुझे दुनिया की सब नेमतें मिल गईं।

1. शुक्र करनेवाली ज़बान, 2. ज़िक्र करनेवाला दिल, 3. मुशक़्क़त उठानेवाला बदन, 4. नेक बीवी, 5. सहूलत की रोज़ी।

पाँच नमाज़ें इन पाँच नेमतों का शुक्रिया अदा करने के लिए काफ़ी हैं।

हिक्मत 5 : इंसानी ज़िंदगी की पाँच हालतें मुमकिन हैं :

1. खड़ा होना, 2. बैठना, 3. लेटना, 4. जागना, 5. सोना।

इन पाँच हालतों में इंसान पर अल्लाह तआला की रहमतों और नेमतों की बारिश हो रही होती है। अगर इंसान हर नेमत का हक़ अदा करना चाहे तो वह हक़ अदा कर ही नहीं सकता। सोंचने की बात है कि जब हम नेमतों को गिन ही नहीं सकते तो उनका शुक्र कैसे अदा कर सकते हैं। इंसान के लिए अल्लाह तआला की नेमतों का शुक्र अदा करना ज़ाहिरन नामुमकिन नज़र आता है। परवरदिगारे आलम ने एहसान फ़रमाया कि इंसान पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमा दीं।

पस जो शख़्स एहतिमाम के साथ पाँच नमाज़ें अदा करेगा वह ज़िंदगी की हर हालत में होनेवाली अल्लाह तआला की हर-हर नेमत का शुक्र अदा करनेवाला बन जाएगा।

हिक्मत 6 : शरीअते मुहम्मदिया में नजासत से पाकी हासिल करने वाले गुस्ल पाँच हैं :

1. जनाबत का गुस्ल, 2. हैज़ का गुस्ल, 3. निफ़ास का गुस्ल,

4. इस्लाम लाने का गुस्ल, 5. मय्यत का गुस्ल।

ये पाँच गुस्ल हर क़िस्म की हक़ीक़ी नजासतों और हुक्मी नजासतों को दूर करने के लिए काफ़ी हैं। अल्लाह तआला ने इंसान पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमा दीं ताकि जो शख़्स पाँच नमाज़ें बाक़ायदगी से अदा कर ले वह हर क़िस्म की बातिनी नजासतों से पाक हो जाए। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि नबी करीम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया : पाँच नमाज़ों की मिसाल एक नहर की मानिन्द है जो मोमिन के घर के सामने जारी हो। फिर वह मोमिन उसमें रोज़ाना पाँच मर्तबा गुस्ल करे, क्या उसके जिस्म पर मैल-कुचेल बाक़ी रह सकता है? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हरगिज़ नहीं। नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, इसी तरह जो शख़्स पाँच नमाज़ें अदा कर लेता है उसके ज़िम्मे गुनाहों का मैल-कुचैल नहीं रह सकता। इरशादे बारी तआला है : "बेशक नेकियाँ गुनाहों को मिटा देती हैं।" (सूरह हूद, आयत 114)

हिकमत 7 : क़िबले पाँच तरह के हैं : 1. बैतुल्लाह : उम्मते मुहम्मदिया का क़िबला। 2. बैतुल मुक़द्दस : यहूदियों का क़िबला। 3. मकानन शरक़िया, यानी मश्रिक़ी सिम्त : नसारा का क़िबला। 4. बैतुल मामूर : मलाइका का क़िबला। 5. वजहुल्लाह : राह गुम-करदा मुतहैयिर इंसान का क़िबला। इरशाद बारी तआला है : "फ़-ऐनमा तुवल्लू फ़सम-म वजहुल्लाह।" (सूरह बक़रा, आयत 115)

गोया इबादत करने वाले पाँच क़िस्म के लोग थे, अल्लाह तआला ने उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ कीं ताकि उनको तमाम इबादत गुज़ारों से मुनासबत हो और सबकी इबादत के बक़द्र उनको इबादत करने का अज्र व सवाब हासिल हो।

हिक्मत 8 : इंसान की दुनियावी ज़िंदगी ख़त्म होने पर उसे पाँच

मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा : 1. सकराते मौत, 2. अज़ाबे क़ब्र, 3. रोज़े महशर में नामए-आमाल का मिलना, 4. पुलसिरात से गुज़रना, 5. जन्नत के दरवाज़े से गुज़रना।

जो शख़्स पाँच नमाज़ें अदा करेगा अल्लाह तआला उसकी पाँच मुसीबतों को आसान फ़रमा देंगे। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने ज़वाजिर में हदीस नक़ल की है :

مَنْ حَافَظَ عَلَى الصَّلَوَاتِ اَكْرَمَهُ اللّٰهُ بِخَمْسِ خِصَالٍ. يَرْفَعُ عِنْدَ ضِيْقِ الْمَوْتِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَيُعْطِيْهِ اللّٰهُ بِيَمِيْنِهٖ وَيَمُرُّ عَلَى الصِّرَاطِ كَالْبَرْقِ وَيَدْخُلُ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ

"जिसने नमाज़ों की हिफ़ाज़त की, अल्लाह तआला पाँच ख़स्लतों से उसका इकराम फ़रमाएगा। पहली, मौत की सख़्ती से बचाएगा। दूसरे, क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा। तीसरे, हश्र के दिन नामए-आमाल दाएँ हाथ में देगा। चौथे पुलसिरात से बिजली की तरह पार करा देगा। पाँचवीं जन्नत में बिला हिसाब दाख़िल कर देगा।"

(नमाज़ के इसरार व रमूज़, पेज 84)

ग़म हल्का करने का मुजर्रब अमल

नबी करीम सल्ल० एक मर्तबा कुफ़्फ़ार की ईज़ा-रसानियों की वजह से बड़े मग़मूम थे। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने कितने प्यारे अंदाज़ में फ़रमाया :

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ○ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ○

(सूरा नहल, आयत : 127-128)

कभी आप बहुत परेशान हों तो इस आयत को ज़रा चन्द बार पढ़कर देखा कीजिए, आज़मूदा चीज़ है, बड़े-बड़े ग़म और मुसीबतें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस आयत के पढ़ने से बन्दे के सर से दूर फ़रमाएंगे, दिल में ठंडक आ जाएगी, अल्लाह के इस कलाम में अजीब

तासीर है। परेशान बन्दे को ख़ुश करने के लिए यह आयत अक्सीर है, इस पर आप ख़ुद भी अमल कर लीजिएगा। कभी भी कोई परेशानी आए आप इस आयत को पढ़िए। देखिए फिर अल्लाह तआला दिल की हालत को कैसे बदलते हैं।

एक ख़त

मस्जिद की ख़िदमत कीजिए अल्लाह आपको नेक ख़ादिमा बीवी देगा

सवाल : मुकर्रम...

बन्दा बहुत दिनों से बीवी ढूँढ़ रहा है, कोई लड़की देने के लिए तैयार नहीं होता, कोई वज़ीफ़ा बताइए?

जवाब :

1. इस्तिग़फ़ार की कसरत करो।

2."या जामिउ" 500 मर्तबा पढ़ा करो।

3. उलमा ने लिखा है कि जिस नौजवान की शादी में रुकावट हो। अगर वह मस्जिद में झाड़ू दे और ख़िदमत करे तो उसकी इस ख़िदमत की बरकत से अल्लाह तआला उस नौजवान को ख़ादिमा अता फ़रमा देते हैं।

4. अगर आप ऐसी बीवी की तलाश में हैं कि जिसमें कोई ऐब न हो तो आपको बीवी मिलना मुश्किल है। वह तो इंशा-अल्लाह जन्नत में मिलेगी, इसलिए अल्लाह की बन्दी मिल जाए तो उसे अपनी शरीके हयात बना लीजिए।

5. सूरह अहज़ाब लिख दीजिए और घर में रखिए।

अगर औरत को शौहर की ज़रूरत हो तो भाई को मस्जिद की सफ़ाई के लिए भेजे।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ○

दिल हिला देने वाली दुआ

रब्बे करीम! हम ज़ाहिर में बन्दे हैं हक़ीक़त में निहायत गन्दे हैं। अल्लाह हमारे अन्दर की गंदगियों को दूर फ़रमा, हमारे दिलों की ज़ुल्मत को दूर फ़रमा। हमारे दिलों की सख़्ती को दूर फ़रमा। अल्लाह हमारे दिलों को मुनव्वर फ़रमा, हमारे दिल की दुनिया को आबाद फ़रमा, मेरे मालिक हमारे निगाहों को पाक फ़रमा। हमारे दिलों को साफ़ फ़रमा, हमारे सीनों को अपनी मुहब्बत से लबरेज़ फ़रमा।

अपने इश्क़ की आतिश हमारे सीनों में पैदा फ़रमा। हमारे अंग-अंग से अपने ज़िक्र को जारी फ़रमा, रोएँ-रोएँ से अपने ज़िक्र को जारी फ़रमा, हमारी हड्डी-हड्डी, बोटी-बोटी में अपनी मुहब्बत पैदा फ़रमा। ऐ मालिक! हमारे अमल में इख़्लास पैदा फ़रमा, रिज़्क़ में बरकत पैदा फ़रमा, सेहत में बरकत पैदा फ़रमा, कामों में बरकत पैदा फ़रमा, क़दम-क़दम पर अपनी बरकतें शामिले हाल फ़रमा।

ऐ मालिक! हमारी जिस्मानी बीमारियों को दूर फ़रमा, हमारी रूहानी बीमारियों को दूर फ़रमा, नफ़्स व शैतान के मक्र व फ़रेब से हिफ़ाज़त फ़रमा। बुरा चाहनेवालों की बुराई से महफ़ूज़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमें दुश्मनों की दुश्मनी से महफ़ूज़ फ़रमा। इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त फ़रमा। ऐ अल्लाह हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा। ऐ मालिक! हमें बुरे कामों से महफ़ूज़ फ़रमा। बुरे दिन से महफ़ूज़ फ़रमा। बुरी रात से महफ़ूज़ फ़रमा, बुरे वक़्त से महफ़ूज़ फ़रमा। बुरे कामों से महफ़ूज़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमें बुरे अंजाम से महफ़ूज़ फ़रमा। बुरे दोस्तों से महफ़ूज़ फ़रमा। बुरे हालात से महफ़ूज़ फ़रमा।

रब्बे करीम! हमारे हाल पर रहमत की नज़र फ़रमा। अल्लाह हमें नमाज़ की हुज़ूरी नसीब फ़रमा। मस्जिदों का सुरूर नसीब फ़रमा। क़ुरआन पाक पढ़ने का लुत्फ़ नसीब फ़रमा। रात के आख़िरी पहर मुनाजात की लज़्ज़त नसीब फ़रमा। ऐ मालिक! ईमाने हक़ीक़ी की लताफ़त नसीब फ़रमा। रब्बे करीम हमारे साथ रहमत का मामला फ़रमा। ऐ अल्लाह!

जिस तरह मां-बाप अपने कमज़ोर बच्चे का ज़्यादा लिहाज़ करते हैं, ऐ अल्लाह हम आपके कमज़ोर बन्दे हैं, हमारा ज़्यादा लिहाज़ फ़रमाइए। हम पर ख़ुसूसी रहमत की नज़र फ़रमा दीजिए।

अल्लाह तेरी एक निगाह की बात है
मेरी ज़िंदगी का सवाल है

आपकी एक रहमत की नज़र होगी हमारा बेड़ा पार हो जाएगा। ऐ अल्लाह! आपको उस वक़्त तक मनाना ज़रूरी है जब तक कि आप राज़ी नहीं हो जाते। ऐ अल्लाह! हमसे राज़ी हो जाइए। ऐ मालिक! रज़ा अता फ़रमा दीजिए। ऐ मालिक! हमारे गुनाहों के सबब हमसे नाराज़ न होइए, हमारे साथ रहमत का मामला फ़रमा दीजिए। ऐ अल्लाह! जब बच्चा परेशान होता है, अपने माँ-बाप की तरफ़ दौड़ता है। जब बन्दे परेशान होते हैं अपने परवरदिगार के दर पर आते हैं। ऐ बेकसों के दस्तगीर, ऐ टूटे दिलों को तसल्ली देनेवाले, ऐ ज़ख़्मी दिलों पर मरहम रखनेवाले, और ग़मज़दा दिलों के ग़मों को दूर करनेवाले। ऐ फैले हुए दामनों को भर देनेवाले, अल्लाह हमारी तौबा को क़बूल फ़रमा।

ऐ मालिक! हमारी दुआओं को कहीं फटे कपड़े की तरह मुंह पर न मार देना। अल्लाह हम आपकी शाने बेनियाज़ी से डरते हैं। ऐ मालिक! जब आपकी बेनियाज़ी की निगाह उठती है तो बिल्अम बाऊरा की चार सौ साल की इबातद को ठोकर लगा देते हैं। अल्लाह हमारे पल्ले तो इबादतें भी नहीं, जो आपकी ख़िदमत में पेश कर सकें। अल्लाह हम तो गुनाहों के गट्ठर लेकर आगे खड़े हैं। ऐ मालिक! इस उम्मीद के साथ कि जब कोई शहंशाह के दरवाज़े पर जाता है तो शहंशाह यह नहीं पूछता कि तुम क्या लेकर आए हो, हमेशा यह पूछता है कि क्या लेने के लिए आए हो। ऐ मौला! हमारे पास कोई ऐसा अमल नहीं कि जो आपकी ख़िदमत में पेश कर सकें। हम तो लेने के लिए आए हैं, माँगने के लिए आए हैं, रब्बे करीम! रहमत की नज़र कर दीजिए। ऐ मालिक! हम पर एहसान फ़रमा दीजिए। ऐ अल्लाह! जब कोई माँ बच्चे को नजासत में लुथड़ा देखती है, वह बच्चे को फेंक नहीं देती, नफ़रत नहीं करती,

समझती है कि यह नादान है, नजासत में लुथड़ा पड़ा है, उसको धो लेती है, सीने से लगा लेती है। मौला हम भी गुनाहों की नजासत में लुथड़े हुए हैं, मौला हम बड़े नादान, बड़े जाहिल बनकर ज़िंदगी गुज़ारते फिर रहे हैं, मगर बन्दे तो आप ही के हैं। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत की नज़र कर दीजिए, और हमारे गुनाहों की नजासत को धो दीजिए और अपनी रहमत की चादर में छुपा लीजिए।

ऐ मालिक! हमारे जैसे तो आपके अरबों, खरबों बन्दे हैं, लेकिन हमारा तो तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। ऐ अल्लाह हम क़सम खाकर कहते हैं, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, हमें तो आप ही के दर से माँगना है, अल्लाह अपने दरवाज़े खोल दीजिए, रहमत की नज़र डाल दीजिए। ऐ मालिक! हमारे लिए रहमत का मामला फ़रमा दीजिए, ऐ अल्लाह! यूसुफ़ अलैहि० ने अपने भाइयों को माफ़ कर दिया था, आप तो उनसे ज़्यादा करीम हैं, आप अपने बन्दों को माफ़ फ़रमा दीजिए। मेरे मालिक! करम का मामला फ़रमा दीजिए।

रब्बे करीम! एहसान का मामला फ़रमा दीजिए और हमारी ज़िंदगी के पिछले गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए। यहाँ जितनी बच्चियाँ तालीम हासिल करने के लिए आई हैं, जितनी मुअल्लिमात हैं, या ख़ादिमात हैं, अल्लाह सबकी मेहनतों को क़बूल फ़रमा, सबको अपने मुक़र्रब बन्दों में शामिल कर लीजिए। रब्बे करीम हमने तो यह देखा कि अगर किसी से कोई लड़ाई हो और किसी की औरतें माफ़ी माँगने घर पर आ जाएँ तो दुनियादार लोग भी चलकर आनेवाली औरतों का लिहाज़ कर लेते हैं। क़त्ल के मुक़द्दिमे तक माफ़ कर देते हैं। अल्लाह जब लोग औरतों के चलकर आने का इतना लिहाज़ करते हैं, आपकी यह बन्दियाँ अपने घरों से चलकर यहाँ आई बैठी हैं, दामन फैलाए बैठी हैं, अल्लाह की रहमत की सवाली हैं, आपसे आपकी रहमत माँगती हैं, मौला इनके गुनाहों को बख़्श दीजिए, इनकी ख़ताओं को माफ़ कर दीजिए, रब्बे करीम एहसान फ़रमा दीजिए।

ऐ अल्लाह! हमने उलमा से यह मसला सुना है कि जब बाप कोई चीज़ खाने-पीने की ख़रीद कर लाए उसके बेटे भी हों, बेटियाँ भी हों, वह

बेटी को पहले दे, इस इज़्ज़त की वजह से जो आपने बेटी को अता की है। ऐ अल्लाह! जब आपने हमें यह हुक्म दिया, हम बेटियों का इकराम करें, ऐ अल्लाह! आपकी बन्दियाँ आपके सामने हैं, दामन फैलाए बैठी हैं, आप उन पर करम फ़रमा दीजिए। मेरे मौला! यह अपने दिल के ग़म किसके सामने खोलें, मौला आप तो सीने के भेद जानने वाले हैं। ऐ अल्लाह! इन्हें शैतानी वसाविस से बचा लीजिए। नफ़्सानी वसाविस से बचा लीजिए, इनको इज़्ज़त व पाक दामनी की ज़िंदगी अता कर दीजिए। ऐ अल्लाह! इनकी इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त फ़रमाइए। रब्बे करीम! एहसान फ़रमाइए और इनको निकोकारी की ज़िंदगी अता फ़रमा दीजिए। ज़ेवरे इल्म से इनको आरास्ता फ़रमा दीजिए, इनके सीनों को क़ुरआन व हदीस के नूर से मुनव्वर फ़रमा दीजिए। इनको कामयाबी अता फ़रमा दीजिए, ज़िंदगी और आख़िरत के हर इम्तिहान में कामयाब फ़रमा दीजिए। ऐ अल्लाह! ये अपने मां-बाप से दूर, अज़ीज़ व अक़ारिब से दूर तेरे दीन का इल्म हासिल करने के लिए इन जामिआत में आई हैं, परवरदिगार आप तो मुसाफ़िर की दुआओं को क़बूल फ़रमाते हैं। ऐ अल्लाह! इन तालिबात की दुआओं को क़बूल कर लीजिए। ऐ अल्लाह! इनके जो नेक मक़ासिद हैं उनको पूरा फ़रमा दीजिए और जो इनकी मुश्किलात हैं उनको आसान कर दीजिए। ऐ अल्लाह! आफ़ियत वाला पाकीज़ा रिज़्क़ अता फ़रमा दीजिए। दोग़ली, दोरंगी ज़िंदगी से महफ़ूज़ फ़रमा दीजिए। ऐ अल्लाह! हमारी इन दुआओं को क़बूल फ़रमाइए।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ط اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ○ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ○ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ○

हज़रत हसन बसरी रह० को एक धोबन ने तौहीद सिखाई

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि मुझे एक धोबन ने तौहीद सिखाई। किसी ने पूछा, हज़रत वह कैसे? "फ़रमाने लगे कि मेरे हमसाये

में एक धोबी रहता था। मैं एक मर्तबा अपने घर की छत पर बैठा गर्मी की रात में क़ुरआन पाक की तिलावत कर रहा था। हमसाये से मैंने ज़रा ऊंचा-ऊंचा बोलने की आवाज़ सुनी। पूछा कि भाई ख़ैरियत तो है? क्यों ऊँचा बोल रहे हो? जब ग़ौर से सुना तो मुझे पता चला कि बीवी अपने मियाँ से झगड़ रही थी। वह अपने ख़ाविन्द को कह रही थी कि देख तेरी ख़ातिर मैंने तकलीफ़ें गुज़ारीं, फ़ाक़े काटे, सादा लिबास पहना, मुशक़्क़तें उठाईं, हर दुख-सुख तेरी ख़ातिर मैंने बरदाश्त किया और मैं तेरी ख़ातिर हर दुख बरदाश्त करने के लिए अब भी तैयार हूँ। लेकिन अगर तू चाहे कि मेरे सिवा किसी और से निकाह कर ले, तो फिर मेरा-तेरा गुज़ारा नहीं हो सकता। मैं तेरे साथ कभी नहीं रह सकती। फ़रमाते हैं कि यह बात सुनकर मैंने क़ुरआन पर नज़र डाली तो क़ुरआन मजीद की आयत सामने आई : اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ

"ऐ बन्दे तू जो भी गुनाह लेकर आएगा मैं चाहुँगा तो सब माफ़ कर दूंगा, लेकिन मेरी मुहब्बत में किसी को शरीक बनाएगा तो फिर मेरा तेरा गुज़ारा नहीं हो सकता।" (सूरह निसा, आयत 116)

(तमन्नाए दिल, पेज 38)

टपक पड़ते हैं आंसू जब तुम्हारी याद आती है
यह वह बरसात है जिसका कोई मौसम नहीं होता

दीनी पेशवा अगर फिसल जाएँ तो क़ौम का क्या होगा

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि मुझे कुछ वाक़िआत ज़िंदगी में बड़े अजीब लगे, लोगों ने पूछा कि हज़रत वे कौन से? कहने लगे कि

1. एक मर्तबा दस-बारह साल की एक लड़की आ रही थी, उसकी बात ने मुझे हैरान कर दिया। बारिश हुई थी, फिसलन थी, मैं मस्जिद जा रहा था और वह बाज़ार से कोई चीज़ लेकर आ रही थी, जब ज़रा मेरे क़रीब आई तो मैंने कहा कि बच्ची ज़रा संभल कर क़दम उठाना कहीं फिसल न जाना। तो जब मैंने यह कहा तो उसने आगे से यह जवाब दिया, हज़रत! मैं फिसल गई तो मुझे नुक़्सान होगा मगर आप ज़रा संभल

कर क़दम उठाना अगर आप फिसल गए तो क़ौम का क्या बनेगा? कहने लगे कि उस लड़की की बात मुझे आज तक याद है। उस लड़की ने कहा था कि आप संभल कर क़दम उठाना। आप फिसल गए तो फिर क़ौम का क्या बनेगा?

2. एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा था, उसके सामने से एक औरत रोती हुई खुले चेहरे और खुले सर के साथ आगे से गुज़री। उसने सलाम फेरा और उस औरत पर बड़ा नाराज़ हुआ। कहने लगा कि तुझे शर्म नहीं आती। ध्यान नहीं, नंगे सर और खुले चेहरे के साथ इस हाल में कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था, तू मेरे आगे से गुज़र गई। उस औरत ने पहले तो माफ़ी माँगी और माफ़ी माँग कर कहने लगी कि देखो मेरे मियाँ ने मुझे तलाक़ दे दी और मैं इस वक़्त ग़मज़दा हूँ, मुझे पता ही नहीं चला कि आप नमाज़ पढ़ रहे हैं या नहीं। मैं इस हालत में आपके सामने से गुज़र गई। मगर हैरान इस बात पर हूँ कि मैं ख़ाविन्द की मुहब्बत में इतनी गिरफ़्तार कि मुझे सामने से गुज़रने का पता न चला और तुम अल्लाह की मुहब्बत में कैसे गिरफ़्तार हो कि खड़े परवरदिगार के सामने हो और देख मेरा चेहरा रहे हो। हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि उस औरत की यह बात मुझे आज तक याद है, और वाक़ई हमारी नमाज़ों का यही हाल है। नीचे की मन्ज़िल पर अगर नमाज़ पढ़ रहे हों और ऊपर की मन्ज़िल में अगर कोई हमारा नाम ले तो हमें नमाज़ में पता चल जाता है कि हमारा नाम पुकारा गया। हमारी नमाज़ की तवज्जोह का यह आलम होता है। (तमन्नाए-दिल, पेज 40)

मर्दों का फ़ितना जमाल है, औरतों का फ़ितना माल है

अल्लाह तआला की मुहब्बत के हासिल होने में दो चीज़ें रुकावट का सबब बनती हैं।

1. जमाल और 2. माल।

जमाल कैसे रुकावट बनता है? यह हर एक को पता है। मस्जिद में नमाज़ पढ़ी, बाहर निकलते हैं तो आँख क़ाबू में नहीं रहती। इधर भी

हवस से निगाह पड़ रही है और उधर भी हवस की निगाह पड़ रही है। इधर-उधर हवस की निगाहों का उठना इस बात की दलील है कि जमाल उसके लिए फंदा बन गया है। आँखें ग़ैर महरम से क़ाबू में नहीं रहतीं। आजकल मर्दों के लिए यह सबसे बड़ा फ़ितना है।

दूसरा फ़ितना माल है और यह मर्दों की बनिस्बत औरतों के लिए ज़्यादा बड़ा फ़ितना है। माल की मुहब्बत औरत के दिल में शदीद होती है और जमाल की मुहब्बत मर्द के दिल में शदीद होती है और आज के नौजवानों को माल और जमाल के फंदों ने फंसा दिया और अल्लाह से दूर कर दिया। इसलिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुरआन पाक में दो चीज़ों से नज़रें हटाने का हुक्म दिया है :

1. इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

"ऐ महबूब! आप इन काफ़िरों के माल को न देखें, इनसे अपनी निगाहों को हटा लीजिए, यह चन्द दिन की चाँदनी है, इनसे अपनी निगाहें हटा लीजिए।" (सूरह ता-हा, आयत 131) तो एक तो माल से निगाहें हटाने का हुक्म दिया उसकी तरफ़ देखो ही नहीं।

2. और दूसरा ग़ैर महरम की तरफ़ से निगाहें हटाने का हुक्म फ़रमाया :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْنَ مِنْ اَبْصَارِهِمْ

"ईमान वालों से कह दीजिए कि अपनी निगाहों को नीचा रखें" यानी जमाल से और माल से निगाहों का परहेज़ करने का हुक्म दिया।

(सूरह नूर, आयत 30)

और एक चीज़ ऐसी है जिसकी तरफ़ निगाहें जमाने का हुक्म दिया। परवरदिगारे आलम फ़रमाते हैं :

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ

"ऐ महबूब! अपने आपको सब्र दीजिए, अपने आपको बिठाइए, अपने आपको नत्थी रखिए उन लोगों के साथ जो सुबह व शाम अल्लाह की रज़ा के लिए उसकी याद करते हैं, और ऐ महबूब! आपकी निगाहें उनके चेहरों से इधर-उधर हटने न पाएँ, उन पर निगाहें जमाए रखिए।"

(सूरह कहफ़, आयत 28)।

तो एक चीज़ पर निगाहें जमाने का हुक्म दिया। क़ुरआन हमें यह सबक़ दे रहा है कि "وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ" तुम्हारी निगाहें उनके चेहरों से हटें नहीं हर वक़्त उनकी तरफ़ निगाहें लगी हुई हों। मालूम हुआ कि यह निगाहें अगर अल्लाहवालों के चेहरों पर लगी रहेंगी तो फिर बन्दे का रास्ता भी सीधा रहेगा, वह ख़ुद भी अल्लाह के क़रीब होता चला जाएगा। पस दो चीज़ों से निगाहें हटाने का हुक्म दिया, एक माल से और एक जमाल से, और एक चीज़ पर निगाह जमाने का हुक्म दिया, और वह है अल्लाहवालों के चेहरों पर निगाहें जमाने का हुक्म। अगर आप निगाहें हटाएंगे फिर आप दुनिया की ज़ीनत के चाहने वाले बन जाएंगे।

राबिआ बसरिया ने फ़रमाया "अलजारु सुम्मद्दार"

किसी ने राबिया बसरिया को दुआ दी थी कि "अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत में घर अता कर दे तो वे कहने लगीं कि "अलजारु सुम्मद्दारु" यानी पहले पड़ोसी की बात करो बाद में घर की बात करना। अल्लाह तआला हमें भी अपने पड़ोस की जगह अता फ़रमा दे।

मजनूँ, बहरा और छोटे बच्चे जन्नत में जाएंगे या जहन्नम में

मुकर्रम व मोहतरम हज़रत मौलाना साहब!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम अर्ज़ करना चाहता हूँ कि हमारा भाई कानों से बहरा है, इसी तरह हमारी चचा ज़ाद बहन दिमाग़ से माज़ूर है, अब बताइए मरने के बाद ऐसे लोगों का कहाँ ठिकाना होगा, जन्नत में या जहन्नम में। जवाब से मुत्तला फ़रमाइए और ख़ुशी का मौक़ा दीजिए। फ़क़त वस्सलाम

जवाबे-ख़त

देखिए भाई! अल्लाह के यहाँ यक़ीनन किसी के साथ ज़ुल्म नहीं होगा, इसलिए बहरा, पागल फ़ातिरुल-अक़्ल और ज़मान-ए-फ़तरत यानी दो नबियों के दर्मियानी ज़माने में फ़ौत होनेवाले लोगों का मसला है, उनकी बाबत बाज़ रिवायात में आता है कि क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआला उनकी तरफ़ फ़रिश्ते भेजेगा और वे उनसे कहेंगे कि जहन्नम में दाख़िल हो जाओ। अगर वे अल्लाह के इस हुक्म को मानकर जहन्नम में दाख़िल हो जाएंगे तो जहन्नम उनके लिए गुले-गुलज़ार बन जाएगी, बसूरते-दीगर उन्हें घसीट कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

(मुस्नद अहमद, जिल्द 4, पेज 24, इब्ने हिब्बान, जिल्द 9, पेज 226)

छोटे बच्चों की बाबत इख़्तिलाफ़ है। मुसलमानों के बच्चे तो जन्नत में ही जाएंगे, अलबत्ता कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के बच्चों में इख़्तिलाफ़ है, कोई तवक़्क़ुफ़ का क़ाइल है, कोई जन्नत में जाने का और कोई जहन्नम में जाने का क़ाइल है। इमाम इब्ने कसीर रह० ने कहा है कि मैदाने हश्र में उनका इम्तिहान लिया जाएगा, जो अल्लाह के हुक्म की इताअत इख़्तियार करेगा, वह जन्नत में और जो नाफ़रमानी करेगा जहन्नम में जाएगा। इमाम इब्ने कसीर रह० ने इसी क़ौल को तर्जीह दी है और कहा है कि इससे मुतज़ाद रिवायात में तत्बीक़ भी हो जाती है (तफ़्सील के लिए तफ़्सीर इब्ने कसीर मुलाहिज़ा कीजिए) मगर सहीह बुख़ारी की रिवायत से मालूम होता है कि मुश्रिकीन के बच्चे भी जन्नत में जाएंगे।

(देखिए सहीह बुख़ारी, 3 : 251, 12 : 348, तफ़्सीर मस्जिदे नबवी, पेज 770)

सूरह कह्फ़ पढ़ने से घर में सकीनत व बरकत नाज़िल होती है

सूरह कह्फ़ पढ़ने से घर में सकीनत व बरकत नाज़िल होती है। एक मर्तबा एक सहाबी रज़ि० ने सूरह कह्फ़ पढ़ी। घर में एक जानवर भी था, उसने बिदकना शुरू कर दिया। उन्होंने ग़ौर से देखा कि क्या बात है? तो उन्हें एक बादल-सा नज़र आया, जिसने उन्हें ढाँप रखा था। सहाबी रज़ि० ने उस मौक़े का ज़िक्र जब नबी करीम सल्ल० से किया तो

आप सल्ल० ने फ़रमाया, "उसे पढ़ा करो, क़ुरआन पढ़ते वक़्त सकीनत नाज़िल होती है"।

(सहीह बुख़ारी, फ़ज़्ल सूरह कहूफ़; मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब नुज़ूले सकीनह बक़रातुल क़ुरआव; तफ़्सीर मस्जिदे नबवी, पेज 799)

दिन और रात ये दोनों अल्लाह की बहुत बड़ी नेमतें हैं

दिन और रात, ये दोनों अल्लाह की बहुत बड़ी नेमतें हैं। रात को तारीक बनाया ताकि सब लोग आराम कर सकें। उस अंधेरे की वजह से हर मख़्लूक़ सोने और आराम करने पर मजबूर है। वरना अगर आराम करने और सोने के अपने-अपने औक़ात होते तो कोई भी मुकम्मल तरीक़े से सोने का मौक़ा न पाता, जबकि मआशी तगो-दौ और कारोबारे-जहाँ के लिए नींद का पूरा करना ज़रूरी है। इसके बग़ैर तवानाई बहाल नहीं होती। अगर कुछ लोग सो रहे होते और कुछ जाग कर मसरूफ़े तगो-ताज़ होते, तो सोनेवालों के आराम व राहत में ख़लल पड़ता, नीज़ लोग एक-दूसरे के तआवुन से भी महरूम रहते, जबकि दुनिया का निज़ाम एक-दूसरे के तआवुन व तनासुर का मुहताज है। इसलिए अल्लाह ने रात को तारीक कर दिया ताकि सारी मख़्लूक़ एक वक़्त में आराम करे और कोई किसी की नींद और आराम में मख़िल न हो सके। इसी तरह दिन को रौशन बनाया ताकि रौशनी में इंसान अपना कारोबार बेहतर तरीक़े से कर सके। दिन की यह रौशनी न होती तो इंसान को जिन मुश्किलात का सामना करना पड़ता, उसे हर शख़्स आसानी से समझता और उसका इदराक रखता है।

अल्लाह तआला ने अपनी इन नेमतों के हवाले से अपनी तौहीद का इसबात फ़रमाया है कि बताओ अगर अल्लाह तआला दिन और रात का यह निज़ाम ख़त्म करके हमेशा के लिए तुम पर रात ही मुसल्लत कर दे तो क्या अल्लाह के सिवा कोई माबूद ऐसा है जो तुम्हें दिन की रौशनी अता कर दे? या अगर वह हमेशा के लिए दिन ही दिन रखे तो क्या

कोई तुम्हें रात की तारीकी से बहरावर कर सकता है। जिसमें तुम आराम कर सको? नहीं, यक़ीनन नहीं। यह सिर्फ़ अल्लाह की कमाल मेहरबानी है कि उसने दिन और रात का ऐसा निज़ाम क़ायम कर दिया है कि रात आती है तो दिन की रौशनी ख़त्म हो जाती है और तमाम मख़्लूक़ आराम कर लेती है और रात जाती है तो दिन की रौशनी से कायनात की हर चीज़ नुमायाँ और वाज़ेहतर हो जाती है और इंसान कस्बो-मेहनत के ज़रिए से अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करता है।

(तफ़्सीरः मस्जिदे नबवी, पेज 1093)

दिल की बीमारियाँ

यानी दिल की वह दस बातें जिनकी इस्लाह से दिल की दूसरी बीमारियाँ दूर हो जाती हैं :

1. ज़्यादा खाने की हवस,
2. ज़्यादा बोलने की फ़िक्र
3. बेजा ग़ुस्सा,
4. हसद करना,
5. बुख़्ल और माल की मज़म्मत,
6. शोहरत और जाह की मुहब्बत
7. दुनिया की मुहब्बत,
8. तकब्बुर करना,
9. उज्ब यानी ख़ुदपसन्दी, और
10. रिया यानी दिखावा।

मुनव्वराते ज़ाहिरी

यानी वे दस आमाल जिनका इंसान के ज़ाहिरी आज़ा से ताल्लुक़ है। इनका एहतिमाम करने से दूसरे हुक्मों पर अमल करना आसान हो जाता है।

1. नमाज
2. ज़कात व ख़ैरात
3. रोज़ा
4. हज
5. तिलावते क़ुरआन पाक
6. कसरते ज़िक्र
7. तलबे हलाल
8. मुसलमानों के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त
9. इत्तिबाए सुन्नत
10. अच्छी बात कहना और बुरी बातों से रोकना

मुनव्वराते बातिनी

यानी वे दस आमाल जिनका ताल्लुक़ इंसान के क़ल्ब से हैं। उनका एहतिमाम करने से दिल के दूसरे अहकाम पर अमल करना सहल हो जाता है।

1. तौबा
2. ख़ौफ़
3. ज़ुह्द
4. सब्र
5. शुक्र
6. इख़्लास व सिद्क़
7. तवक्कुल
8. अल्लाह की मुहब्बत
9. रिज़ा बर क़ज़ा
10. सफ़रे वतन की असली तैयारी

बारिश को बारिश के उन रास्तों से तलब करो जो आसमानों में हैं

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ط اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ○ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ○
وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ○

"और मैंने कहा कि अपने रब से अपने गुनाह बख़्शवाओ (और माफ़ी माँगो) वह यक़ीनन बड़ा बख़्शने वाला है। वह तुमपर आसमान को ख़ूब बरसता हुआ छोड़ देगा। और तुम्हें ख़ूब पै-दर-पै माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हें बाग़ात देगा और तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा।"

(सूरह नूह, आयत 10-12)

बाज़ उलमा इसी आयत की वजह से नमाज़े इस्तसक़ा में सूरह नूह के पढ़ने को मुस्तहब समझते हैं। मरवी है कि हज़रत उमर रज़ि० भी एक मर्तबा नमाज़ इस्तसक़ा के लिए मिम्बर पर चढ़े तो सिर्फ़ आयाते इस्तिग़फ़ार (जिनमें ये आयात भी थीं) पढ़कर मिम्बर से उतर आए और फ़रमाया कि मैंने बारिश को, बारिश के उन रास्तों से तलब किया है जो आसमानों में है, जिनसे बारिश ज़मीन पर उतरती है। (इब्ने-कसीर)

हज़रत हसन बसरी रह० के मुताल्लिक़ मरवी है कि उनसे आकर किसी ने क़हतसाली की शिकायत की तो उन्होंने उसे इस्तिग़फ़ार की तल्क़ीन की। किसी दूसरे शख़्स ने फ़क्र व फ़ाक़ा की शिकायत की, उसे भी उन्होंने यही नुस्ख़ा बताया। एक और शख़्स ने अपने बाग़ के ख़ुश्क होने का शिकवा किया, उससे भी फ़रमाया, इस्तिग़फ़ार कर। एक शख़्स ने कहा, मेरे घर औलाद नहीं होती, उसे भी कहा, अपने रब से इस्तिग़फ़ार कर। किसी ने जब उनसे कहा कि आपने इस्तिग़फ़ार ही की तल्क़ीन क्यों की? तो आपने यही आयत तिलावत करके फ़रमाया कि मैंने अपने पास से यह बात नहीं की, यह वह नुस्ख़ा है जो इन सब बातों के लिए अल्लाह ने बताया है।

(ऐसरुल् तफ़ासीर, तफ़्सीर मस्जिद नबवी, पेज 1633)

इस्तिग़फ़ार से मुताल्लिक़ कुछ अहादीस पढ़ लीजिए

1. मुस्नद अहमद में हज़रत अबू हुरैरहा रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं : जब कोई शख़्स गुनाह करता है, फिर ख़ुदा के सामने हाज़िर होकर कहता है कि परवरदिगार मुझसे गुनाह हो गया, तू माफ़ फ़रमा। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे से गो गुनाह हो गया, लेकिन उसका ईमान है कि उसका रब गुनाह पर पकड़ भी करता है और अगर चाहे तो माफ़ भी फ़रमा देता है। मैंने अपने बन्दे का गुनाह माफ़ फ़रमाया। उससे फिर गुनाह होता है, फिर तौबा करता है, अल्लाह तआला फिर माफ़ फ़रमाता है। फिर तीसरी मर्तबा उससे गुनाह हो जाता है और फिर तौबा करता है। अल्लाह तआला फिर बख़्शता है, चौथी मर्तबा फिर गुनाह कर बैठता है, फिर तौबा करता है तो अल्लाह तआला माफ़ फ़रमाकर कहता है कि अब मेरा बन्दा जो चाहे करे। (मुस्नद अहमद, यह हदीस सहीहैन में भी है।)

2. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमने एक मर्तबा जनाब रसूले ख़ुदा सल्ल० से कहा, "या रसूलल्लाह! जब हम आपको देखते हैं तो हमारे दिलों में रिक़्क़त तारी हो जाती है और हम अल्लाहवाले बन

जाते हैं, लेकिन जब आपके पास से चले जाते हैं तो वह हालत नहीं रहती। औरतों, बच्चों में फंस जाते हैं, घर बार के धंधों में लग जाते हैं।" आप सल्ल० ने फ़रमाया, "सुनो जो कैफ़ियत तुम्हारे दिलों में मेरे सामने होती है, अगर यही कैफ़ियत हर वक़्त रहती तो फिर फ़रिश्ते तुमसे मुसाफ़ा करते और तुम्हारी मुलाक़ात को तुम्हारे घरों पर आते। सुनो, अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तआला तुम्हें यहाँ से हटा दे और दूसरी क़ौम को ले आए जो गुनाह करे, फिर बख़्शिश मांगे और ख़ुदा उन्हें बख़्शे। हमने कहा, "हुज़ूर! यह तो फ़रमाइए कि जन्नत की बिना क्या है?" आप सल्ल० ने फ़रमाया, "एक ईंट सोने की एक चाँदी की, उसका गारा मुश्क ख़ालिस है, उसके कंकर लुअ्-लुअ् और याक़ूत हैं, उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है, जन्नतियों की नेमतें कभी ख़त्म न होंगी, उनकी ज़िंदगी हमेशगी वाली होगी। उनके कपड़े पुराने न होंगे, उनकी जवानी फ़ना न होगी। तीन शख़्सों की दुआ रद्द नहीं होती :

1. आदिल बादशाह, 2. रोज़ेदार, 3. मज़्लूम। इनकी दुआ बादलों में उठाई जाती है और उनके लिए आसमानों के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, और जनाबे बारी इरशाद फ़रमाता है, मुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं तुम्हारी ज़रूर मदद करूंगा, अगरचे कुछ वक़्त के बाद हो। (मुस्नद अहमद)

3. अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख़्स कोई गुनाह करे फिर वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ अदा करे और अपने गुनाह की माफ़ी चाहे तो अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। (मुस्नद अहमद)

4. सहीह मुस्लिम में बरिवायत अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० मरवी है। रसूलुल्लाह फ़रमाते हैं कि तुममें से जो शख़्स कामिल वुज़ू करके "अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू" पढ़े, उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं, जिससे चाहे अन्दर चला जाए।

5. अमीरुल मोमिनीन हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० सुन्नत के मुताबिक़ वुज़ू करते हैं; फिर फ़रमाते हैं, मैंने आँहज़रत सल्ल० से सुना कि

आप सल्ल० ने फ़रमाया है, "जो शख़्स मेरी तरह वुज़ू करे फिर दो रकअत नमाज़ अदा करे और उस नमाज़ में अपने दिल से बातें न करे (यानी अपनी तवज्जोह अपनी तरफ़ नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ रखे) तो अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा देता है।"

(बुख़ारी व मुस्लिम)

पस यह हदीस तो हज़रत उसमान रज़ि० से, उससे अगली रिवायत हज़रत उमर रज़ि० से, उससे अगली रिवायत हज़रत अबू-बक्र रज़ि० से और इस तीसरी रिवायत को हज़रत अबू-बक्र रज़ि० से हज़रत अली रज़ि० रिवायत करते हैं। तो अलहम्दुलिल्लाह, अल्लाह तआला की वसीअ मग़फ़िरत और उसकी बेइंतिहा मेहरबानी की ख़बर सय्यदुल अव्वलीन वल आख़िरीन की ज़बानी आपके चारों बरहक़ ख़ुल्फ़ा की मारफ़त हमें पहुंची।

आओ! इस मौक़े पर हम गुनाहगार भी हाथ उठाएँ और अपने मेहरबान रहीमो-करीम ख़ुदा के सामने अपने गुनाहों का इक़रार करके उससे माफ़ी तलब करें। ख़ुदाया! ऐ माँ-बाप से ज़्यादा मेहरबान! ऐ अफ़्व व दरगुज़र करने वाले और किसी भिकारी को अपने दर से ख़ाली न फेरने वाले! तू हम ख़ताकारों की सियाहकारियों से भी दरगुज़र फ़रमा और हमारे कुल गुनाह माफ़ फ़रमा दे। आमीन। (मुहम्मद यूनुस पालनपुरी)

6. मुस्नद अबू याला में है, रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि ला इला-ह इल्लल्लाह कसरत से पढ़ा करो और इस्तिग़फ़ार पर मदावमत करो, इब्लीस गुनाहों से लोगों को हलाक करना चाहता है और उसकी अपनी हलाकत ला इला-ह इल्लल्लाह और इस्तिग़फ़ार से है। यह हालत देखकर इब्लीस ने लोगों को ख़ाहिशपरस्ती पर डाल दिया। पस वह अपने तईं राहे रास्त पर जाते हैं, हालाँकि होते हैं हलाकत पर।

7. मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं कि इब्लीस ने कहा, "ऐ रब! मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं बनी आदम को उनके आख़िरी दम तक बहकाता रहूँगा।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "मुझे भी मेरे जलाल और मेरी इज़्ज़त की क़सम! जब तक वह मुझसे बख़्शिश माँगते रहेंगे मैं भी उन्हें बख़्शता रहूँगा।"

8. मुस्नद बज़्ज़ार में है कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, "मुझसे गुनाह हो गया।" आप सल्ल० ने फ़रमाया कि तौबा कर ले। उसने कहा, मैंने तौबा की फिर गुनाह हो गया। फ़रमाया, फिर तौबा कर ले। उसने कहा, मुझसे फिर गुनाह हो गया। आप सल्ल० ने फ़रमाया, फिर इस्तिग़फ़ार कर। उसने कहा, मुझसे और गुनाह हुआ। फ़रमाया, इस्तिग़फ़ार किए जा। यहाँ तक कि शैतान थक जाए। फिर फ़रमाया, गुनाह को बख़्शना अल्लाह ही के इख़्तियार में है।

9. मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० के पास एक क़ैदी आया और कहने लगा, "या अल्लाह! मैं तेरी तरफ़ तौबा करता हूँ, मुहम्मद सल्ल० की तरफ़ तौबा नहीं करता।" (यानी ख़ुदाया मैं तेरी ही बख़्शिश चाहता हूँ।) आप सल्ल० ने फ़रमाया कि उसने हक़ हक़दार को पहुंचाया।

10. एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर दो या तीन मर्तबा कहा कि हाय मेरे गुनाह! हाय मेरे गुनाह! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह कहो : ऐ अल्लाह! तेरी मग़फ़िरत मेरे गुनाहों से ज़्यादा वुसअत वाली है और मुझे अपने अमल से ज़्यादा तेरी रहमत की उम्मीद है। उसने यह कहा। हुज़ूर सल्ल० ने कहा, दोबारा कहो, उसने दोबारा कहा। हुज़ूर सल्ल० ने कहा, फिर कहो। उसने फिर कहा। हुज़ूर सल्ल० ने कहा, उठ जा, अल्लाह ने तेरी मग़फ़िरत कर दी है।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 350)

मा बक़िया ज़ख़ीर-ए-मग़फ़िरत जो तक़रीबन तीन सौ तेरह (313) अहादीस पर मुश्तमिल है, जो किताबी शक्ल में "मायूस क्यों खड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है" नाम से इंशाअल्लाह मंज़रे आम पर आ रही है, उसमें पूरी तफ़्सील मौजूद है, उसे पढ़ लिया जाए।

मर्द बीवी से बेपनाह प्यार करता है यह अल्लाह की एक निशानी है

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○ (سورة روم، آیت : ۲۱)

"और उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जिन्स से बीवियाँ पैदा कीं, ताकि तुम उनसे आराम पाओ, उसने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत और हमदर्दी क़ायम कर दी, यक़ीनन ग़ौर व फ़िक्र करनेवालों के लिए इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं।"

(सूरह रूम, आयत 21)

तशरीह : मवद्द-त से मुराद यह है कि मर्द बीवी से बेपनाह प्यार करता है और इसी तरह बीवी शौहर से। जैसा कि आम मुशाहिदा है। ऐसी मुहब्बत जो मियाँ-बीवी के दर्मियान होती है, दुनिया में किसी भी दो शख़्सों के दर्मियान नहीं होती। और रहमत यह है कि मर्द बीवी को हर तरह की सहूलत और आसाइश बहम पहुंचाता है, जिसका मुकल्लफ़ उसे अल्लाह तआला ने बनाया है। और ऐसे ही औरत भी अपने क़ुदरत व इख़्तियार के दायरे में। ताहम इंसान को यह सुकून और बाहमी प्यार उन्हीं जोड़ों से हासिल होता है जो क़ानूने शरीअत के मुताबिक़ बाहम निकाह से क़ायम होते हैं और इस्लाम उन्हीं को जोड़ा क़रार देता है। ग़ैर क़ानूनी जोड़ों को वह जोड़ा ही तस्लीम नहीं करता बल्कि उन्हें ज़ानी और बदकार क़रार देता है और उनके लिए सख़्त सज़ा तज्वीज़ करता है। आज कल मग़रिबी तहज़ीब के अलम्बरदार मज़्मूम कोशिशों में मसरूफ़ हैं कि मग़रिबी मुआशरों की तरह इस्लामी मुल्कों में भी निकाह को ग़ैर ज़रूरी क़रार देते हुए बदकार मर्द व औरत को "जोड़ा" तस्लीम करवाया जाए और उनके लिए सज़ा के बजाए वह हुक़ूक़ मनवाए जाएँ जो एक क़ानूनी जोड़े को हासिल होते हैं। (तफ़्सीर मस्जिद नबवी, पेज 1128)

दुनिया में इतनी ज़बानों का पैदा करना भी अल्लाह की क़ुदरत की एक बड़ी निशानी है

وَمِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ط اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّلْعٰلِمِیْنَ○ (سورۃ روم، آیت ۲۲)

"उसकी क़ुदरत की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की

पैदाइश और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का इख़्तिलाफ़ (भी) है, दानिशमंदों के लिए इसमें यक़ीनन बड़ी निशानियाँ हैं।"

(सूरह रूम, आयत 22)

दुनिया में इतनी ज़बानों का पैदा कर देना भी अल्लाह की क़ुदरत की एक बहुत बड़ी निशानी है। अरबी है, तुर्की है, अंग्रेज़ी है, उर्दू है, हिन्दी है, पश्तू, फ़ारसी, सिंधी, बलूची वग़ैरह है। फिर एक-एक ज़बान के मुख़्तलिफ़ लहजे और उस्लूब हैं। एक इंसान हज़ारों और लाखों के मज्मे में अपनी ज़बान और अपने लहजे से पहचान लिया जाता है कि यह शख़्स फ़ुलाँ मुल्क और फ़ुलाँ इलाक़े का है। सिर्फ़ ज़बान ही उसका मुकम्मल तआरुफ़ करा देती है। इसी तरह एक ही माँ-बाप (आदम व हव्वा अलैहि०) से होने के बावजूद रंग एक-दूसरे से मुख़्तलिफ़ हैं। कोई काला है, कोई गोरा, कोई नीलगूँ है तो कोई गंदुमी रंग का, फिर काले और सफ़ेद रंग में भी इतने दर्जात रख दिए हैं कि बेशतर इंसानी आबादी दो रंगों में तक़सीम होने के बावजूद उनकी बीसियों क़िस्में हैं और एक-दूसरे से बिल्कुल अलग और मुमताज़। फिर उनके चेहरों के ख़द्दो-ख़ाल, जिस्मानी साख़्त और क़द व क़ामत में ऐसा फ़र्क़ रख दिया गया है कि एक-एक मुल्क का इंसान अलग से पहचान लिया जाता है। यानी बावजूद इस बात के कि एक इंसान दूसरे इंसान से नहीं मिलता, यहाँ तक कि एक भाई दूसरे भाई से मुख़्तलिफ़ है लेकिन अल्लाह की क़ुदरत का कमाल है कि फिर भी किसी एक ही मुल्क के बाशिन्दे, दूसरे मुल्क के बाशिन्दों से मुमताज़ होते हैं। (तफ़सीर मस्जिदे नबवी, पेज 1129)

आप सल्ल० ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को क़र्ज़ अदा करने की दुआ सिखाई

सोते वक़्त नीचे लिखी दुआ पढ़ना मसनून है, लिहाज़ा अपने मुताल्लिक़ीन और मुताल्लिक़ात को यह दुआ सिखा दीजिए।

नबी करीम सल्ल० ने अपनी साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को यह दुआ पढ़ने की ताकीद फ़रमाई थी :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ط رَبَّنَا وَ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، مُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْفُرْقَانِ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ط اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ ط اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَّاَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ ط وَاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ ط وَاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُوْنَكَ شَيْءٌ ط اِقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَاَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ ط

"ऐ अल्लाह! ऐ सातों आसमानों के और अर्शे अज़ीम के रब! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब! ऐ तौरात व इन्जील और क़ुरआन के उतारनेवाले! ऐ दानों और गुठलियों के उगानेवाले! तेरे सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं, मैं तेरी पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से कि उसकी चोटी तेरे हाथ में है,— तू अव्वल है कि तुझसे पहले कुछ न था, तू ही आख़िर है कि तेरे बाद कुछ नहीं, तू ज़ाहिर है कि तुझसे ऊँची कोई चीज़ नहीं, तू बातिन है कि तुझसे छुपी कोई चीज़ नहीं। हमारे क़र्ज़ अदा करा दे और हमें फ़क़ीरी से ग़िना दे।"

(सहीह मुस्लिम, तफ़्सीर मस्जिदे नबवी, पेज 1532)

हज़रत अबू सालेह रह० अपने मुताल्लिक़ीन को यह दुआ सिखाते और फ़रमाते, सोते वक़्त दाहनी करवट पर लेटकर यह दुआ पढ़ लिया करो। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 268)

नोट : दुआ के अल्फ़ाज़ में रिवायात का फ़र्क़ है, मुलाहिज़ा कीजिए मुस्लिम शरीफ़, इसलिए ज़्यादा हैरानी में न पड़ें। और अपने बच्चों को भी मज़्कूरा दुआ पढ़ने की ताकीद कीजिए।

बेहतरीन हदिया सलाम है

हज़रत अबुल-बख़्तरी रह० कहते हैं कि हज़रत अशअस बिन क़ैस और हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बुजैली रज़ि० हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० से मिलने आए और शहर मदयन के एक किनारे में उनकी झुग्गी के अन्दर गए। अन्दर जाकर उन्हें सलाम किया और यह दुआइया कलिमात कहे : "حَيَّاكَ اللّٰهُ" अल्लाह आपको ज़िंदा रखे। फिर उन दोनों

ने पूछा, क्या आप ही सलमान फ़ारसी हैं? हज़रत सलमान ने कहा, जी हाँ! उन दोनों हज़रात ने कहा, क्या आप सल्ल० के साथी हैं? उन्होंने कहा, मालूम नहीं। इस पर उन दोनों हज़रात को शक हो गया और उन्होंने कहा, शायद यह वह सलमान फ़ारसी नहीं हैं जिनसे हम मिलना चाहते हैं। हज़रत सलमान रज़ि० ने उन दोनों से कहा, मैं ही तुम्हारा वह मत्लूबा आदमी हूँ जिससे तुम मिलना चाहते हो। मैंने हुज़ूर सल्ल० को देखा है और उनकी मज्लिस में बैठा हूँ, लेकिन हुज़ूर सल्ल० का साथी वह है जो हुज़ूर सल्ल० के साथ जन्नत में चला जाए (यानी उसका ईमान पर ख़ात्मा हो जाए और मुझे अपने ख़ात्मे के बारे में पता नहीं है)। आप लोग किस ज़रूरत के लिए मेरे पास आए हैं? उन दोनों ने कहा, "मुल्क शाम में आपके एक भाई हैं हम उनके पास से आपके पास आए हैं"। हज़रत सलमान रज़ि० ने पूछा कि वह कौन हैं? उन दोनों ने कहा, "वह हज़रत अबू दरदा रज़ि० हैं।" हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, उन्होंने जो हदिया तुम दोनों के साथ भेजा है वह कहाँ है? उन दोनों ने कहा, उन्होंने हमारे साथ कोई हदिया नहीं भेजा। हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, अल्लाह से डरो और जो अमानत लाए हो वह मुझे दे दो। आज तक जो भी उनके पास से मेरे पास आया है वह अपने साथ उनकी तरफ़ से हदिया ज़रूर लाया है। उन दोनों ने कहा, आप हम पर कोई मुक़द्दिमा न बनाएँ, हमारे पास हर तरह का माल व सामान है आप उनमें से जो चाहें ले लें। हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, मैं तुम्हारा माल या सामान लेना नहीं चाहता, मैं तो वह हदिया लेना चाहता हूँ जो उन्होंने तुम दोनों के साथ भेजा है। उन दोनों ने कहा, अल्लाह की क़सम! उन्होंने हमारे साथ कुछ नहीं भेजा है, बस हमसे इतना कहा था कि तुम लोगों में एक साहब (ऐसे क़ाबिले एहतिराम) रहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० जब उनसे तन्हाई में बात किया करते थे तो किसी और को उनके साथ न बुलाते थे, जब तुम दोनों उनके पास जाओ तो उन्हें मेरी तरफ़ से सलाम कह देना। हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, मैं इसके अलावा और कौन-सा हदिया तुम दोनों से चाहता था? और कौन-सा हदिया सलाम से अफ़ज़ल हो सकता है? यह अल्लाह की तरफ़ से एक बाबरकत और पाकीज़ा सलाम है।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 628)

जिनके दिल ख़्वाहिशों के फेर में रहते हैं उनकी अक़्लों पर पर्दे पड़ जाते हैं

हज़रत दाऊद अलैहि० पर वह्य आई कि अपने साथियों को होशियार कर दो कि वे अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों से बाज़ रहें। जिनके दिल ख़्वाहिशों के फेर में रहते हैं, मैं उनकी अक़्लों पर पर्दे डाल देता हूँ। जब कोई बन्दा शहवत में अंधा हो जाता है तो सबसे हल्की सज़ा मैं उसे यह देता हूँ कि अपनी इताअत से उसे महरूम कर देता हूँ।

मुस्नद अहमद में है, मुझे अपनी उम्मत पर दो चीज़ों का बहुत ही ख़ौफ़ है – एक तो यह कि लोग झूट, बनावे और शहवत के पीछे पड़ जाएंगे और नमाज़ों को छोड़ बैठेंगे और दूसरे यह कि मुनाफ़िक़ लोग दुनिया दिखावे को क़ुरआन के आमिल बनकर सच्चे मोमिनों से लड़ें-झगड़ेंगे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 309)

शबे-मेराज में आप सल्ल० ने एक अजीब तस्बीह आसमानों में सुनी

तबरानी में मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० को मक़ामे इबराहीम और ज़मज़म के दर्मियान से जिबरील अलैहि० व मीकाईल अलैहि० मस्जिद अक़्सा तक शबे मेराज में ले गए। जिबरील अलैहि० आप सल्ल० के दाएँ थे और मीकाईल अलैहि० बाएँ। आपको सातवें आसमान तक ले जाया गया। वहाँ से जब आप लौटे तो आप फ़रमाते हैं कि जब मैंने बुलन्द आसमानों में बहुत-सी तस्बीहों के साथ यह तस्बीह सुनी,

سَبَّحَتِ السَّمٰوٰتُ الْعُلٰى مِنْ ذِى الْمَهَابَةِ مُشْفِقَاتٍ الذُّوِى الْعُلُوِّ بِمَا عَلَا
سُبْحَانَ الْعَلِيِّ الْاَعْلٰى . سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى

"मख़्लूक़ में से हर चीज़ उसकी पाकीज़गी और तारीफ़ बयान करती है, लेकिन ऐ लोगो! तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते इसलिए कि वह तुम्हारी ज़बान में नहीं। हैवानात, नबातात, जमादात सब उसके तस्बीह- ख़्वाँ हैं।"

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 202)

खाना भी ज़िक्र करता है

इब्ने मसऊद रज़ि० से सहीह बुख़ारी में साबित है कि खाना खाने में खाने की तस्बीह हम सुनते रहते हैं। हज़रत अबू ज़र रज़ि० वाली हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० ने अपनी मुट्ठी में चन्द कंकरियाँ लीं। मैंने आप सल्ल० से सुना कि वह शहद की मक्खियों की भिंभिनाहट की तरह तस्बीहे ख़ुदा कर रही थीं। इसी तरह हज़रत अबू बक्र रज़ि० के हाथ में और हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत उसमान रज़ि० के हाथ में भी। यह हदीस सहीह में और मुस्नदों में मशहूर है। कुछ लोगों को हुज़ूर सल्ल० ने अपनी ऊँटनियों और जानवरों पर सवार खड़े हुए देखकर फ़रमाया कि सवारी सलामती के साथ लो और फिर अच्छाई से छोड़ दिया करो, रास्तों और बाज़ारों में लोगों से बातें करने की कुर्सियाँ अपनी सवारियाँ न बना लिया करो, सुनो! बहुत-सी सवारियाँ अपने सवारों से भी ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करने वाली और उनसे अफ़ज़ल होती हैं। (मुस्नद अहमद)

सुनन नसई में है कि हुज़ूर सल्ल० ने मेंढक के मार डालने को मना फ़रमाया और फ़रमाया इसका बोलना तस्बीहे-ख़ुदा है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 202)

शहद की मक्खियों को ख़ुदा तआला की तरफ़ से एक अजीब बात समझाई गई है

शहद की मक्खियों को ख़ुदा तआला की जानिब से यह बात समझाई गई है कि वह पहाड़ों में, दरख़्तों में और छतों में शहद के छत्ते बनाएँ। इस ज़ईफ़ मख़लूक़ के इस घर को देखिए कितना मज़बूत, कैसा ख़ूबसूरत और कैसी कुछ कारीगरी का होता है। फिर उसे हिदायत की और उसके लिए मुक़द्दर कर दिया कि यह फलों के, फूलों के और घास-पात के रस चूसती फिरे और जहाँ चाहे जाए आए लेकिन वापस लौटते वक़्त सीधी अपने छत्ते को पहुंच जाए। चाहे बुलन्द पहाड़ की चोटी हो, चाहे बियाबान के दरख़्त हों, चाहे आबादी के बुलन्द मकानात और वीराने के सुनसान खण्डर हों। यह न रास्ता भूले, न भटकती फिरे। चाहे कितनी ही दूर निकल जाए, लौटकर अपने छत्ते में अपने बच्चों,

अण्डों और शहद में पहुंच जाए। अपने परों से मोम बनाए, अपने मुंह से शहद जमा करे और दूसरी जगह से बचे।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 128)

हवा के सिलसिले में ख़ुदा का निज़ाम पढ़ लीजिए

1. हवा चलती है, वह आसमान से पानी उठाती है और बादलों को पुर कर देती है।
2. एक हवा होती है जो ज़मीन में पैदावार की क़ुव्वत पैदा करती है।
3. एक हवा होती है जो बादलों को इधर-उधर से उठाती है।
4. एक हवा होती है जो उन्हें जमा करके तह-ब-तह कर देती है।
5. एक हवा होती है जो उन्हें पानी से बोझल कर देती है।
6. एक हवा होती है जो दरख़्तों को फलदार होने के क़ाबिल कर देती है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 92)

हज़रत दाऊद अलैहि० ने अल्लाह तआला से दरयाफ़्त किया कि मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ?

हज़रत दाऊद अलैहि० ने ख़ुदा तआला से दरयाफ़्त किया कि मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ? शुक्र करना ख़ुद भी तो तेरी एक नेमत है। जवाब मिला कि दाऊद! अब तू शुक्र अदा कर चुका जबकि तूने यह जान लिया और इसका इक़रार कर लिया कि तू मेरी नेमतों के शुक्र की अदाएगी से क़ासिर है।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह ही के लिए तो हम्द है, जिसकी बेशुमार नेमतों में से एक नेमत का शुक्र भी बग़ैर एक नई नेमत के हम अदा नहीं कर सकते कि उस नई नेमत पर फिर एक शुक्र वाजिब हो जाता है, फिर उस नेमत की शुक्रगुज़ारी की अदाएगी की तौफ़ीक़ पर फिर नेमत मिली जिसका शुक्रिया वाजिब हुआ। एक शायर ने यही मज़्मून अपने शेरों में बाँधा है कि :

रोंगटे-रोंगटे पर ज़बान हो तो भी तेरी एक नेमत का शुक्र अदा नहीं

हो सकता। तेरे एहसानात और इनामात बेशुमार हैं।

(तफ़सीरः इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 78)

क़ियामत के दिन इन्सान के तीन दीवान निकलेंगे

बज़्ज़ार में आप सल्ल० का फ़रमान है कि क़यामत के दिन इन्सान के तीन दीवान निकलेंगे, एक में नेकियाँ लिखी हुई होंगी, दूसरे में गुनाह होंगे, तीसरे में ख़ुदा की नेमतें होंगी। अल्लाह तआला अपनी नेमतों में से सबसे छोटी नेमत से फ़रमाएगा कि उठ और अपना मुआवज़ा उसके नेक आमाल से ले ले। उससे उसके सारे ही नेक अमल ख़त्म हो जाएंगे, फिर भी वह यकसू होकर कहेगी कि बारी तआला मेरी पूरी क़ीमत वुसूल नहीं हुई। ख़्याल कीजिए अभी गुनाहों का दीवान यूँ ही अलग-थलग रखा हुआ है और तमाम नेमतों का दीवान भी यूँ ही रखा हुआ है। अगर बन्दे पर ख़ुदा का इरादा रहम व करम का हुआ तो अब वह उसकी नेकियाँ बढ़ा देगा और उसके गुनाहों से तजावुज़ कर जाएगा और उससे फ़रमा देगा कि मैंने अपनी नेमतें तुझे बग़ैर बदले के बख़्श दीं।

(तफ़सीरः इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 78)

ऐ अल्लाह! रोंगटे-रोंगटे पर ज़बान हो तो भी तेरी एक नेमत का शुक्र अदा नहीं हो सकता

अल्लाह की तरह-तरह की बेशुमार नेमतों को देखो। आसमान को उसने एक महफ़ूज़ छत बना रखा है, ज़मीन को बेहतरीन फ़र्श बना रखा है, आसमान से बारिश बरसाकर ज़मीन से मज़े-मज़े के फल, खेतियाँ, बाग़ात तैयार कर देता है। उसी के हुक्म से कश्तियाँ पानी के ऊपर तैरती फिरती हैं कि तुम्हें एक किनारे से दूसरे किनारे और एक मुल्क से दूसरे मुल्क पहुंचाएँ। तुम वहाँ का माल यहाँ, यहाँ का माल वहाँ ले जाओ, नफ़ा हासिल करो, तजर्बा बढ़ाओ। नहरें भी उसी ने तुम्हारे काम में लगा रखी हैं। तुम उनका पानी पियो, पिलाओ, उनसे खेतियाँ करो, नहाओ-धोओ और तरह-तरह के फ़ायदे हासिल करो। दाइमन चलते-फिरते

और कभी न थकते सूरज-चाँद भी तुम्हारे फ़ायदे के कामों में मशग़ूल हैं। मुक़र्ररा चाल पर मुक़र्ररा जगह पर गर्दिश में लगे हुए हैं, न उनमें टकराव है, न आगे-पीछे। दिन-रात उन्हीं के आने-जाने से पै-दर-पै आते-जाते रहते हैं। सितारे उसी के हुक्म के मातहत हैं। वह रब्बुल-आलमीन बाबरकत है, कभी दिनों को बड़ा कर देता है कभी रातों को बढ़ा देता है। हर चीज़ अपने काम में सर झुकाए मशग़ूल है। वह ख़ुदा अज़ीज़ और ग़फ़्फ़ार है, तुम्हारी ज़रूरत की तमाम चीज़ें उसने तुम्हारे लिए मुहैया कर दी हैं। तुम अपने हाल व क़ाल से जिन-जिन चीज़ों के मुहताज थे उसने सब कुछ तुम्हें दे दी हैं, माँगने पर भी वह देता है और बे-माँगे भी। उसका हाथ नहीं रुकता, तो भला रब की तमाम नेमतों का शुक्रिया तुम क्या अदा करोगे? तुमसे तो उनकी पूरी गिनती भी मुहाल है। तलक़ बिन हबीब रह० फ़रमाते हैं कि ख़ुदा का हक़ इससे बहुत भारी है कि बन्दे उसे अदा कर सकें और ख़ुदा की नेमतें इससे बहुत ज़्यादा हैं कि बन्दे उनकी गिनती कर सकें। लोगो! सुबह व शाम तौबा, इस्तिग़फ़ार करते रहो। सहीह बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाया करते थे कि ख़ुदाया! तेरे ही लिए सब हम्द व सना सज़ावार है। हमारी सनाएँ नाकाफ़ी हैं, पूरी और बेपरवाह करने वाली नहीं। ख़ुदा तू माफ़ फ़रमा।

रोंगटे-रोंगटे पर ज़बान हो तो भी तेरी एक नेमत का शुक्र पूरा अदा नहीं हो सकता, तेरे एहसानात और इनामात बेशुमार हैं।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 77)

अब्दुल्लाह बिन सलाम मक्का मुकर्रमा ईद मनाने गए और अल्लाह ने इस्लाम दे दिया

हदीस में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० ने उलमा-ए-यहूद से कहा कि मेरा इरादा है कि अपने बाप इबराहीम अलैहि० व इस्माईल अलैहि० की मस्जिद में जाकर ईद मनाएँ। मक्का मुकर्रमा पहुंचे। आँहज़रत सल्ल० यहीं थे। ये लोग जब हज से वापस हुए तो आप

सल्ल० से मुलाक़ात हुई। उस वक़्त आप सल्ल० एक मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, और लोग भी आप सल्ल० के पास थे, ये भी अपने साथियों के साथ खड़े हो गए। आप सल्ल० ने उनकी तरफ़ देखकर पूछा कि आप ही अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं? कहा, हाँ। फ़रमाया, क़रीब आओ। जब क़रीब गए तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम मेरा ज़िक्र तौरात में नहीं पाते? उन्होंने कहा, आप ख़ुदा तआला के औसाफ़ मेरे सामने बयान फ़रमाइए। उसी वक़्त हज़रत जिबरील अलैहि० आए, आप सल्ल० के सामने खड़े हो गए और फ़रमाया कि कहो "कुलहु वल्लाहु अहद। अल्लाहुस्समद ----।" (सूरह इख़्लास) आप सल्ल० ने पूरी सूरह पढ़ कर सुनाई। इब्ने सलाम ने उसी वक़्त कलिमा पढ़ लिया और मुसलमान हो गए। इसके बाद आप मदीना वापस चले आए, लेकिन अपने इस्लाम को छुपाए रहे। जब हुज़ूर सल्ल० हिजरत करके मदीना पहुंचे, उस वक़्त अब्दुल्लाह बिन सलाम खजूर के एक दरख़्त पर चढ़े हुए खजूरें उतार रहे थे। जब आप रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० के आने की ख़बर पहुंची, तो उसी वक़्त वे दरख़्त से कूद पड़े। माँ कहने लगीं कि अगर (हज़रत) मूसा अलैहि० भी आ जाते तो तुम दरख़्त से न कूदते। क्या बात है? जवाब दिया कि अम्मा जी (हज़रत) मूसा अलैहि० की नुबूव्वत से भी ज़्यादा ख़ुशी मुझे ख़ातिमुल-मुरसलीन सल्ल० की यहाँ तशरीफ़ आवरी से हुई है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 54)

दाई (इस्लाम की तरफ़ बुलानेवाले) की हयात इस्लाम की हयात है, और दाई की मौत भी इस्लाम की मौत है

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि गुज़िश्ता ज़माने में एक बादशाह था। उसके यहाँ जादूगर था। जब जादूगर बूढ़ा हुआ तो उसने बादशाह से कहा कि अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी मौत का वक़्त क़रीब आ रहा है, मुझे किसी बच्चे को सौंप दो तो मैं उसे जादू सिखा दूँ। चुनांचे एक ज़हीन लड़के को वह तालीम देने लगा।

लड़का उसके पास जाता तो रास्ते में एक राहिब का घर पड़ता जहाँ वह इबादत में और कभी वाअ्ज़ में मशग़ूल होता। यह लड़का भी खड़ा हो जाता और उसके इबादत के तरीक़े को देखता और वाअ्ज़ सुनता। आते-जाते यहाँ रुक जाया करता था। जादूगर भी मारता और माँ-बाप भी, क्योंकि वहाँ भी देर में पहुंचता और यहाँ भी देर में आता। एक दिन उस बच्चे ने राहिब के सामने अपनी यह शिकायत बयान की। राहिब ने कहा कि जब जादूगर तुझसे पूछे कि क्यों देर हो गई तो कह देना कि घरवालों ने रोक लिया था और घरवाले बिगड़ें तो कह देना कि आज जादूगर ने रोक लिया था। यूँ ही एक ज़माना गुज़र गया कि एक तरफ़ तो वह जादू सीखता था और दूसरी जानिब कलामुल्लाह और दीन सीखता था। एक दिन वह देखता क्या है कि रास्ते में एक ज़बरदस्त हैबतनाक जानवर पड़ा हुआ है, लोगों की आमद-व-रफ़्त बन्द कर रखी है। इधर वाले उधर और उधर वाले इधर नहीं आ जा सकते। सब लोग इधर-उधर हैरान व परेशान खड़े हैं। उसने अपने दिल में सोचा कि आज मौक़ा है कि मैं इम्तिहान कर लूँ कि राहिब का दीन ख़ुदा को पसन्द है या जादूगर का। उसने एक पत्थर उठाया और यह कहकर उस पर फेंका कि ख़ुदाया! अगर तेरे नज़दीक राहिब का दीन और उसकी तालीम जादूगर के अम्र से ज़्यादा महबूब है तो तू इस जानवर को इस पत्थर से हलाक कर दे, ताकि लोगों को इस बला से नजात मिल जाए। पत्थर के लगते ही वह जानवर मर गया और लोगों का आना-जाना शुरू हो गया। फिर जाकर राहिब को ख़बर दी तो उसने कहा, प्यारे बच्चे! तू मुझसे अफ़ज़ल है, अब ख़ुदा की तरफ़ से तेरी आज़माइश होगी। अगर ऐसा हो तो तू किसी को मेरी ख़बर न करना। अब उस बच्चे के पास हाजतमंद लोगों का ताँता लग गया। और उसकी दुआ से मादरज़ाद अंधे, कोढ़ी, जुज़ामी और हर क़िस्म के बीमार अच्छे होने लगे। बादशाह के एक नाबीना वज़ीर के कान में भी यह आवाज़ पड़ी, वह बड़े तोहफ़े-तहाइफ़ लेकर हाज़िर हुआ और कहने लगा कि अगर तू मुझे शिफ़ा दे तो यह सब मैं तुझे दे दूँगा। उसने कहा कि शिफ़ा मेरे हाथ में नहीं, मैं किसी को शिफ़ा नहीं दे सकता, शिफ़ा देने वाला तो अल्लाह वहदहू ला शरी-क-लहू है, अगर तू उस पर ईमान लाने

का वादा करे तो मैं उससे दुआ करूँ। उसने इक़रार किया। बच्चे ने उसके लिए दुआ की, अल्लाह तआला ने उसे शिफ़ा दे दी। वह बादशाह के दरबार में आया और जिस तरह अंधा होने से पहले काम करता था करने लगा और आँखें बिल्कुल रौशन हो गई थीं। बादशाह ने मुतअज्जिब होकर पूछा कि तुझे आँखें किसने दीं? उसने कहा, मेरे रब ने। बादशाह ने कहा, हाँ यानी मैंने। वज़ीर ने कहा, नहीं! नहीं! मेरा रब और तेरा रब अल्लाह है। बादशाह ने कहा, अच्छा तो क्या मेरे सिवा तेरा कोई और रब भी है? वज़ीर ने कहा, हाँ मेरा और तेरा रब अल्लाह तआला है। अब उसने उसे मारपीट शुरू कर दी और तरह-तरह की तकलीफ़ें और ईज़ाएँ पहुंचाने लगा और पूछने लगा, तुझे यह तालीम किसने दी? आख़िरकार उसने बता दिया कि उस बच्चे के हाथ पर मैंने इस्लाम क़बूल कर लिया है। बादशाह ने उसे बुलवाया और कहा, अब तो तुम जादू में ख़ूब कामिल हो गए हो कि अंधों को देखता और बीमारों को तंदरुस्त करने लग गए हो। उसने कहा, ग़लत है, न मैं किसी को शिफ़ा दे सकता हूँ, न जादू कर सकता हूँ। शिफ़ा तो रब के हाथ में है। कहने लगा, हाँ यानी मेरे हाथ में है क्योंकि रब तो मैं ही हूँ। उसने कहा, हरगिज़ नहीं। कहा, फिर क्या तू मेरे सिवा किसी और को रब मानता है? तो वह कहने लगा, हाँ मेरा और तेरा रब अल्लाह तआला है। उसने अब उसे भी तरह-तरह की सज़ाएँ देनी शुरू कर दीं यहाँ तक कि राहिब का पता लगा लिया। राहिब को बुलाकर उससे कहा कि तू इस्लाम को छोड़ दे और उस दीन से पलट जा। उसने इन्कार किया, तो उस बादशाह ने आरे से उसे चीर दिया और ठीक दो टुकड़े करके फेंक दिया। फिर उस नौजवान से कहा कि तू भी दीन से फिर जा, उसने भी इन्कार किया तो बादशाह ने हुक्म दिया कि हमारे सिपाही इसे फ़ुलाँ-फ़ुलाँ पहाड़ पर ले जाएँ और उसकी बुलन्द चोटी पर पहुंचकर फिर इससे इसके दीन छोड़ देने को कहें, अगर मान ले तो अच्छा, वरना वहीं से इसे लुढ़का दें। चुनांचे वे लोग उसे ले गए, जब वहाँ से धक्का देना चाहा तो उसने अल्लाह तबारक व तआला से दुआ की कि ख़ुदाया! जिस तरह चाह मुझे इनसे नजात दे। इस दुआ के साथ ही पहाड़ हिला और वे सब सिपाही लुढ़क गए, सिर्फ़ वह बच्चा

ही बचा रहा। वहाँ से वह उतरा और हंसी-ख़ुशी फिर उस ज़ालिम बादशाह के पास आ गया। बादशाह ने कहा, यह क्या हुआ? मेरे सिपाही कहाँ हैं? फ़रमाया, मेरे ख़ुदा ने उन्हें हलाक कर दिया और मुझे उनसे बचा लिया। उसने कुछ और सिपाही बुलवाए और उनसे कहा कि इसे कश्ती में बिठाकर ले जाओ, और बीचों-बीच समुन्द्र में डुबोकर चले आओ। वे उसे लेकर चले और बीच में पहुंचकर जब समुन्द्र में फेंकना चाहा तो उसने फिर वही दुआ की कि बारे-इलाहा! जिस तरह चाह मुझे इनसे बचा! मौज उठी और वे सिपाही सारे के सारे समुन्द्र में डूब गए सिर्फ़ वह बच्चा ही बाक़ी रह गया। वे फिर बादशाह के पास आया और कहा, मेरे रब ने मुझे उनसे भी बचा लिया। ऐ बादशाह! तू चाहे तमामतर तदबीरें कर डाल लेकिन मुझे हलाक नहीं कर सकता। हाँ, जिस तरह मैं कहूँ, उस तरह अगर करे तो अलबत्ता मेरी जान निकल जाएगी। उसने कहा, क्या करूँ? फ़रमाया, तमाम लोगों को एक मैदान में जमा कर, फिर खजूर के तने पर सूली चढ़ा और मेरे तरकश में से एक तीर निकाल कर मेरी कमान पर चढ़ा और "बिस्मिल्लाहि रब्बि हाज़ल गुलाम" यानी उस अल्लाह तआला के नाम से जो इस बच्चे का रब है, कहकर वह तीर मेरी तरफ़ फेंक, वह मुझे लगेगा और उससे मैं मरूँगा। चुनांचे बादशाह ने यही किया। तीर बच्चे की कनपटी में लगा, उसने अपना हाथ उस जगह रख लिया और शहीद हो गया। उसके इस तरह शहीद होते ही लोगों को उसके दीन की सच्चाई का यक़ीन आ गया। चारों तरफ़ से यह आवाज़ें उठने लगीं कि हम सब उस बच्चे के रब पर ईमान ला चुके। यह हाल देखकर बादशाह के साथी बहुत घबराए और बादशाह से कहने लगे, उस लड़के की तर्कीब हम तो समझे ही नहीं, देखिए! उसका यह असर पड़ा कि ये तमाम लोग उसके मज़हब पर हो गए। हमने तो इसी लिए उसे क़त्ल किया था कि कहीं यह मज़हब फैल न पड़े, लेकिन वह डर तो सामने आ ही गया और सब मुसलमान हो गए। बादशाह ने कहा कि अच्छा यह करो कि तमाम मुहल्लों और रास्तों में ख़नदकें खुदवाओ और उसमें लकड़ियाँ भरो, और उनमें आग लगा दो, जो उस दीन से फिर जाए उसे छोड़ दो और जो न माने उसे उस आग में डाल दो। उन मुसलमानों

ने सब्र व सहार के साथ आग में जलना मनज़ूर कर लिया और उसमें कूद-कूद कर गिरने लगे। अलबत्ता एक औरत जिसकी गोद में दूध पीता छोटा-सा बच्चा था वह ज़रा झिझकी तो उस बच्चे को ख़ुदा तआला ने बोलने की ताक़त दी, उसने कहा, अम्मा! क्या कर रही हो? तुम तो हक़ पर हो, सब्र करो और इसमें कूद पड़ो। (यह हदीस मुस्नद अहमद में भी है और सहीह मुस्लिम के आख़िर में भी है और नसई में भी क़दरे इख़्तिसार के साथ है।)

नोट : हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में उस बच्चे को उसकी क़ब्र से निकाला गया था, उसकी अंगुली उसी तरह उसकी कनपटी पर रखी हुई थी, जिस तरह बवक़्ते-शहादत थी।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 531)

हज़रत अनस रज़ि० हर रात हुज़ूर सल्ल० को ख़्वाब में देखते थे

हज़रत मुसन्ना बिन सईद ज़ारेअ़ रह० कहते हैं, मैंने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० को यह फ़रमाते हुए सुना कि मैं हर रात अपने हबीब सल्ल० को ख़्वाब में देखता हूँ और यह फ़रमाकर रो पड़े।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 448)

जन्नत और जहन्नम की आपस में गुफ़्तुगू

सहीहैन में है रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि जन्नत व दोज़ख़ में गुफ़्तुगू हुई। जन्नत ने कहा, मुझमें तो सिर्फ़ ज़ईफ़ और कमज़ोर लोग ही दाख़िल होते हैं और जहन्नम ने कहा, मैं तकब्बुर और तजब्बुर करने वालों के साथ मख़्सूस की गई हूँ। इस पर अल्लाह तआला ने जन्नत से फ़रमाया कि तू मेरी रहमत है जिसे मैं चाहूँ तुझसे नवाज़ूँगा और जहन्नम से फ़रमाया, तू मेरा अज़ाब है, जिसे मैं चाहूँ तेरे अज़ाबों से इंतिक़ाम लूँगा। तुम दोनों पुर हो जाओगी, जन्नत में तो बराबर ज़्यादती रहेगी यहाँ

तक कि उसके लिए अल्लाह तआला एक नई मख़्लूक़ पैदा करेगा और उसे उसमें बसाएगा और जहन्नम भी बराबर ज़्यादती तलब करती रहेगी यहाँ तक कि उस पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपना क़दम रख देगा, तब वह कहने लगेगी, तेरी इज़्ज़त की क़सम! अब बस है, बस है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 2, पेज 519)

एक आदमी का अजीब सदक़ा

सहीहैन हदीस में आया है कि एक शख़्स ने क़स्द किया कि आज रात मैं सदक़ा दूँगा, वह घर से लेकर निकला और चुपके से एक औरत को देकर चला आया। सुबह लोगों में ये बातें होने लगीं कि आज रात कोई शख़्स एक बदकार को कोई ख़ैरात दे गया। उसने भी सुना और ख़ुदा तआला का शुक्र अदा किया। फिर अपने जी में कहा कि आज रात फिर सदक़ा करूँगा। लेकर चला और एक शख़्स की मुट्ठी में रखकर चला आया। सुबह सुनता है कि लोगों में चर्चा हो रही है कि आज रात एक मालदार को कोई सदक़ा दे गया। उसने फिर ख़ुदा तआला की हम्द की और इरादा किया कि आज रात को तीसरा सदक़ा दूँगा, दे आया। दिन को मालूम हुआ कि वह चोर था। तो कहने लगा कि ख़ुदाया! तेरी तारीफ़ है, ज़ानिया औरत को दिए जाने पर भी, मालदार शख़्स को दिए जाने पर भी और चोर को दिए जाने पर भी। ख़्वाब में देखता है कि फ़रिश्ता आया और कह रहा है कि तेरे तीनों सदक़े क़बूल हो गए। शायद बदकार औरत माल पाकर अपनी हरामकारी से रुक जाए, और शायद मालदार को इबरत हासिल हो और वह भी सदक़े की आदत डाल ले और शायद चोर माल पाकर चोरी से बाज़ रहे।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 368)

आपको कोई तकलीफ़ पहँचाए, सब्र कर लीजिए, अल्लाह आपके दर्जे बढ़ा देगा

एक क़ुरैशी ने एक अंसारी को ज़ोर से धक्का दे दिया जिससे उसके आगे के दाँत टूट गए। हज़रत मुआविया रज़ि० के पास मुक़द्दिमा गया

और जब वह बहुत सर हो गया तो आप रज़ि० ने फ़रमाया, "अच्छा जा तुझे इख़्तियार है।" हज़रत अबू दरदा रज़ि० वहीं थे। फ़रमाने लगे कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना है कि जिस मुसलमान के जिस्म को कोई ईज़ा पहुंचाई जाए और वह सब्र कर ले, बदला न ले तो अल्लाह तआला उसके दर्जे बढ़ाता है और उसकी ख़ताएँ माफ़ फ़रमाता है। उस अंसारी ने यह सुनकर कहा, "क्या सचमुच आपने ख़ुद ही इसे हुज़ूर सल्ल० की ज़बानी सुना है?" आप रज़ि० ने फ़रमाया, "हाँ! मेरे इन कानों ने सुना है और मेरे दिल ने याद किया है।" उसने कहा, "फिर गवाह रहो कि मैंने अपने मुजरिम को माफ़ कर दिया।" हज़रत मुआविया रज़ि० यह सुनकर बहुत ख़ुश हुए और उसे इनाम दिया।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 761)

ख़ुदाया तू सलाम है और मैं इस्लाम हूँ

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन आमाल आएंगे। नमाज़ आकर कहेगी कि ख़ुदाया! मैं नमाज़ हूँ। अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि तू अच्छी चीज़ है। सदक़ा आएगा और कहेगा, परवरदिगार! मैं सदक़ा हूँ। जवाब मिलेगा, तू भी ख़ैर पर है। रोज़ा आकर कहेगा, मैं रोज़ा हूँ, अल्लाह तआला फ़रमाएगा, तू भी बेहतरी पर है। फिर इसी तरह और आमाल भी आते जाएंगे और सबको यही जवाब मिलता रहेगा। फिर इस्लाम आएगा और कहेगा, ख़ुदाया! तू सलाम है और मैं इस्लाम। अल्लाह तआला फ़रमाएगा, तू ख़ैर पर है, आज तेरे ही बाइस मैं पकडूँगा और तेरी ही वजह से मैं इनाम दूँगा।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, सफ़ा 430)

मुनाफ़िक़ीन के बारे में कुछ पढ़ लीजिए

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ج وَاِذَا قَامُوْا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا
كُسَالٰى لا يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا لا مُذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ق
لَا اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَا اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ط وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ○

बेशक मुनाफ़िक़ अल्लाह से चालबाज़ियाँ कर रहे हैं और वह उन्हें इस चालबाज़ी का बदला देने वाला है, और जब नमाज़ को खड़े होते हैं तो बड़ी काहिली की हालत में खड़े होते हैं, सिर्फ़ लोगों को दिखाते हैं और यादे-इलाही तो यूँ ही बरा-ए-नाम करते हैं। वे दर्मियान में ही मुअल्लक़ डगमगा रहे हैं, न पूरे इनकी तरफ़, न सहीह तौर पर उनकी तरफ़, और जिसे अल्लाह तआला गुमराही में डाल दे तो तू उसके लिए कोई राह नहीं पाएगा। (सूरह अन-निसा, आयत 142-143)

तशरीह : सूरह बक़रा के शुरू में भी आयत "युख़ादिऊनल्लाह" इस मज़्मून में गुज़र चुकी है। यहाँ भी यही बयान हो रहा है कि यह कम समझ मुनाफ़िक़ उस ख़ुदा के सामने चालें चलते हैं जो सीनों में छिपी हुई बातों और दिल के पोशीदा राज़ों से आगाह है। कमफ़हमी से यह ख़याल किए बैठे हैं कि जिस तरह उनका निफ़ाक़ दुनिया में चल गया और मुसलमानों में मिले-जुले रहे, इसी तरह अल्लाह तआला के पास भी यह मक्कारी चल जाएगी। चुनांचे क़ुरआन में है कि क़ियामत के दिन भी ये लोग ख़ुदा के सामने अपनी यकरंगी की क़समें खाएंगे जैसे यहाँ खाते हैं। लेकिन उस आलिमुल-ग़ैब के सामने ये नाकारा क़समें हरगिज़ कारआमद नहीं हो सकतीं। अल्लाह तआला भी इन्हें धोके में रख रहा है, वह ढील देता है, बढ़ोत्री देता है। ये फूलते हैं, ख़ुश होते हैं और अपने लिए उसे अच्छाई समझते हैं। क़ियामत में भी इनका यही हाल होगा, मुसलमानों के नूर के सहारे में होंगे, वे आगे निकल जाएंगे ये आवाज़ें देंगे कि ठहरो! हम भी तुम्हारी रौशनी में चलें। जवाब मिलेगा कि पीछे मुड़ जाओ और रौशनी तलाश कर लाओ। ये मुड़ेंगे, उधर हिजाब हाइल हो जाएगा। मुसलमानों की जानिब रहमत और उनकी तरफ़ ज़हमत। हदीस शरीफ़ में है, जो सुनाएगा अल्लाह उसे भी सुनाएगा। जो रियाकारी करेगा अल्लाह भी उसे दिखाएगा। एक और हदीस में है कि उन मुनाफ़िक़ों में वे भी होंगे कि बज़ाहिर लोगों के सामने अल्लाह तआला उनकी निस्बत फ़रमाएगा, इन्हें जन्नत में ले जाओ, फ़रिश्ते ले जाकर दोज़ख़ में डाल देंगे। अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे। फिर उन मुनाफ़िक़ों की

बदज़ौक़ी का बयान हो रहा है कि हिन्हें नमाज़ जैसी बेहतरीन इबादत भी मशग़ूली और दिलचस्पी से अदा करनी नसीब नहीं होती, क्योंकि नेक नीयती, हुस्ने-अमल, हक़ीक़ी ईमान, सच्चा यक़ीन उनमें है ही नहीं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० थके-हारे हुए बदन से कसमसा कर नमाज़ पढ़ना मकरूह जानते थे और फ़रमाते थे कि नमाज़ी को चाहिए कि ज़ौक़ व शौक़ से राज़ी-ख़ुशी पूरी रग़बत और इंतिहाई तवज्जोह के साथ नमाज़ में खड़ा हो और यक़ीन माने कि उसकी आवाज़ पर ख़ुदा तआला के कान हैं, उसकी तलब पूरी करने को ख़ुदा तैयार है।

यह तो हुई उन मुनाफ़िक़ों की ज़ाहिरी हालत कि जो थके-हारे, तंगदिली के साथ बतौर बेगार टालने के लिए नमाज़ के लिए आए! फिर अन्दरूनी हालत यह है कि इख़्लास से कोसों दूर हैं। रब से कोई तअल्लुक़ नहीं रखते, नमाज़ी मशहूर होने के लिए लोगों में अपने ईमान को ज़ाहिर करने के लिए नमाज़ पढ़ रहे हैं। भला उन सनम-आशना दिल वालों को नमाज़ में क्या मिलेगा? यही वजह है कि उन नमाज़ों में जिनमें लोग एक-दूसरे को कम देख सकें, ये ग़ैर हाज़िर रहते हैं। जैसे इशा की नमाज़ और फ़ज्र की नमाज़। बुख़ारी व मुस्लिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा बोझल नमाज़ मुनाफ़िक़ों पर इशा और फ़ज्र की है। अस्ल में अगर ये इन नमाज़ों के फ़ज़ाइल के दिल से क़ाइल होते तो घुटनों चलकर आना पड़ता, तो ये ज़रूर आ जाते। मैं तो इरादा कर रहा हूँ कि तकबीर कहलवा कर किसी को अपनी इमामत की जगह खड़ा करके नमाज़ शुरू कराकर कुछ लोगों से लकड़ियाँ उठवा कर उनके घरों में जाऊँ जो जमाअत में शामिल नहीं होते और लकड़ियाँ इनके घरों के इर्द-गिर्द लगाकर हुक्म दूँ कि आग लगा दो और इनके घरों को जला दो। एक रिवायत में है अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा, ख़ुदा की क़सम! अगर उन्हें एक चर्ब हड्डी या दो अच्छे खुर मिलने की उम्मीद हो तो दौड़े चले आएँ लेकिन आख़िरत की और ख़ुदा के सवाबों की उन्हें इतनी भी क़द्र नहीं, अगर बाल-बच्चों और औरतों का जो घरों में रहती हैं मुझे ख़्याल न होता तो क़तअन मैं उनके घर जला देता। अबू याला में है,

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं, जो शख़्स लोगों की मौजूदगी में तो नमाज़ को संवार कर ठहर-ठहर कर अदा करे लेकिन जब कोई न हो तो बुरी तरह नमाज़ पढ़ ले, यह वह है जिसने अपने रब की एहानत की। फिर फ़रमाया, ये लोग अल्लाह का ज़िक्र भी बहुत ही कम करते हैं, यानी नमाज़ में उनका दिल नहीं लगता। ये अपनी कही हुई बात समझते भी नहीं बल्कि ग़ाफ़िल दिल और बेपरवाह नफ़्स से नमाज़ पढ़ लेते हैं। आँहज़रत सल्ल० फ़रमाते हैं, यह नमाज़ मुनाफ़िक़ की है, यह नमाज़ मुनाफ़िक़ की है, यह नमाज़ मुनाफ़िक़ की है कि बैठा हुआ सूरज की तरफ़ देख रहा है, यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा और शैतान ने अपने दोनों सींग उसके इर्द-गिर्द लगा दिए तो यह खड़ा हुआ और जल्दी-जल्दी चार रकअतें पढ़ लीं जिनमें ख़ुदा का ज़िक्र बरा-ए-नाम ही किया।

(मुस्लिम वग़ैरह)

ये मुनाफ़िक़ मुतहय्यर शशदर व परेशान हाल हैं, ईमान व कुफ़्र के दर्मियान उनका दिल डावाँ-डोल हो रहा है। न तो साफ़ तौर से मुसलमानों के साथ ही हैं न बिल्कुल कुफ़्फ़ार के साथ। कभी नूरे-ईमान चमक उठा तो इस्लाम की सदाक़त करने लगे, कभी कुफ़्र की अंधेरियाँ ग़ालिब आ गईं तो ईमान से यकसू हो गए। न तो हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० की तरफ़ हैं, न यहूदियों की जानिब। रसूले मक़बूल सल्ल० का इरशाद है कि मुनाफ़िक़ की मिसाल ऐसी है जेसे दो रेवड़ के दर्मियान की बकरी कि कभी तो वह मैं-मैं करती इस रेवड़ की तरफ़ दौड़ती है कभी उस तरफ़। उसके नज़दीक अभी यह तै नहीं हुआ कि उसमें जाए या इसके पीछे लगे। एक रिवायत में है कि इस माअ्ना की हदीस हज़रत उबैद बिन उमैर रह० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की मौजूदगी में कुछ अल्फ़ाज़ के हेर-फेर से बयान की तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने अपने सुने हुए अल्फ़ाज़ दोहरा कर कहा, "यूँ नहीं' बल्कि अस्ल में हदीस यूँ है।" इस पर हज़रत उबैद रज़ि० नाराज़ हुए। (मुम्किन है एक बुज़ुर्ग ने एक तरह के अल्फ़ाज़ सुने हों दूसरे ने दूसरी क़िस्म के) इब्ने अबी हातिम में है, मोमिन, काफ़िर और मुनाफ़िक़ की मिसाल उन तीन शख़्सों जैसी है जो एक दरिया पर गए, एक तो किनारे ही खड़ा रह गया, दूसरा उतर कर

पार होकर मंज़िले-मक्सूद को पहुंच गया, तीसरा उतरा, जब बीचों-बीच पहुंचा तो इधर वाले ने पुकारना शुरू किया कि कहाँ हलाक होने चला, इधर आ, वापस चला आ। उधर वाले ने आवाज़ दी कि आ जाओ! नजात के साथ मंज़िले-मक़सूद पर मेरी तरह पहुंच जाओ, आधा रास्ता तै कर चुके हो। अब यह हैरान होकर कभी इधर देखता है कभी उधर नज़र डालता है। मुज़बज़ब है कि किधर जाऊँ किधर न जाऊँ? एक ज़बरदस्त मौज आई और बहाकर ले चली, ग़ोते खा-खाकर मर गया। पस पार हो जाने वाला तो मुसलमान है, किनारे खड़ा रह जाने वाला काफ़िर है और मौज में डूब जाने वाला मुनाफ़िक़ है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 654)

हज़रत आइशा रज़ि० का अजीब ख़्वाब और उसकी अजीब ताबीर

मुवत्ता इमाम मालिक में यह्या बिन सईद से रिवायत है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया :

"मैंने ख़्वाब में देखा कि तीन चाँद मेरे हुजरे में गिरे हैं, मैंने अपने ख़्वाब का तज़्किरा (अपने वालिद मुहतरम) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० से किया।"

तब्क़ात इब्ने सअ्द की रिवायत में है कि अबू बक्र रज़ि० ने पूछा : तुमने इस ख़्वाब की ताबीर क्या की है? उन्हों ने अर्ज़ किया : "मैंने अपने तौर पर यह ताबीर की है कि मेरे हाँ रसूलुल्लाह सल्ल० से औलाद पैदा होगी।"

यह सुनकर हज़रत अबू बक्र रज़ि० ख़ामोश रहे।

फिर जब रसूले अकरम सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया और आप सल्ल० हज़रत आइशा रज़ि० के हुजरे में दफ़न किए गए तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने (ख़्वाब की ताबीर के तौर पर) फ़रमाया :

"तुम्हारे एक चाँद यह हैं और बक़िया दो चाँदों से बेहतर हैं।"

(मुवत्ता इमाम मालिक, किताब जनाइज़, बाब माजा फ़ी दफ़्ने मय्यत, 1/232)

बाद में हज़रत अबू बक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० भी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० के हुजरे में दफ़न हुए।

सात बेटियों की बरकत से एक आदमी जहन्नम से बच गया, तारीख़ में एक दिलचस्प वाक़िआ लिखा है

तारीख़ में एक दिलचस्प वाक़िआ मिलता है, वह नीचे में दर्ज किया जाता है :

एक शख़्स के यहाँ सिर्फ़ बेटियाँ थीं। हर मर्तबा उसको उम्मीद होती कि अब तो बेटा पैदा होगा, मगर हर बार बेटी ही पैदा होती। इस तरह उसके यहाँ यके-बादे-दीगरे छः बेटियाँ हो गईं। उसकी बीवी के यहाँ फिर विलादत मुतवक़्क़ाअे थी। वह डर रहा था कि कहीं फिर लड़की पैदा न हो जाए। शैतान ने उसको वहकाया, चुनांचे उसने इरादा कर लिया कि अब भी लड़की पैदा हुई तो वह अपनी बीवी को तलाक़ दे देगा।

उसकी कजफ़हमी पर ग़ौर करें! भला इसमें बीवी का क्या क़ुसूर! रात को जब वह सोया तो उसने एक अजीब व ग़रीब ख़्वाब देखा। उसने देखा कि क़ियामत बरपा हो चुकी है, उसके गुनाह बहुत ज़्यादा हैं जिनके सबब उस पर जहन्नम वाजिब हो चुकी है, लिहाज़ा फ़रिश्तों ने उसको पकड़ा और जहन्नम की तरफ़ ले गए।

पहले दरवाज़े पर गए तो देखा कि उसकी एक बेटी वहाँ खड़ी थी जिसने उसे जहन्नम में जाने से रोक दिया। फ़रिश्ते उसे लेकर दूसरे दरवाज़े पर चले गए, वहाँ उसकी दूसरी बेटी खड़ी थी जो उसके लिए आड़ बन गई। अब वह तीसरे दरवाज़े पर उसे लेकर गए, वहाँ तीसरी लड़की खड़ी थी जो रुकावट बन गई। इस तरह फ़रिश्ते जिस दरवाज़े पर उसको लेकर जाते वहाँ उसकी एक बेटी खड़ी होती जो उसका दिफ़ाअ् करती और जहन्नम में जाने से रोक देती। ग़रज़ यह कि फ़रिश्ते उसे जहन्नम के छः दरवाज़ों पर लेकर गए, मगर हर दरवाज़े पर उसकी कोई न कोई बेटी रुकावट बनती चली गई। अब सातवाँ दरवाज़ा बाक़ी था। फ़रिश्ते उसको लेकर उस दरवाज़े की तरफ़ चल दिए। उस पर घबराहट

तारी हुई कि उस दरवाज़े पर मेरे लिए रुकावट कौन बनेगा। उसे मालूम हो गया कि जो नीयत उसने की थी ग़लत थी। वह शैतान के बहकावे में आ गया था। इंतिहाई परेशानी और ख़ौफ़ व दहशत के आलम में उसकी आँख खुल चुकी थी और उसने रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर अपने हाथों को बुलन्द किया और दुआ की : "ऐ अल्लाह मुझे सातवीं बेटी अता फ़रमा।"

इसलिए जिन लोगों का क़ज़ा व क़द्र पर ईमान है, उन्हें लड़कियों की पैदाइश पर रंजीदा ख़ातिर होने के बजाए खुश होना चाहिए। ईमान की कमज़ोरी के सबब जिन बद-अक़ीदा लोगों का यह तसव्वुर बन चुका है कि लड़कियों की पैदाइश का सबब उनकी बीवियाँ हैं, यह सरासर ग़लत है। इसमें बीवियों का या खुद उनका कोई अमल दख़ल नहीं। बल्कि मियाँ-बीवी तो सिर्फ़ एक ज़रिया हैं, पैदा करने वाली हस्ती तो सिर्फ़ अल्लाह वहदहू ला शरीकलहू है। वही जिसको चाहता है लड़का देता है, जिसको चाहता है लड़की देता है, जिसको चाहता है लड़के और लड़कियाँ मिलाकर देता है और जिसको चाहता है बाँझ बना देता है। ऐसी सूरत में हर मुसलमान पर वाजिब है कि अल्लाह की क़ज़ा व क़द्र पर राज़ी हो। अल्लाह तआला ने सूरह शूरा में इरशाद फ़रमाया है :

"आसमानों की और ज़मीन की सल्तनत अल्लाह तआला ही के लिए है वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहते है बेटे देता है, या फिर लड़के और लड़कियाँ मिला जुलाकर देता है, और जिसे चाहता है बाँझ कर देता है, वह बड़े इल्म वाला और कामिल क़ुदरत वाला है"। (सुनहरी किरणें, पेज 24)

बावन लाख दिरहम, फिर भी ज़कात वाजिब नहीं

एक मर्तबा सय्यदा असमा बिन्ते अबू बक्र रज़ि० खजूरों की गुठलियाँ सर पर उठाए हुए मदीना के अतराफ़ से शहर की तरफ़ जा रही थीं। अल्लाह के रसूल सल्ल० ऊँटनी पर सवार वहाँ से गुज़र रहे थे, वह उनकी साली भी थीं और फूफीज़ाद भाई ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि० की

बीवी भी। आप सल्ल० ने सारबान से कहा, "रुक जाओ, रुक जाओ, असमा को सवार कर लो।" आप सल्ल० ने असमा को ऊँटनी पर सवार होने की दावत दी। वह फ़रमाती हैं, "मैंने अपने ख़ाविन्द ज़ुबैर की ग़ैरत को याद किया और ऊँटनी पर सवार होने से माज़रत कर दी।"

(बुख़ारी, 5225, मुस्लिम, 2182)

सवाल यह पैदा होता है कि सय्यदा असमा रज़ि० ने ऊँटनी पर बैठने से इनकार क्यों किया, वह भी अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ सवारी पर बैठने से इन्कार? वह मुक़द्दस और पाकबाज़ हस्ती, ताहिर, मुतह्हिर, मासूम नबी सल्ल०। क्या ख़ाविन्द नाराज़ होता? हरगिज़ नहीं! यह कैसे मुम्किन है, मगर अस्ल में यह सय्यदा असमा रज़ि० की ग़ायत दर्जे की ख़ाविन्द की फ़रमाँबरदारी और उसके जज़्बात का एहतिराम था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ भी सवारी पर बैठने से माज़रत कर दी।

कुछ अर्से के बाद उनके वालिद मुहतरम अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने उनको घोड़ा और उसकी निगहदाश्त के लिए ख़ादिम अता किया।

सय्यदा असमा रज़ि० ने अपने ख़ाविन्द के साथ मुश्किल हालात में सब्र किया। तंगी और तरशी में गुज़ारा किया और उसका नतीजा यह था कि अल्लाह तआला ने उनको वाफ़िर मिक्दार में रिज़्क़ अता फ़रमाया और जब हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने वफ़ात पाई तो आप जानते हैं कि हज़रत असमा रज़ि० को तर्का में क्या मिला?

वह औरत जो खजूरों की गुठलियाँ इकट्ठी करके लाया करती थी, उसे बावन लाख (52,000,00) दिरहम तर्का में मिले। और यह हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने हराम की कमाई से या लोगों का माल छीन कर जमा नहीं किया और न लोगों को क़ुरबते-रसूल और हवारी-ए-रसूल होने का वसीला देकर इकट्ठा किया बल्कि उन्होंने तिजारत की और हलाल ज़राए से माल इकट्ठा किया।

यह भी कहा जाता है कि हज़रत असमा रज़ि० के ख़ाविन्द के पास एक हज़ार कारिन्दे थे जो उनके लिए काम करते और उनका हिस्सा उनको देते थे। इतना रिज़्क़, इतनी जायदाद और माल व दौलत के बावजूद उन पर कभी ज़कात फ़र्ज़ नहीं हुई, क्योंकि उन्होंने कभी माल व

दौलत को ज़ख़ीरा नहीं किया न उसके अंबार लगाए। हज़रत असमा रज़ि० के पास जब कुछ न था, फ़क्र व फ़ाक़ा था तो वह इस हाल में घबराई नहीं और वावेला नहीं किया और माल व दौलत आई तो उस पर फ़ख़्र व ग़ुरूर का इज़हार नहीं किया और सारी ज़िंदगी ख़ैर के कामों में, लोगों पर एहसान करने में और नेकी करने में गुज़ार दी।

(असदुल-ग़ाबा, जिल्द 2, पेज 309)

शादी के बाद मालूम हुआ कि वह लंगड़ी है

इमाम शोबी रह० के पास एक शख़्स आया और कहने लगा कि मैंने एक औरत से शादी की है। शादी के बाद मालूम हुआ कि वह लंगड़ी है। क्या उसको उसके वालिदैन के घर वापस भिजवा दूँ? इमाम शोबी रह० फ़रमाने लगे, अगर तुम्हें बीवी के साथ दौड़ लगानी है, फिर तो तुम्हें ज़रूर उसे छोड़ देना चाहिए, और अगर ऐसा नहीं तो फिर...!!

(सुनहरी किरणें, पेज 54)

निहायत ज़हीन बीवी

एक शख़्स अपनी बीवी से बड़ा तंग था और उसे हर हालत में तलाक़ देना चाहता था। एक दिन उसने देखा कि उसकी बीवी सीढ़ियाँ चढ़ रही है। उसने बीवी को मुख़ातिब किया और कहने लगा : सुनो! अगर तू ऊपर चढ़ी तो तुझे तलाक़, नीचे उतरी तो तलाक़ और अपनी जगह रही तो फिर भी तलाक़।

उस औरत ने अपने ख़ाविन्द की तरफ़ देखा और लम्हा भर के लिए रुकी। कुछ सोच-विचार की। फिर उसके ख़ाविन्द ने देखा कि उसने सीढ़ी से छलाँग लगा दी।

ख़ाविन्द की हसरतों पर पानी फिर गया। अपनी बीवी से मुख़ातिब हुआ। मेरे माँ, बाप तुझ पर क़ुरबान! तू कितनी बड़ी फ़क़ीह है। इमाम मालिक रह० वफ़ात पा जाएँ तो मुमकिन है अहले मदीना फ़तवा के लिए तेरे ही पास आएँ।

(सुनहरी किरणें, पेज 55)

हज़रत जुलैबीब रज़ि० की अजीब शादी और अजीब शहादत

जुलैबीब रज़ि० एक अंसारी सहाबी थे। ये न मालदार थे, न किसी मारूफ़ ख़ानदान से तअल्लुक़ रखते थे। साहिबे-मनसब भी न थे। रिश्तेदारों की तादाद भी ज़्यादा न थी। रंग भी साँवला था, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० की मुहब्बत से सरशार थे। भूक की हालत में फटे-पुराने कपड़े पहने अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। इल्म सीखते और फ़ैज़याब होते। एक दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने शफ़क़त की नज़र से देखा और इरशाद फ़रमाया

"जुलैबीब! तुम शादी नहीं करोगे?"

जुलैबीब रज़ि० ने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझ जैसे आदमी से भला कौन शादी करेगा?

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फिर फ़रमाया कि जुलैबीब! तुम शादी नहीं करोगे?" और वह जवाबन अर्ज़ गुज़ार हुए कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! भला मुझसे कौन शादी करेगा? न माल, न जाह-व-जलाल!!

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने तीसरी मर्तबा भी इरशाद फ़रमाया : "जुलैबीब! तुम शादी नहीं करोगे?" जवाब में उन्होंने फिर वही कहा : "अल्लाह के रसूल! मुझसे शादी कौन करेगा? कोई मनसब नहीं, मेरी शक्ल भी अच्छी नहीं, न मेरा ख़ानदान बड़ा है और न माल व दौलत रखता हूँ"।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया :

اِذْهَبْ اِلٰى ذٰلِكَ الْبَيْتِ مِنَ الْاَنْصَارِ وَقُلْ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُبَلِّغُكُمُ السَّلَامَ وَيَقُوْلُ زَوِّجُوْنِى ابْنَتَكُمْ"

"फुलाँ अंसारी कळ घर जाओ और उनसे कहो कि अल्लाह कळ रसूल सल्ल० तुम्हें सलाम कह रहे थे और फ़रमा रहे हैं कि अपनी बेटी से मेरी शादी कर दो।"

जुलैबीब रज़ि० ख़ुशी-ख़ुशी उस अंसारी के घर गए और दरवाज़े पर दस्तक दी। घर वालों ने पूछा, कौन? कहा जुलैबीब। घर वालों ने कहा, हम तो तुम्हें नहीं जानते, न तुमसे कोई ग़र्ज़ है। घर का मालिक बाहर निकला। उधर जुलैबीब खड़े थे। पूछा, क्या चाहते हो, किधर से आए हो? कहा, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने तुम्हें सलाम भिजवाया है।

यह सुनने की देर थी कि घर में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें सलाम का पैग़ाम भिजवाया है। अरे! यह तो बहुत ही ख़ुशबख़्ती का मक़ाम है कि हमें अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सलाम कहला भेजा है।

जुलैबीब कहने लगे : "आगे भी सुनो! अल्लाह के रसूल सल्ल० ने तुम्हें हुक्म दिया है कि अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दो।"

साहिबे ख़ाना ने कहा : ज़रा इंतिज़ार करो, मैं लड़की की माँ से मशविरा कर लूँ। अन्दर जाकर लड़की की माँ को पैग़ाम पहुंचाया और मशविरा पूछा? वह कहने लगी : "न न...न न... क़सम अल्लाह की! मैं अपनी बेटी की शादी ऐसे शख़्स से नहीं करूंगी। उसका न ख़ानदान, न शोहरत, न माल न दौलत। उनकी नेक सीरत बेटी भी घर में होने वाली गुफ़्तुगू सुन रही थी और जान गई थी कि हुक्म किसका है? किसने मशविरा दिया है? सोचने लगी, अगर अल्लाह के रसूल सल्ल० राज़ी हैं तो इसमें यक़ीनन मेरे लिए भलाई और फ़ायदा है। उसने वालिदैन की तरफ़ देखा और मुख़ातिब हुई।

"क्या आप लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० का हुक्म टालने की कोशिश में हैं? मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० के सुपुर्द कर दें, (वह अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जहाँ चाहें मेरी शादी कर दें,) क्योंकि वह हरगिज़ मुझे ज़ाया नहीं होने देंगे।"

फिर लड़की ने अल्लाह तआला के इस फ़रमान की तिलावत की :

"وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ط"

(سورة الاحزاب آيت : ٣٦)

"और देखो? किसी मोमिन मर्द व औरत क़ो अल्लाह और उसके रसूल के फ़ैसले के बाद अपने उमूर में कोई इख़्तियार बाक़ी नहीं रहता।" (सूरह अहज़ाब, आयत 36)

लड़की के वालिद अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपका हुक्म सर आँखों पर। आप का मशविरा, आपका हुक्म क़बूल है। मैं शादी के लिए राज़ी हूँ। जब रसूले अकरम सल्ल० को उस लड़की के पाकीज़ा जवाब की ख़बर हुई तो आप सल्ल० ने उसके हक़ में यह दुआ फ़रमाई :

اَللّٰهُمَّ صُبَّ الْخَيْرَ عَلَيْهَا صَبًّا وَّلَا تَجْعَلْ عَيْشَهَا كَدًّا ۔

"ऐ अल्लाह! इस बच्ची पर ख़ैर और भलाई के दरवाज़े खोल दे और इसकी ज़िंदगी को मुशक़्क़त व परेशानी से दूर रख।"

(मवारिदुज़्ज़मान : 2269, अहमद : 4/425, मज्मउज़्ज़वाइद 9/370 आदि)

फिर जुलैबीब रज़ि० के साथ उसकी शादी हो गई। मदीना मुनव्वरा में एक और घराना आबाद हो गया जिसकी बुनियाद तक़वा और परहेज़गारी पर थी, जिसकी छत मस्कनत और मुहताजी थी, जिसकी आराइश व ज़ेबाइश तकबीर व तहलील और तस्बीह व तहमीद थी। इस मुबारक जोड़े की राहत नमाज़ में और दिल का इत्मीनान तपती दोपहरों के नफ़ली रोज़ों में था।

रसूले अकरम सल्ल० की दुआ की बरकत से यह शादी ख़ाना आबादी बड़ी ही बरकतवाली साबित हुई। थोड़े ही अर्से में उनके माली हालात इस क़द्र अच्छे हो गए कि रावी का बयान है :

"अंसारी घरानों की औरतों में सबसे ख़र्चीला घराना उस लड़की का था।"

एक जंग में अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह नसीब फ़रमाई। रसूले-अकरम सल्ल० ने अपने सहाबा किराम रज़ि० से दरयाफ़्त फ़रमाया :

"देखो! तुम्हारा कोई साथी बिछड़ तो नहीं गया?"

मतलब यह था कि कौन-कौन शहीद हो गया है?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया : हाँ, फ़ुलाँ-फ़ुलाँ हज़रात मौजूद नहीं हैं।

फिर इरशाद हुआ : "क्या तुम किसी और को गुम पाते हो?"

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया : नहीं।

आप सल्ल० ने फ़रमाया : "लेकिन मुझे जुलैबीब नज़र नहीं आ रहा, उसको तलाश करो।" चुनांचे उनको मैदाने-जंग में तलाश किया गया।

वह मनज़र बड़ा अजीब था। मैदाने-जंग में उनके इर्द-गिर्द सात काफ़िरों की लाशें थीं। गोया वह उन सातों से लड़ते रहे और फिर सातों को जहन्नम रसीद करके शहीद हुए। अल्लाह के रसूल सल्ल० को ख़बर दी गई। रऊफ़ व रहीम पैग़म्बर सल्ल० तशरीफ़ लाए। अपने प्यारे साथी की नअ़श के पास खड़े हुए, मनज़र को देखा, फिर फ़रमाया :

"इसने सात काफ़िरों को क़त्ल किया, फिर दुश्मनों ने इसे क़त्ल कर दिया। यह मुझसे है और मैं इससे हूँ, यह मुझसे है और मैं इससे हूँ।"

फिर आप सल्ल० ने अपने प्यारे साथी को अपने हाथों में उठाया और शान यह थी कि अकेले ही उसको उठाए हुए थे। सिर्फ़ आपके दोनों बाज़ुओं का सहारा उसे मयस्सर था।

जुलैबीब रज़ि० के लिए क़ब्र खोदी गई, फिर नबी करीम सल्ल० ने अपने दस्ते-मुबारक से उन्हें क़ब्र में रखा। (सहीह मुस्लिम : 2472)

बेहतरीन औरत की ख़ूबियाँ

एक आराबी से जिसका औरतों की सिफ़ात के बारे में ख़ासा तजरिबा था, पूछा गया : बेहतरीन औरत में क्या ख़ूबियाँ होनी चाहिएँ।

उसने जवाब दिया कि एक अच्छी औरत में दर्ज-ज़ैल ख़ूबियाँ होती हैं:— खड़ी हो तो लम्बे क़द की हो और बैठे तो नुमायाँ नज़र आए। गुफ़्तुगू करे तो सच बोले। उसको गुस्सा दिलाया जाए तो बर्बादी का मुज़ाहिरा करे। हंसे तो सिर्फ़ मुस्कराहट बिखेरे, खाना पकाए तो निहायत ही लज़ीज़...अपने ख़ाविन्द की फ़रमाँबरदार हो। अपने घर से मुहब्बत करनेवाली, और कम से कम घर से बाहर निकलनेवाली हो। अपनी क़ौम

में निहायत अज़ीज़ और बावक़ार हो, मगर इंतिहाई मुतवाज़ोअ् व मुंकसिर मिज़ाज हो। ख़ाविन्द से मुहब्बत करनेवाली और कसरत से औलाद जननेवाली हो, फिर उसका हर काम निहायत पसन्दीदा होगा।

कभी-कभी बीवी अपने शौहर पर ख़र्च करे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० की बीवी ज़ैनब सक़फ़िया रज़ि० बड़ी मालदार ख़ातून थीं। फ़रमाती हैं कि एक दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० का यह फ़रमान हमने सुना :

> "ऐ औरतों की जमाअत! सदक़ा और ख़ैरात किया करो अगरचे अपना ज़ेवर (फ़रोख़्त करके) ही क्यों न हो"।

कहती हैं कि मैं अपने ख़ाविन्द अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० के पास आई और कहा, आप मुहताज हैं और अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें सदक़ा व ख़ैरात करने का हुक्म दिया है। आप रसूले अकरम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह मसला दरयाफ़्त करें। अगर यह सदक़ा मैं आप पर करूँ और यह किफ़ायत कर जाए तो ठीक, वरना मैं यह सदक़ा दूसरों को दिया करूँगी। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने उनसे कहा : तुम ही नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह मसला पूछो। हज़रत ज़ैनब रज़ि० कहती हैं : चुनांचे मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० के घर की तरफ़ चल दी, वहाँ दरवाज़े पर एक अंसारी औरत खड़ी थी। मैंने जब उससे पूछा कि तुम यहाँ क्या लेने आई हो? तो उसका मसला भी मेरे ही जैसा था। अब एहतिराम के बाइस बाहर खड़ी हो गईं कि अन्दर जाने की जुरअत कौन करे। इतने में घर से हज़रत बिलाल रज़ि० बाहर निकले। हमने मौक़ा ग़नीमत जाना और उनसे कहा कि वह अल्लाह के रसूल सल्ल० से पूछना चाहती हैं कि क्या वह अपना सदक़ा और ख़ैरात अपने शौहरों को दे सकती हैं और उसे अपने ज़ेरे-परवरिश यतीमों पर ख़र्च कर सकती हैं, और साथ ही उनसे कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को हमारे बारे में न बताना कि हम कौन हैं? फ़रमाती हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास

गए और मसला दरयाफ़्त किया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने पूछा कि जो दो औरतें दरवाज़े पर हैं कौन-कौन हैं? उन्होंने अर्ज़ किया : एक तो अंसारी औरत है और दूसरी ज़ैनब है। आप सल्ल० ने फ़रमाया : "कौन-सी ज़ैनब?" हज़रत बिलाल रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद की बीवी।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया : उनके लिए दोहरा अज्र व सवाब है। एक तो क़राबत दारों से हुस्ने-सुलूक का और दूसरा सदक़ा व ख़ैरात करने का।" (बुख़ारी : 1466, मुस्लिम : 1000)

एक औरत को मिर्गी के दौरे पड़ते थे मगर वह जन्नती थी

इमाम बुख़ारी व मुस्लिम यह हदीस बयान करते हैं कि एक मर्तबा अता बिन अबी रिबाह रज़ि० हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० के साथ खड़े थे कि सामने से काले रंग की एक लौण्डी गुज़री। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने अता रज़ि० की तरफ़ देखा। कहने लगे : तुम्हारा क्या ख़याल है? क्यों न तुम्हें एक जन्नती औरत दिखाऊँ? हज़रत अता रज़ि० ने तअज्जुब से कहा कि एक जन्नती औरत!

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, "हाँ एक औरत है, जब वह वफ़ात पा जाएगी तो जन्नत में जाएगी।" अता रज़ि० ने तअज्जुब किया। कहने लगे कि मुझे दिखाएँ वह कौन-सी ख़ुशनसीब ख़ातून है, जो जन्नती है और हमारे दर्मियान रहती है। वह बाज़ारों, गलियों में चलती-फिरती है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने काले रंग की उस बूढ़ी लौण्डी की तरफ़ इशारा किया। कहने लगे कि वह बूढ़ी औरत जन्नती है। हज़रत अता रज़ि० ने पूछा, "इब्ने अब्बास रज़ि०! आपको कैसे मालूम कि वह जन्नती है?"

जवाब दिया : कई साल पहले वह काली-कलूटी लौण्डी अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आई थी, उस वक़्त उसको मिर्गी के दौरे पड़ते थे। उसने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आकर शिफ़ा के लिए दुआ की

दरख़ास्त की। वह कहने लगी : "मेरी ज़िन्दगी अजीरन हो गई है, बच्चे मुझसे डरते हैं, मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, मुझ पर हंसते हैं, मैं बाज़ार में हूँ या घर में, या लोगों के पास, अचानक मुझे दौरा पड़ता है और मुझे होश नहीं रहता। मैं इस ज़िन्दगी से तंग आ चुकी हूँ। अल्लाह के रसूल सल्ल०! अल्लाह से दुआ फ़रमाएँ कि वह मुझे शिफ़ा अता फ़रमाए।"

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने चाहा कि सहाबा-ए-किराम रज़ि० को सब्र पर दर्स दें। आप सल्ल० ने फ़रमाया :

"اِنْ شِئْتِ صَبَرْتِ وَلَكِ الْجَنَّةُ ، وَاِنْ شِئْتِ دَعَوْتُ اللهَ اَنْ يُّعَافِيَكِ"

"अगर तुम चाहो तो सब्र से काम लो और उसके एवज़ तुम्हारे लिए जन्नत है। और अगर चाहो तो मैं तुम्हारी शिफ़ा के लिए अल्लाह से दुआ कर दूँ।"

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जब बात ख़त्म की तो उस औरत ने ग़ौर व फ़िक्र किया, सोचा, अपने हालात और अपनी बीमारी को देखा। आप सल्ल० के फ़रमान को अपने दिल में दोहराया। अब वह दोनों में फ़ैसला करना चाह रही थी कि किसको इख़्तियार करे। सब्र को या दुनियावी आराम को? सोचा, ग़ौर किया कि दुनिया तो फ़ानी है, इसे एक दिन ख़त्म हो जाना है। मैं जन्नत की तलबगार क्यों न बनूँ, उसकी चाहत क्यों न करूँ? और फिर उसने अपना फ़ैसला सादिर कर दिया : "ऐ अल्लाह के रसूल! मैं सब्र से काम लूँगी, लेकिन जब मुझे मिर्गी का दौरा पड़ता है तो मैं बेपर्दा हो जाती हूँ, इसलिए आप अल्लाह तआला से दुआ फ़रमा दें कि वह मुझे बेपर्दा न करे।" रसूले अकरम सल्ल० ने उसके हक़ में दुआ फ़रमा दी। (बुख़ारी : 5652, मुस्लिम : 2576)

हमेशा दुम बनकर रहो, सर बनकर न रहो, क्योंकि सबसे पहले मार हमेशा सर पर पड़ा करती है

बारह अहम नसीहतें

(1) कभी यह न समझें कि हमारे नफ़्स ने रात-दिन में हक़ तआला का कोई भी ज़रूरी हक़ ज़र्रा बराबर भी कुछ अदा किया है और यह

जभी हो सकता है जब हम अपने नूरे ईमान से यह समझ लें कि हमारे जितने भी काम हैं शुरू से लेकर आख़िर तक, सबका पैदा करने वाला अल्लाह तआला है। भला ग़ौर करें कि ग़ुलाम के पास जो कुछ माल व दौलत है वह सब उसके आक़ा का दिया हुआ है। अगर वह उसको आक़ा की ख़िदमत में पेश करके यह समझ ले कि मैंने उसका हक़ अदा कर दिया तो उससे ज़्यादा बेवक़ूफ़ दुनिया में कोई नहीं होगा। अल्लाह तआला के साथ तो आक़ा से भी ज़्यादा तअल्लुक़ है, पैदा उसने किया, होश व हवास, अक़्ल व तमीज़, बीनाई शुनवाई, हाथ, पैर, ग़िज़ा वग़ैरह सब उसी की दी हुई हैं जिनके सहारे हम कुछ टूटे-फूटे आमाल कर लेते हैं, फिर हक़ किस चीज़ से अदा किया :

जान दी, दी हुई उसी की थी

हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ

(2) अपने अक़वाल और आमाल व अफ़आल में तौहीद ख़ालिस का इस्तिहज़ार रहे। मसलन कभी यूँ न कहें कि फ़ुलाँ चीज़ मेरी है, या जैसे मेरी मर्ज़ी। हाँ मिज़ाज़न या भूले से ऐसी बात हो जाए तो मज़ाएक़ा नहीं। हक़ तआला ने जो यह फ़रमाया कि :

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا

ख़ुदा की इबादत करो, और किसी चीज़ को उसका शरीक न बनाओ। इसमें अल्लाह तआला ने शैअन इरशाद फ़रमाया, किसी शै को मुतअय्यन नहीं फ़रमाया।

हक़ीक़तन हर चीज़ अल्लाह की है। अल्लाह तआला ने दुनिया के इन्तिज़ाम के तहत लोगों को उसका क़ब्ज़ा दिया हुआ है। अगर किसी ने आपकी मिल्कवाली चीज़ बग़ैर इजाज़त के ले ली, या चोरी कर ली, तो यह न सोचें कि उसने मेरी चीज़ ले ली, अब मैं उसका मुवाख़ज़ा करता हूँ, बल्कि यह सोचें कि उसने बादशाह के इन्तिज़ाम में ख़लल डाला है, लिहाज़ा मैं क़ानूने शरीअत की वजह से उसका मुवाख़ज़ा करता हूँ।

एक बार एक बुज़ुर्ग ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! तूने तौहीदे ख़ालिस

पर मग़फ़िरत का वादा किया है, मैं तेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता, लिहाज़ा मेरी बख़्शिश फ़रमा। उनको इल्हाम हुआ कि वह वक़्त याद करें जब आपको दूध पेश किया गया तो आपने कहा कि मैं नहीं पीता कि इससे मुझे ज़रर न पहुंचे। तो अल्लाह तआला ने उनकी इस कल्मे पर गिरफ़्त फ़रमाई कि ज़रर पहुंचने को दूध से मन्सूब कर दिया था।

(3) अपने आमाल पर इस लिहाज़ से सवाब तलब न करें कि यह हमारे किए हुए काम हैं बल्कि सिर्फ़ ख़ुदा के फ़ज़्ल व एहसान पर नज़र करके सवाब तलब किया करें। इसमें राज़ यह है कि जो शख़्स अपने आमाल पर इस वजह से सवाब तलब करेगा कि उसने ख़ुद यह आमाल किए हैं, तो उसके लिए कुछ बईद नहीं कि बुरे आमाल की सज़ा देने के वास्ते भी तराज़ु-ए-आमाल क़ायम की जाए। लिहाज़ा अल्लाह तआला से सवाब चाहो तो महज़ उसके एहसान व फ़ज़्ल से माँगो।

(4) अपने आपको सरदारी के लिए आगे न बढ़ाएँ। किसी भी अम्र में अपने आपको बतौरे क़ाइद, सरदार और ज़िम्मेदार आगे न बढ़ाएँ। जैसे मशीख़त, इमामत, इमारत और तदरीस वग़ैरह में अपने भाइयों के ताबेअ् बनने की कोशिश करें, न कि उससे सब्क़त ले जाने की। मगर इस सूरत में कि वह ख़ुद हमें आगे बढ़ाएँ या हमारी पेशक़दमी से दूसरों से बला और मुसीबत दूर होती हो या उन्हें नेक कामों की रग़बत होती हो तो फिर मज़ायक़ा नहीं, क्योंकि नेक कामों में सब्क़त करने का हुक्म दिया गया है। सय्यद अहमद रफ़ाई रह० का क़ौल है कि हमेशा दुम बनकर रहो, सर बनकर न रहो क्योंकि सबसे पहले मार हमेशा सर पर पड़ा करती है।

(5) किसी मनसब या ज़िम्मेदारी की तमन्ना न करें और न अपनी तरफ़ से इसकी कोशिश करें। अल्लाह तआला की मशीयत पर नज़र रखें और सब्र करें, यहाँ तक कि ख़ुद उनसे उसे क़बूल करने की दरख़ास्त न की जाए, क्योंकि अगर अपनी कोशिश से कोई मनसब हासिल करोगे तो तुम्हें उस मनसब के हवाले कर दिया जाएगा और अगर बग़ैर कोशिश के

कोई ज़िम्मेदारी मिलेगी तो उसपर अल्लाह तआला की तरफ़ से इआनत की जाएगी।

(6) हमेशा यह एतिक़ाद पेशे-नज़र रखना चाहिए कि अल्लाह तआला हमारी मस्लहतों को हमसे ज़्यादा जानते हैं। अगर यह एतिक़ाद रखेंगे तो किसी मामले में भी दिल में नाख़ुशी पैदा न होगी, और जो शख़्स इस एतिक़ाद से ग़ाफ़िल रहेगा, वह ज़रूर तक़दीर से नाख़ुश होगा, बल्कि बाज़ औक़ात एतिराज़ का मुरतकिब होगा।

शिबली रह० से मनक़ूल है कि वह फ़रमाते थे कि मैंने हज़रत जुनेद रह० को बाद वफ़ात के देखा तो मैंने पूछा कि अल्लाह तआला ने आपसे क्या मामला किया? कहने लगे कि मुझे बख़्श दिया और किसी बात पर इताब नहीं फ़रमाया, अलबत्ता एक बार मेरी ज़बान से इतनी बात निकल गई थी कि इस साल ज़मीन को बारिश की ज़्यादा ज़रूरत है, इस पर हक़ तआला ने मुझे इताब फ़रमाया कि ऐ जुनेद! तुम मुझे ख़बर देना चाहते थे, हालाँकि मैं अलीम व ख़बीर हूँ।

(7) जब हमारे ऊपर दुनिया में तंगी और कमी कर दी जाए तो इस सूरत में भी हम अपने परवरदिगार से ऐसे ही राज़ी रहें जैसा कि फ़राख़ी की सूरत में हम उनसे ख़ुश रहते हैं, बल्कि वुस्अत की हालत में डरते रहना भी चाहिए, क्योंकि दुनिया का कम होना इस बात की अलामत है कि अल्लाह तआला हमें आफ़ियत में रखना चाहते हैं और ज़्यादा होने में अन्देशा है कि हम उसमें मशग़ूल हो जाएँ और दफ़अतन पकड़े जाएँ।

(8) अपने दिल को दुनिया में मशग़ूल नहीं करना चाहिए हत्तल-वसअ् लेन-देन और जमा-तक़सीम के मामलात से दिल को फ़ारिग़ रखने की कोशिश करनी चाहिए, अगर किसी से कुछ क़र्ज़ वग़ैरह लेना हो तो ज़्यादा सख़्ती न करें, नर्मी से दे दे तो ठीक है वरना मुतालबा न करें, यह सोच लें कि वह अल्लाह का बन्दा है। नबी करीम सल्ल० का उम्मती है, तो अल्लाह और रसूल की अज़्मत को सोचते हुए उससे ज़्यादा तक़ाज़ा न करें।

(9) दुनिया और उसकी शहवात व लज़्ज़ात को बेरग़बती की निगाह

से देखा करें। रग़बत की निगाह न रखा करें। इमाम शाफ़ई रह० ने फ़रमाया कि दुनिया उस बोसीदा हड्डी की मानिन्द है जिस पर बहुत-से कुत्ते छीना-झपटी कर रहे हों, लिहाज़ा जो कोई भी दुनिया से रग़बत करेगा, ज़रूर नजासत से आलूदा होगा और उसको कुत्ते काटेंगे, और उस पर दाँत निकालकर भौकेंगे, लिहाज़ा बड़ी मुसीबत उठानी पड़ेगी।

(10) दुनिया की चीज़ पर मज़ाहमत न करें। फ़ुक़रा को चाहिए कि दुनिया की किसी चीज़ पर मज़ाहमत, झगड़ा और तकरार न करें, क्योंकि दुनिया पर झगड़ने से दिलों में दुश्मनी और नुफ़ूस में कुदूरत पैदा होती है। जान लें कि हर वह चीज़ जो निज़ाअ् और तकरार से हासिल हो वह दुनिया है, अगरचे बज़ाहिर वह दीनी चीज़ महसूस होती है, इसलिए कि जो काम भी ख़ालिस आख़िरत के लिए हो उसमें झगड़ा और निज़ाअ् नहीं हो सकती, अगर निज़ाअ की नौबत आती है तो समझ लें कि इसमें दुनिया की आमेज़िश ज़रूर है।

(11) अल्लाह तआला की मुहब्बत को दुनिया की तमाम मुहब्बतों पर ग़ालिब रखें, चाहे मुहब्बत माल की हो या औलाद की हो या अज़वाज की हो या असहाब (दोस्तों) की हो, क्योंकि अल्लाह तआला बड़े ग़ैरत वाले हैं। वह अपने मोमिन बन्दे के दिल में किसी ग़ैर की मुहब्बत को पसन्द नहीं करते। हाँ, जिनकी मुहब्बत का ख़ुद अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है, जैसे अम्बिया व मलाइका, उलमा, सालेहा, औलिया-अल्लाह तो इनकी मुहब्बत अल्लाह के हुक्म की बजाआवरी के लिए हैं।

सूफ़िया की इस्तिलाह में ग़ैर की मुहब्बत से मुराद वह मुहब्बत है जो 'वुसूले इलल्लाह' में दाख़िल नहीं। तो अम्बिया अलैहि० और अपने मशाइख़ और जुम्ला औलिया अल्लाह से मुहब्बत चूंकि हक़ तआला तक पहुंचाने वाली है, इसलिए यह अल्लाह तआला की मुहब्बत में ही शुमार होती है। अज़वाज व औलाद से इस क़द्र मुहब्बत जाइज़ और ज़रूरी है जिससे उनके हुक़ूक़ अदा करने में आसानी हो, इससे ज़ाइद मुहब्बत जिसकी वजह से अहकामे-इलाही में सुस्ती और फ़ुतूर आने लगे, वह नुक़सानदेह है।

हज़रत अली ख़वास रह० फ़रमाते थे कि बाज़ औक़ात अल्लाह तआला तुम्हारे बीवी, बच्चों को इसलिए मुसीबत में मुब्तला कर देते हैं कि तुम्हारे दिल में उनकी मुहब्बत जम गई होती है। (अल्लाह तआला उस पर ग़ैरत खाते हैं) और कभी उनकी मुहब्बत की वजह से ख़ुद तुम्हारे ऊपर इताब फ़रमाते हैं।

(12) जिस शख़्स की आदत लड़ाई-झगड़े की हो उससे मुनाज़रा न करें। जिस शख़्स में देखें कि इसकी तबीअत में जोश ज़्यादा है और लड़ाई-झगड़े और मुनाज़रा करने की आदत है, उससे मुनाज़रा न करें, और अपनी बात को दलाइल से मनवाने की कोशिश न करें। ऐसे शख़्स के सामने जितनी मर्ज़ी माक़ूल बात की जाए उसकी कोशिश हमेशा दूसरे को नीचा दिखाने और अपनी अक़्ल व फ़हम को सायबुर्राय साबित करने की होगी।

ऐसे शख़्स से बात करने से पहले कोई ऐसी हिक्मते-अमली अपनाएँ कि उसका जोशे-नफ़्स आपके लिए नर्म हो चुका हो। मशाइख़ जब किसी को बुरे कामों का मुर्तकिब देखते तो उस शख़्स को नसीहत करने से पहले उसकी अच्छाइयों को बयान करते और दर्मियान में उसकी ख़ामियों को बयान कर देते और कहते कि इनसे भी बच जाते तो बहुत अच्छा होता। इस तरह वह शख़्स उन बुराइयों से इज्तिनाब करने लगता।

क़ज़ा-ए-हाजात के लिए मौलाना मदनी रह० का बताया हुआ मुजर्रब अमल

बन्दा एक रोज़ अपनी अहलिया के साथ देवबन्द के सफ़र पर था। वहाँ पहुंच कर मेरी अहलिया ने हज़रत शैख़ हुसैन अहमद मदनी रह० की अहलिया मुहतरमा से कुछ नसीहत की फ़रमाइश की तो हज़रत शैख़ की अहलिया मुहतरमा ने बताया कि दो रकअत सलातुल हाजत की नीयत से पढ़िए जिसकी पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद पचास मर्तबा सूरह इख़्लास और दूसरी रकअत में भी सूरह फ़ातिहा के बाद पचास मर्तबा सूरह इख़्लास पढ़िए, फिर अल्लाह से अपनी हाजत के पूरा होने का

सवाल कीजिए। हज़रत मदनी मुश्किलात के वक़्त यह अमल लोगों को बतलाया करते थे और ख़ुद भी अमल करते थे।

नोट : मज़्कूरा मुजर्रब अमल अगरचे अहादीस में मौजूद नहीं, मगर अल्लाह वाले का बताया हुआ अमल है, और कई लोगों का मुजर्रब अमल है। इसलिए अगर आप भी किसी सख़्त से सख़्त मसले में उलझे हुए होंगे, तो अल्लाह तआला इस अमल की बरकत से आपका मसला भी सुलझा देगा।

परवरदिगारे-आलम! मेरा रिज़्क़ तेरे ज़िम्मे है

अबू अब्दुल्लाह बिन जाफ़र, जो कि बरक़ी के लक़ब से मशहूर हैं, कहते हैं : मैंने एक बयाबान में एक बद्दू ख़ातून को देखा जिसकी खेती कड़ाके की सर्दी, ज़ोरदार आँधी और मूसलाधार बारिश के सबब तबाह व बर्बाद हो चुकी थी, लोग उसके इर्द-गिर्द जमा थे और उसकी फ़सल तबाह होने पर उसे दिलासा दे रहे थे।

उसने अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाई और कहने लगी :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْمَأْمُوْلُ لِأَحْسَنِ الْخَلَفِ، وَبِيَدِكَ التَّعْوِيْضِ عَمَّا تَلَفَ، فَافْعَلْ بِنَا مَا أَنْتَ أَهْلُهُ، فَإِنَّ أَرْزَاقَنَا عَلَيْكَ وَآمَالَنَا مَصْرُوْفَةٌ إِلَيْكَ"

"ऐ परवरदिगार! पसमान्दगान की उम्दा देख-भाल के लिए तुझ ही से उम्मीद वाबस्ता की जाती है, जो कुछ तबाह व बर्बाद हो गया उसकी तलाफ़ी तेरे ही हाथ में है, इसलिए तू अपनी निराली शान के मुताबिक़ हमारे साथ मामला फ़रमा, क्योंकि हमें यक़ीन है कि हमारी रोज़ी का बन्दोबस्त तेरे ही ज़िम्मे है और हमारी आरज़ूएँ और तमन्नाएँ तुझी से वाबस्ता हैं"।

अबू अब्दुल्लाह बिन जाफ़र कहते हैं : मैं अभी उस ख़ातून के पास ही था कि एक आदमी वहाँ आ पहुंचा, हमें इसके बारे में कोई इल्म नहीं था कि यह कौन है? कहाँ से आया है? मक्सद क्या है? जब उसे उस औरत के अक़ीदे, मिनूहज और अल्लाह तआला से तअल्लुक़ का पता

चला तो उसने पाँच सौ (500) दीनार निकाले और उस औरत की ख़िदमत में पेश करके अपनी राह चलता बना।

(मुजल्लतुल-अरबी : 444/188, निसा ज़कयात जुदन : 44)

इसमें कोई शुबह नहीं कि जो आदमी भी अल्लाह तआला पर कामिल एतिमाद करेगा, और तक़वा इख़्तियार करेगा, वह कभी नेमते-ख़ुदावन्दी से महरूम नहीं रहेगा, और अल्लाह तआला उसे ऐसे रास्ते से रोज़ी बहम पहुंचाएंगे जिसका वह कभी गुमान भी नहीं कर सकता था, जैसा कि इस देहाती ख़ातून के साथ वाक़िआ पेश आया; जिसका आपने ऊपर मुताला किया। इससे अल्लाह तआला के इस फ़रमान की वज़ाहत होती है :

"وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۝"

"जो शख़्स अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसके लिए (मुश्किल से) छुटकारे की शक्ल पैदा फ़रमा देता है, और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ देता है जिसका उसे गुमान भी न हो"।

(सूरह अत-तलाक़, आयत 2-3)

इसी तरह का एक और वाक़िआ इन सुतूर के राक़िम ने अरबी अदब की बाज़ किताबों में पढ़ा है कि एक फ़क़ीर मुहताज औरत, बादिया-नशीन, जंग में ख़ेमा लगाए हुए थी। अपनी ज़रूरतों के लिए उसने इर्द-गिर्द खेती लगा रखी थी और गुज़र औक़ात उसी से करती थी। एक दिन तूफ़ान आया। बिजली चमकी और कड़की। आसमान से ज़ाला-बारी हुई और खेती तबाह व बर्बाद हो गई। जब तूफ़ान थम गया तो उस औरत ने ख़ेमे से सर निकाला। अपनी खेती को देखा, हर चीज़ तबाह व बर्बाद हो चुकी थी। उसने हसरत भरी निगाहों से उसे देखा और फिर अपना मुंह आसमान की तरफ़ किया और कहने लगी :

اِصْنَعْ يَا اِلٰهِ ، مَا شِئْتَ فَاِنَّ رِزْقِيْ عَلَيْكَ ۝

"ऐ मेरे परवरदिगार! जो जी चाहे कर (तुझे कौन पूछने वाला है) हाँ, (इतनी बात ज़रूर है कि) मेरा रिज़्क़ तो तेरे ही ज़िम्मे है।"

औरत का हुस्न उसके टेढ़ेपन में है

मशहूर मुअर्रिख़ व सीरतनिगार वाक़दी का बयान है कि मैं एक रोज़ ख़लीफ़ा मेहदी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उससे चन्द अहादीस बयान कीं। मेरी बयानकरदा हदीसें उसने लिख लीं, फिर थोड़ी देर बाद वह अपने घर में दाख़िल हुआ। जब वह घर से निकला तो ग़ुस्से से उसका चेहरा सुर्ख़ था और वह गैज़ो-ग़ज़ब से भरा हुआ था। मैंने अर्ज़ किया कि अमीरुल मोमिनीन! ख़ैरियत तो है? ख़लीफ़ा मेहदी कहने लगा:

دَخَلْتُ عَلَى الْخَيْزُرَانِ فَقَامَتْ إِلَىَّ وَمَزَّقَتْ ثَوْبِىْ وَقَالَتْ: مَا رَأَيْتُ خَيْرًا مِنْكَ"

"मैं अपनी बीवी 'ख़ेज़रान' के पास गया तो उसने मेरा कपड़ा इस क़द्र ज़ोर से खींचा कि वह फट गया और कहने लगी : मैंने तुममें कोई ख़ैर का पहलू नहीं देखा है।"

ख़लीफ़ा ने मज़ीद कहा : ऐ वाक़दी! आपको अच्छी तरह मालूम है कि मैंने 'ख़ेज़रान' को एक ग़ुलाम-फ़रोश से ख़रीदा था, फिर मैंने उसे आज़ाद करके उससे शादी कर ली, चुनांचे अब वह क़स्रे-शाही में मेरी बीवी की हैसियत से ख़ुश व ख़ुर्रम ज़िन्दगी गुज़ार रही है और उसको नाज व नअम और आराइश व ज़ेबाइश के लिए वे चीज़ें दस्तयाब हैं जो दीगर आज़ाद औरतों को कम ही नसीब हुआ करती हैं। मगर आज उसका ज़ेहन इस क़द्र बदल गया है कि उसने मेरे सारे किए कराए पर पानी फेर दिया और कहने लगी कि आज तक मैंने कभी तुममें ख़ैर नहीं देखी! हालाँकि मैंने उसके दोनों लड़कों (हादी और हारून रशीद) के लिए पेशगी बैअ़त करवा दी है, मेरे बाद यके-बाद-दीगर वे दोनों मुसलमानों के ख़लीफ़ा होंगे, फिर भी वह मुझे ताना दे रही है कि मैंने उसके लिए कोई भलाई नहीं की है।

वाक़दी ने ख़लीफ़ा मेहदी की बात सुनकर कहा: अमीरुल मोमिनीन! आप नाराज़ न हों, क्योंकि कुफ़राने-नेमत औरतों की फ़ितरत है। रसूले अकरम सल्ल० का इरशाद गिरामी है :

"خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِأَهْلِهِ وَأَنَا خَيْرُكُمْ لِأَهْلِي"

"तुममें सबसे बेहतर वह है जो अपने अहले-ख़ाना के लिए बेहतर हो, और मैं अपने अहले-ख़ाना कळ हक़ में तुम सबसे बेहतर हूँ।" (सहीह इब्ने माजा, किताबुन्निकाह : 1977)

एक और हदीस में रसूले अकरम सल्ल० का इरशाद है :

اِسْتَوْصُوْا بِالنِّسَاءِ، فَاِنَّ الْمَرْأَةَ خُلِقَتْ مِنْ ضِلَعٍ، وَاِنَّ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ اَعْلَاهُ فَاِنْ ذَهَبْتَ تُقِيْمُهُ كَسَرْتَهُ وَاِنْ تَرَكْتَهُ لَمْ يَزَلْ أَعْوَجَ فَاسْتَوْصُوْا بِالنِّسَاءِ"

"औरतों के बारे में मेरी नसीहत का हमेशा ख़याल रखना, क्योंकि औरत पसली से पैदा की गई है, और पसली में भी सबसे ज़्यादा टेढ़ा ऊपर का हिस्सा होता है। अगर तुम उसे बिल्कुल सीधी करने की कोशिश करोगे तो अन्जामकार तोड़कर रहोगे। और अगर उस टेढ़ी पसली को यूँ ही छोड़ दोगे तो वैसे ही टेढ़ी रहेगी (और तुम उसके टेढ़ेपन के बावजूद उससे फ़ायदा उठा सकते हो)। पस तुम लोग औरतों के बारे में मेरी नसीहत मानो, औरतों से अच्छा सुलूक किया करो।"

(बुख़ारी : 3331, मुस्लिम : 1468)

वाक़दी ने इस मौज़ूअ़ से मुतअल्लिक़ चन्द मज़ीद अहादीस ख़लीफ़ा से बयान कीं। ख़लीफ़ा मेहदी ने उन्हें दो हज़ार दीनार देने का हुक्म दिया। जब वाक़दी ख़लीफ़ा के पास से निकल कर अपने घर पहुंचे तो उसी वक़्त मलिका 'ख़ेज़रान' का पैग़ाम लेकर आनेवाला भी उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो गया और मलिका का दिया हुआ तक़रीबन दो हज़ार दीनार का अतिया भी उनकी ख़िदमत में पेश किया। इसके अलावा कपड़े और जूते भी थे। मलिका ने पैग़ाम देनेवाले के ज़रिये उन अतियात के साथ-साथ इस कारे-ख़ैर पर उनका शुक्रिया भी अदा किया था।

(अलबिदाया-वन्नहाया, 13/545, तबा दारे हिज्र)

नहरे ज़ुबैदा का दर्द भरा वाक़िआ

यह दूसरी सदी हिजरी का ज़माना था। दुनिया के चप्पे-चप्पे में इस्लाम की किरणें अपनी ताबनाक शुआएँ बिखेर रही थीं। वही अरब जो कुछ अर्से पहले इन्तक़ाम की आग में झुलस रहे थे, आज इस्लामी तालीमात की बदौलत बाहम भाई-भाई बन चुके थे, क़बाइल के दर्मियान बाहमी इख़्तिलाफ़ात बिला शुबहा पाए जाते थे, मगर महाज़े-जंग पर जब इकट्ठे होते तो सब एक-दूसरे का बेहद एहतिराम करते थे। तलवारों के साए में उनकी नमाज़ें अदा होती थीं और जिन-जिन मुल्कों में वे जिहाद का परचम लहराते वहाँ के बाशिन्दों के साथ अद्ल व इंसाफ़ करना उनकी शान थी। दूसरी जानिब मुसलमान मुबल्लिग़ीन भी दावत व तब्लीग़ का काम जारी रखे हुए थे। चुनांच देखते ही देखते मुसलमानों की तादाद में बेतहाशा इज़ाफ़ा होने लगा। दूसरी सदी हिजरी के अवाख़िर में मुमलिकते-इस्लामिया की बागडोर ख़लीफ़ा हारून रशीद के हाथ में है, दुनिया के गोशे-गोशे से मुसलमान बैतुल्लाह शरीफ़ के हज के लिए आ रहे हैं। मक्का मुकर्रमा में पानी नापेद है, हुज्जाजे-किराम और अहले मक्का बड़ी मुश्किल से किसी तरह पानी का बन्दोबस्त कर पाते हैं।

इसी ज़माने में मलिका ज़ुबैदा बिन्ते जाफ़र फ़रीज़-ए-हज की अदायगी के लिए मक्का मुकर्रमा आती हैं। उन्होंने जब अहले-मक्का और हुज्जाज किराम को पानी की दुश्वारी और मुश्किलात में मुब्तला देखा तो उन्हें सख़्त अफ़सोस हुआ, चुनांचे उन्होंने अपने इख़राजात से एक अज़ीमुश्शान नहर खोदने का हुक्म देकर एक ऐसा फ़क़ैदुल मिसाल कारनामा अन्जाम दिया जो रहती दुनिया तक आलमे-बशरियत को याद रहेगा।

उम्मे जाफ़र ज़ुबैदा बिन्ते जाफ़र बिन अबू जाफ़र मनसूर हाशमी ख़ानदान की चश्म व चराग़ थीं। यह ख़लीफ़ा हारून रशीद की चचाज़ाद बहन थीं। उनका नाम 'अम्मतुल अज़ीज़' था। उनके दादा मनसूर बचपन में उनसे ख़ूब खेला करते थे। उनको 'ज़ुबैदा' (दूध पिलाने वाली मथानी)

कहकर पुकारते थे, चुनांचे सब उसी नाम से पुकारने लगे और असली नाम लोग भूल ही गए। यह निहायत ख़ूबसूरत और ज़हीन व फ़तीन थीं। जब जवान हुईं तो ख़लीफ़ा हारून रशीद से उनकी शादी हो गई। यह शादी बड़ी धूम-धाम से ज़िल-हिज्जा 165 हिजरी में हुई। हारून रशीद ने इस शादी की ख़ुशी में मुल्क भर से अवाम व ख़वास को दावत पर बुलाया और मदऊवीन के दर्मियान इस क़द्र ज़्यादा माल तक़्सीम किया जिसकी मिसाल तारीख़े-इस्लामी में मफ़्क़ूद है। इस मौक़े पर ख़ास बैतुल माल से उसने पचास मिलियन दिरहम (50,000,000) ख़र्च किए। हारून रशीद ने अपने ख़ास माल से जो कुछ ख़र्च किया वह उसके अलावा था।

हारून रशीद मलिका ज़ुबैदा से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता था। एक मर्तबा उसने अपनी बीवी को यह कहकर पुकारा, "हलुम्मी या उम्मे नह्र" यानी 'उम्मे नहर! ज़रा इधर आना।' ज़ुबैदा ने बाद में मशहूर आलिम असमई को बुलवाकर पूछा कि अमीरुल मोमिनीन मुझे 'उम्मे नह्र' कहकर पुकारते हैं, इसके क्या मानी हैं? असमई ने जवाब दिया कि चूंकि जाफ़र अरबी लुग़त में नहर को कहते हैं और आपकी कुन्नियत उम्मे जाफ़र है, इसलिए नह्र माना मुराद लेकर आपको इस नाम से पुकारा होगा।

ज़ुबैदा बड़ी ही समझदार ख़ातून थीं। हाशिया बरदारों के कहने पर कभी फ़ौरी फ़ैसला नहीं करती थीं। एक मर्तबा एक शाइर ने उनकी ख़िदमत में चन्द अशआर सुनाए, मगर रदीफ़ व क़ाफ़िया और अल्फ़ाज़ की तर्कीब में शायद वह अपना माफ़िज़्ज़मीर अच्छी तरह से अदा नहीं कर सका। शेर के मफ़हूम से उनकी अज़्मत के बजाय गुस्ताख़ी अयाँ थी। हश्म व ख़दम ने शाइर की इबारत को मलिका की बे-अदबी पर महमूल किया और उसको गिरफ़्तार करना चाहा, मगर मलिका ने उनसे कहा :

دَعُوْهُ فَإِنَّ مَنْ أَرَادَ خَيْرًا فَأَخْطَأَ خَيْرٌ مِّمَّنْ أَرَادَ شَرًّا فَأَصَابَ ط

"इसको नज़र अन्दाज़ कर दो, क्योंकि जिसकी नीयत अच्छी बात कहने की हो, मगर उससे लग़ज़िश हो जाए; ऐसा शख़्स उस आदमी से

बेहतर है जिसकी नीयत बुरी हो मगर वह बात अच्छी कह जाए।"

मलिका ज़ुबैदा की ख़िदमत के लिए एक सौ नौकरानियाँ थीं जिनको क़ुरआन करीम याद था और वे हर वक़्त क़ुरआन पाक की तिलावत करती रहती थीं। उनके महल में से क़िरअत की गुनगुनाहट शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट की तरह आती रहती थी।

ज़ुबैदा ने पानी की क़िल्लत के सबब हुज्जाज किराम और अहले-मक्का को दरपेश मुश्किलात और दुश्वारियों का अपनी आंखों से मुशाहदा किया तो उन्होंने मक्का में एक नहर बनाने का इरादा किया। इससे पहले भी वह मक्कावालों को बहुत ज़्यादा माल से नवाज़ती रहती थीं और हज व उमरा के लिए मक्का आनेवालों के साथ उनका सुलूक बेहद फ़ैय्याज़ाना रहता था। अब नहर की खुदाई का मन्सूबा सामने आया तो मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से माहिर इंजीनियर बुलवाए गए। मक्का मुकर्रमा से 35 मिलोमीटर शुमाल मशरिक़ में वादी हुनैन के 'ज़बाले ताद' से नहर निकालने का प्रोग्राम बनाया गया। एक नहर जिसका पानी 'जबाले क़ुरा' से 'वादी नोमान' की तरफ़ जाता था उसे भी नहरे ज़ुबैदा में शामिल कर लिया गया। यह मक़ाम अरफ़ात से 12 किलोमीटर जुनूब मशरिक़ में वाक़ेअ था। इसके अलावा मिना के जुनूब में सहरा के मक़ाम पर एक तालाब बिअ्रे-ज़ुबैदा के नाम से था जिसमें बारिश का पानी जमा किया जाता था, उससे सात कारीज़ों के ज़रिए पानी नहर में ले जाया गया, फिर वहाँ से एक छोटी नहर मक्का मुकर्रमा की तरफ़ और एक अरफ़ात में मस्जिदे-नमरा तक ले जाई गई। इस अज़ीम मन्सूबे पर सतरह लाख (17,00,000) दीनार ख़र्च हुए।

मलिका ज़ुबैदा ने इन्तिहाई शौक़ और जज़्बा ए इख़्लास के तहत नहर की खुदाई कराई थी। वह हुज्जाज किराम और अहले मक्का को पानी की दुश्वारियों से नजात दिलाना चाहती थीं और यह काम सिर्फ़ अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी के लिए उन्होंने किया। इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाएँ कि जब नहरे-ज़ुबैदा की मन्सूबाबन्दी शुरू हुई तो इस मन्सूबे का मुन्तज़िम इंजीनियर आया और कहने लगा :

"आपने जिस मन्सूबे का हुक्म दिया है उसके लिए ख़ासे इख़राजात दरकार हैं, क्योंकि इसकी तकमील के लिए बड़े-बड़े पहाड़ों को काटना पड़ेगा, चट्टानों को तोड़ना पड़ेगा, नशीब व फ़राज़ की मुश्किलात से निमटना पड़ेगा, सैकड़ों मज़दूरों को दिन-रात मेहनत करनी पड़ेगी, तब कहीं जाकर इस मन्सूबे को पाय-ए-तक्मील तक पहुंचाया जा सकता है।"

यह सुनकर ज़ुबैदा ने जो जवाब दिया वह दिलचस्प भी है और इससे उनकी क़ुव्वते-फ़ैसला और मन्सूबे से दिलचस्पी का इज़्हार भी होता है। उन्होंने चीफ़ इंजीनियर से कहा :

اِعْمَلْهَا وَلَوْ كَانَتْ ضَرْبَةُ فَاسٍ بِدِيْنَارٍ ـ

"इस काम को शुरू करो, चाहे कुल्हाड़े की एक ज़र्ब पर एक दीनार ख़र्च आता हो।"

इस तरह जब नहर का मन्सूबा तक्मील को पहुंच गया तो मुन्तज़िमीन और निगराँ हज़रात ने इख़राजात की तफ़्सीलात मलिका की ख़िदमत में पेश कीं। उस वक़्त मलिका दरिया-ए-दजला के किनारे वाक़ेअ् अपने महल में थीं। मलिका ने वह तमाम काग़ज़ात लिए और उन्हें खोल कर देखे बग़ैर दरिया में डाल दिया और कहने लगीं :

"इलाही! मुझे दुनिया में कोई हिसाब-किताब नहीं लेना। तू मुझसे क़ियामत के दिन हिसाब न लेना।"

मलिका ज़ुबैदा ने यह अज़ीमुश्शान काम अन्जाम देकर हुज्जाजे किराम और बाशिन्दगाने-मक्का मुकर्रमा को पानी की क़िल्लत के सबब दरपेश मुश्किलात का मसला हल कर दिया। अल्लाह तआला उस नहर को उनके हक़ में सदक़-ए-जारिया बनाए।

उनकी वफ़ात बग़दाद में जमादिल-ऊला 216 हिजरी में हुई।

(वफ़यातुल आयान, अलबिदाया वन्निहाया, किताब वाफ़ी बिल वफ़यात, आलाम लिल ज़रकली और तारीख़ मक्का मुकर्रमा, मुहम्मद अब्दुल माबूद वग़ैरा कुतुब से मवाद इकट्ठा करके लिखा गया है।)

खजूरों में बरकत

जंगे-ख़नदक़ की तैयारियाँ ज़ोर व शोर से जारी थीं। मुसलमानों की जमाअत रसूलुल्लाह सल्ल० के इर्द-गिर्द ख़नदक़ की खुदाई में मशग़ूल थी। बहुत-से मुसलमानों के घरों में एक वक़्त की रोटी भी दस्तियाब न थी। फिर भी वह रसूलुल्लाह सल्ल० से बे-इन्तिहा मुहब्बत और शदीद लगाव के सबब आपके हुक्म की तक्मील में लगे रहते थे। भूक की शिद्दत से निढाल हो जाते तो अपने पेट पर पत्थर बाँधकर ख़नदक़ की खुदाई करते, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा भूख बरदाश्त कर सकें। यहाँ तक कि रसूले अकरम सल्ल० ने भी अपने पेट पर भूक की वजह से पत्थर बाँध रखे थे और ख़नदक़ की खुदाई में सहाबा किराम रज़ि० के साथ पूरे इनहिमाक के साथ मशग़ूल थे। हज़रत अबू तलहा रज़ि० कहते हैं :

شَكَوْنَا اِلَى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْجُوْعَ فَرَفَعْنَا عَنْ م بُطُوْنِنَا
عَنْ حَجَرٍ حَجَرٍ، فَرَفَعَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ حَجَرَيْنِ ط "

"हमने रसूलुल्लाह सल्ल० से भूख का शिकवा किया और अपने पेट से एक-एक पत्थर बंधा हुआ दिखाया तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने पेट से दो पत्थर बंधे हुए हमें दिखाए।"

(जामेअ़ तिर्मिज़ी, मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द 2, पेज 448)

ख़नदक़ की खुदाई करनेवाले सहाबा किराम रज़ि० की तादाद एक हज़ार और वाक़दी की रिवायत के मुताबिक़ तीन हज़ार बताई गई है। ख़नदक़ की खुदाई के दौरान कई मोजज़ात रूनुमा हुए। उनमें से एक मोजज़ा हम यहाँ एक सहाबिया रज़ि० के हवाले से नक़ल करते हैं।

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० की बहन का बयान है कि मेरी वालिदा अमरह-बिन्ते-रवाहा रज़ि० ने मुझे बुलाया और दो मुट्ठी खजूरें देकर कहने लगीं : इन्हें अपने वालिद बशीर और मामूं अब्दुल्लाह बिन रवाहा की ख़िदमत में ले जाओ ताकि वे दोपहर के खाने में कुछ खा लें। मैं खजूरें लेकर अपने वालिद और मामूं की तलाश में निकली, वे दोनों दीगर सहाबा रज़ि० के साथ ख़नदक़ की खुदाई में मशग़ूल थे। मुझे उन्हें

तलाश करते हुए देखकर रसूले अकरम सल्ल० ने बुलाया और पूछने लगेः तेरे पास क्या है?

मैंने अर्ज़ किया : "هٰذَا تَمَرٌ بِهِ أُمِّيْ إِلَى أَبِيْ وَخَالِيْ يَتَغَدَّيَانِهِ"

"ये चन्द खजूरें हैं जिन्हें देकर मेरी अम्मी ने मेरे अब्बू और मामूं के पास भेजा है ताकि वे दोपहर के खाने में कुछ खा लें।"

रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "हातीहि" यानी ये खजूरें मुझे दे दो।

मैंने खजूरें रसूलुल्लाह सल्ल० के दोनों हाथों में रख दीं। आप सल्ल० की हथेलियाँ नहीं भरीं। फिर आप सल्ल० के हुक्म से चादर बिछाई गई और आप सल्ल० ने चादर पर खजूरें फैला दीं। फिर आप सल्ल० ने एक आदमी से फ़रमाया, "अहले-ख़नदक़ को आवाज़ दो कि वह आकर दोपहर का खाना खा लें।" यह आवाज़ सुनते ही ख़नदक़ की खुदाई करने वाले तमाम सहाबा किराम रज़ि० दस्तरख़्वान पर हाज़िर हुए और खजूरें तनावुल फ़रमाने लगे। अहले-ख़नदक़ खजूरें खाते गए और वे बढ़ती गईं। सारे अहले-ख़नदक़ खाकर वापस हो गए, मगर खजूरें थीं कि कपड़े के किनारे से बाहर गिर रही थीं।

वाज़ेह रहे कि ख़नदक़ के दौरान इस क़िस्म की कई मोजज़ाना बरकात का ज़ुहूर हुआ।

(देखिए, सीरत इब्ने हिशाम, 2 : 218, अलमुग़ाज़ी लिलवाक़दी, 2/476, असदुल-ग़ाबह, 414)

14 आयाते-सज्दा को एक मज्लिस में पढ़कर दुआ की क़बूलियत

पूरे क़ुरआन करीम में चौदह (14) आयाते-सज्दा हैं। ये सब एक मज्लिस में, एक ही बैठक में अलत्तरतीब पढ़ी जाएँ और हर एक के साथ-साथ सज्दा भी किया जाए और फिर उसके बाद दुआ की जाए तो इनशा-अल्लाह दुआ ज़रूर क़बूल होगी और अगर मुसीबतज़दा है तो

उसकी मुसीबत और परेशानी बहुत जल्द दूर हो जाएगी। यह अकाबिर, फ़ुक़हा और अइम्मा मुज्तहिदीन का मुजर्रब अमल है।

(नूरुल ईज़ाह, सफ़ा 115, ईज़ाहुल मसाइल, पेज 45, मराक़ी अल-फ़लाह, पेज 272)

हम आसानी के लिए क़ुरआन करीम की चौदह (14) आयात-सज्दा को अलत्तरतीब यहाँ पर जमा कर देते हैं ताकि उस पर अमल करने वालों के लिए आसानी हो जाए।

إِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُوْنَهُ وَلَهُ يَسْجُدُوْنَ ○
(اعراف: ٢٠٦)

"यक़ीनन जो तेरे रब के नज़दीक हैं वे उसकी इबादत से तकब्बुर नहीं करते, और उसकी पाकी बयान करते हैं और उसको सज्दा करते हैं। (सूरह आराफ़, आयत 206)

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ○
(سورہ رعد: ١٥)

"और अल्लाह ही के सामने सब सरख़म किए हुए हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं ख़ुशी से और मजबूरी से, और उसके साए भी सुबह और शाम के वक़्त।

(सूरह रअद, आयत 15)

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ○ (سورہ نحل: ٥٠)

"वे अपने रब से डरते हैं जोकि उस पर बालादस्त है, और उनको जो कुछ हुक्म किया जाता है वे उसको करते हैं।"

(सूरह नह्ल, आयत 50)

وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ○ (سورہ بنی اسرائیل: ١٠٩)

"और ठोड़ियों के बल गिरते हैं रोते हुए और यह क़ुरआन उनका ख़ुशूअ् और बढ़ा देता है।" (सूरह बनी इसराईल, आयत 109)

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ق وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ز وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ز وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ط اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ○ (سورہ مریم: ٥٨)

"ये वे लोग हैं जिनपर अल्लाह तआला ने इनाम फ़रमाया है मिन जुमला अम्बिया के आदम की नस्ल से, और उन लोगों की नस्ल से जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था और इबराहीम और याक़ूब की नस्ल से और उन लोगों में से जिनको हमने हिदायत फ़रमाई और उनको मक़्बूल बनाया। जब उनके सामने रहमान की आयतें पढ़ी जाती थीं तो सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर जाते थे।" (सूरह मरयम, आयत 58)

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ط وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ط وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَالَهُ مِن مُّكْرِمٍ ط إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ○

(سوره الحج:۱۸)

"ऐ मुख़ातब! क्या तुझको यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह के सामने सब आजिज़ी करते हैं जो कि आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाए और बहुत-से आदमी भी, और बहुत-से ऐसे हैं जिनपर अज़ाब साबित हो गया है। और जिसको ख़ुदा ज़लील करे उसको कोई इज़्ज़त देनेवाला नहीं। बेशक अल्लाह तआला जो चाहे करे।" (सूरह हज, आयत 18)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا○

(سوره فرقان: ۶۰)

"और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है। क्या हम उसको सज्दा करने लगेंगे जिसको तुम सज्दा करने के लिए हमको कहोगे। और उससे उनको और ज़्यादा नफ़रत होती है।"

(सूरह फ़ुरक़ान, आयत 60)

اَللَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ○ (سوره نحل: ۲۶)

"अल्लाह ही ऐसा है कि उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़

नहीं। और वह अर्शे-अज़ीम का मालिक है।"

(सूरह नम्ल, आयत 26)

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ إِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ (سورہ سجدہ:١٥)

"बस हमारी आयतों पर तो वे लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको वे आयतें याद दिलाई जाती हैं तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की तस्बीह व तहमीद करने लगते हैं। और वे लोग तकब्बुर नहीं करते।" (सूरह सज्दा, आयत 15)

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلٰى نِعَاجِهٖ ط وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ط وَظَنَّ دَاوٗدُ أَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّأَنَابَ ۝ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ط وَإِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ (سورہ ص:٢٥-٢٦)

"दाऊद ने कहा कि यह जो तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने की दरख़्वास्त करता है तो वाक़ई तुझ पर ज़ुल्म करता है। और अक्सर शुरका एक-दूसरे पर ज़्यादती किया करते हैं। मगर हां, जो लोग ईमान रखते हैं और नेक काम करते हैं, और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं। और दाऊद को ख़याल आया कि हमने उनका इम्तिहान लिया है इसलिए उन्होंने अपने रब के सामने तौबा की और सज्दे में गिर पड़े और रुजूअ हुए। लिहाज़ा हमने उनको माफ़ कर दिया। और हमारे यहाँ उनके लिए क़ुर्ब और नेक-अन्जामी है।" (सूरह सॉद, आयत 24-25)

فَإِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُوْنَ ۝

(سورہ حم السجدہ:٣٨)

"फिर अगर ये लोग तकब्बुर करें तो जो फ़रिश्ते आपके रब के मुक़र्रब हैं वे शब व रोज़ उसकी पाकी बयान करते हैं। और वे नहीं उकताते।" (सूरह हा-मीम सज्दा, आयत 38)

فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ○ (سوره النجم: ٦٣)

"सो अल्लाह की इताअत करो और इबादत करो।"

(सूरह नज्म, आयत 62)

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ○ (سوره الشقاق: ٢١)

"और जब उनके रू-ब-रू क़ुरआन पढ़ा जाता है तो नहीं झुकते।"

(सूरह इंशिक़ाक़, आयत 21)

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ○ (سوره العلق: ١٩)

"हरगिज़ नहीं, आप उसका कहना न मानिए, और आप नमाज़ पढ़ते रहिए और क़ुर्ब हासिल करते रहिए।"

(सूरह अलक़, आयत 19)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا — عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

नोट : इस किताब को पढ़नेवाले तमाम भाइयों से और अल्लाह के नेक बन्दों से सियाहकार राक़िमुल-हुरूफ़ की दरख़ास्त है कि अपनी दुआओं के साथ नाकारा राक़िमुल-हुरूफ़ और उसके वालिदैन की फ़लाहे-दारैन के लिए भी दुआ करें, बहुत बड़ा एहसान होगा।

एक औरत की बहादुरी का वाक़िआ

इस्लामी तारीख़ में जिन नामवर और बहादुर ख़वातीन का तज़्किरा आया है, उनमें ज़रक़ा बिन्ते अदी बिन ग़ालिब बिन क़ैस हमदानिया का ज़िक्र भी है। यह कूफ़ा की रहनेवाली थीं और हज़रत अली रज़ि० की पुरजोश हामी थीं। अपने रिश्तेदारों समेत जंगे-सफ़्फ़ीन में शामिल थीं। उन्होंने लड़ाई के दौरान फ़ौजियों से मुतअद्दद बार ख़िताब किया और फ़साहत व बलाग़त के दरिया बहा दिए, जिससे फ़ौजी और ज़्यादा जोश व ख़रोश से लड़ने लगे। उनके हवाले से तारीख़ ने एक दिलचस्प मगर सबक़ आमोज़ वाक़िआ महफ़ूज़ किया है। आइए सिन्फ़े नाज़ुक से तअल्लुक़ रखनेवाली एक ख़ातून की जवाँमर्दी और हक़गोई का मुतालआ कीजिए।

अमीर मुआविया रज़ि० 41 हिजरी में ख़िलाफ़त संभाल चुके थे। मुसलमानों में सुलह हो चुकी थी। कभी-कभार जंगों के हवाले से बाज़ मज्लिस में तज़्किरा हो जाता। एक रात हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० अपने बाज़ ख़ास साथियों के हमराह मज्लिस में बैठे हुए थे। अचानक किसी ने जंगे सफ़्फ़ीन का तज़्किरा कर दिया। अहले-कूफ़ा की जवाँमर्दी का तज़्किरा हुआ तो ज़रक़ा का भी नाम लिया गया। किसी ने कहा कि उस रोज़ उस औरत ने बड़ी ज़ोरदार तक़ारीर कीं। हज़रत अली रज़ि० के साथियों को जोश दिलाया। उनके अज़्म व इस्तक़लाल को जिला बख़्शी और उस पुरजोश तरीक़े से फ़ौजियों से ख़िताब किया कि बुज़दिल से बुज़लिद आदमी भी अगर सुन ले तो मैदाने कारज़ार में आगे बढ़ता चला जाए। चुनांचे उसके ख़िताब की वजह से कितने ही लोग जो मैदाने-जंग से पलट रहे थे लौट आए, जो सुलह व आतशी की तरफ़ माइल थे मैदाने कारज़ार में घुस गए। उसके अल्फ़ाज़ क्या थे एक जादू था; निहायत ही काट-दार फ़िक़रे, पाट-दार आवाज़, उसकी वजह से मुतज़लज़ल क़दम जम गए।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० उनकी गुफ़्तुगू से महज़ूज़ हो रहे थे। इतनी अज़ीम औरत! यह दुरुस्त है कि वह मुख़ालिफ़ ग्रूप से तअल्लुक़ रखती थी, मगर उसने एक औरत होने के बावजूद पामर्दी का सुबूत दिया। उसके इस्तक़लाल और साबितक़दमी से वे ख़ासा मुतअस्सिर थे। अचानक सवाल किया, साथियो! उस औरत की तक़रीरों के इक़्तबासात किसी को याद हैं? बहुतों ने जवाब दिया कि हाँ, क्यों नहीं। वे अल्फ़ाज़ कोई भूलनेवाले नहीं थे। कम व बेश सबको याद हैं। अमीर मुआविया रज़ि० ने एक और सवाल कर दिया :

"فَمَا تُشِيرُوْنَ عَلَيَّ فِيهَا ؟"

"उस औरत के बारे में मुझे क्या मशविरा देते हो?"

बहुतों ने उस औरत के क़त्ल का मशविरा दिया मगर अमीर मुआविया रज़ि० जो अरब के निहायत ज़हीन व फ़तीन आदमी थे, यूँ गोया हुए :

بِئْسَ مَآ اَشَرْتُمْ بِهٖ وَقُبْحًا قُلْتُمْ ! اَيَحْسُنُ أَيُشْتَهِرُ عَنِّىْ أَنِّىْ بَعْدَ مَا ظَفِرْتُ وَقَدَرْتُ قَتَلْتُ امْرَأَةً وَّفَتْ لِصَاحِبِهَا، اِنِّىْ اِذَنْ لَلَئِيْمٌ لَا وَاللّٰهُ ! لَا فَعَلْتُ ذٰلِكَ أَبَدًا "

"जो कुछ तुम लोगों ने कहा है, तुम्हारा यह मशविरा और क़ौल बहुत ही बुरा और नामुनासिब है! क्या यह अच्छा होगा कि मेरे मुतअल्लिक़ मशहूर हो जाए कि मैंने ज़िमामे इक़्तिदार हाथ में आ जाने के बाद एक ऐसी ख़ातून को क़त्ल कर दिया, जिसने अपने साथी (हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि०) के साथ निहायत ही वफ़ादारी का सुबूत दिया? अल्लाह की क़सम! मैं हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि ऐसी सूरत में यह मेरी ख़ुस्त और कमीनगी की दलील होगी।"

उसके बाद अमीर मुआविया रज़ि० ने हाकिमे-कूफ़ा को एक ख़त लिखा जिसका मज़्मून था :

اَنْ اَنْفِذْ اِلَيَّ الزَّرْقَاءَ بِنْتَ عَدِيٍّ مَّعَ نَفَرٍ مِّنْ عَشِيْرَتِهَا وَفُرْسَانٍ مِّنْ قَوْمِهَا ، وَمَهِّدْ لَهَا وِطَاءً لَيِّنًا وَّ مَرْكَبًا ذَلُوْلًا"

"ज़रक़ा बिन्ते अदी को उसके ख़ानदान के चन्द अफ़राद और उसकी क़ौम के चन्द शहसवारों के हमराह मेरी ख़िदमत में रवाना करें। उसके लिए नर्म गद्दे और आरामदेह सवारी का बन्दोबस्त करना न भूलें।"

हाकिमे-कूफ़ा ने जब ज़रक़ा बिन्ते अदी को अमीर मुआविया रज़ि० के ख़त से आगाह किया तो उसने हुक्म की तामील में जल्दी की और कहने लगी : "अमीरुल मोमिनीन की ताअत व फ़रमाँबरदारी वाजिब है। मैं एराज़ नहीं कर सकती।"

चुनांचे अमीर मुआविया रज़ि० के हुक्म के मुताबिक़ हाकिमे-कूफ़ा ने ज़रक़ा को उनकी ख़िदमत में रवाना कर दिया। जब ज़रक़ा अमीर मुआविया रज़ि० की ख़िदमत में पहुंची तो उन्होंने पुरतपाक इस्तक़बाल किया और पूछने लगे, "ख़ाला! क्या हाल है? आपका सफ़र कैसा रहा?

कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई"।

ज़रक़ा बिन्ते अदी ने अर्ज़ किया :

رَبِيبَةَ بَيْتٍ أَوْ طِفْلاً مُمَهَّدًا

"अलहम्दुलिल्लाह मैं ख़ैरियत से हूँ।" मुझे घर की मालकिन की तरह बाइज़्ज़त लाया गया है, या फिर गहवारे वाले बच्चे की तरह महफ़ूज़ तरीक़े से आपके सामने पेश किया गया है।

अमीर मुआविया रज़ि० ने कहा, "दरअस्ल मैंने यह हुक्म दे रखा था। आपको मालूम है कि मैंने किस लिए यहाँ आने की ज़हमत दी है?"

ज़रक़ा बिन्ते अदी ने कहा :

"भला जिस बात की मुझे ख़बर नहीं उसके बारे में क्या जानूँ! ग़ैब का इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह ही को है।"

अमीर मुआविय रज़ि० ने कहा, "सफ़्फ़ीन की जंग में तुमने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० के साथियों को मेरे ख़िलाफ़ उभारा था और उन्हें अपने पुरजोश ख़िताब से ग़ैरत दिला रही थीं और तुम ही वह औरत हो जिसकी चर्ब ज़बानी ने न जाने कितने बुज़दिलों को हिम्मत व शुजाअत से बहरा-वर कर दिया जो मेरे ख़िलाफ़ अंधा-धुंध तलवारें चलने लगे। तुम्हें यह कहते हुए भी सुना गया कि सूरज की ताबनाक रौशनी में चिराग़ की कोई अहमियत नहीं और चाँद का मुक़ाबला तारे नहीं कर सकते। इसलिए अब तुम मर्दानावार लड़ो, सब्र व इस्तक़लाल का दामन हाथ से न छोड़ो, इसी में तुम्हारी सरबुलन्दी है, जियो तो शान से, मरो तो शान से!! और जान लो :

"औरतों का ख़िज़ाब मेंहदी है जबकि मर्दों का ख़िज़ाब ख़ून है।"

फिर अमीर मुआविया रज़ि० ने पूछा, "ज़रक़ा! मैंने तुम्हारे हवाले से जो कुछ कहा है क्या यह सच नहीं है?"

ज़रक़ा बिन्ते अदी ने इसबात में जवाब दिया।

अमीर मुआविया कहने लगे, "गोया कि तुम हर उस ख़ून में अली

की शरीक हो जो उन्होंने बहाया है।"

ज़रक़ा बिन्ते अदी ने जवाब दिया, "अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह तआला आपकी बात को शर्फ़े-क़बूलियत से नवाज़े, क्योंकि यह मेरे लिए बशारत से कम नहीं। बिला शुबहा मैं हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० के साथ थी और उनकी तरफ़ से बहाए गए हर एक ख़ून में मेरी शिरकत मेरे लिए क़ाबिले-फ़ख़्र है। आपका शुक्रिया जो आपने मुझे इस ख़ुशख़बरी से नवाज़ा।"

अमीर मुआविया रज़ि० उस औरत की हिम्मत व शुजाअत और बेख़ौफ़ी व बेबाकी को देखकर हंस पड़े और कहने लगे :

"وَاللّٰهُ لَوَ فَاؤُكُمْ بَعْدَ مَوْتِهٖ أَعْجَبُ عِنْدِىْ مِنْ حُبِّكُمْ لَهٗ فِىْ حَيَاتِهٖ"

"अल्लाह की क़सम! हज़रत अली रज़ि० की मौत के बाद तुम लोग उनके साथ जो बेइंतिहा वफ़ादारी का सुबूत पेश कर रहे हो, मुझे यह बात उनकी ज़िन्दगी में तुम्हारी मुहब्बत से ज़्यादा तअज्जुब ख़ेज़ लग रही है।"

फिर अमीर मुआविया रज़ि० ने उससे कहा, "तुम्हारी कोई ज़रूरत हो तो पेश करो, मैं हाज़िर हूँ।"

ज़रक़ा बिन्ते अदी कहने लगी :

"يَا اَمِيْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِنِّى اٰلَيْتُ عَلٰى نَفْسِىْ اَلَّا اَسْأَلَ اَحَدًا عَنْتُ عَلَيْهِ اَبَدًا"

"अमीरुल मोमिनीन! मैंने अपने बारे में क़सम खा रखी है कि मैंने जिस शख़्स के ख़िलाफ़ (मैदाने जंग में) किरदार अदा किया है उसके आगे कभी दस्ते-सवाल नहीं दराज़ करूँगी।"

अमीर मुआविया रज़ि० ने कहा, "मुझे चन्द लोगों ने आपके क़त्ल का मशविरा दिया है।"

ज़रक़ा कहने लगी, "मशविरा देनेवाले कमज़र्फ़ लोग हैं। आप अगर उनकी बात मानकर मुझे क़त्ल कर देंगे तो फिर आपका शुमार भी उन्हीं जैसे लोगों में होगा।"

चुनांचे अमीर मुआविया रज़ि० ने फ़राख़दिली से काम लेते हुए उस औरत को माफ़ कर दिया और ख़िलअत के साथ-साथ दिरहम और दीनार से भी नवाज़ा। मज़ीद उसे एक ऐसी जागीर से नवाज़ा जिससे सालाना दस हज़ार दिरहम की आमदनी होती थी और उसे उसके ख़ानदान वालों के साथ सही-सलामत कूफ़ा रवाना कर दिया। हाकिमे कूफ़ा को ख़त भी लिखा कि इस ख़ातून और इसके ख़ानदान का ख़ास ख़याल रखा जाए।

(देखिए : मिन क़ससुल अरब, 237, अलअक़्द फ़रीद, 2/106, बलाग़ातुन्निसा, 37)

माँ ने फ़रमाया, बेटा हक़ पर जान दे दो

इंसान एक हदफ़ मुतअय्यन करके उसके हुसूल की कोशिश में तन-मन-धन की बाज़ी लगा देता है और ख़ास तौर पर जब उसे यह यक़ीन हो जाता है कि वह जिस हदफ़ के हुसूल में कोशाँ है वही हदफ़ सही डगर पर ले जानेवाला है और उसके मुक़ाबिल जो भी अहदाफ़ हैं वे सीधे रास्ते से हटाने वाले हैं तो फिर वह अपने मक़सद के हुसूल में जान की बाज़ी लगाने से भी कुछ दरेग़ नहीं करता, चाहे उसकी राह में मज़बूत से मज़बूत चट्टान क्यों न हाइल हो। वह उस चट्टान को चकनाचूर करने की हर मुम्किन कोशिश करता है। यही अज़्म और इस्तक़लाल हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० के अन्दर भी था। उन्होंने जिस बात को हक़ समझा उसके लिए ज़िन्दगी की आख़री साँस तक लड़ते रहे और उनके अन्दर यह जोश और जज़्बा पैदा करनेवाली उनकी बहादुर माँ सय्यदा असमा बिन्ते अबी बक्र रज़ि० थीं।

ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान के अहद में उसके सिपह-सालार हज्जाज बिन यूसुफ़ के लश्कर ने ख़िलाफ़त के दावेदार अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को हरमे-मक्का में महसूर कर रखा था और उनके अपने भी साथ छोड़ गए थे। जब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने देखा कि वक़्त की गर्दिश उनके ख़िलाफ़ है, लोगों की अक्सरियत उनके मिशन की मुख़ालिफ़ हो गई है और लोगों की निगाह में उनकी कोई वक़अत बाक़ी नहीं रही है तो उन्हें अपनी सुबकी महसूस हुई। चुनांचे वह अपनी वालिदा सय्यदा

असमा रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : अम्मी जान! आप देख रही हैं कि मुझे चारों तरफ़ के लोगों ने नज़र-अन्दाज़ कर दिया है, और तो और मेरे बीवी-बच्चे भी मेरे मिशन के ख़िलाफ़ हैं। उनकी निगाह में भी मेरी कोई वक़्अत नहीं है। अब मादूदे-चन्द लोग ही मेरा साथ देने के लिए रह गए हैं। वे भी इस क़द्र कमज़ोर हैं कि चन्द लम्हे भी मुख़ालिफ़ गिरोह के सामने ठहर नहीं सकते। अगर आज मैं अपने मिशन से दस्तबरदार हो जाऊँ तो मुझे मुआशरे में हाथों-हाथ लिया जाएगा। मैं सारी बेरुख़ निगाहों की तवज्जोह का मर्कज़ बन जाऊँगा। दुनियावी माल व मताअ् से मालामाल कर दिया जाऊँगा और मेरे जानी दुश्मन मेरे ग़मगुसार व हमदर्द बन जाएँगे, फिर ऐसी सूरत में मुझे क्या करना चाहिए? अम्मी जान! इस वक़्त मैं ज़िन्दगी और मौत की कशमकश में साँस ले रहा हूँ, मुझे आगे क़दम बढ़ाने के लिए आपका मशविरा दरकार है।''

सय्यदा असमा रज़ि० बेटे की दर्द-अंगेज़ गुफ़्तुगू सुनकर कहने लगीं : जाने-मन! तुम अपने मुतअल्लिक़ जितना कुछ जानते हो कोई दूसरा उतना नहीं जान सकता, अगर तुम्हें अपने तौर पर कुल्ली इत्मीनान है कि तुम जिस बात की तरफ़ दावत दे रहे हो, उसमें हक़ पर हो और तुम्हारा मुक़ाबिल नाहक़ पर है, तो फिर अपनी दावत से बाज़ मत आओ और क़दम आगे की जानिब बढ़ाते चले जाओ। पस्त-हिम्मती का सुबूत हरगिज़ न दो और अपनी गर्दन को इतनी ढील मत दो कि बनू उमैया के बच्चे तुम्हारे सर से खिलवाड़ करें। और अगर तुम यह सब कुछ दुनियावी माल व मताअ के लालच में कर रहे थे तो फिर तुम एक बदतरीन आदमी हो, तुमने ख़ुद को और अपने साथियों को तबाह व बर्बाद कर डाला और तुम्हारे जो साथी क़त्ल कर दिए गए हैं, उनके क़त्ल के ज़िम्मेदार तुम और सिर्फ़ तुम हो। और अगर तुम्हारी राय यह है कि तुम हक़ पर थे मगर जब तुम्हारा साथ देनेवाले कमज़ोर पड़ गए तो तुमने भी हिम्मत हारकर सरे-तस्लीम-ख़म कर दिया तो फिर यह आज़ाद लोगों की शान नहीं और न ही अहले दीन का शैवा। आख़िर इस दुनिया में तुम्हारी ज़िन्दगी है ही

कितनी? ज़िल्लत के साथ ज़िन्दा रहने से इज़्ज़त के साथ क़त्ल हो जाना कहीं बेहतर है :

"وَاللهِ لَضَرْبَةٌ بِالسَّيْفِ فِيْ عِزٍّ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ ضَرْبَةٍ بِسَوْطٍ فِيْ ذُلٍّ"

"अल्लाह की क़सम! इज़्ज़त व शान में तलवार की ज़र्ब खाना मुझे ज़िल्लत व रुसवाई की हालत में कोड़ा खाने से ज़्यादा महबूब है।"

माँ की यह ईमान-अफ़रोज़ तक़रीर सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने कहा :

"اِنِّيْ اَخَافُ اِنْ قَتَلُوْنِيْ اَنْ يُمَثِّلُوْنِيْ"

"मुझे ख़दशा है कि अगर मेरे दुश्मन मुझे क़त्ल कर देंगे तो मेरा मुसला करेंगे।"

(मुसला कहते हैं मय्यत या मक़्तूल के कान, नाक, आँख या हाथ वग़ैरह आज़ाए जिस्मानी को बुरी तरह काटने और मसख़ करने को।)

हज़रत असमा रज़ि० ने फ़रमाया :

"يَا بُنَيَّ! اِنَّ الشَّاةَ لَا يَضُرُّهَا سَلْخُهَا بَعْدَ ذَبْحِهَا"

"बेटे! बकरी के ज़िबह होने के बाद उसकी चमड़ी उधेड़ना उसके लिए किसी तकलीफ़ का बाइस नहीं होता। (इसलिए क़त्ल के बाद तुम्हारी लाश की जितनी भी बेहुर्मती हो, तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं होगी।")

यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० आगे बढ़े और अपनी माँ के सर का बोसा लिया और कहने लगे : "अल्लाह की क़सम! यही मेरी राय भी है। जिस दावत का अलम मैंने बुलन्द किया था आज तक उसी की सरबुलन्दी के लिए कोशाँ हूँ, मैंने कभी दुनिया को हुस्ने निगाह से नहीं देखा है और न आज दुनियावी हिर्स व तमा की मेरे अन्दर गुंजाइश है।"

"وَمَا دَعَانِيْ اِلَى الْخُرُوْجِ اِلَّا الْغَضَبُ اَنَّ اللهَ تُسْتَحَلُّ حُرُمَهُ"

"मैंने वक़्त के हुक्मरानों के ख़िलाफ़ जो जंग छेड़ रखी है उसका सबब मेरी दीनी हमिय्यत है, क्योंकि उनके दौर में अल्लाह तआला की मुहर्रमात की पामाली हो रही है और उन्हें जाइज़ ठहरा लिया गया है।"

फिर बोले : "अम्मी जान! मैंने अपने मिशन से मुतअल्लिक़ आपकी राय ले लेना मुनासिब समझा। अलहम्दुलिल्लाह आपकी ईमान-अफ़रोज़ गुफ़्तुगू ने मेरी बसीरत में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया। अम्मी जान! आज ही मैं क़त्ल होने वाला हूँ, मेरे क़त्ल पर ग़मज़दा न होना और अपना मामला अल्लाह के हवाले कर देना, क्योंकि आपके इस साहबज़ादे ने कभी किसी मुन्कर व नाजाइज़ काम के करने का इरादा तक नहीं किया और न किसी ग़लत और अख़्लाक़ से गिरी हुई बात में मुलव्विस हुआ। मैंने अल्लाह की सल्तनत में कभी ज़ुल्म व इस्तबदाद नहीं सराहा। अम्न व अमान का झाँसा देकर किसी पर दस्तदराज़ी नहीं की। किसी मुसलमान या ग़ैर मुस्लिम पर ज़्यादती को रवा नहीं रखा। मेरे उम्माल की तरफ़ से ज़ुल्म व ज़्यादती की जब भी मुझे शिकायत मिली, मैंने मज़्लूमों की भरपूर ताईद की और उनके हुक़ूक़ दिलवाए। मैंने कभी रज़ाए-इलाही पर अपनी ख़्वाहिश को तर्जीह नहीं दी। बल्कि हमेशा अल्लाह तआला की रिज़ा को अपनी ख़्वाहिश पर मुक़द्दम रखा।

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ لَا اَقُوْلُ هٰذَا تَزْكِيَةً مِّنِّیْ لِنَفْسِیْ ط اَنْتَ اَعْلَمُ بِیْ وَلٰكِنْ اَقُوْلُهٗ

تَعْزِيَةً لِاُمِّیْ لِتَسْلُوَ عَنِّیْ ط"

"ऐ अल्लाह! ये सब बातें मैं अपनी ज़ात के तज़्किये के लिए नहीं कह रहा हूँ। मैं जो कुछ कह रहा हूँ उससे तू बख़ूबी वाक़िफ़ है, बल्कि मैं ये सब कुछ अपनी माँ को तसल्ली देने कळ लिए कह रहा हैं ताकि वह मुझे पहुंचनेवाली मुसीबत को भूल जाए।"

ये ताज़ियत भरे अल्फ़ाज़ सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की वालिदा कहने लगीं :

"اِنِّىْ لَاَرْجُوْا مِنَ اللّٰهِ اَنْ يَّكُوْنَ عَزَائِىْ فِيْكَ حَسَنًا اِنْ تَقَدَّمْتَنِىْ وَاِنْ تَقَدَّمْتُكَ فَفِىْ نَفْسِىْ حَرَجٌ حَتّٰى اَنْظُرَ اِلٰى مَا يَصِيْرُ اَمْرُكَ ط"

"मुझे अल्लाह तआला से उम्मीद है कि अगर तुम मुझसे पहले अल्लाह के पास चले गए तो तुम्हारे बारे में मेरी ताज़ियत अच्छी होगी, अलबत्ता अगर मैं तुमसे पहले इंतिक़ाल कर गई तो मेरे दिल में यह ख़लिश बाक़ी रहेगी कि मैं तुम्हारे मिशन का अन्जाम न देख सकी।"

फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० अपनी माँ से दुआ की दरख़्वास्त करते हुए उनके पास से रवाना हो गए और उसी रोज़ उन्हें हज्जाज बिन यूसुफ़ और उसके साथियों ने शहीद कर दिया।

(देखिए : तारीख़े-तबरी, 6/188, बलागात निसा 130, अल-अक़दुल फ़रीद 4/417, क़ससुल अरब 2/132)

आप सल्ल० के ज़माने में दो औरतों में झगड़ा हो गया

नबी करीम सल्ल० के अहदे मुबारक में दो औरतों में झगड़ा हो गया। उनमें से एक हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि० की हमशीरा रबीअ् बिन्ते नज़र रज़ि० थीं, जिन्होंने दूसरी औरत का दाँत तोड़ दिया था। जब मुक़द्दिमा बारगाहे नुबुव्वत में पेश हुआ तो आप सल्ल० ने फ़रमाया :

"किताबुल्लाह के फ़ैसले के मुताबिक़ दाँत के बदले में दाँत ही तोड़ा जाएगा।"

हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि० एक जलीलुल क़द्र सहाबी थे जो जंगे बद्र में शरीक न हो सके थे और बाद में उन्होंने हमीयते इस्लामी से सरशार होकर रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया था :

"وَاللّٰهِ لَئِنْ اَشْهَدَنِى اللّٰهُ قِتَالَ الْمُشْرِكِيْنَ لَيَرَيَنَّ اللّٰهُ مَا اَصْنَعُ"

"अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह तआला ने मुझे मुश्रिकीन से जंग का मौक़ा दिया तो अल्लाह तआला ख़ुद देखेगा कि मैं कैसे कारनामे अन्जाम देता हूँ।"

चुनांचे ग़ज़व-ए-उहुद में बड़ी जवाँमर्दी से काफ़िरों का मुक़ाबला किया और शहीद हो गए, शहादत के बाद देखा गया तो उनके जिस्म पर तलवारों, नेज़ों और तीरों के अस्सी (80) से ज़ाइद ज़ख़्म लगे हुए थे और काफ़िरों ने उनका इस क़द्र बुरे तरीक़े से मुसला किया था कि उनकी बहन रबीअ् बिन्ते नज़र रज़ि० उन्हें पहचान न सकीं, बल्कि उनकी उंगलियों के पोरों की मदद से उन्हें पहचाना।

ग़र्ज़ यह सहाबी रज़ि० रसूले अकरम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या आप चाहते हैं कि मेरी बहन रबीअ् का दाँत तोड़ दिया जाए?

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, "नअम किताबुल्लाहि" हाँ किताबुल्लाह का यही फ़ैसला है।"

हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि० ने अर्ज़ किया : अल्लाह की क़सम! मेरी हमशीरा का दाँत नहीं टूटेगा!

आख़िर यह क़सम कैसी थी? क्या हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि० ने शरअी हुक्म पर एतिराज़ किया था? क्या नबी करीम सल्ल० का फ़ैसला क़बूल न था?

हरगिज़ नहीं! बल्कि उन्होंने यह क़सम इसलिए खाई कि उन्हें अल्लाह की ज़ात से उम्मीद थी कि अल्लाह तआला उनकी क़सम को राएगाँ नहीं जाने देंगे, बल्कि ज़रूर कोई दूसरी सूरत पैदा फ़रमा देंगे। वह अपने रब्बुल जलाल से दुआ कर रहे थे।

चुनांचे जब अनस बिन नज़र रज़ि० ने क़सम खा ली तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, "उस (ज़ख़्मी) औरत के घर वालों के पास जाओ, अगर वे लोग तावान पर राज़ी हो जाएँ तो फिर कोई हर्ज नहीं।"

लोग उस ज़ख़्मी औरत के घरवालों के पास गए। उन लोगों ने

तावान पर रज़ामन्दी ज़ाहिर कर दी। हालाँकि इससे पहले वे राज़ी नहीं हो रहे थे, बल्कि वे रबीअ् बिन्ते नज़र रज़ि० का दाँत तोड़ने पर मुसिर थे।

रसूलुल्लाह सल्ल० के चेहर-ए-मुबारक पर मुस्कुराहट छा गई और आप सल्ल० अनस बिन नज़र रज़ि० के फटे हुए कपड़े और उनके दुबले-पतले जिस्म की तरफ़ देखने लगे, फिर फ़रमाया :

"اِنَّ مِنْ عِبَادِ اللّٰهِ مَنْ لَوْ اَقْسَمَ عَلَى اللّٰهِ لَاَ بَرَّهٗ"

"अल्लाह कळ कुछ बन्दे ऐसे भी हैं कि अगर वे अल्लाह तआला (के भरोसे) पर क़सम खा बैठें तो अल्लाह तआला उनकी क़सम पूरी कर देते हैं।"

(बुख़ारी, 2703, मुस्नद अहमद 3/128)

हज़रत असमा रज़ि० के पास आप सल्ल० की क़मीस थी

अबू ज़ुनाद से मरवी है कि सय्यदा असमा बिन्ते अबी बक्र रज़ि० के पास रसूले अकरम सल्ल० की क़मीस थी जो उन्होंने अपने अज़ीम बेटे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को अता कर दी थी, मगर जब उन्हें मुख़ालिफ़ीन ने क़त्ल कर दिया तो उस अज़ीम सानिहा के बाइस वह क़मीस गुम हो गई। इस हादसे के बाद बसा-औक़ात हज़रत असमा रज़ि० कहती थीं :

"मेरे लख़्ते जिगर अब्दुल्लाह का क़त्ल इस क़द्र तकलीफ़ का बाइस नहीं जितना कि नबी करीम सल्ल० की क़मीस कक गुम हो जाने से मुझे तकलीफ़ हुई।"

कुछ अर्से बाद मुल्के शाम के एक शख़्स के मुतअल्लिक़ पता चला कि रसूले अकरम सल्ल० की वह क़मीस उस शामी के पास है। जब क़मीस के मुतअल्लिक़ हज़रत असमा रज़ि० के हुज़्न व मलाल का उस शामी को इल्म हुआ तो उसने क़मीस को लौटाने के लिए शर्त आइद कर दी कि सय्यदा असमा रज़ि० उसके लिए अल्लाह तआला के दरबार में दुआ-ए-मग़फ़िरत करें, चुनांचे वह कहने लगा :

"لَا اَرُدُّهٗ اَوْتَسْتَغْفِرَلِی اَسْمَاءُ"

"मैं इस क़मीस को इसी सूरत में लौटाऊंगा जबकि हज़रत असमा रज़ि० मेरे लिए अल्लाह तआला से दुअ-ए-मग़फ़िरत करें।"

जब यह बात सय्यदा असमा रज़ि० को पहुंची तो उन्होंने अर्ज़ किया:

"كَيْفَ اَسْتَغْفِرُ لِقَاتِلِ عَبْدِ اللّٰهِ"

"भला अपने लख़्ते जिगर अब्दुल्लाह के क़ातिल के लिए मैं कैसे दुआ-ए-इस्तग़फ़ार कर सकती हूँ!"

लोगों ने सय्यदा असमा रज़ि० से अर्ज़ किया कि जब तक आप उस शामी के हक़ में दुआ-ए-इस्तिग़फ़ार के लिए अल्लाह तआला के दरबार में हाथ-दराज़ नहीं करेंगी वह रसूले अकरम सल्ल० की क़मीस वापस करने से इन्कारी है, जिसकी वापसी की आप ख़्वाहाँ हैं।

हज़रत असमा रज़ि० ने कहा : शामी को मेरे पास आने के लिए कहो।

चुनांचे वह शामी रसूले अकरम सल्ल० की क़मीस लेकर हज़रत असमा रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उस वक़्त उसके हमराह अब्दुल्लाह बिन उरवा भी मौजूद थे। हज़रत असमा रज़ि० ने शामी से कहा : क़मीस अब्दुल्लाह बिन उरवा के हवाले कर दो। शामी ने क़मीस अब्दुल्लाह बिन उरवा के हवाले कर दी तो हज़रत असमा रज़ि० ने पूछा : अब्दुल्लाह! क़मीस हासिल कर ली? अब्दुल्लाह बिन उरवा ने अर्ज़ किया, हाँ। तब हज़रत असमा रज़ि० कहने लगीं : अब्दुल्लाह! अल्लाह तआला तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए।"

शामी ने समझा कि हज़रत असमा रज़ि० नें 'अब्दुल्लाह' कहकर उसके लिए मग़फ़िरत की दुआ की है, हालाँकि हज़रत असमा रज़ि० ने अब्दुल्लाह से अब्दुल्लाह बिन उरवा मुराद लिया और किनाया में उन्हीं को दुआ दे गईं, मगर शामी नहीं समझ सका।

(फ़िरासतुल-मोमिन, 41, इबराहीम अलहाज़मी)

हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने अजीब दिल हिलानेवाली नसीहत की

इब्ने अबी हातिम में है कि जब मुसलमानों ने ग़ौता में महलात और बाग़ात की तामीर आला पैमाने पर ज़रूरत से ज़्यादा शुरू कर दी तो हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने मस्जिद में खड़े होकर फ़रमाया कि ऐ दमिश्क़ के रहनेवालो, सुनो! लोग सब जमा हो गए तो आपने अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया कि "तुम्हें शर्म नहीं आती, तुम ख़याल नहीं करते कि तुमने वह जमा करना शुरू कर दिया जिसे तुम नहीं खा सकते। तुमने वह मकानात बनाने शुरू कर दिए जो तुम्हारे रहने-सहने के काम नहीं आते। तुमने वह दूर-दराज़ की आरज़ुएँ करनी शुरू कर दीं जो पूरी होनी मुहाल हैं। क्या तुम भूल गए, तुमसे अगले लोगों ने भी दौलतें जमा जत्था करके संभाल-संभाल कर रखी थीं। बड़े और ऊँचे-ऊँचे पुख़्ता और मज़बूत महलात तामीर किए थे, बड़ी-बड़ी आरज़ुएँ बाँधी थीं, लेकिन नतीजा यह हुआ कि वे धोखे में रह गए। उनकी पूँजी बर्बाद हो गई, उनके मकानात और बस्तियाँ उजड़ गईं। आदियों को देखो कि अदन से लेकर उमान तक उनके घोड़े और ऊँट थे, लेकिन आज वे कहाँ हैं?

(तफ़सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, पेज 41)

शैतान शिकार खेलना जानता है

अल्लाह तआला लोगों को क़ियामत के दिन से डरा रहा है और अपने तक़वा का हुक्म फ़रमा रहा है। इरशाद है : उस दिन बाप अपने बच्चे के या बच्चा अपने बाप के कुछ काम न आएगा, एक-दूसरे का फ़िद्या न हो सकेगा, तुम दुनिया पर एतिमाद न कर लो और दारे-आख़िरत को फ़रामोश न कर जाओ, शैतान के फ़रेब में न आ जाओ, वह तो सिर्फ़ टट्टी की आड़ में शिकार खेलना जानता है।

इब्ने अबी हातिम में है कि उज़ैर अलैहि० ने जब अपनी क़ौम की तकलीफ़ मुलाहज़ा की और ग़म व रंज बहुत बढ़ गया, नींद उचाट हो गई तो अपने रब तआला की तरफ़ झुक पड़े। फ़रमाते हैं, मैंने निहायत

तज़र्रुअ् और ज़ारी की, ख़ूब रोया गिड़गिड़ाया, नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, दुआएँ माँगीं। एक मर्तबा रो-रोकर तज़र्रुअ् कर रहा था कि मेरे सामने एक फ़रिश्ता आ गया, मैंने उससे पूछा कि क्या नेक लोग बुरों की शफ़ाअत करेंगे? या बाप बेटों के काम आएंगे? उसने फ़रमाया, क़ियामत का दिन झगड़ों के फ़ैसलों का दिन है, उस दिन अल्लाह तआला ख़ुद सामने होगा, कोई बग़ैर उसकी इजाज़त के लब भी न हिला सकेगा, किसी को दूसरे के बारे में न पकड़ा जाएगा, न बाप बेटे के बदले, न बेटा बाप के बदले, न भाई-भाई के बदले, न ग़ुलाम आक़ा के बदले, न कोई किसी का रंज और ग़म करेगा, न किसी को किसी से शफ़क़त और मुहब्बत होगी। न एक-दूसरे की तरफ़ से कोई पकड़ा जाएगा। हर शख़्स आपा-धापी में होगा, हर एक अपनी फ़िक्र में होगा, हर एक को अपना रोना पड़ा होगा, हर एक अपना बोझ उठाए हुए होगा न कि किसी और का। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, पेज 199)

नीचे लिखे ग्यारह आयतों पर जो जम गया वह जन्नती है

आप सल्ल० की अजीबो-ग़रीब दुआ

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ○ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ ○ وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ○ وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فَاعِلُونَ ○ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ○ إِلَّا عَلٰى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ○ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَاءَ ذٰلِكَ فَأُولٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ○ (المؤمنون: آيت ١ تا ١١)

यक़ीनन ईमानवालों ने फ़लाह हासिल कर ली। जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ् करते हैं। जो लग्वियात से मुंह मोड़ लेते हैं। जो ज़कात अदा करनेवाले हैं। जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करनेवाले हैं। बजुज़ अपनी बीवियों और मिल्कियत की लौण्डियों कळ। यक़ीनन यह मलामतियों में से नहीं हैं, जो उसकळ सिवा कुछ और चाहें वही हद से तजावुज़ कर जानेवाले हैं।"

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُوْنَ٥ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ٥ أُوْلٰٓئِكَ هُمُ الْوَارِثُوْنَ٥ اَلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خَالِدُوْنَ٥

"जो अपनी अमानतों और वादे की हिफ़ाज़त करनेवाले हैं, जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं, यही वारिस हैं जो फ़िरदौस के वारिस होंगे। जहाँ वे हमेशा रहेंगे।"

(सूरह मोमिनून, आयत 1-11)

नसई, तिर्मिज़ी, मुस्नद अहमद में मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० पर जब वह्य उतरती तो एक ऐसी मीठी-मीठी भीनी-भीनी हल्की-हल्की-सी आवाज़ आप सल्ल० के पास सुनी जाती जैसे शहद की मक्खियों के उड़ने की भिनभिनाहट होती है। एक मर्तबा यही हालत तारी हुई, थोड़ी देर के बाद जब वह्य उतर चुकी तो आप सल्ल० ने क़िबले की तरफ़ मुतवज्जेह होकर अपने दोनों हाथ उठाकर यह दुआ की कि "ख़ुदाया! तू हमें ज़्यादा कर, कम न कर। हमारा इकराम कर, अहानत न कर, हमें इनाम अता फ़रमा, महरूम न रख। हमें दूसरों पर इख़्तियार कर ले। हम पर दूसरों को पसन्द न फ़रमा। हमरो तू ख़ुश हो जा और हमें ख़ुश कर दे।" अरबी के अल्फ़ाज़ यै हैं :

اَللّٰهُمَّ زِدْنَا وَلَا تَنْقُصْنَا وَاَكْرِمْنَا وَلَا تُهِنَّا وَاَعْطِنَا وَلَا تَحْرِمْنَا وَاٰثِرْنَا وَلَا تُؤْثِرْ عَلَيْنَا وَارْضِ عَنَّا وَاَرْضِنَا ط

फिर फ़रमाया, मुझपर दस आयतें उतरी हैं, जो इनपर जम गया वह जन्नती हो गया। (तफ़सीर इब्ने-कसीर, जिल्द 3, पेज 446)

नाफ़रमान बीवी के लिए एक मुजर्रब अमल

सवाल : मैं आजकल बहुत परेशान हूँ। मेरी अहलिया मेरी कोई बात नहीं मानती है। मेरे वालिदैन, भाई, बहन सभी से लड़ाई करती है और उन सबके साथ मुझे क़त्ल की भी धमकी देती है। मैं हर मुमकिन कोशिश समझाने की कर चुका हूँ। उससे अलग भी रह चुका हूँ। उसके

वालिदैन बजाय उसको समझाने के उसकी हिम्मत अफ़ज़ाई करते हैं जिनसे वह और भी ज़्यादा शोख़ चश्म बन गई है। आप उसके लिए दुआ फ़रमाने के साथ कोई तदबीर ऐसी बताएँ कि मैं इस मुसीबत व परेशानी से नजात पा सकूँ?

जवाब : आपके परेशानकुन हालात से बहुत क़ल्क़ हैं। जो आदत लग जाती है उसका छोड़ना बहुत मुश्किल है। सब्र व तहम्मुल की ज़रूरत है। आप उसको समझाते हैं उसके अक़वाल व आमाल से ख़ुश नहीं हैं फिर भी वह बाज़ नहीं आती। उसका गुनाह आपके सर नहीं। इशा की नमाज़ के बाद यह पढ़ा करें

"يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ وَالْاَبْصَارِ يَا خَالِقَ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ يَا عَزِيْزُ يَا لَطِيْفُ يَا غَفَّارُ"

"या मुक़ल्लिबल क़ुलूबि वल अबसारि या ख़ालिक़ल लैलि वन्नहारि या अज़ीज़ु या लतीफ़ु या ग़फ़्फ़ारु"

(दो सौ मर्तबा अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ ग्यारह मर्तबा पाबन्दी से पढ़ा करें। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए)।

जिसकी इस्लाह मशाइख़ से नहीं होती उसकी इस्लाह नाफ़रमान बीवी से होती है

सवाल : हज़रत! मेरी बीवी बहुत परेशान कर रही है। मैके में ही रहती है। बात-बात पर गुस्सा व नाराज़गी। घर में जवान बच्चे हैं, फिर भी हर वक़्त वह अपने मैके चली जाती है। उसने हर तरह से परेशान कर रखा है। उसको तलाक़-रजई देने का इरादा कर लिया है। आप मशविरा फ़रमाएँ?

जवाब : आप बीवी को तलाक़ देने का इरादा हरगिज़ न करें कि अबग़ज़ुल मुबाहात है। आपको भी दुशवारी पेश आएगी, उसको भी। जिसकी इस्लाह मशाइख़ से नहीं होती उसकी इस्लाह बीवी से होती है। हदीस पाक में है कि शरीफ़ मर्द पर उसकी बीवी हावी रहती है और कमीना मर्द अपनी बीवी पर हावी रहता है। मैं शरीफ़ होकर इस हाल में रहूँ कि मेरी बीवियाँ हावी रहें मुझे पसन्द है इससे कि मैं कमीना बनकर

बीवियों पर हावी रहूँ। जब ससुराल क़रीब है तो आप वहाँ होकर आया करें, बीवी अगरचे अपने दिल में नाख़ुश रहे, मगर आप उससे नाख़ुश न हों बल्कि उससे कह दें कि मेरी तरफ़ से इजाज़त है जब तक जी चाहे आठ रोज़, दस रोज़ अपने मैके में रहो। नाराज़गी की कोई बात नहीं है। इनशाअल्लाह इससे बहुत-सी उलझनें दूर हो जाएंगी। अल्लाह तआला क़ल्ब में सलाहियत पैदा फ़रमाए।

ख़्वाब में किसी के सर पर ताज रख दिया जाए तो वह बादशाह नहीं बन जाता

सवाल : हज़रत! रात में कभी ख़्वाब देखता हूँ कि सारी जायदाद मेरे मुल्क की मेरे क़ब्ज़े में आ चुकी है और मैं उस मुल्क का बादशाह बन चुका हूँ। कभी देखता हूँ कि मैं घोड़े पर सवार हूँ और पब्लिक मेरे पीछे-पीछे चल रही है। कभी देखता हूँ कि मैं एक बड़े दस्तरख़्वान पर जिस पर अजीब क़िस्म की मेवाजात चीज़ें हैं, उसमें से खा रहा हूँ। कभी डरावने ख़्वाब देखता हूँ कि मेरे पीछे एक काला साँप दौड़ रहा है और मैं उसके आगे दौड़ रहा हूँ मगर दिल की घबराहट ने मुझे दौड़ने नहीं दिया और साँप का निवाला बनने के क़रीब कर दिया। बराए करम जवाब देकर तसल्ली दीजिए?

जवाब : देखिए भाई! अव्वलन तो हर ख़्वाब की ताबीर की जुस्तुजू न कीजिए, ख़्वाब चन्द वुजूहात की बिना पर आदमी देखता है :

(1) ख़्वाब दिमाग़ी इन्तिशार और माहौल के असरात से कम ख़ाली होते हैं।

(2) ख़ज़ान-ए-ख़्याल में कभी-कभी देखी हुई चीज़ें पड़ी रहती हैं, क़ुव्वते मुतसर्रुफ़ा उनको जमा कर देती हैं।

3. मेदे से बुख़ारात उठकर दिमाग़ की तरफ़ ऊद करते हैं तो इससे बकसरत ख़्वाब नज़र आते हैं।

4. मिज़ाजी कैफ़ियत सौदा, सफ़रा, दम, बलग़म की वजह से बकसरत

ख़्वाब नज़र आते हैं।

5. नफ़्स की ख़्वाहिशात को ख़्वाब में बड़ा दख़ल होता है।

6. शैतान हसद करके परेशानकुन ख़्वाब दिखलाता है।

7. ख़्वाब कभी-कभी तम्सील होता है और कभी ऐन होता है।

इसलिए हर ख़्वाब की ताबीर तलाश करना और हर ख़्वाब की ताबीर के दरपे नहीं होना चाहिए। अगर कोई भूका-प्यासा आदमी ख़्वाब में रोटी खा ले, पानी पी ले तो इससे भूक और प्यास रफ़ा नहीं हो जाती। ख़्वाब में किसी के सर पर ताज रख दिया जाए तो वह बादशाह नहीं बन जाता। अच्छा ख़्वाब नज़र आए तो उसपर अलहम्दुलिल्लाह पढ़ लिया जाए और बुरा ख़्वाब नज़र आए तो "ला हौल" और "इस्तिग़फ़ार" पढ़ लिया जाए। आपको अगर मौक़ा हो तो यहाँ तशरीफ़ ले आइए, ज़बानी फ़हमाइश अच्छी तरह कर दी जाती है, उम्मीद तो यह है कि आपके चार सफ़हात गुंजान के जवाब में ये सतरें भी काफ़ी हो जाएंगी।

अल्लाह की रिज़ा का तालिब
मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

माफ़ कर देनेवाला ब-आराम मीठी नींद सो जाता है और बदले की धुनवाला दिन-रात मुतफ़क्किर रहता है और तोड़-जोड़ सोचता है

सुनो माफ़ कर देने वाला ब-आराम मीठी नींद सो जाता है और बदले की धुनवाला दिन-रात मुतफ़क्किर रहता है और तोड़-जोड़ सोचता है : (1) मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० को बुरा-भला कहना शुरू किया। हुज़ूर सल्ल० भी वहीं तशरीफ़ फ़रमा थे। आप मुस्कुराने लगे। हज़रत सिद्दीक़ रज़ि० ख़ामोश थे, लेकिन जब उसने बहुत गालियाँ दीं तो आपने भी बाज़ का जवाब दिया। इसपर हुज़ूर सल्ल० वहाँ से नाराज़ होकर चल दिए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० से रहा न गया, आप सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि

या रसूलल्लाह सल्ल०! वह मुझे बुरा कहता रहा तो आप बैठे रहे और सुनते रहे। लेकिन जब मैंने उसकी दो-एक बातों का जवाब दिया तो आप नाराज़ होकर उठ चले? आप सल्ल० ने फ़रमाया, "सुनो जब तक तुम ख़ामोश थे, फ़रिश्ता तुम्हारी तरफ़ से जवाब देता था, जब तुम ख़ुद बोलने लगे तो फ़रिश्ता हट गया और शैतान बीच में आ गया। फिर भला मैं शैतान की मौजूदगी में कैसे बैठा रहता।" फिर फ़रमाया, सुनो, अबू बक्र! तीन चीज़ें बिल्कुल बरहक़ हैं : (1) जिस पर कोई ज़ुल्म किया जाए और वह उससे चश्मपोशी करे तो ज़रूर अल्लाह तआला उसे इज़्ज़त देगा और उसकी मदद करेगा। (2) जो शख़्स सुलूक और एहसान का दरवाज़ा खोलेगा और सिलारहमी के इरादे से लोगों को देता रहेगा, अल्लाह तआला उसे बरकत देगा और ज़्यादती अता फ़रमाएगा। (3) और जो शख़्स बढ़ाने के लिए सवाल का दरवाज़ा खोल लेगा इससे-उससे माँगता फिरेगा, अल्लाह तआला उसके यहाँ बेबरकती कर देगा और कमी में ही वह मुब्तला रखेगा।

यह रिवायत अबू दाऊद में भी है और मज़्मून के एतिबार से यह बड़ी प्यारी हदीस है। (तफ़सीर इब्ने-कसीर, जिल्द 5, पेज 23)

माफ़ करने में जो लज़्ज़त है, बदला लेने में नहीं है

(1) नबी-ए-अल्लाह हज़रत यूसुफ़ अलैहि० ने अपने भाइयों पर क़ाबू फ़रमाकर, फ़रमा दिया कि जाओ तुम्हें मैं कोई डाँट-डपट नहीं करता बल्कि मेरी ख़्वाहिश है और दुआ है कि ख़ुदा तआला भी तुम्हें माफ़ फ़रमा दे। (2) और जैसा कि सरदारे अम्बिया, रसूले ख़ुदा, अहमद मुज्तबा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० ने हुदैबिया में किया जबकि अस्सी कुफ़्फ़ार ग़फ़लत का मौक़ा ढूढ़कर चुपचाप लश्करे इस्लाम में घुस आए, जब ये पकड़ लिए गए और गिरफ़्तार होकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दिए गए तो आप सल्ल० ने उन सबको माफ़ी दे दी और छोड़ दिया। (3) और जैसा कि आप सल्ल० ने ग़ौरस बिन हारिस को माफ़ कर दिया। यह वह शख़्स है कि हुज़ूर सल्ल० के सोते हुए उसने आप सल्ल० की तलवार पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब आप सल्ल० जागे और

उसे डाँटा तो तलवार उसके हाथ से छूट गई और आप सल्ल० ने तलवार ले ली, क़ाबू मे आने के बाद वह मुजरिम गर्दन झुकाए आप सल्ल० के सामने खड़ा हो गया। आप सल्ल० ने सहाबा रज़ि० को बुलाकर यह मन्ज़र भी दिखाया और यह भी सुनाया फिर उसे माफ़ फ़रमा दिया और जाने दिया। (4) इसी तरह लबीद बिन आसिम ने जब आप सल्ल० पर जादू किया तो बावजूद इल्म व क़ुदरत के आप सल्ल० ने उससे दरगुज़र फ़रमा लिया। (5) और इसी तरह जिस यहूदिया औरत ने आप सल्ल० को ज़हर दिया था, आप सल्ल० ने उससे भी बदला न लिया। और बावजूद क़ाबू पाने और मालूम हो जाने के भी आप सल्ल० ने इतने बड़े वाक़िये को आना-जाना कर दिया। उस औरत का नाम ज़ैनब था। यह मरहब यहूदी की बहन थी जो जंगे ख़ैबर में हज़रत महमूद बिन सलमा रज़ि० के हाथों मारा गया था। उसने बकरी के शाने के गोश्त में ज़हर मिलाकर ख़ुद हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश किया था। ख़ुद शाने ही ने आँहज़रत सल्ल० को अपने ज़हर आलूद होने की ख़बर दी थी। जब आप सल्ल० ने उसे बुलाकर दरयाफ़्त फ़रमाया था तो उसने इक़रार किया था और वजह यह बयान की थी कि अगर आप सल्ल० सच्चे नबी हैं तो यह आप सल्ल० को कुछ नुक़्सान न पहुंचा सकेगा, अगर आप सल्ल० अपने दावे में झूठे हैं तो हमें आप सल्ल० से राहत हासिल हो जाएगी। यह मालूम हो जाने पर और उसके इक़बाल कर लेने पर भी ख़ुदा तआला के रसूल सल्ल० ने उसे छोड़ दिया, माफ़ फ़रमा दिया। गो बाद में वह क़त्ल कर दी गई, इस लिए कि उसी ज़हर से और उसी ज़हरीले खाने से हज़रत बशर बिन बरा रज़ि० फ़ौत हो गए, तब क़िसासन यह यहूदिया औरत भी क़त्ल कराई गई। इसी तरह के और भी हुज़ूर सल्ल० के वाक़िआत बहुत से हैं।

(तफ़्सीर इब्ने-कसीर, जिल्द 5, पेज 21)

अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से ख़ूब ख़ुश होता है

सहीह मुस्लिम में है कि अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से उससे कहीं ज़्यादा ख़ुश होता है कि जिसकी ऊँटनी जंगल बयाबान में गुम

हो गई हो जिस पर उसका खाना-पीना भी हो। वह उसकी जुस्तुजू करके आजिज़ आकर दरख़्त तले पड़ा रहा और ऊँटनी से बिल्कुल मायूस हो गया कि यकायक वह देखता है कि उसकी वह ऊँटनी उसके पास ही खड़ी है। वह फ़ौरन ही उठ बैठता है और उसकी नकेल थाम लेता है और इस क़द्र खुश होता है कि बेतहाशा उसकी ज़बान से निकल जाता है कि या अल्लाह! बेशक तू मेरा ग़ुलाम है और मैं तेरा रब हूँ। अपनी ख़ुशी की वजह से ख़ता कर जाता है।

एक मुख़्तसर हदीस में है कि अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से इस क़दर ख़ुश होता है कि इतनी ख़ुशी उसको भी नहीं होती जो ऐसी जगह में हो जहाँ प्यास के मारे हलाक हो रहा हो और वहीं उसकी सवारी का जानवर गुम हो गया हो और दफ़अतन उसे वह मिल जाए।

(तफ़सीर इब्ने-कसीर, जिल्द 5, पेज 16)

आख़िरत की भलाइयाँ सिर्फ़ उनके लिए हैं जो दुनिया में फूँक-फूँक कर क़दम रखते रहे

अल्लाह सुब्हानहू व तआला फ़रमाता है कि अगर यह बात न होती कि लोग माल को मेरा अफ़ज़ल और मेरी रज़ामन्दी की दलील जानकर मालदारों के मिस्ल बन जाएँ तो मैं कुफ़्फ़ार को यह दुनिया-ए-हक़ीर इतनी देता कि उनके घर की छतें बल्कि उनके कोठों की सीढ़ियाँ भी चाँदी की होतीं जिनके ज़रिए से वे बालाख़ानों पर पहुंचते और उनके दरवाज़े उनके बैठने के तख़्त भी चाँदी के होते और सोने के भी। मेरे नज़दीक दुनिया कोई क़द्र की चीज़ नहीं, यह फ़ानी है, ज़ाइल होनेवाली है और सारी मिल जाए तब भी आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत ही कम है। उन लोगों की अच्छाइयों के बदले जो सिर्फ़ दुनिया ही चाहते हैं। उन्हें यहीं मिल जाता है, खाने-पीने, रहने-सहने, बरतने-बरताने में कुछ सहूलतें बहम पहुंच जाती हैं। आख़िरत में तो वे महज़ ख़ाली हाथ होंगे। एक नेकी बाक़ी न होगी जो ख़ुदा तआला से कुछ हासिल कर सकें, जैसे कि सहीह हदीस में वारिद हुआ है। हदीस में है कि अगर दुनिया की क़द्र ख़ुदा तआला के यहाँ एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो किसी काफ़िर को यहाँ पानी का

एक घूँट भी न पिलाता। फिर फ़रमाया आख़रत की भलाइयाँ सिर्फ़ उनके लिए हैं, जो दुनिया में फूँक-फूँक कर क़दम रखते रहे, डर-डर कर जिन्दगी गुज़ारते रहे। वहाँ रब तआला की ख़ास नेमतें और मख़्सूस रहमतें जो उन्हीं को मिलेंगी, उनमें कोई और उनका शरीक न होगा। चुनांचे जब हज़रत उमर रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० के पास आप सल्ल० के बालाख़ाने में गए और आप सल्ल० ने उस वक़्त अपनी अज़वाजे मुतह्हरात से ईला कर रखा था, तो देखा कि आप सल्ल० एक चटाई के टुकड़े पर लेटे हुए हैं, जिसके निशान आप सल्ल० के जिस्म मुबारक पर नुमायाँ हैं। तो रो पड़े और कहा या रसूलल्लाह सल्ल०! क़ैसर व किसरा किस आन-बान और किस शौकत व शान से ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं और आप सल्ल० ख़ुदा तआला के बरगुज़ीदा प्यारे रसूल होकर किस हाल में हैं? हुज़ूर सल्ल० या तो तकिया लगाए हुए बैठे थे या फ़ौरन तकिया छोड़ दिया और फ़रमाने लगे, ऐ इब्ने ख़त्ताब! क्या तू शक में है? ये तो वे लोग हैं जिनकी नेकियाँ जल्दी से उन्हें मिल गईं। एक और रिवायत में है कि क्या तू इससे ख़ुश नहीं कि इन्हें दुनिया मिले और हमें आख़िरत। सहीहैन वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि सोने-चाँदी के बर्तनों में खाओ-पियो नहीं, यह दुनिया में काफ़िरों के लिए हैं और आख़िरत में हमारे लिए हैं और दुनिया में यह उनके लिए यूँ हैं कि रब तआला की नज़रों में दुनिया ज़लील व ख़्वार है। तिर्मिज़ी वग़ैरह की एक हसन सहीह हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर दुनिया अल्लाह तआला के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी वक़्अत रखती तो किसी काफ़िर को अल्लाह तआला एक घूँट पानी न पिलाता।

(तफ़सीर इब्ने-कसीर, जिल्द 5, पेज 33)

हर दोस्ती क़ियामत के दिन दुश्मनी में बदल जाएगी मगर परहेज़गारों की दोस्ती क़ायम रहेगी

इब्ने अबी हातिम में मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं कि दो ईमानदार जो आपस में दोस्त होते हैं जब उनमें से एक का इंतिक़ाल हो जाता है और ख़ुदा तआला की तरफ़

से उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी मिलती है तो वह अपने दोस्त को याद करता है और कहता है, ख़ुदाया! फ़ुलाँ शख़्स मेरा वली दोस्त था जो मुझे तेरी और तेरे रसूल सल्ल० की इताअत का हुक्म देता था, भलाई की हिदायत करता था, बुराई से रोकता था और मुझे यक़ीन दिलाया करता था कि एक दिन ख़ुदा तआला से मिलना है। पस ऐ बारी तआला! तू उसे राहे हक़ पर साबित क़दम रख यहाँ तक कि उसे भी तू वह दिखाए जो तूने मुझे दिखाया है और उससे भी तू इसी तरह राज़ी हो जाए जिस तरह मुझसे राज़ी हुआ है। अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब मिलता है तू ठंडे कलेजों चला जा। उसके लिए जो कुछ मैंने तैयार किया है अगर तू उसे देख लेता तो बहुत हंसता और बिल्कुल आज़ुरदा न होता। फिर जब दूसरा दोस्त मरता है और उनकी रूहें मिलती हैं तो कहा जाता है कि तुम आपस में एक-दूसरे का तअल्लुक़ बयान करो। पस हर एक-दूसरे से कहता है कि यह मेरा बड़ा अच्छा भाई था और निहायत नेक साथी था और बहुत बेहतर दोस्त था। (तफ़्सीर इब्ने-कसीर, जिल्द 5, पेज 41)

सबसे नीचे दर्जे के जन्नती की निगाह सौ साल के रास्ते तक जाएगी

रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं : सबसे नीचे दर्जे का जन्नती जो सबसे आख़िर में जन्नत में जाएगा उसकी निगाह सौ साल के रास्ते तक जाती होगी लेकिन बराबर वहाँ तक उसे अपने ही डेरे, ख़ेमे और महल सोने के और ज़मुर्रद के नज़र आएंगे जो तमाम के तमाम क़िस्म-क़िस्म और रंग-बिरंग के साज़ो-सामान से पुर होंगे। सुबह-शाम सत्तर-सत्तर हज़ार रकाबियाँ, प्याले अलग-अलग वज़अ के खाने से पुर उसके सामने रखे जाएंगे जिनमें से हर एक उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगा और अव्वल से आख़िर तक उसकी इश्तहा बराबर और यकसाँ रहेगी, अगर वह रूए ज़मीनवालों की दावत कर दे तो सबको किफ़ायत हो जाए और कुछ न घटे। (अब्दुर्रज़्ज़ाक)

इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल० ने जन्नत का ज़िक्र करते

हुए फ़रमाया कि जन्नती एक लुक़मा उठाएगा और उसके दिल में ख़याल आएगा कि फ़ुलाँ क़िस्म का खाना होता! चुनांचे वह निवाला उसके मुंह में वही चीज़ बन जाएगा जिसकी उसने ख़ाहिश की हुई होगी। फिर आप सल्ल० ने उसी आयत की तिलावत की। मुस्नद अहमद में है कि अल्लाह तआला के रसूल सल्ल० फ़रमाते हैं, सबसे अदना मर्तबा के जन्नती के बालाख़ाने की सात मंज़िलें होंगी, यह छठी मंज़िल में होगा और उसके ऊपर सातवीं होगी। उसके तीस ख़ादिम होंगे जो सुबह-शाम तीन सौ सोने के बर्तनों में उसके लिए तआम व शराब पेश करेंगे, हर एक में अलग-अलग क़िस्म का अजीब व ग़रीब और निहायत लज़ीज़ खाना होगा। अव्वल से आख़िर तक उसे खाने की इश्तहा वैसी ही रहेगी। इसी तरह तीन सौ सोने के प्यालों और कटोरों और गिलासों में उसे पीने की चीज़ें दी जाएंगी, वह भी एक से एक बढ़कर होगीं। वह कहेगा कि ख़ुदाया! अगर तू मुझे इजाज़त दे तो मैं तमाम जन्नतियों की दावत करूँ। सबभी अगर मेरे यहाँ खा जाएँ तो भी मेरे खाने में कमी नहीं आ सकती। और उसकी बहत्तर बीवियाँ हूरे ऐन में से होंगी। और दुनिया की और बीवियाँ अलग होंगी। उनमें से एक-एक मील-मील भर की जगह में बैठेंगी। फिर साथ ही उनसे कहा जाएगा कि ये नेमतें भी हमेशगीवाली हैं, और तुम भी यहाँ हमेशा ही रहोगे। न मौत आए न घाटा आए, न जगह बदले, न तकलीफ़ पहुंचे, फिर उनपर अपना फ़ज़्ल व एहसान बतलाया जाएगा कि तुम्हारे आमाल का बदला मैंने अपनी वसीअ रहमत से तुम्हें यह दिया है क्योंकि कोई शख़्स बग़ैर रहमते-ख़ुदा तआला के सिर्फ़ अपने आमाल की बिना पर जन्नत में नहीं जा सकता। हाँ, अलबत्ता जन्नत के दर्जों में तफ़ावुत जो होगा वह नेक आमाल के तफ़ावुत की वजह से होगा।

(तफ़्सीर इब्ने-क़सीर, जिल्द 5, पेज 42)

आप सल्ल० की अजीब मुनाजात

मुस्नद अहमद में है कि उहुद के दिन जब मुश्रिकीन टूट पड़े तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया : दुरुस्तगी के साथ ठीक-ठीक हो जाओ तो मैं अपने रब अज़्ज़ व जल्ल की सना बयान करूँ। पस लोग आप सल्ल० के

पीछे सफ़ें बाँधकर खड़े हो गए और आप सल्ल० ने यह दुआ पढ़ी :

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهٗ ط اَللّٰهُمَّ لَا قَابِضَ لِمَا بَسَطْتَ وَلَا بَاسِطَ لِمَا قَبَضْتَ وَلَا هَادِىَ لِمَنْ اَضْلَلْتَ وَلَا مُضِلَّ لِمَنْ هَدَيْتَ وَلَا مُعْطِىَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُقَرِّبَ لِمَا بَاعَدْتَ وَلَا مُبَاعِدَ لِمَا قَرَّبْتَ ط اَللّٰهُمَّ ابْسُطْ عَلَيْنَا مِنْ م بَرَكَاتِكَ وَرَحْمَتِكَ وَفَضْلِكَ وَرِزْقِكَ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ النَّعِيْمَ يَوْمَ الْعَيْلَةِ وَالْاَمْنَ يَوْمَ الْخَوْفِ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ عَائِذٌم بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اَعْطَيْتَنَا وَمِنْ شَرِّ مَا مَنَعْتَنَا ط اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيْنَا الْاِيْمَانَ وَزَيِّنْهُ فِىْ قُلُوْبِنَا وَكَرِّهْ اِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ وَاَحْيِنَا مُسْلِمِيْنَ وَاَلْحِقْنَا بِالصَّالِحِيْنَ غَيْرَ خَزَايَا وَلَا مَفْتُوْنِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ قَاتِلِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلٰهَ الْحَقِّ ط

"तमाम तारीफ़ें तेरे ही लिए हैं। तू जिसे कुशादगी दे उसे कोई तंग नहीं कर सकता, तू जिसे गुमराह करे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और जिसे तू हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता, जिसे तू रोक ले उसे कोई दे नहीं सकता और जिसे तू दे उसे कोई बाज़ रख नहीं सकता। जिसे तू दूर कर दे उसे क़रीब करनेवाला कोई नहीं और जिसे तू क़रीब कर ले उसे दूर करनेवाला कोई नहीं। ऐ अल्लाह! हम पर अपनी बरकतें, रहमतें, फ़ज़्ल और रिज़्क़ कुशादा कर दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे वह हमेशगी की नेमतें चाहता हूँ जो न इधर-उधर हों, न ज़ाइल हों। ख़ुदाया! फ़क़ीरी और एहतियाज वाले दिन मुझे अपनी नेमतें अता फ़रमा और ख़ौफ़ वाले दिन मुझे अम्न अता फ़रमा। परवरदिगार! जो तूने मुझे दे रखा है और जो नहीं दिया उन सबकी बुराई से मैं तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ मेरे माबूद! हमारे दिलों में ईमान की मुहब्बत डाल दे और उसे हमारी नज़रों में ज़ीनतदार बना दे और कुफ़्र, बदकारी और नाफ़रमानी से हमारे दिलों में दूरी और अदावत पैदा कर दे और हमें

राह-याफ़्ता लोगों में कर दे। ऐ हमारे रब! हमें इस्लाम की हालत में फ़ौत कर और इस्लाम पर ही ज़िंदा रख और नेकोकार लोगों से मिला दे, हम रुसवा न हों, हम फ़ितने में न डाले जाएँ। ख़ुदाया! उन काफ़िरों का सत्यानास कर जो तेरे रसूलों को झुठलाएँ और तेरी राह से रोकें, तू उनपर अपनी सज़ा और अपना अज़ाब नाज़िल फ़रमा। इलाही अहले किताब के काफ़िरों को भी तबाह कर, ऐ सच्चे माबूद।

यह हदीस इमाम नसई भी अपनी किताब, अमल अलयौम वल्लैला, में लाए हैं। (तफ़्सीर इब्ने-कसीर, जिल्द 5, पेज 146-147)

हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला कीजिए, दो फ़रिश्ते साथ रहेंगे और आपकी रहबरी करेंगे

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि० कहते हैं कि एक मुसलमान और यहूदी अपने झगड़े का फ़ैसला कराने हज़रत उमर रज़ि० के पास आए। आप रज़ि० ने देखा कि यहूदी हक़ पर है तो आप रज़ि० ने उसके हक़ में फ़ैसला कर दिया। इस पर उस यहूदी ने कहा, “अल्लाह की क़सम! आप ने हक़ का फ़ैसला किया है”। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उसे (ख़ुशी में हल्का-सा) कोड़ा मारा और फ़रमाया कि तुझे किस तरह पता चला (कि हक़ क्या होता है?) इस पर यहूदी ने कहा, अल्लाह की क़सम! हमें तौरात में यह लिखा हुआ मिलता है कि जो क़ाज़ी हक़ का फ़ैसला करता है उसके दाएँ जानिब एक फ़रिश्ता और बाएँ जानिब एक फ़रिश्ता होता है जो उसे सही रास्ते पर चलाते हैं और उसे हक़ बात का इल्हाम करते हैं उस वक़्त तक जब तक कि वह क़ाज़ी हक़ का फ़ैसला करने का अज़्म रखता है। जब वह यह अज़्म छोड़ देता है तो दोनों फ़रिश्ते उसे छोड़कर आसमान पर चढ़ जाते हैं। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 144)

इमारत के ख़्वाहिशमंद अपनी ख़्वाहिश के अंजाम को सोचें

हर अमीर चाहे अच्छा हो या बुरा जहन्नम के पुल पर खड़ा किया जाएगा और उसे तौक़ पहनाया जाएगा

हज़रत अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमा रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत बशर बिन आसिम रज़ि० को हवाज़िन कळ सदक़ात (वसूल करने) पर आमिल मुक़र्रर किया, लेकिन हज़रत बशर (हवाज़िन कळ सदक़ात वसूल करने) न गए। उनसे हज़रत उमर रज़ि० की मुलाक़ात हुई। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा तुम (हवाज़िन) क्यों नहीं गए? क्या हमारी बात को सुनना और मानना ज़रूरी नहीं है? हज़रत बशर ने कहा, क्यों नहीं। लेकिन मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जिसे मुसलमानों कळ किसी अम्र का ज़िम्मेदार बनाया गया, उसे क़ियामत के दिन लाकर जहन्नम के पुल पर खड़ा कर दिया जाएगा। अगर उसने अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह अदा किया होगा तो वह नजात पाएगा और अगर उसने ज़िम्मेदारी सही तरह अदा न की होगी तो पुल उसे लेकर टूट पड़ेगा और वह सत्तर (70) साल तक जहन्नम में गिरता चला जाएगा। (यह सुनकर) हज़रत उमर रज़ि० बहुत परेशान और ग़मगीन हुए और वहाँ से चले गए, रास्ते में उनकी हज़रत अबू ज़र रज़ि० से मुलाक़ात हुई। उन्होंने कहा कि क्या बात है, मैं आपको परेशान और ग़मगीन देख रहा हूँ? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, "मैं क्यों न परेशान और ग़मगीन होऊँ जबकि मैं हज़रत बशर बिन आसिम रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० का यह इरशाद सुन चुका हूँ कि जिसे मुसलमानों के किसी अम्र का ज़िम्मेदार बनाया गया उसे क़ियामत के दिन लाकर जहन्नम कळ पुल पर खड़ा कर दिया जाएगा, अगर उसने अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह अदा की होगी तो वह नजात पा लेगा और अगर उसने ज़िम्मेदारी सही तरह अदा न की होगी तो पुल उसे लेकर टूट पड़ेगा और वह सत्तर (70) साल तक जहन्नम में गिरता चला जाएगा।" इस पर हज़रत अबू ज़र रज़ि० ने कहा, "आपने हुज़ूर सल्ल० से यह

हदीस नहीं सुनी है?" हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, "नहीं"। हज़रत अबू ज़र रज़ि० ने कहा कि मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो किसी मुसलमान को ज़िम्मेदार बनाएगा उसे क़ियामत कळ दिन लाकर जहन्नम कळ पुल पर खड़ा कर दिया जाएगा, अगर वह (उस ज़िम्मेदार बनाने में) ठीक है तो (दोज़ख़ से) नजात पाएगा और अगर वह उसमें ठीक नहीं था तो पुल उसे लेकर टूट जाएगा, और वह सत्तर (70) साल तक जहन्नम में गिरता चला जाएगा, और वह जहन्नम काली अनधेरी है। (आप बताएँ कि) इन दोनों हदीसों में से किस हदीस कळ सुनने से आपकळ दिल को ज़्यादा तकलीफ़ हुई है? आपने फ़रमाया, "दोनों के सुनने से मेरे दिल को तकलीफ़ हुई है लेकिन जब ख़िलाफ़त में ऐसा ज़बरदस्त ख़तरा है तो उसे कौन क़बूल करेगा?" हज़रत अबू ज़र रज़ि० ने कहा, "उसे वही क़बूल करेगा, जिसकी नाक काटने का और उसके रुख़्सार को ज़मीन से मिलाने का यानी उसे ज़लील करने का अल्लाह ने इरादा किया हो, बहरहाल हमारे इल्म के मुताबिक़ आपकी ख़िलाफ़त में ख़ैर ही ख़ैर है। हाँ, यह हो सकता है कि आप इस ख़िलाफ़त का ज़िम्मेदार ऐसे शख़्स को बना दें जो उसमें अद्ल व इन्साफ़ से काम न ले तो आप भी उसकळ गुनाह से न बच सकेंगे"।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पूज 80)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, "हर अमीर व हाकिम चाहे वह दस ही आदमियों का अमीर व हाकिम क्यों न हो क़ियामत के दिन इस तरह लाया जाएगा कि उसकी गर्दन में तौक़ होगा, यहाँ तक कि उसको उस तौक़ से या तो उसका अद्ल नजात दिलाएगा या उसका ज़ुल्म हलाक करेगा।" (दारमी)

मतलब यह है कि एक बार तो हर हाकिम को चाहे वह आदिल हो या ज़ालिम, बरगाहे रब्बुल इज़्ज़त में बाँधकर लाया जाएगा और फिर तहक़ीक़ के बाद अगर वह आदिल साबित हुआ तो उसको नजात दे दी जाएगी, और अगर ज़ालिम साबित होगा तो हलाकत यानी अज़ाब में मुब्तला किया जाएगा (मज़ाहिरे हक़, जदीद, जिल्द 4, पेज 431)

शैतान की तस्वीर बना दीजिए

जाहिज़ एक बहुत मारूफ़ अदीब गुज़रा है, उसका नाम अबू उसमान बिन बहर बिन महबूब था। यह मोअ्तज़ली था। उसकी शक्ल व सूरत बहुत ही बुरी और ख़ौफ़नाक थी, गोया वह बदसूरती के आला दर्जे पर फ़ाइज़ था। उसका अक़ीदा भी दुरुस्त नहीं था। अलबत्ता इल्म और फ़न में उसकी मिसाल ख़ाल-ख़ाल ही नज़र आती है। उसने बहुत-से उलूम सीख रखे थे। चुनांचे उसने बहुत-सी मुफ़ीद किताबें तसनीफ़ कीं, जो इस बात पर दलालत करती हैं कि वह ग़ैर मामूली हाफ़ज़े का मालिक था। उसकी लिखी हुई किताबों में दो किताबें "किताबुल हैवान" और "अल-बयान वत्तबिय्यीन" बहुत ही मशहूर हैं। उसके बारे में यह बात तारीख़ की किताबों में लिखी हुई है कि :

> "जो किताब भी उसके हाथ लगती वह उसे मुकम्मल पढ़ डालता, बल्कि उसका शौके-मुताला इस हद तक था कि वह कुतुब फ़रोशों की दुकानें उजरत पर लेकर रात-रात भर उनमें मुताला करता।"

देखने मे वह निहायत बदसूरत और बदशकल था मगर मुस्तहकम इल्म ने उसे ख़ूबसूरत बना दिया था। आज भी वह अपने इल्म के सबब तारीख़ व अदब की किताबों में ज़िंदा है। उसकी बदसूरती के मुताल्लिक़ एक वाक़िआ मारूफ़ है जो एक ख़ातून के साथ पेश आया था। जाहिज़ का अपना बयान है :

"मुझे एक औरत के सिवा कभी किसी औरत ने रुसवा नहीं किया। हुआ यह कि वह औरत मुझे एक सुनार के पास ले गई और उससे कहने लगी : "इसकी तरह बना दो।"

यह कहकर वह औरत तो चली गई, मगर मैं हैरत में पड़ गया। फिर मैंने सुनार से पूछा : "यह औरत तुमसे मेरे बारे में क्या कहकर चली गई?" उसने जवाब दिया –

"इस औरत ने (अपनी अंगूठी पर) मुझसे शैतान की तस्वीर बनाने

की ख़ाहिश की। मैंने उससे कहा कि जब मैंने किसी शैतान को देखा ही नहीं है तो भला उसकी शक्ल कैसे बना सकता हूँ? चुनांचे वह आपको मेरे पास लेकर आई ताकि आपकी सूरत देखकर उसके लिए (उसकी अंगूठी पर) शैतान की तस्वीर मुनक़्क़श करूँ।"

(अलमुस्ततरफ़ः 1/38, जाहिज़ की सवानेह के लिए देखिए : सीरते-अलामुन्नबला : 11/526, मुअजमुल अदबा : 5/2101, अलबिदाया वन्निहाया : 14/514, दारे हिजर)

मियाँ-बीवी की शुक्ररंजी अगर हो तो बावक़ार हो

हर घर में बाज़ औक़ात शुक्ररंजियाँ हो जाती हैं। मियाँ-बीवी में भी कभी कभार ग़लतफ़हमियाँ पैदा हो जाती हैं, बाज़ औक़ात बीवी ख़ाविन्द से नाराज़ और बसा-औक़ात ख़ाविन्द को बीवी से शिकवा हो जाती है। कायनात के सबसे बेहतरीन घराने में भी बाज़-औक़ात ऐसी शुक्ररंजियाँ पैदा हो जाती थीं। उनका इज़्हार कैसे हुआ? आइए एक हदीस पढते हैं। उसके मुताले के बाद बहुत-से उमूर आपके इल्म में आएंगे।

हज़रत आइशा रज़ि० बयान करती हैं कि एक मर्तबा रसूले अकरम सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, "जब तुम मुझसे ख़ुश होती हो तो मालूम हो जाता है और जब नाराज़ होती हो तब भी मैं समझ जाता हूँ।"

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० ने अर्ज़ किया, "आप सल्ल० कैसे यह समझ जाते हैं?"

हुज़ूर सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया,

"जब तुम मुझसे ख़ुश रहती हो तो कहती हो : मुहम्मद (सल्ल०) के रब की क़सम, और जब मुझसे नाख़ुश होती हो तो कहती हो : इबराहीम अलैहि० के रब की क़सम।"

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० ने अर्ज़ किया, "बिल्कुल दुरुस्त फ़रमाया, आपने ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं क़सम खाते वक़्त सिर्फ़ आपका नाम छोड़ देती हूँ।"

देखिए इज़्हारे नाराज़ी का कितना लतीफ़ अंदाज़ है और बीवी के

मिज़ाज को अल्लाह के रसूल सल्ल० किस क़दर गहराई में जाकर समझ लेते हैं। हदीस पाक से मालूम हुआ कि बड़े लोगों की शुक्रगुज़ारी के अंदाज़ भी निराले और बावक़ार होते हैं।

बाँदी की हाज़िर दिमाग़ी से सेठ बच गया

मदाइनी बयान करते हैं कि एक मर्तबा अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद घुड़सवारों के साथ निकला। घुड़सवारों ने एक आदमी को देखा, जिसके साथ एक लौन्ड़ी भी थी। वह लौन्डी इन्तहाई हसीन व जमील थी। घुड़सवारों ने उस आदमी को धमकी-आमेज़ लहजे में पुकारा : इस लौन्डी को हमारे हवाले कर दो। उस आदमी के पास एक क़मान थी। उसने घुड़सवारों में से एक अदमी को दे मारी जिससे कमान की ताँत टूट गई और घुड़सवारों को तैश आ गया।

चुनांचे उसे पकड़ने के लिए सारे ही घुड़सवार उस पर टूट पड़े और उससे लौन्डी को छीन लिया। वह आदमी अपनी जान बचाकर उनसे भाग निकला। चूंकि घुड़सवारों की तवज्जोह का मर्कज़ लौन्डी ही थी, इसलिए आदमी से उनकी तवज्जोह हट गई।

घुड़सवारों में से एक शख़्स ने लौन्डी के कान की बाली को ग़ौर से देखा तो बाली में एक बहुत ही नादिर और बेशक़ीमत मोती नज़र आया। लौन्ड़ी कहने लगी : यह मोती कोई बड़ी क़ीमत नहीं रखता, अगर तुम उस आदमी की टोपी को खोलकर देखते तो तुम्हें अन्दाज़ा होता कि किस क़दर बेशक़ीमत मोती उसने छिपा रखे हैं। उन मोतियों के मुक़ाबले में तो इसकी कोई अहमियत ही नहीं।

यह सुनना था कि सारे घुड़सवार उस आदमी के पीछे दौड़ पड़े और जब उसके क़रीब पहुंचे तो बुलन्द आवाज़ मे कहने लगे : जो कुछ तुम्हारी टोपी में है उसे हमारे हवाले कर दो, हम तुम्हारी जान छोड़ देंगे।

उस आदमी की टोपी में कमान की एक ताँत थी, जिसे उसने बतौर एहतियात छुपा रखा था, ताकि बवक़्ते ज़रूरत काम आए, मगर मारे

ख़ौफ़ व दहशत के उसे याद नहीं आ रहा था कि उसके पास ताँत मौजूद है। जिसको कमान पर चढ़ाकर दुश्मनों से मुक़ाबला किया जा सकता है। घुड़सवारों ने जब टोपी के अन्दर का सामान तलब किया तो फ़ौरन उसे याद आ गया कि मैंने तो कमान की ताँत टोपी के अन्दर छुपा रखी है। वह होशियार हो गया और टोपी से ताँत निकाल कर कमान पर चढ़ा ली और फिर घुड़सवारों की तरफ़ मुतवज्जेह हो गया। जब घुड़सवारों ने उसकी यह जुरअत-मन्दाना कैफ़ियत देखी तो पीठ फेरकर भाग खड़े हुए और लौन्डी को छोड़ दिया।

(अलमुजल्लतुल अरबिया : 85-97, निसा ज़कयात जुदन : 118)

इस तरह लौंडी की हाज़िर दिमाग़ी ने इब्ने ज़ियाद के आदमियों को नाकाम कर दिया।

हर-हर क़दम पर साल भर के रोज़े और साल भर तहज्जुद का सवाब लेने का नबवी नुस्ख़ा

सुनन अरबा में है कि जो शख़्स जुमा के दिन अच्छी तरह ग़ुस्ल करे और सवेरे से ही मस्जिद की तरफ़ चल दे। पैदल जाए, सवार न हो और इमाम से क़रीब होकर बैठे, ख़ुतबा को कान लगाकर सुने, लग़्व न करे तो उसे हर-हर क़दम के बदले साल भर के रोज़ों और साल भर के क़याम का सवाब है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 357)

बच्चों के साथ झूठा वादा कभी मत कीजिए

मुस्नद अहमद और अबू दाऊद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ रज़ि० से रिवायत है कि हमारे पास रसूलुल्लाह सल्ल० आए। मैं उस वक़्त छोटा बच्चा था, खेल-कूद के लिए जाने लगा तो मेरी वालिदा ने मुझे आवाज़ देकर कहाः इधर आ, कुछ दूँ। आँहज़रत सल्ल० ने फ़रमायाः कुछ देना भी चाहती हो? मेरी वालिदा ने कहा, "हाँ हुज़ूर! खजूरें दूँगी।" आप सल्ल० ने फ़रमाया : फिर तो ख़ैर, वरना याद रख!

कुछ न देने का इरादा होता और यूँ ही कहतीं तो तुम पर एक झूठ लिखा जाता।

हज़रत इमाम मालिक रह० फ़रमाते हैं कि जब वादा के साथ वादा किए हुए की ताकीद का ताल्लुक़ है तो उस वादे को वफ़ा करना वाजिब हो जाता है। मसलन किसी शख़्स ने किसी से कह दिया कि तू निकाह कर ले और इतना-इतना हर रोज़ मैं तुझे देता रहूंगा। उसने निकाह कर लिया तो जब तक निकाह बाक़ी है उस शख़्स पर वाजिब है कि उसे अपने वादे के मुताबिक़ देता रहे, इसलिए कि उसमें आदमी के हक़ का तअल्लुक़ साबित हो गया जिस पर उससे बाज़पुर्स सख़्ती के साथ हो सकती है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 344)

दो जुमा यानी एक हफ़्ते के गुनाह माफ़ कराने का नबवी नुस्ख़ा

मुस्नद अहमद में है जो शख़्स जुमा के दिन ग़ुस्ल करे और ख़ुश्बू लगाए हो और अच्छा लिबास पहने, फिर मस्जिद में आए और कुछ नवाफ़िल पढ़े, अगर जी चाहे और किसी को ईज़ा न दे (यानी गर्दनें फलाँग कर न आए, न किसी बैठे हुए को हटाए) फिर जब इमाम आ जाए और ख़ुतबा शुरू हो ख़ामोशी से सुने तो उसके गुनाह जो उस जुमा से लेकर दूसरे जुमा तक के हों सबका कफ़्फ़ारा हो जाता है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 357)

अपने दिल की मेहराब को रज़ाइल से बचाइए

मुस्नद अहमद में हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत से मरवी है कि हम लोग रसूलुल्लाह सल्ल० के पास बैठे हुए थे कि आपने फ़रमाया, देखो! अभी एक जन्नती शख़्स आनेवाला है। थोड़ी देर में एक अंसारी रज़ि० अपने बाएँ हाथ में अपनी जूतियाँ लिए हुए ताज़ा वुज़ू करके आ रहे थे। दाढ़ी पर से पानी टपक रहा था। दूसरे दिन भी इसी तरह हम

बैठे हुए थे कि आप सल्ल० ने यही फ़रमाया और वही शख़्स उसी तरह आए, तीसरे दिन भी यही हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अम्र बिन आस रज़ि० आज देखते-भालते रहे और जब मज्लिसे नबवी ख़त्म हुई और यह बुज़ुर्ग वहाँ से उठकर चले तो वह भी उनके पीछे हो लिए और उन अंसारी से कहने लगे कि हज़रत मुझमें और मेरे वालिद में कुछ तकरार हो गई जिस पर मैं क़सम खा बैठा हूँ कि तीन दिन तक अपने घर न जाऊँगा, पस अगर आप मेहरबानी फ़रमा कर मुझे इजाज़त दें तो मैं यह तीन दिन आपके यहाँ गुज़ार दूँ। उन्होंने कहा, बहुत अच्छा। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह ने यह तीन रातें उनके घर उनके साथ गुज़ारीं। देखा कि वह रात को तहज्जुद की लम्बी नमाज़ भी नहीं पढ़ते, सिर्फ़ इतना करते हैं कि जब आँख खुले अल्लाह तआला का ज़िक्र और उसकी बड़ाई अपने बिस्तर पर ही लेटे-लेटे कर लेते हैं, यहाँ तक कि सुबह की नमाज़ के लिए उठें। हाँ, यह ज़रूरी बात थी कि मैंने उनके मुंह से सिवाए कलिम-ए-ख़ैर के और कुछ नहीं सुना। जब तीन रातें गुज़र गईं तो मुझे उनका अमल बहुत ही हल्का-सा मालूम होने लगा। अब मैंने उनसे कहा कि हज़रत! दरअसल न तो मेरे और मेरे वालिद के दर्मियान कोई ऐसी बात हुई थी, न मैंने नाराज़गी के बाइस घर छोड़ा था बल्कि वाक़िआ यह हुआ कि तीन मर्तबा आँहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि अभी एक जन्नती शख़्स आ रहा है और तीनों मर्तबा आप ही आए, तो मैंने इरादा किया कि आपकी ख़िदमत में कुछ दिन रहकर देखूँ तो सही कि आप ऐसी कौन-सी इबादतें करते हैं जो जीते-जी बाज़बाने रसूल सल्ल० आपके जन्नती होने की यक़ीनी ख़बर हम तक पहुंच गई। चुनांचे मैंने यह बहाना किया और तीन रात तक आपकी ख़िदमत में रहा ताकि आपके आमाल देखकर मैं भी वैसे ही अमल शुरू कर दूँ। लेकिन मैंने तो आपको न तो कोई नया और अहम अमल करते हुए देखा, न इबादत में ही औरों से ज़्यादा बढ़ा हुआ देखा। अब जा रहा हूँ लेकिन ज़बानी एक सवाल है कि आप ही बताइए आख़िर वह कौन-सा अमल है जिसने आपको पैग़म्बरे ख़ुदा सल्ल० की ज़बानी जन्नती बताया? आपने फ़रमाया, बस तुम मेरे

आमाल को देख चुके, उनके सिवा और कोई ख़ास पोशीदा अमल तो है नहीं। चुनांचे उनसे रुख़सत होकर चला, थोड़ी दूर निकला था कि उन्होंने मुझे आवाज़ दी और फ़रमाया, हाँ मेरा एक अमल सुनते जाओ, वह यह कि मेरे दिल में किसी मुसलमान से धोकेबाज़ी, हसद और बुग्ज़ का इरादा कभी नहीं हुआ। मैं कभी किसी मुसलमान का बदख़्वाह नहीं बना। हज़रत अब्दुल्लाह ने यह सुनकर फ़रमाया कि बस अब मालूम हो गया, इसी अमल ने आपको इस दर्जे तक पहुंचाया है और यही वह चीज़ है जो हर एक के बस की नहीं। इमाम नसई ने अपनी किताब अमलुल-यौम वल्लैल में इस हदीस को बयान किया है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 317)

हज़रत उमर रज़ि० एक आयत सुनकर महीना भर बीमार रहे

इब्ने अबी अद्-दुनिया में है कि एक रात हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० शहर की देखभाल के लिए निकले तो एक मकान से किसी मुसलमान की क़ुरआन-ख़्वानी की आवाज़ कान में पड़ी, वह सूरह तूर पढ़ रहे थे। आपने सवारी रोक ली और खड़े होकर क़ुरआन सुनने लगे। जब वह आयत :

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ مَّالَهٗ مِنْ دَافِعٍ

"बेशक तेरे रब का अज़ाब होकर रहने वाला है, उसे कोई रोक सकने वाला नहीं" पर पहुंचे तो ज़बान से निकल गया कि रब्बे काबा की क़सम! सच्ची है। फिर अपने गधे से उतर पड़े और दीवार से तकिया लगाकर बैठ गए, चलने-फिरने की ताक़त न रही। देर तक बैठे रहने के बाद जब होश व हवास ठिकाने आए तो अपने घर पहुंचे लेकिन ख़ुदा के कलाम की इस डरावनी आयत के असर से दिल की कमज़ोरी की यह हालत थी कि महीना भर तक बीमार पड़े रहे और ऐसे कि लोग बीमारपुर्सी को आते थे, लेकिन किसी को मालूम न था कि बीमारी क्या है?

एक रिवायत में है कि आपकी तिलावत में एक मर्तबा यह मज़्कूर आयत आई, उसी वक़्त हिचकी बंध गई और इस क़दर क़ल्ब पर असर पड़ा कि बीमार हो गए, चुनांचे बीस दिन तक इयादत की जाती रही।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 189)

क़ियामत के दिन आसमान थर-थराएगा, फट जाएगा चक्कर खाने लगेगा

क़ियामत के दिन आसमान थर-थराएगा, फट जाएगा, चक्कर खाने लगेगा। पहाड़ अपनी जगह से हिल जाएंगे, हट जाएंगे, इधर के उधर हो जाएंगे, काँप-काँप कर टुकड़े-टुकड़े होकर फिर रेज़ा-रेज़ा हो जाएंगे। आख़िर रूई के गालों की तरह इधर-उधर उड़ जाएंगे और बेनाम-व-निशान हो जाएंगे, उस दिन उन लोगों पर जो उस दिन को न मानते थे (वेल-व-हसरत) ख़राबी और हलाकत होगी। ख़ुदा का अज़ाब फ़रिश्तों की मार, जहन्नम की आग उनके लिए होगी जो दुनिया में मशग़ूल थे। और दीन को एक खेल-तमाशा मुक़र्रर कर रखा था, उस दिन उन्हें धक्के दे-देकर नारे-जहन्नम की तरफ़ धकेला जाएगा और दारोग़-ए-जहन्नम उनसे कहेंगे कि यह वह जहन्नम है जिसे तुम नहीं मानते थे, फिर मज़ीद डाँट-डपट के तौर पर कहेंगे। अब बोलो क्या यह जादू है या तुम अंधे हो? जाओ इसमें डूब जाओ, यह तुम्हें चारों तरफ़ से घेर लेगी। अब इसके अज़ाब की तुम्हें सहार हो या न हो, हाय-वाय करो, ख़्वाह ख़ामोश रहो, इसी में पड़े झुलसते रहोगे। कोई तर्कीब फ़ायदा न देगी। किसी तरह छूट न सकोगे। यह ख़ुदा का ज़ुल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे आमाले-बद का बदला है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 189)

इस्लाम क़ुबूल करने के बाद क्या ज़मान-ए-कुफ़्र की नेकियाँ क़बूल हो सकती हैं या नहीं

मुकर्रम व मुहतरम!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम अर्ज़ है कि मैं नव-मुस्लिम औरत हूँ, इस्लाम से पहले हालते कुफ़्र में मैं बहुत कारे-ख़ैर कर चुकी हूँ, पानी की सबील मैंने मुसाफ़िरों के लिए बनाई है, फ़ुक़रा और मुहताज लोगों की बहुत इमदाद की है, अज़ीज़ व अक़ारिब से हुस्ने-सुलूक निभाया है, क़ैदियों को क़ैद से रिहा करने में अपनी हुस्ने-तदबीर अंजाम दी है वग़ैरह, तो क्या बाद कुबूले-इस्लाम उन आमाले ख़ैर का मुझको अज्र व सवाब मिलेगा? बराए करम जवाब देकर उख़रवी ख़ुशी का मौक़ा दीजिए। फ़क़त, वस्सलाम

आपकी दीनी बहन मरयम

जवाबे-ख़त :

आप रिवायत सुनिए। हज़रत हकीम बिन हिज़ाम से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल० से पूछा, या रसूलल्लाह सल्ल०! फ़रमाइए, मेरे वे नेक काम जो मैंने ज़मान-ए-जाहिलियत में किया करता था जैसे सदक़ा, ग़ुलाम आज़ाद करना और ग़रीबों के साथ नेक सुलूक करना, क्या उनका भी मुझको सवाब मिलेगा? आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुम जितनी नेकियाँ पहले कर चुके हो, उन सबके साथ मुसलमान हुए हो (यानी उनका भी सवाब मिलेगा)। (बुख़ारी, मुस्लिम, मुस्तदरक)

इस हदीस से साबित होता है कि काफ़िर के नेक अमल इस्लाम के बाद मुतबर्रक हो सकते हैं। (तर्जुमानुस्सुन्नह, जिल्द 2, पेज 319)

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, "ऐ बन्दे मुझे ढूँढ़ ताकि तू मुझे पा ले"

बाज़ आसमानी किताबों में है कि ऐ इब्ने आदम! मैंने तुझे अपनी इबादत के लिए पैदा किया है, पस तू इससे ग़फ़लत न कर, तेरे रिज़्क़ का मैं ज़ामिन हूँ, तू इसमें बेजा तकलीफ़ न कर। तू मुझे ढूँढ़ ताकि तू मुझे पा ले। जब तूने मुझे पा लिया तो यक़ीन मान कि तूने सब कुछ पा लिया। और अगर मैं तुझे न मिला तो समझ ले कि तमाम भलाइयाँ तू खो चुका। सुन, तमाम चीज़ों से ज़्यादा मुहब्बत तेरे दिल में मेरी होनी चाहिए। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 186)

जहन्नम का ख़तरनाक साहिल

जैसे समुन्द्र का साहिल होता है ऐसे ही जहन्नम का भी साहिल है। वहाँ कीड़े-मकोड़े, हशरातुल-अर्ज़ और खजूर के दरख़्त जितने लम्बे साँप और ख़च्चर के बराबर बिच्छू हैं। जब जहन्नमवाले अल्लाह से फ़रियाद करेंगे कि हमारा जहन्नम का अज़ाब हल्का कर दिया जाए तो उनसे कहा जाएगा कि जहन्नम से निकलकर साहिल पर चले जाओ। वह निकल कर वहाँ आएंगे तो वे कीड़े-मकोड़े, हशरातुल-अर्ज़ उनके होठों, चेहरों और दूसरे आज़ा को पकड़ लेंगे और उन्हें नोच खाएंगे तो अब वे यह फ़रियाद करने लगेंगे कि हमें इनसे छुड़ाया जाए और जहन्नम में वापस जाने दिया जाए। जहन्नम वालों पर ख़ारिश का अज़ाब भी मुसल्लत किया जाएगा और जहन्नमी इतना खुजाएगा कि उसकी हड्डी नंगी हो जाएगी। फ़रिश्ता कहेगा, ऐ फ़ुलाने! क्या तुझे इस ख़ारिश से तकलीफ़ हो रही है? वह कहेगा, हाँ। फ़रिश्ता कहेगा, तू जो मुसलमानों को तकलीफ़ दिया करता था यह उसके बदले में है। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 1, पेज 551)

मस्जिदों को दुल्हन न बनाइए

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, जब तुम अपनी मस्जिदों को दुल्हन बना दो और क़ुरआनों को सजा दो, पस तुम्हारी हलाकत है।

(हुलियतुल-औलिया, इस्लाही मज़ामीन, पेज 87)

नहर कौसर का तज़्किरा पढ़ लीजिए

मुस्नद की एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० ने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया कि मुझे कौसर इनायत की गई है जो एक जारी नहर है, लेकिन गढ़ा नहीं है। उसके दोनों किनारे मोती के ख़ेमे हैं, उसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क है, उसके कंकर भी सच्चे मोती हैं, और रिवायत में है कि मेराज वाली रात आप सल्ल० ने आसमान पर जन्नत में उस नहर को देखा और जिबरईल अलैहि० से पूछा कि यह कौन-सी नहर है? तो हज़रत जिबरईल अलैहि० ने फ़रमाया, यह कौसर है जो ख़ुदा तआला ने

आपको अता फ़रमाई है। और इस क़िस्म की बहुत-सी हदीसें हैं और बहुत-सी हमने सूरह इसरा की तफ़्सीर में बयान भी कर दी हैं। एक और हदीस में है कि उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है और शहद से ज़्यादा मीठा है जिसके किनारे दराज़ गर्दनवाले परिन्दे बैठे हुए हैं।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने सुनकर फ़रमाया, वह परिन्दे तो बहुत ही ख़ूबसूरत होंगे? आप सल्ल० ने फ़रमाया, खाने में भी वह बहुत ही लज़ीज़ हैं। (इब्ने जरीर)

और रिवायत में है कि हज़रत अनस रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से सवाल किया कि कौसर क्या है? इस पर आप सल्ल० ने यह हदीस बयान की तो हज़रत उमर रज़ि० ने उन परिन्दों की निस्बत यह फ़रमाया। (मुस्नद अहमद)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि यह नहर बीचों-बीच जन्नत के है। एक मुन्क़ता सनद से हज़रत आइशा रज़ि० से मरवी है कि कौसर के पानी के गिरने की आवाज़ जो सुनना चाहे वह अपने दोनों कानों में अपनी दोनों उंगलियाँ डाल ले। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 5, पेज 604)

जन्नत में बड़े-बड़े शॉपिंग सेंटर और मॉल होंगे

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि० और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की मुलाक़ात हुई तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हम दोनों को जन्नत के बाज़ार में मिलाए। जिस पर हज़रत सईद रज़ि० ने पूछा, क्या जन्नत में भी बाज़ार होंगे? फ़रमाया, हाँ! मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने ख़बर दी है कि जन्नती जब जन्नत में जाएंगे और अपने-अपने मरातिब के मुताबिक़ दर्जे पाएंगे तो दुनिया के अन्दाज़े से जुमावाले दिन उन्हें एक जगह जमा होने की इजाज़त मिलेगी। जब सब जमा हो जाएंगे तो अल्लाह तआला उन पर तजल्ली फ़रमाएगा। उसका अर्श ज़ाहिर होगा। वे सब जन्नत के बाग़ीचे में नूर के और लुअ्लुअ् और याक़ूत के और ज़बरजद (ज़ुमुर्रुद) और सोने-चांदी के मिम्बरों पर बैठेंगे। बाज़ और जो नेकियों के ऐतिबार से कम दर्जे के हैं लेकिन जन्नती होने के ऐतिबार

से कोई किसी से कमतर नहीं। वे मुश्क के और काफ़ूर के टीलों पर होंगे, लेकिन अपनी जगह इतने खुश होंगे कि कुर्सीवालों को अपने से अफ़ज़ल मज्लिस में नहीं जानते होंगे। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० से सवाल किया कि क्या हम अपने रब को देखेंगे? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि हाँ-हाँ देखोगे। आधे दिन के सूरज और चौदहवीं रात के चाँद को जिस तरह साफ़ देखते हो इसी तरह खुदाए तआला को देखोगे। उस मज्लिस में एक-एक शख़्स से अल्लाह तबारक व तआला बातचीत करेगा, यहाँ तक कि किसी से फ़रमाएगा, याद है फ़ुलाँ दिन तुमने फ़ुलाँ काम मेरे ख़िलाफ़ किया था। वह कहेगा, जनाबे बारी! तू तो वह ख़ता माफ़ कर चुका था फिर उसका क्या ज़िक्र। कहेगा, हाँ, ठीक है उसी मेरी मग़फ़िरत की वुस्अत की वजह से ही तो तू इस दर्जे पर पहुंचा। ये इसी हालत में होंगे कि उन्हें एक बादल ढाँप लेगा और उससे ऐसी ख़ुश्बू बरसेगी कि कभी किसी ने नहीं सूँघी थी। फिर रब्बुल-आलमीन फ़रमाएगा कि उठो और मैंने जो इनाम व इकराम तुम्हारे लिए तैयार कर रखे हैं उन्हें लो। फिर वे सब एक बाज़ार में पहुंचेंगे जिसे चारों तरफ़ से फ़रिश्ते घेरे हुए होंगे। वहाँ वह चीज़ें देखेंगे जो न कभी देखी थी न सुनी थीं, न कभी ख़्याल में गुज़री थीं। जो शख़्स जो चीज़ चाहेगा ले लेगा। ख़रीद व फ़रोख़्त वहाँ न होगी, बल्कि इनाम होगा। वहाँ तमाम अहले-जन्नत एक-दूसरे से मुलाक़ात करेंगे। एक कम दर्जे का जन्नती आला दर्जे के जन्नती से मुलाक़ात करेगा तो उसके लिबास वग़ैरह को देखकर जी में ख़्याल करेगा, वहीं अपने जिस्म की तरफ़ देखेगा कि उससे भी अच्छे कपड़े उसके हैं, क्योंकि वहाँ किसी को कोई रंज व ग़म न होगा। अब हम सब लौटकर अपनी-अपनी मंज़िलों में जाएंगे, वहाँ हमारी बीवियाँ हमें मरहबा कहेंगी और कहेंगी कि जिस वक़्त आप यहाँ से गए थे तब यह तरोताज़गी और यह नूरानियत आपमें न थी। लेकिन इस वक़्त तो जमाल व ख़ूबी और ख़ुश्बू और ताज़गी बहुत ही बढ़ी हुई है। वे जवाब देंगे कि हाँ ठीक है, हम आज ख़ुदाए तआला की मज्लिस में थे और यक़ीनन हम बहुत ही बढ़-चढ़ गए।

अर्श के उठानेवाले फ़रिश्ते नीचे लिखी तस्बीह पढ़ते रहते हैं

हज़रत शहर बिन होशिब रह० का फ़रमान है कि हामिलाने-अर्श आठ हैं, जिनमें से चार की तस्बीह तो यह है :

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى حِلْمِكَ بَعْدَ عِلْمِكَ ۔

"ऐ बारी तआला तेरी पाक ज़ात ही के लिए हर तरह की हम्द व सना है कि तू बावजूद इल्म के फिर बुर्दबारी और हिल्म करता है।"

और दूसरे चार की तस्बीह यह है :

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى عَفْوِكَ بَعْدَ قُدْرَتِكَ ۔

"ऐ अल्लाह! क़ुदरत कळ बावजूद तू जो माफ़ी और दरगुज़र करता रहता है उस पर हम तेरी पाकीज़गी और तेरी तारीफ़ बयान करते हैं।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, पेज 495)

एक बुज़ुर्ग को एक जिन्न ने बड़ी अजीब नसीहत की

इब्ने अबी हातिम में है कि एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं मुल्के-रूम में काफ़िरों के हाथों में गिरफ़्तार हो गया था। एक दिन मैंने सुना कि हातिफ़े-ग़ैब एक पहाड़ की चोटी से बआवाज़े-बुलन्द कह रहा है कि खुदाया! उस पर तअज्जुब है जो तुझे पहचानते हुए भी तेरे सिवा दूसरे की ज़ात से उम्मीदें वाबस्ता रखता है। खुदाया! उस पर भी तअज्जुब है जो तुझे पहचानते हुए अपनी हाजतें दूसरों के पास ले जाता है। फिर ज़रा ठहर कर एक पुरज़ोर आवाज़ लगाई और कहा कि पूरा तअज्जुब उस पर है जो तुझे पहचानते हुए दूसरों की रज़ामन्दी हासिल करने के लिए वह काम करता है जिनसे तू नाराज़ हो जाए। यह सुनकर मैंने बुलन्द आवाज़ से पूछा कि तू कोई जिन्न है या इंसान? जवाब आया कि इंसान हूँ। तू उन कामों से अपना ध्यान हटा ले जो तुझे फ़ायदा न दें, और उन कामों

में मशग़ूल होजा जो तेरे फ़ायदे के हैं।

(तफ़्सीर इब्ने-कसीर, जिल्द 4, पेज 474)

एक बड़े मियाँ ने हुज़ूर सल्ल० से अजीब सवाल किया

एक और हदीस में है कि एक बूढ़ा शख़्स लकड़ी टेकता हुआ आँहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मेरे छोटे-मोटे गुनाह बहुत सारे हैं, क्या मुझे भी बख़्शा जाएगा? आप सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तू ख़ुदा की तौहीद की गवाही नहीं देता? उसने कहा, हाँ, और आप सल्ल० की रिसालत की गवाही भी देता हूँ। आप सल्ल० ने फ़रमाया, "तेरे छोटे-मोटे गुनाह माफ़ हैं।"

(तफ़्सीर इब्ने-कसीर, जिल्द 4, पेज 434)

चेहरा पर्दे में दाख़िल है या नहीं

जवाबे ख़त :

सूरह अहज़ाब में इरशादे-बारी तआला है :

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِىْ فِىْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝ وَقَرْنَ فِىْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ط

(سورہ احزاب، آیت : ۳۲.۳۳)

"ऐ नबी की बीवियो! तुम मामूली औरतों की तरह नहीं हो। तुम तक़वा इख़्तियार करो। पस तुम (नामहरम मर्द से) बोलने में (जबकि ज़रूरतन बोलना पड़े) नज़ाकत मत करो, क्योंकि इससे ऐसे शख़्स को मैलाने-क़ल्बी हो जाएगा जिसके दिल में रोग हो (बल्कि) तुम क़ायदे के मुवाफ़िक़ बात करो (जैसे पाकबाज़ औरतें इख़्तियार करती हैं) और तुम अपने घरों में रहो और ज़मान-ए-क़दीम की जिहालत कळ मुताबिक़ मत फिरो और तुम नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और

उसके रसूल सल्ल० की फ़रमाँबरदारी करो।"

(सूरह अहज़ाब, आयत 32-33)

इन आयात में अव्वल तो यह हुक्म दिया गया है कि किसी ग़ैर महरम से ज़रूरतन अगर बात करनी पड़े तो गुफ़्तुगू के अंदाज़ में नज़ाकत और लहजे में जाज़्बियत न हो जिस तरह चाल-ढाल और रफ़्तार के अंदाज़ से दिल खिंचते हैं। इसी तरह गुफ़्तार के नज़ाकतवाले लहजे की तरफ़ भी कशिश होती है। औरत की आवाज़ में तबई और फ़ितरी तौर पर नर्मी और लहजे में दिलकशी होती है। पाक नफ़्स औरतों की यह शान है कि ग़ैर मर्दों से बात करने में बा-तकल्लुफ़ ऐसा लबो-लहजा इख़्तियार करें जिसमें ख़ुशूनत और रूखापन हो ताकि किसी बदबातिन का क़ल्बी मैलान न होने पाए।

दूसरा हुक्म यह इरशाद फ़रमाया कि तुम अपने घरों में रहो। इससे मालूम हुआ कि औरतों के लिए शबो-रोज़ गुज़ारने की असल जगह उनके अपने घर ही हैं। शरअन जिन ज़रूरतों के लिए घर से निकलना जाइज़ है पर्दा के ख़ूब एहतिमाम के साथ बक़द्र ज़रूरत निकल सकती हैं।

आयत के सियाक़ से वाज़ेह तौर पर मालूम हो रहा है कि बिला ज़रूरत पर्दे के साथ भी बाहर निकलना अच्छा नहीं है, जहाँ तक हो सके, नामहरम की नज़रों से लिबास भी पोशीदा रखना चाहिए।

तीसरा हुक्म यह दिया गया है कि ज़मान-ए-क़दीम की जिहालत के मुताबिक़ मत फिरा करो। ज़मान-ए-क़दीम की जिहालत से अरब की वह जाहिलियत मुराद है जो हुज़ूर सल्ल० की बेअ़सत से पहले अरब के रिवाज व समाज में जगह पकड़े हुए थी। उस ज़माने की औरतें बेहयाई और बेशर्मी के साथ बिला झिझक बाज़ारों में और मेलों में और गली-कूचों में बेपर्दा होकर फिरा करती थीं और बन-ठनकर निकलती थीं। सर पर या गले में फ़ैशन के लिए दुपट्टा डाल लिया, न उससे सीना ढका, न कान और न चेहरा छुपाया, जिधर को जाना हुआ चल पड़ीं। मर्दों की भीड़ में घुस गईं, महरम और ग़ैर-महरम का कोई इम्तियाज़ नहीं। यह था जाहिलियते-ऊला का रिवाज और समाज जो आज भी

इस्लाम का दावा करनेवाली औरतों में जगह ले चुका है।

इन आयात में गो अज़्वाजे-मुतह्हरात को मुख़ातिब किया गया है लेकिन यह अहकाम तमाम औरतों के लिए आम हैं। इज्माए-उम्मत और अहादीसे-नबविया (सल्ल०) से यह अम्र साबितशुदा हैं कि इन आयात का हुक्म उम्मत की तमाम माओं, बहनों और बेटियों के लिए आम है, जैसा कि हमने पहले अर्ज़ किया।

एक मोटी समझवाला इंसान भी (जिसे ख़ुदा का ख़ौफ़ हो) इन आयात से यह नतीजा निकालने पर मजबूर होगा कि जब अज़्वाजे-मुतह्हरात के लिए यह हुक्म है कि अपने घरों ही में रहा करें और जाहिलियते-ऊला के दस्तूर के मुताबिक़ बाहर न निकलें। हालाँकि उनको तमाम मोमिनीन की माएँ फ़रमाया गया है, तो उम्मत की दूसरी औरतों के लिए बेपर्दा होकर निकलना क्योंकर दुरुस्त होगा? शर्फ़ और एहतिराम के बाइस उम्मत की नज़रें जिन मुक़द्दस ख़्वातीन पर नहीं पड़ सकती थीं जब उनको भी "क़रार फ़िल बुयूत" (यानी घरों में रहने) का हुक्म दिया गया है तो जिन औरतों की तरफ़ क़सदन नज़रें उठाई जाती हों और ख़ुद ये औरतें भी मर्दों को अपनी तरफ़ माइल करने का इरादा रखती हों, उनको जाहिलियते-ऊला के तरीक़े पर बाहर निकलने की कैसे इजाज़त होगी?

सहीह बुख़ारी जिल्द 2, पेज 696 में वाक़िआ-ए-इफ़क की तफ़्सील मरवी है। उसमें लिखा है कि ग़ज़्व-ए-बनी अल-मुस्तलक़ के मौक़े पर जब हज़रत सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ि० की हज़रत आइशा रज़ि० पर नज़र पड़ी और हज़रत आइशा रज़ि० ने उनके 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ने की आवाज़ सुनी तो हज़रत आइशा रज़ि० की आँख खुल गई और उन्होंने फ़ौरन अपना चेहरा ढाँप लिया। वह फ़रमाती हैं कि सफ़वान रज़ि० ने मुझे पर्दे का हुक्म नाज़िल होने से पहले देखा था। इसी से समझ लिया जाए कि पर्दे का जो हुक्म नाज़िल हुआ था वह चेहरे से भी मुताल्लिक़ था। वरना उन्हें चेहरा ढाँकने की क्या ज़रूरत थी।

नीज़ सहीह बुख़ारी जिल्द 1, पेज 788 पर है कि एक दिन

रसूलुल्लाह सल्ल० अपनी अहलिया-मुहतरमा हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० के पास थे, वहीं एक मुख़न्नस भी था। उसने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० के भाई से कहा कि अगर अल्लाह तआला ने ताइफ़ को फ़तह कर दिया तो मैं तुम्हें ग़ीलान की बेटी बता दूंगा। जो ऐसी-ऐसी है। इस पर रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि ये लोग हरगिज़ तुम्हारे घरों में दाख़िल न हों।

हज़रत अनस रज़ि० ने बयान फ़रमाया कि हज़रत उमर रज़ि० ने यूँ कहा कि "या रसूलल्लाह सल्ल०, आपके पास (अंदरूने-ख़ाना में) अच्छे-बुरे लोग आते-जाते हैं (वहाँ उम्महातुल मोमिनीन भी होती हैं) अगर आप उम्महातुल मोमिनीन को पर्दा करने का हुक्म दे देते तो अच्छा होता। इस पर अल्लाह तआला ने पर्दे वाली आयत नाज़िल फ़रमाई।

(सहीह बुख़ारी)

इससे साफ़ ज़ाहिर है कि पर्दे की आयत में नामहरमों के सामने चेहरा ढाँपने का हुक्म नाज़िल हुआ, क्योंकि इससे पहले भी वह कपड़े पहने हुए बैठी रहती थीं, सिर्फ़ चेहरा ही खुला रहता था। पर्दे का हुक्म होने का यही मतलब है कि चेहरा छुपाएँ।

हज़रत अनस रज़ि० की एक रिवायत और सुनिए! वह फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ि० के साथ शब गुज़ार कर सुबह को वलीमा किया तो ख़ूब बड़ी दावत की। लोग आते रहे और खाकर जाते रहे। खाने से फ़ारिग होकर सब लोग चले गए, लेकिन तीन असहाब रह गए। वे बातें करते रहे। आप सल्ल० के मिज़ाज में हया बहुत थी। आप सल्ल० ने उनसे नहीं फ़रमाया कि तुम चले जाओ, बल्कि खुद हज़रत आइशा रज़ि० के हुजरे की तरफ़ चले गए। जब मैंने आप सल्ल० को ख़बर दी कि वे लोग चले गए तो आप सल्ल० वापस तशरीफ़ ले आए। मैं आप सल्ल० के साथ (हस्बे-आदत) दाख़िल होने लगा तो आप सल्ल० ने मेरे और अपने दर्मियान में पर्दा डाल दिया और आयत हिजाब "या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तदख़ुलू बुयूतन्नबी..." अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमा दी। (सहीह बुख़ारी, पेज 706-707)

हज़रत अनस रज़ि० पुराने ख़ादिम थे, दस वर्ष तक उन्होंने आप सल्ल० की ख़िदमत की। जब पर्दे का हुक्म नाज़िल हुआ तो आप सल्ल० ने पर्दा डाल दिया और हज़रत अनस रज़ि० को अन्दर आने नहीं दिया। अब सवाल यह है कि इससे पहले जो हज़रत अनस रज़ि० घरों के अन्दर आते-जाते थे, क्या अज़वाजे-मुतह्हरात परदे में नहीं रहा कती थीं, उनकी जो नज़र पड़ती थी क्या चेहरे के सिवा किसी और जगह भी पड़ती थी? अगर चेहरा पर्दे में नहीं तो उनको अन्दर जाने से क्यों रोका गया? अज़वाजे मुतह्हरात रज़ि० से फ़रमा देते कि उसको आने-जाने दो सिर्फ़ चेहरा खुला रखा करो। लेकिन वहाँ मुस्तक़िल दाख़िल होने पर पाबन्दी लगा दी गई। इसी से समझ लिया जाए कि पर्दे का जो हुक्म नाज़िल हुआ उसमें असल चेहरा ही का छुपाना है वरना जिस्म के दूसरे हिस्से पहले भी नामहरमों के सामने ज़ाहिर नहीं किए जाते थे।

सुनन अबू दाऊद "किताबुल जिहाद" में है कि हज़रत उम्मे ख़ुल्लाद रज़ि० का साहबज़ादा एक जिहाद के मौक़े पर शहीद हो गया था, वह चेहरे पर नक़ाब डाले हुए रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। उनका यह हाल देखकर किसी सहाबी रज़ि० ने कहा कि तुम अपने बेटे का हाल मालूम करने के लिए आई हो? हज़रत उम्मे ख़ुल्लाद रज़ि० ने जवाब दिया, अगर बेटे के बारे में मुसीबत ज़दा हो गई हूँ तो अपनी शर्म व हया खोकर हरगिज़ मुसीबत ज़दा न बनूंगी (यानी हया का चला जाना ऐसी ही मुसीबत ज़दा कर देने वाली चीज़ है जैसे बेटे का ख़त्म हो जाना)। हज़रत उम्मे ख़ुल्लाद रज़ि० के पूछने पर हुज़ूर सल्ल० ने जवाब दिया कि तुम्हारे बेटे के लिए दो शहीदों का सवाब है। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० क्यों? इरशाद फ़रमाया, इसलिए कि उसे अहले-किताब ने क़त्ल किया है। (सुनन अबी दाऊद, जिल्द 1, पेज 336)

इस वाक़िये से भी उन मग़रबियतज़दा मुज्तहिदीन की तर्दीद होती है जो चेहरे को पर्दे से ख़ारिज करते हैं और यह भी साबित होता है कि पर्दा हर हाल में लाज़िम है, रंज हो या ख़ुशी, नामहरम के सामने बेपर्दा होकर आना मना है। बहुत-से मर्द और औरत ऐसा तर्ज़ इख़्तियार करते हैं कि गोया उनके नज़दीक शरीअत का कोई क़ानून मुसीबत के वक़्त लागू नहीं

है, जब घर में कोई मौत हो जाएगी तो इस बात को जानते हुए कि नौहा करना सख़्त मना है, औरतें ज़ोर-ज़ोर से नौहा करती हैं, जनाज़ा जब घर से बाहर निकाला जाता है तो औरतें दरवाज़े के बाहर तक उसके पीछे चली आती हैं और पर्दे का कुछ ख़्याल नहीं करतीं। ख़ूब याद रखो, गुस्सा हो या रज़ामंदी, ख़ुशी हो या मुसीबत, हर हाल में अहकामे-शरीअत की पाबन्दी लाज़िम है।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज और उमरा के मसाइल बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया है कि "एहराम वाली औरत नक़ाब न डाले"।

(सुनन अबू दाऊद, जिल्द 1, पेज 254)

इससे ज़ाहिर है कि ज़मान-ए-नुबूवत में औरतें चेहरों पर नक़ाब डाल कर बाहर निकलती थीं। याद रहे कि हुक्म यह है कि औरत हालते-एहराम में चेहरे पर कपड़ा न डाले। यह मतलब नहीं है कि नामहरमों के सामने चेहरा खोलकर फिरा करें। यह औरतों में मशहूर है कि हालते-एहराम में पर्दा नहीं, यह ग़लत है। इस ग़लतफ़हमी को हज़रत आइशा रज़ि० की एक हदीस से दूर कर लें। उन्होंने फ़रमाया कि हम हालते-एहराम में हुज़ूर अक़दस सल्ल० के साथ थे, गुज़रनेवाले अपनी सवारियों पर हमारे पास से गुज़रते थे तो हम अपनी चादर को अपने सर से आगे बढ़ाकर चेहरे के सामने लटका लेते थे। जब वे लोग आगे बढ़ जाते तो हम चेहरा खोल लेते थे। (मिश्कातुल मसाबीह, पेज 236, अज़ : अबी दाऊद)

मुँह पर कपड़ा न लगना और बात है और नामहरमों के सामने फिरना यह दूसरी बात है, हज या उम्रा में बेपर्दगी जाइज़ नहीं हो जाती।

हज़रत इकरमा रज़ि० की बीवी जब अपने शौहर को लेकर हुज़ूर सल्ल० के पास चली और रास्ते में इकरमा रज़ि० ने अपनी बीवी से सोहबत करनी चाही तो उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि तुम काफ़िर हो और मैं मुसलमान हूँ, और इकरमा रज़ि० ने कहा कि मेरी बात मानने से तुमको जिस काम ने रोका है वह मालूम होता है कि बहुत बड़ा काम है। तो जब बीवी इकरमा रज़ि० को लेकर हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंची तो चेहरे पर नक़ाब (पर्दा) था।

फिर शरीअत चेहरे को खुला रहने की कैसी इजाज़त दे सकती है।

(हयातुस्सहाबास, जिल्द 1, पेज 228)

ऐ अल्लाह हमारी ज़बान और दिल को मुसलमान बना दे

मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं, अल्लाह तआला ने जिस तरह तुममें रोज़ियाँ तक़सीम फ़रमाई हैं उसी तरह अख़लाक़ भी तक़सीम फ़रमाए हैं। अल्लाह तआला दुनिया तो उसे भी देता है जिससे खुश होता है और उसे भी जिससे ग़ज़बनाक होता है, लेकिन दीन सिर्फ़ उन्हीं को देता है जिनसे उसे मुहब्बत होती है। पस जिसे दीन मिल जाए यक़ीनन अल्लाह तआला उससे मुहब्बत रखता है। उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! बन्दा मुसलमान नहीं होता जब तक कि उसका दिल और उसकी ज़बान मुसलमान न हो जाए और बन्दा ईमानवाला नहीं होता जब तक कि उसके पड़ोसी उसकी ईज़ाओं से बेफ़िक्र न हो जाएँ। लोगों ने पूछा, ईज़ाएँ क्या-क्या हैं? फ़रमाया कि धोका और ज़ुल्म। सुनो! जो शख़्स माल हराम कमाए फिर उसमें से ख़र्च करे, अल्लाह उसे बरकत से महरूम रखता है। अगर वह उसमें से सदक़ा करे ते क़बूल नहीं होता और जितना कुछ माल अपने बाद बाक़ी छोड़ कर मरे वह सब उसके लिए दोज़ख़ की आग का तोशा बनता है। याद रखो! अल्लाह तआला बुराई को बुराई से नहीं मिटाता बल्कि बुराई को भलाई से मिटाता है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 2, पेज़ 516)

हराम बिस्तर के अलावा सब कुछ कर लिया अब मैं क्या करूँ

मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के पास आया और कहा कि एक औरत सौदा लेने के लिए आई थी। अफ़सोस कि मैं उसे कोठरी में ले जाकर उससे बजुज़ जिमाअ के और हर

तरह लुत्फ़अंदोज़ हुआ। अब जो हुक्म ख़ुदा का हो वह मुझ पर जारी किया जाए। आप रज़ि० ने फ़रमाया, शायद उसका ख़ाविन्द ग़ैर हाज़िर होगा? उसने कहा, जी हाँ, यही बात थी। आपने फ़रमाया, तुम जाओ, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० से यह मसला पूछो। हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ि० ने भी यही सवाल किया। पस आपने भी हज़रत उमर रज़ि० की तरह फ़रमाया। फिर वह आँहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी हालत बयान की, आप सल्ल० ने फ़रमाया कि शायद उसका ख़ाविन्द राहे-ख़ुदा में गया हुआ होगा? पस क़ुरआन करीम की यह आयत उतरी :

दिन के दोनों सिरों में नमाज़ पढ़ो और रात की कई साअतों में भी, यक़ीनन नेकियाँ बुराइयों को दूर कर दिया करती हैं, यह है नसीहत, नसीहत पकड़नेवालों के लिए।

तो वह कहने लगा क्या यह ख़ास मेरे लिए ही है? तो हज़रत उमर रज़ि० ने उसके सीने पर हाथ रखकर फ़रमाया, नहीं! इस तरह सिर्फ़ तेरी ही आंखें ठंडी नहीं हो सकतीं बल्कि ये सब लोगों के लिए आम है। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, उमर रज़ि० सच्चे हैं।

(तफ़सीर इब्ने कसीर, जिल्द 2, पेज 517)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० रिवायत करते हैं कि एक आदमी की नज़र किसी ग़ैर महरम औरत पर पड़ गई। औरत के हुस्न व जमाल ने मर्द के दिल को अपनी तरफ़ माइल किया, यहाँ तक कि मर्द ने मग़लूबुल हाल होकर औरत का बोसा ले लिया। फिर उस पर ख़ौफ़े-ख़ुदा ग़ालिब हुआ कि मैंने तो हुक्मे इलाही की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर ली। चुनांचे वह नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सारा माजरा सुनाया। नबी करीम सल्ल० ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई। उस आदमी का रो-रोकर बुरा हाल हुआ। नदामत की आग ने उसके दिल को बेक़रार कर दिया, वह मुसलसल तौबा व इस्तिग़फ़ार में लगा रहा, यहाँ तक कि नबी करीम सल्ल० पर क़ुरआन की यह आयत उतरी :

"अलबत्ता नेकियाँ दूर करती हैं बुराइयों को, यह यादगार है याद करने वालों के लिए।" (सूरह हूद, आयत 114)

नबी करीम सल्ल० ने उस आदमी को बुलाकर ख़ुशख़बरी सुनाई कि तेरा रोना-धोना क़बूल हो गया। अल्लाह तआला ने तुझे माफ़ी अता फ़रमा दी। उसने पूछा कि यह आयत ख़ास मेरे लिए उतरी है, फ़रमाया नहीं, सब लोगों के लिए है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

ज़ुबैदा की एक नेकी पर मग़फ़िरत

अज़ान का अदब कीजिए, ख़ास तौर से माएँ-बहनें

ज़ुवैदा ख़ातून एक नेक मलका थी। उसने "नहरे-ज़ुबैदा" बनवा कर मख़्लूक़े-ख़ुदा को बहुत फ़ायदा पहुंचाया। अपनी वफ़ात के बाद वह किसी को ख़्वाब में नज़र आई। उसने पूछा कि ज़ुबैदा ख़ातून! आपके साथ क्या मामला पेश आया? ज़ुवैदा ख़ातून ने जवाब दिया कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने बख़्शिश फ़रमा दी। ख़्वाब देखनेवाले ने कहा कि आपने "नहरे-ज़ुबैदा" बनवाकर मख़्लूक़े-ख़ुदा को फ़ायदा पहुंचाया, आपकी बख़्शिश तो होनी ही थी। ज़ुबैदा ख़ातून ने कहा, नहीं! नहीं! जब "नहर-ज़ुबैदा" वाला अमल पेश हुआ तो परवरदिगारे-आलम ने फ़रमाया कि काम तो तुमने ख़ज़ाने के पैसों से करवाया, अगर ख़ज़ाना न होता तो नहर कभी न बनती। मुझे यह बताओ कि तुमने मेरे लिए क्या अमल किया। ज़ुबैदा ने कहा, मैं तो घबरा गई कि अब क्या बनेगा, मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझ पर मेहरबानी फ़रमाई। मुझे कहा गया कि तुम्हारा एक अमल हमें पसन्द आ गया। एक मर्तबा तुम भूक की हालत में दस्तरख़्वान पर बैठी खाना खा रही थी कि इतने में अल्लाहु अकबर के अल्फ़ाज़ से अज़ान की आवाज़ सुनाई दी। तुम्हारे हाथ में लुक़मा था और सर से दुपट्टा सरका हुआ था, तुमने लुक़मे को वापस रखा, पहले दुपट्टे को ठीक किया, फिर लुक़मा खाया, तुमने लुक़मा खाने में ताख़ीर मेरे नाम के अदब की वजह से की, चलो हमने तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमा दी।

मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० फ़रमाते थे कि इंसान जब अज़ान की आवाज़ सुने तो अदब की वजह से ख़ामोश हो जाए, अज़ान का जवाब दे और आख़िर में मस्नून दुआ पढ़े। मेरा तजुर्बा है कि अज़ान के अदब की वजह से उसे मौत के वक़्त कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ नसीब होगी।

(नमाज़ के इसरार व रमूज़, पेज 55)

ज़्यादा नींद इंसान को क़ियामत के दिन फ़क़ीर बना देती है

हज़रत सुलैमान अलैहि० की वालिदा माजिदा ने आपसे फ़रमाया कि प्यारे बच्चे! रात को बहुत न सोया करो, रात की ज़्यादा नींद इंसान को क़ियामत के दिन फ़क़ीर बना देती है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 4, पेज 290)

हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० अपने बच्चों को नीचे लिखी दुआ सिखाते थे

हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० हर नमाज़ के बाद ये कलिमात पढ़ते थे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ
اُرَدَّ اِلٰی اَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْیَا، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

"ऐ अल्लाह! मैं बुख़्ल से तेरी पनाह पकड़ता हूँ, और बुज़दिली से तेरी पनाह पकड़ता हूँ, और यह कि मैं रज़ील उमर में डाल दिया जाऊँ, उससे भी तेरी पनाह माँगता हूँ, और दुनिया की आज़माइश और अज़ाबे- क़ब्र से तेरी पनाह तलब करता हूँ।"

(मिन्हाजुल मुस्लिम, पेज 338)

हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० यह दुआ अपने बच्चों को भी सिखाते थे।

मुनाजाते इबराहीम बिन अदहम रह०

وَاَيْتَمْتُ الْعِيَالَ لِكَيْ اَرَاكَا	هَجَرْتُ الْخَلْقَ طُرًّا فِيْ هَوَاكَا
हजरतुल खल्का तुर्रन फ़ी हवाका	व ऐतमतू-ल-इयाला लिकै अराका

मैने आपकी मोहब्बत मे तमाम दुनिया को छोड़ दिया।
और आपकी ज़ियारत के इश्तियाक़ में अपने अयाल को यतीम किया।

لِمَا حَنَّ الْفُؤَادُ اِلٰى سِوَاكَا	وَلَوْ قَطَّعْتَنِيْ فِي الْحُبِّ اِرْبًا
वलो क़त्तअतनी फी-ल-हुब्बे इरबन	लमा हन्न-ल-फुआदु इला सिवाका

अगर आप रगे मुहब्बत काट दें।
तब भी दिल आप ही की तरफ़ माइल रहेगा।

تَجَاوَزْ عَنْ ضَعِيْفٍ قَدْ اَتَاكَا وَجَاءَ رَاجِيًا يَرْجُوْا نِدَاكَا

तजावज़ु अन ज़ईफ़न क़द अताका वजाआ राजियन यरजु निदाका

जो ज़ईफ़ आपके दर पर आया है उसको माफ़ कीजिए।
और जो आपसे बख़्शिश की उम्मीद लगाकर आया है, उसकी तमन्ना पूरी कीजिए।

فَمَا سَجَدْتُ لِمَعْبُوْدٍ سِوَاكَا	وَاِنْ يَّكُ يَا مُهَيْمِنُ قَدْ عَصَاكَا
व इन यकु या मुहेमिनू क़द असाका	फ़मा सजत्तु लिमाबुदिन सिवाका

ऐ गफ़्फ़ार! अगरचे मैं आपकी हुक्म उदूली कर चुका हूँ,
मगर आपके सिवा किसी को सज्दा तो नहीं किया।

مُقِرًّا بِالذُّنُوْبِ وَقَدْ دَعَاكَا	اِلٰهِيْ عَبْدُكَ الْعَاصِيْ اَتَاكَا
इलाहि अबदूका-ल-आसी अताका	मुक़िररन बिज्ज़ुनूबे वक़द दआका

ऐ ख़ुदावंद! आपका नाफ़रमान बन्दा आपकी बारगाह में आया है,
जिसे अपने गुनाहों का इक़रार है और अफ़्व का ख़्वास्तगार है।

وَاِنْ تَطْرُدْ فَمَنْ يَّرْحَمْ سِوَاكَا	وَاِنْ تَغْفِرْ فَاَنْتَ لِذَالِكَ اَهْلٌ
व इन तग़फ़िर लिज़ालिका अहलुन	व इन तत्रुद फ़मन यरहम सिवाका

अगर आप बख़्श दें तो आपकी शान यही है।
और अगर आप धुत्कार दें तो बताइए कौन आपके सिवा रहम कर सकता है।

रंग-बिरंगी बातें जिनसे ख़ुश्बू आए

1. ज़्यादा बातें वे लोग करते हैं जिनके पास कहने को कुछ नहीं होता।
2. दूसरों के आँसुओं को ज़मीन पर गिरने से पहले अपने दामन में जज़्ब कर लेना इंसानियत की मेराज है।
3. नेक बनने की कोशिश करो, जैसे हसीन बनने की कोशिश करते हो।
4. एतिमाद वह शीशा है जो एक बार टूट जाए तो दोबारा नहीं बनता।
5. जिस तरह समुन्द्र अपनी लहरों को अपनी हदों में रखता है उसी तरह माँ अपने औलाद का हर दुख अपने दिल तक महदूद रखती है।
6. जो यह कहे कि उसकी बात सच्ची है, तो उसकी हर बात झूट होगी।
7. मेहनत से भी आदमी थक जाता है और काहिली से भी। मगर मेहनत का नतीजा सेहत और दौलत है, और काहिली का नतीजा बीमारी और अफ़्लास है।
8. राहत आमदनी की कसरत में नहीं है, बल्कि क़िल्लते-मसारिफ़ में है।

जवाहिर पारे

1. रुख़्सत करने के बाद अपने मेहमान की शिकायत न कर।
2. बहादुर मुक़ाबले के वक़्त आज़माया जाता है।
3. कभी भी अपने माँ-बाप और उस्ताद की शिकायत न कर।
4. बीवी के सामने उसके मैकेवालों की शिकायत न कर।
5. औलाद के सामने अपने बड़ों की शिकायत न कर।
6. माँ-बाप का नाफ़रमान अपनी औलाद की नाफ़रमानी का मुंतज़िर रहे।
7. बे-मौक़ा बोलने से चुप रहना बेहतर है।
8. बेइज़्ज़ती की ज़िन्दगी से मौत बेहतर है।
9. बुरी सोहबत से दूर रहना बेहतर है।

10. सबसे अच्छी ख़ैरात माफ़ कर देना है।

11. सबसे अच्छा नशा ख़िदमते ख़ल्क़ है।

12. सबसे बड़ा बहादुर बदला न लेनेवाला है।

13. मर्द की ख़ूबसूरती उसकी फ़साहत है।

14. ग़ीबत अमल को खा जाती है।

15. माँ-बाप का हुक्म चाहे नागवार हो, क़बूल कर ले।

16. नसीहत की बात चाहे कड़वी हो क़बूल कर ले।

17. यतीम और बेवा का माल खाने से परेशानी आती है।

18. ख़ैरात से माल में कमी नहीं आती।

19. बहस करने में जाहिल से शिकस्त खा ले।

20. फ़ुज़ूलख़र्ची करने से मुफ़्लिसी आती है।

21. बेअदबी करने से बदनसीबी आती है।

22. तौबा गुनाह को खा जाती है।

23. ग़रीब की दावत क़बूल कर ले, चाहे तकलीफ़देह हो।

24. तकब्बुर इल्म को खा जाता है।

25. गुस्सा अक़्ल को खा जाता है।

26. इंसाफ़ ज़ुल्म को खा जाता है।

27. झूठ रिज़्क़ को खा जाता है।

28. दोस्त को मुसीबत के वक़्त आज़माया जाता है।

29. अमानतदार-मुफ़्लिसी के वक़्त आज़माया जाता है।

30. बुर्दबार को गुस्से के वक़्त आज़माया जाता है।

31. अपनी ज़बान को ज़िक्रे-इलाही में मशग़ूल रखो।

32. ख़ुदा से डरनेवाले की ज़बान गूँगी हो जाती है।

33. ख़ामोश ज़बान सैकड़ों ज़बानों से अच्छी है।

क़ुरआन

1. क़ुरआन----एक हिक्मत भरी किताब है।
2. क़ुरआन----हक़ व बातिल के इम्तियाज़ के लिए है।
3. क़ुरआन----नसीहत की एक आसान राह है।
4. क़ुरआन----हर क़िस्म के फ़ुयूज़ व बरकात का सरचश्मा है।
5. क़ुरआन----एक फ़ैसलाकुन क़ुव्वत है।
6. क़ुरआन----कोई हँसी की चीज़ नहीं है।
7. क़ुरआन----ही इंसान को चश्म बीना देता है।
8. क़ुरआन----में शिफ़ा और रहमत के दरिया बहते हैं।
9. क़ुरआन----ने इंसान को इल्म व हिक्मत अता किया।
10. क़ुरआन----तारीकी से रौशनी की तरफ़ लाता है।
11. क़ुरआन----सलामती की राहें खोल देता है।
12. क़ुरआन----हक़ व सआदत का मुरक़्क़ा है।
13. क़ुरआन----ईमान का सरचश्मा और अमल का मर्कज़ है।
14. क़ुरआन----तस्फ़िय-ए-मामलात के लिए बेहतरीन ज़ाब्ता है।
15. क़ुरआन----रहनुमाई और लीडरी के हक़ीक़ी गुर बताता है।
16. क़ुरआन----जुमला इंसानी ज़रूरियात के मसाइल बयान करता है।
17. क़ुरआन----फ़िक्र-व-अमल की राहों को हमवार करता है।
18. क़ुरआन----से ज़िंदगी के मसाइल सीखो।
19. क़ुरआन----की तस्दीक़ पिछली इल्हामी किताबें करती हैं।
20. क़ुरआन----पिछली इल्हामी किताबों का जामेअ् और मुहाफ़िज़ है।
21. क़ुरआन----अल्लाह तआला रब्बे-कायनात व ख़ालिक़े-जहाँ का कलाम है।
22. क़ुरआन----क़ुरआन फ़हमी कामयाबी की ज़ामिन है, वक़्त की अहम ज़रूरत है।

मस्जिद में अल्लाह के ज़िक्र व इबादत में ख़लल डालनेवाला सबसे बड़ा ज़ालिम है

क़ुरआन पाक के पहले पारे (सूरह अल-बक़रा, आयत 114) में है :

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسَاجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ....الخ

"जो शख़्स अल्लाह की मस्जिदों में अल्लाह का नाम लेने से रोके उससे बड़ा ज़ालिम कोई नहीं।"

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रह० ने लिखा है कि इस आयत से यह मसला मालूम हुआ कि मस्जिद में ज़िक्र व नमाज़ से रोकने की जितनी सूरतें हैं वे सब नाजाइज़ और हराम हैं। उनमें से एक सूरत तो यह खुली हुई है कि किसी को मस्जिद में जाने से या वहाँ नमाज़ व तिलावत से साफ़ तौर पर रोका जाए। दूसरी सूरत यह कि मस्जिद में शोर-व-शुग़ब करके या मस्जिद के क़रीब बाजे-गाजे बजाकर लोगों को नमाज़ व ज़िक्र वग़ैरह में ख़लल डाले, यह भी ज़िक्रुल्लाह से रोकने में दाख़िल है। इसी तरह तीसरी सूरत यह है कि औक़ाते-नमाज़ में जब लोग अपनी नवाफ़िल या तस्बीह व तिलावत वग़ैरह में मशग़ूल हों, उस वक़्त मस्जिद में कोई बुलन्द आवाज़ से तिलावत करने लगे तो यह भी नमाज़ियों की नमाज़ व तस्बीह में ख़लल डालने की एक सूरत है। इसी लिए फ़ुक़हा ने इसको नाजाइज़ क़रार दिया है।

(मआरिफ़ुल क़ुरआन, जिल्द 1, पेज 242)

इससे अन्दाज़ा लगाइए कि दुनिया की बातों का शोर मस्जिद में करना कितना सख़्त गुनाह है।

नोट : मोबाइल, जिसे बन्दा छोटा दज्जाल कहता है, उसका मस्जिद में बजना भी इसी में दाख़िल है। (अज़ मुरत्तब : मुहम्मद यूनुस पालनपुरी)

नमाज़ियों की तवज्जोह हटानेवाला सज़ा का मुस्तहिक़ है

हिकायत : एक मर्तबा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० नमाज़ पढ़ रहे थे। एक शख़्स कोई चीज़ लेकर आया और उसको सफ़ के आगे डालकर ख़ुद नमाज़ में शरीक हो गया। (जैसा कि आजकल उमूमन किया जाता है) फ़ारूक़े-आज़म रज़ि० जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उसको सज़ा दी कि तूने नमाज़ियों को तशवीश में डाला। (अल-एअ्तसाम लिश्शातबी रह०)

इससे मालूम हुआ कि नमाज़ियों की तवज्जोह नमाज़ से हटा देने वाला कोई भी काम करना मना है।

मस्जिद में दुनिया की बातें करनेवालों के लिए सख़्त वईद

हदीस : अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि वे अपनी मस्जिदों में दुनिया की बातें करेंगे, इसलिए तुम लोग उनके पास मत बैठना, क्योंकि अल्लाह तआला को उनकी कोई हाजत नहीं। (मिश्कात, पेज 71)

फ़ायदा : अल्लामा तैबी रह० लिखते हैं कि इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों से बे-तअल्लुक़ है और वे लोग अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी से निकल जाते हैं, वरना अल्लाह तआला को तो किसी की भी हाजत नहीं है। ग़ौर करें इसमें कितनी भारी धमकी और कैसी सख़्त वईद है। फ़त्हुल क़दीर शरह हिदाया में लिखा है कि दुनिया की बातें मस्जिद में मकरूह हैं, इससे नेकियाँ जल जाती हैं।

मसला : जो दुनिया की बातें मस्जिद से बाहर जाइज़ हैं वे मस्जिद में नाजाइज़ हैं। और जो बातें मस्जिद से बाहर नाजाइज़ हैं वह मस्जिद में सख़्त हराम हैं। जैसे ग़ीबत करना, तोहमत लगाना वग़ैरह। और "ख़ज़ाना फ़िक़्ह" में लिखा है कि जो शख़्स मस्जिद में दुनिया की बातें करता है, अल्लाह तआला उसके चालीस दिन के अमल बेकार कर देता है।

(आदाबुल मसाजिद, पेज 38)

अपनी गुमशुदा चीज़ के लिए मस्जिद में एलान करने की मज़म्मत

हदीस : रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी को अपनी गुमशुदा चीज़ का एलान मस्जिद में करते हुए सुने तो एलान सुननेवाला यूँ कहे : अल्लाह तआला तेरी गुमशुदा चीज़ तुझे न लौटाए, इसलिए कि मस्जिदें ऐसे एलानों के वास्ते नहीं बनाई गईं। (मुस्लिम शरीफ़)

फ़ायदा : जब इतने से एलान की मुमानियत है तो मुस्तक़िल बातें करने के लिए बैठना कितना सख़्त गुनाह होगा।

हज़रत उमर रज़ि० का मस्जिद से बाहर चबूतरा बनाना

हदीस : हज़रत उमर रज़ि० ने मस्जिद के बाहर किनारे पर एक चबूतरा बनाया था और एलान कर दिया था कि जो बातें करना चाहे या शेर पढ़ना चाहे या आवाज़ बुलन्द करना चाहे वह इस चबूतरे पर चला जाए।

(मोवत्ता इमाम मालिक रह०)

मस्जिद की अज़्मत इरशादे-ख़ुदावंदी की रौशनी में

हदीस : यहूद के एक बहुत बड़े आलिम ने रसूलुल्लाह सल्ल० से पूछा कि सबसे बेहतर जगह कौन-सी है? तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने कोई जवाब नहीं दिया और अपने दिल में तै कर लिया कि जब जिबरील अलैहि० आएंगे उनसे पूछकर जवाब दूंगा। चुनांचे हज़रत जिबरील अलैहि० तशरीफ़ लाए तो आप सल्ल० ने यही सवाल किया तो जिबरील अलैहि० ने अर्ज़ किया कि इसका जवाब मुझे मालूम नहीं, लेकिन दरबारे-ख़ुदावंदी से मालूम करके जवाब दूँगा। चुनांचे वह पूछने गए और वापस आकर यह अर्ज़ किया कि ऐ मुहम्मद सल्ल०! इस वक़्त मसला पूछने की बरकत से ख़ुदा तआला से इतनी नज़दीकी हुई कि मुझे इतनी नज़दीकी कभी नहीं हुई। आप सल्ल० ने पूछा, कितनी नज़दीकी हुई? तो हज़रत

जिबरील अलैहि० ने अर्ज़ किया कि मेरे और अल्लाह तआला के दर्मियान सत्तर हज़ार नूरानी पर्दे रह गए, फिर अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि सबसे बुरी जगह बाज़ार है, और सबसे अच्छी जगह मस्जिद है।

(मिश्कात शरीफ़, पेज 71)

फ़ायदा : ग़ौर करना चाहिए कि बाज़ार और मस्जिद में क्या फ़र्क़ है, मस्जिद में अल्लाह तआला का ज़िक्र होता है और बाज़ार में दुनिया का ज़िक्र होता है। लिहाज़ा मस्जिद में दुनिया का ज़िक्र उसको बाज़ार बना देता है। और मस्जिद को बाज़ार बना देना यही उसकी वीरानी है।

(अहकामुल मसाजिद, पेज 14)

एक आम ग़लती की इस्लाह

हर मुहल्ले में मस्जिद बनाने का हुक्म, हदीस शरीफ़ की रौशनी में

हदीस : हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि हमको रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुहल्ले-मुहल्ले में मस्जिदें बनाने का हुक्म फ़रमाया है और उनको पाक-साफ़ रखने का हुक्म फ़रमाया है।

(तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ कि मस्जिदें ज़्यादा बनाना शरअन मतलूब है। इस हुक्मे-नबवी के मुताबिक़ अगर हर मुहल्ले में मस्जिदें बन जाएँ (चाहे सादी ही हों) तो बारिश, सख़्त गर्मी और सर्दी में भी जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना आसान हो जाए, ख़ुसूसन बूढ़े लोगों के लिए और बीमारों के लिए ज़्यादा सहूलत हो जाए। इस हदीस से उन लोगों की ग़लती भी वाज़ेह हो गई, जो एक गाँव में ज़्यादा मस्जिदें बनाने को इज्तिमाइयत के ख़िलाफ़ समझते हैं, इसलिए कि उनका यह ख़याल हदीसे-बाला के ख़िलाफ़ है।

सादगी बज़ाते-ख़ुद हुस्न है

मौजूदा दौर में घर हो या सड़क, कॉलेज हो या दफ़्तर, पार्टी हो या मीलाद हर जगह नौजवानों में फ़ैशन व सजने-सँवरने का रुजहान तेज़ी से

फ़ैल रहा है। क़ीमती लिबास को आज इमारत की निशानी समझा जाता है। आज मेहमानों की तवाज़ो भी उनके ज़ेब-करदा लिबास को देखकर की जाती है। क्या हमने अपनी असल को खो दिया है? क्या हमारे मुक़ाबिल ज़ाती सिफ़ात की अहमियत नहीं? क्या महज़ दिखावे की चाह में हम सरगरदाँ हो रहे हैं? यह तमाम सवालात क़ाबिले ग़ौर हैं।

आज के नौजवानों को अगर किसी तक़रीब में जाना मक़्सूद हो तो हफ़्ता भर पहले ही ज़ेहन परेशानियों की आमाजगाह बन जाता है। लिबास ऐसा हो जो क़ीमती भी हो और ख़ूबसूरत भी, लिबास से मैच करते सैंडल्ज़ भी नए होने चाहिए, फिर ज्वेलरी भी क़ीमती होनी चाहिए। इन फ़ैशन और नक़्क़ाली की दौड़ में लड़कों ने भी अपने क़दम पीछे नहीं रखे हैं। मौजूदा दौर की सबसे ज़्यादा इस्तेमाल की जानेवाली चीज़ "मोबाइल" भी है, जिसका इस्तेमाल कभी ज़रूरत के तहत ही किया जाता था, मगर अब फ़क़त फ़ैशन का एक सेम्पल बनकर रह गया है।

सजने, संवरने और फ़ैशन शो को जब टी.वी., अख़बार, रिसाले और फ़िल्मों में दिखाया जाता है और इन्हें देखकर नौजवान भी इसी दौड़ में शामिल हो जाते हैं। बाज़ारों में मुख़्तलिफ़ अशया-ए-श्रृंगार, मेकअप के लवाज़मात और लिबास मशहूर मॉडल्ज़ और हीरो, हीरोइन के नाम पर फ़रोख़्त किए जाते हैं जिन्हें नौजवान लड़के-लड़कियाँ निहायत जोश व ख़रोश से ख़रीदते हैं।

अक्सर औक़ात इस फ़ैशन के वबाई मर्ज़ में मुब्तला लोग घर की ख़स्ता-हाली को भी फ़रामोश कर देते हैं, दीगर इंतिहाई अहम ज़रूरियात को पसे-पुश्त डाल देते हैं और अपने बेजा फ़ैशन की तक्मील करते हैं। आज बेशतर लड़कियाँ महज़ अपने फ़ैशन की ज़रूरियात की तक्मील की ख़ातिर मुलाज़िमत भी करती हैं और इसी की ख़ातिर सड़कों की ख़ाक छानती हैं।

यह फ़ैशन का मर्ज़ फ़क़त ज़ात तक ही महदूद नहीं बल्कि अब घरों को सजाने-संवारने के फ़ैशन ने भी लोगों को अधमरा कर दिया है। बढ़ती मँहगाई और महदूद तनख़्वाह में दूसरों की नक़्क़ाली का जुनून रातों को

बेख़्वाब करने लगा है। शायद हमने यह समझ लिया है कि मस्नूई लवाज़मात का बोझ लादकर फ़ैशनेबल बन जाने से हम "ख़ूबसूरती" के ज़ुमरे में शामिल हो जाएंगे और यही हमारी सबसे बड़ी भूल है।

सहरा के प्यासे को कौन बतलाए कि दूर से चमकते ज़र्रे पानी नहीं महज़ सराब हैं, इसी रात का एक हिस्सा हैं जिनमें वह सरगरदाँ हैं। आज हमने उन ज़र्रीं अक़्वाल को फ़रामोश कर दिया है जो हक़ीक़त को आशकार करते हैं। आज हम सच्चे मुसलमान नहीं, फिर हमारे चेहरे पर नूर कैसे हो सकते हैं? आज हमने ख़ुश-ख़ल्क़ी को ख़ुद से कोसों दूर कर रखा है। रियाकारी की दौड़ में हमें इतनी फ़रागत ही दस्तयाब नहीं हुई कि हम किसी से ख़ुश-गुफ़्तारी व मिलनसारी के हमराह गुफ़्तुगू कर सकें, फिर हममें जाज़बियत क्योंकर पैदा होगी?

आज हमने मेहमान-नवाज़ी को फ़क़त एक बोझ तसव्वुर कर लिया है फिर हमारे घर रहमत व बरकत किस तरह बरस सकती है और बग़ैर रहमत के घरों में दिलकशी किस सूरत में वारिद हो सकती है?

हम टी.वी., अख़बार, रिसालों में सजे-संवरे किरदारों को देखकर उन जैसा बनने की कोशिश में सर-धड़ की बाज़ी लगा देते हैं। हालांकि यह किस क़द्र नादानी की बात और हिमाक़त है। हम क्यों फ़रामोश कर जाते हैं कि उन किरदारों का फ़ैशन करना उनकी ज़रूरत या मजबूरी है। अगर वे इसमें ग्लैमर नहीं पैदा करेंगे तो लोग उन्हें ज़ौक़ व शौक़ से नहीं देखेंगे। लॉन, गाड़ियाँ, पार्टियाँ, सजावट, जाह व हश्म नाज़रीन को दिखाना उनकी ज़रूरत है, ताकि हम उनके प्रोग्राम देखने और रसाइल ख़रीदने पर माइल हों।

हममें इस फ़ैशन की मुहलिक बीमारी को फैलने की सबसे बड़ी वजह मज़हब से दूरी है। दूसरी बड़ी वजह हवस है और तीसरी वजह नक़्क़ाली का ज़ोर है, ज़िंदगी ख़्वाहिशों का एक ऐसा दायरा है जिसमें इंसान मुक़य्यद है और यह लम्हा-लम्हा बढ़ती ही जा रही है। एक ख़्वाहिश के इख़्तिताम पर दूसरी ख़्वाहिश उसकी जगह ले लेती है। यूं ख़्वाहिशात का यह तवील सिलसिला ज़िंदगी के साथ चलता रहता हैं। ज़िंदगी बज़ाते-ख़ुद

एक ख़्वाहिश है— ज़िन्दा रहने की ख़्वाहिश, दूसरों से आगे निकल जाने की ख़्वाहिश और बेशुमार खुशियाँ हासिल करने की ख़्वाहिश।

इंसान अपने ख़्वाहिशात के हुसूल के लिए दिन-रात एक कर देता है। अगर ख़्वाहिशात क़बूलियत का लबादा ओढ़ ले तो ज़िंदगी मसर्रतों से हमकिनार होने लगती है। लेकिन अगर ख़्वाहिशात हसरत की सूरत में तब्दील हो जाए तो इंसान की ज़िंदगी दुख और कर्ब की भयानक तस्वीर बन जाती है। आज हम भी ख़्वाहिशात के समुन्द्र में ग़ोताज़न हो चुके हैं। बैरूनी मुमालिक की तहज़ीबी, खुश-रंगी हमें मारे डालती है। रहन-सहन की आसाइशों से लैस होने के लिए हमारी ख़्वाहिश क़ालीन, सोफ़े, पर्दे ग़र्ज़ घर की सजावट के लिए ज़रूरी हर चीज़ की ख़्वाहिश और हसरत लिएं हुए है। अपनी ज़ात के मुतअल्लिक़ फ़ैशन और मेकअप हमें हमा वक़्त मुतफ़क्किर रखता है, हमने सादगी को खुद से दूर कर लिया है। ये सारी बातें हलाकत की हैं, तरक़्क़ी की नहीं।

ज़ेहननशीन रखें, सादगी में आसानी और ख़ूबसूरती दोनों ही मुज़मिर है। सादगी ज़िंदगी को सहल और दिलकश बनाती है। जिस तरह एक कमल अपनी हक़ीक़त को फ़रामोश न करते हुए कीचड़ में जाज़िबे-नज़र व दिलकश नज़र आता है। इतना हसीन किसी क़ीमती गुलदान में नज़र नहीं आता। यही फ़लसफ़ा इंसानी ज़िंदगी पर भी सादिक़ है। हमें चाहिए कि हम अपनी तहज़ीब और कल्चर को फ़रामोश न करें और अपने नफ़्स पर क़ाबू पाना सीखें।

रोज़ी में बरकत के लिए

हज़रत आदम अलैहि० की दुआ बहुत नफ़ाबख़्श है

हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा रज़ि० अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नबी पाक सल्ल० ने फ़रमाया, हज़रत आदम अलैहि० ने ज़मीन पर आने के बाद बैतुल्लाह का तवाफ़ किया, फिर दरवाज़ा के सामने दो रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर मुल्तज़िम पर तशरीफ़ लाए और यह दुआ पढ़ीः

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّيْ وَعَلَانِيَتِيْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِيْ وَتَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ

فَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِیْ سُؤْلِیْ ۔ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اِیْمَانًا یُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَیَقِیْنًا صَادِقًا حَتّٰی اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا یُصِیْبُنِیْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ وَالرِّضَاءَ قَضَیْتَ عَلَیَّ ۔

तो हज़रत आदम अलैहि० पर वह्य आई कि तुमने ऐसी दुआ की जो क़बूल की गई, तुम्हारी औलाद में से जो भी यह दुआ करेगा उसके ग़म व फ़िक्र को दूर कर दूंगा और उसकी रोज़ी को काफ़ी कर दूंगा। उसके दिल से फ़िक्र को दूर कर दूंगा, और उसको ग़नी कर दूंगा। उसकी तरफ़ असबाबे रिज़्क़ को मुतवज्जह कर दूंगा, उसकी तरफ़ दुनिया ज़लील होकर आएगी, अगरचे वह दुनिया को न चाहेगा।

(मनासिक, जिल्द 2, पेज 71 दुआ मस्नून, पेज 441)

वाह रे वाह! अल्लाह सुब्हान। तेरी क़ुदरत

बिल्ली की तर्बियत का अजीब अंदाज़

बिल्ली हामिला होती है तो वह कोना तलाश करने लगती है। बच्चा देने के लिए, उसको उसकी माँ ने नहीं बताया कि तुझे बच्चा देना है। किसी कोने में छुपने की जगह देखनी है, किसी ट्रेनिंग सेंटर से नहीं सीखा, किसी नर्सिंग होम से ट्रेनिंग नहीं ली। उसको मिन जानिबिल्लाह इल्हाम है कि मैं एक ऐसी जगह बच्चा दे दूँ कि जहाँ वह ज़ाया न हो जाए।

उसका कोई टीचर या उस्ताद नहीं, अल्लाह का निज़ाम है। उसको भी अल्लह हिदायत देता चला आ रहा है। बिल्ली किसी कोने में जाकर बच्चा देती है तो बच्चे को नहीं पता कि मेरी माँ की छाती कहाँ है और उसमें मेरी ग़िज़ा है। उसको माँ ने नहीं बताया, अल्लाह ही हिदायत देता है।

माँ तो खुद अपने बच्चे को सीने से लगाती है और उसके मुंह में छाती देती है, वह चूसता है। बिल्ली तो ऐसा नहीं करती, उसके बच्चे की आँखें बन्द होती हैं, उसकी तक़दीर और अल्लाह की रुबूबियत उसको इस तरह ले जा रही है, उसको चूसने का तरीक़ा बता रही है।

हम तो बच्चे के मुंह में चूसनी दे देते हैं तो उसको चूसने का तरीक़ा आ जाता है और उसकी मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से तर्बियत करते हैं तो वह सीखता है। बिल्ली का बच्चा है जिसने कभी देखा नहीं, सुना नहीं, वह ख़ुद-बख़ुद छाती की तरफ़ लपकता है और दूध पीता है। यह सारे का सारा निज़ाम अल्लाह तआला ग़ैब के पर्दों से चला रहा है।

एक मादा है, वह अंडे देती है। अंडे देने के बाद वह कीड़े को डंक मारती है, ऐसे डंक मारती है कि वह मरे नहीं, बेहोश हो जाए, मर जाए तो गिर जाएगा, सड़ जाएगा, इतना डंक मारती है कि बेहोश हो जाए, मरे नहीं।

वह उन कीड़ों को अपने अण्डों के पास रख लेती है और उनकी बेहोशी इतनी होती है कि जब तक वह बच्चा अण्डे के अंदर से निकलता है तो पहले से उसके लिए खाने का इंतिज़ाम किया जा चुका होता है।

वह माँ चली जाती है। अण्डे से निकलने वाला बच्चा जब देखता है कि मेरे लिए खाना तैयार है तो फिर उसको खाता है, परवान चढ़ता है, फिर उसके पंख लगते हैं। यह बच्चा जब बड़ा होकर अण्डे देने पर आता है तो इसी काम को करता है, जो उसकी माँ ने किया था। न वह अपनी माँ को देखता है न अपनी माँ से सुनता है, न अपनी माँ से सीखता है।

(इस्लाही वाक़िआत, पेज 394)

एक लड़की ने कहा कि मैं तलहा रज़ि० से शादी करूंगी, इसलिए कि वह घर में आते हैं हंसते हुए और घर से जाते हैं मुस्कुराते हुए और मालदार भी हैं

उतबा बिन रबीआ की लड़की उम्मे अबान से हज़रत उमर रज़ि० ने निकाह का पैग़ाम भेजा तो इन्कार कर दिया। फिर हज़रत अली रज़ि० ने पैग़ाम भेजा तो इन्कार कर दिया। फिर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने पैग़ाम दिया तो इन्कार कर दिया। हज़रत तलहा रज़ि० ने पैग़ाम दिया तो उसे क़बूल कर लिया। जब निकाह हो रहा था तो हज़रत अली रज़ि० ने पर्दे से उस औरत से कहा कि अमीरुल मोमिनीन, हुज़ूर सल्ल० के रिश्तेदारों से तो

निकाह करने से इन्कार कर दिया, तलहा रज़ि० से कर लिया। जवाब मिला, "जैसी ख़ुदा की मर्ज़ी!" ख़ैर तलहा रज़ि० भी हमसे अच्छा है। बाद में उसने औरतों में बताया कि उमर रज़ि० के साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी बहुत सख़्त होगी। अली रज़ि० के पास सिर्फ़ मुहब्बत ही है, ज़ुबैर रज़ि० के पास सिर्फ़ लाठी है, तलहा रज़ि० के साथ जिन्दगी गुज़ारने का मज़ा है, हंसते हुए घर में आएंगे और हंसते हुए घर से निकलेंगे।

हज़रत तलहा रज़ि० अपने हुस्न मुआशरत के बाइस बीवी-बच्चों में निहायत महबूब थे, वह अपने कुंबे में जिस लुत्फ़ व मुहब्बत के साथ ज़िन्दगी बसर करते थे इसका अन्दाज़ा सिर्फ़ इससे हो सकता है कि उतबा बिन रबीआ की लड़की उम्मे-अबान से अगरचे बहुत-से मुअज़्ज़िज़ अशख़ास ने शादी की दरख़्वास्त की, लेकिन उन्होंने हज़रत तलहा रज़ि० को सब पर तर्जीह दी। लोगों ने वजह पूछी तो कहा, "मैं उनके औसाफ़े हमीदा से वाक़िफ़ हूँ, वे घर आते हैं तो हंसते हुए, बाहर जाते हैं तो मुस्कुराते हुए, कुछ माँगो तो बुख़्ल नहीं करते और ख़ामोश रहो तो माँगने का इन्तिज़ार नहीं करते और अगर कोई काम करो तो शुक्रगुज़ार होते हैं और ख़ता हो जाए तो माफ़ कर देते हैं।

(सीरतुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 117, ख़ुसूसी बयानात मौलाना यूसुफ़ साहब, कंज़ुल आमाल, जिल्द 6/413)

जिन वक़्तों में दुआ क़ुबूल होती है वह ये हैं

जिस तरह मख़्सूस औक़ात मक़्बूलियते-दुआ में असर रखते हैं, इसी तरह इंसान के बाज़ हालात को भी हक़ तआला ने मक़्बूलियते-दुआ के लिए मख़्सूस फ़रमाया, जिनमें कोई दुआ रद्द नहीं की जाती, वे औक़ात ये हैं :

1. अज़ान के वक़्त। (अबू दाऊद, मुस्तदरक)
2. अज़ान व इक़ामत के दर्मियान। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई, इब्ने माजा)
3. हय-य अलस्सलाह, हय-य अलल फ़लाह के बाद उस शख़्स के लिए जो किसी मुसीबत में गिरफ़्तार हो उस वक़्त दुआ करना बहुत मुजर्रब व मुफ़ीद है। (मुस्तदरक)

4. जिहाद में सफ़ बाँधने के वक़्त। (इब्ने हिब्बान, तबरानी, मुक्ता)

5. जिहाद में घमसान की लड़ाई के वक़्त। (अबू दाऊद)

6. फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद। (तिर्मिज़ी, नसई)

7. सज्दा की हालत में। (मुस्लिम, अबू दाऊद, नसई)

फ़ायदा : मगर फ़राइज़ में नहीं।

8. तिलावते-क़ुरआन के बाद। (तिर्मिज़ी) और बिल-ख़ुसूस ख़त्म क़ुरआन के बाद। (तबरानी, अबू याला)

और बिल ख़ुसूस पढ़नेवालों की दुआ बनिस्बत सुननेवालों के, ज़्यादा मक़्बूल है। (तिर्मिज़ी, तबरानी)

9. आबे-ज़मज़म पीने के वक़्त। (मुस्तदरक हाकिम)

10. मय्यित के पास हाज़िर होते वक़्त। यानी जो शख़्स नज़ाअ् की हालत में हो, उसके पास आने के वक़्त भी दुआ क़बूल होती है। (मुस्लिम व सुनन अरबा)

11. मुर्ग़ की आवाज़ करने के वक़्त। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नसई)

12. मुसलमानों के इज्तिमा के वक़्त। (सिहाह सित्ता)

13. मजालिसे-ज़िक्र में। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

14. इमाम के 'वलज़्ज़ॉल्लीन' कहने के वक़्त। (मुस्लिम, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा)

फ़ायदा : बज़ाहिर इमाम जज़री की मुराद इससे वह हदीस है जो अबू दाऊद ने बाबे-तशह्हुद में ज़िक्र की है। यानी जब इमाम वलज़्ज़ॉल्लीन कहे तो तुम आमीन कहो, हक़ तआला तुम्हारी दुआ क़बूल फ़रमाएंगे। इससे मालूम हुआ कि इस मौक़े पर दुआ से मुराद सिर्फ़ आमीन कहना है, दूसरी दुआ मुराद नहीं।

15. इक़ामते नमाज़ के वक़्त। (तबरानी, इब्ने मर्दूया)

16. बारिश के वक़्त।

17. बैतुल्लाह पर नज़र पड़ने के वक़्त। (तिर्मिज़ी, तबरानी)

दुआ की क़ुबूलियत के लिए बहुत मुजर्रब अमल

18. सूरह अनआम की आयते करीमा नम्बर 124

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ

"व इज़ा जाअतहुम आयतुन क़ालू लन-नुअ्मि-न हत्ता नुअ्ता मिस-ल मा ऊति-य रु-सुलुल्लाहि, अल्लाहु आलमु हैसु यजअलु रिसा-ल-त-हु।"

में दोनों इस्मुल्लाह के दर्मियान जो दुआ की जाए वह भी मक़्बूल होती है। इमाम जज़री फ़रमाते हैं हमने इसका बारहा तजरिबा किया है और बहुत-से उलमा से इसका मुजर्रब होना मन्क़ूल है।

तौज़ीह : हाजतों की तक्मील करवाने के लिए इस अमल का शुरू इस तरह कीजिए कि मज़्कूरा आयत पढ़ना शुरू कीजिए (जैसे : व इज़ा जाअतहुम आयतुन क़ालू लन-नुअ्मि-न हत्ता नुअ्ता मिस-ल मा ऊति-य रु-सुलुल्लाहि) फिर इस आयत का आगे का हिस्सा छोड़कर अल्लाह से अपनी सारी मुरादें माँगिए फिर आगे का हिस्सा पढ़िए : "अल्लाहु आलमु हैसु यजअलु रिसा-ल-त-हु," इंशाअल्लाह ज़रूर-बिज़्ज़रूर दुआ क़बूल होगी।

एक जेबकतरे ने अजीब नसीहत की

एक जेबकतरा शाम को अपने उस्ताद के पास दो रुपये लेकर गया। मालिक ने कहा, आज सारा दिन क्या किया? कहने लगा, माल तो बहुत हाथ आया था। एक गोरे की जेब काटी थी जब लेकर चला तो ख़याल आया कि अगर क़ियामत के दिन ईसा अलैहि० ने रसूले-पाक सल्ल० से गिला कर दिया कि आपके उम्मती ने मेरे उम्मती की जेब काटी थी तो मैं उनको क्या मुंह दिखाऊँगा तो मैंने बटुवा उसको वापस कर दिया। नाफ़रमानों को ऐसी शर्म व हया थी तो फ़रमाँबरदार कैसे होंगे:

जो साज़ से निकली है वह सुर सबने सुनी है
जो तार पर बीती है वह बस दिल को पता है

जिस अल्लाह को ज़मीन के ऊपर भूल न सकी तो ज़मीन के नीचे कैसे भूल सकती हूँ

हज़रत राबिआ बसरिया रह० का इंतिक़ाल हो गया, तो ख़्वाब में अपनी ख़ादिमा को मिलीं। उन्होंने कहा कि अम्माँ! आपके साथ क्या हुआ? कहा कि मेरे पास मुन्कर-नकीर आए, मुझसे कहने लगे, "मन रब्बु-क" तेरा रब कौन है? तो मैंने उनसे कहा कि "मन रब्बु-क" तुम्हारा रब कौन है और कहाँ से आए हो? तो फ़रिश्तों ने कहा, अपने परवरदिगार के पास से। तो हज़रत राबिआ बसरिया रह० ने कहा, जब इतनी दूरी से आने पर तुम अपने रब को नहीं भूले तो मैं चार हाथ ज़मीन के नीचे आकर अपने रब को कैसे भूल सकती हूँ।

यह नहीं कहा कि "रब्बियल्लाहु"। कहा कि जिस रब को सारी ज़िन्दगी नहीं भूली, उसको चार हाथ ज़मीन के नीचे आकर कैसे भूल जाऊँगी।" उन्होंने कहा, "छोड़ो इसका क्या हिसाब लेना।"

ख़ादिमा कहने लगी कि आपकी गुदड़ी कहाँ गई? गुदड़ी एक लम्बा सा जुब्बा को कहते हैं, जो अरब पहनते हैं, हमारे यहाँ इसका कोई दस्तूर नहीं।

हज़रत राबिआ रह० ने कहा था कि मुझे कफ़न मेरी गुदड़ी में ही दे देना, मेरे लिए नया कपड़ा न लाना। लेकिन उनकी ख़ादिमा ने देखा कि बहुत आलीशान पोशाक पहनी हुई हैं। कहने लगीं कि वह गुदड़ी कहाँ गई?

कहा कि अल्लाह ने संभाल कर रख दी है कि क़ियामत के दिन मेरी नेकियों में उसको भी तौलेगा और उसका भी वज़न करेगा।

हमारे दौरे-अव्वल की हुकूमतें इस्लाम के फैलाने का ज़रिया थीं। उनकी तिजारतें इस्लाम के फैलाने का ज़रिया थीं। लेकिन अब हमारी तिजारतें इस्लाम को मिटाने का ज़रिया हैं।

गुंजाइशवाला इस्लाम निभेगा और क़ुरबानी वाला इस्लाम चलेगा

जब मुल्क फ़तह हो गए और फ़ुतूहात के दरवाज़े खुल गए तो हज़रत उमर रज़ि० के बारे में सहाबा रज़ि० ने मशविरा किया कि अब ये बूढ़े हो गए हैं और फ़ुतूहात हो गई हैं। अब उनकी ज़िंदगी बड़ी मुशक़्क़त वाली है, उन्हें चाहिए कि अच्छा खाएँ, अच्छा लिबास पहनें, कोई ख़ादिम रख लें, जो खाना पकाया करे और लिबास और आराम का ख़याल किया करें। अली रज़ि०, अब्दुर्रहमान रज़ि०, उसमान रज़ि०, तलहा रज़ि०, ज़ुबैर रज़ि०, सअद रज़ि०, ये छः बड़े सहाबी आपस में मशविरा कर रहे हैं। उन्होंने कहा, बात कौन करे?

तै यह हुआ कि हफ़्सा रज़ि० से कहो जो हज़रत उमर रज़ि० की बेटी और उम्मुल-मोमिनीन हैं। हज़रत हफ़्सा रज़ि० के पास आए और बात अर्ज़ की कि अमीरुल-मोमिनीन को अब सख़्ती पर नहीं रहना चाहिए, थोड़ी नर्मी पर आ जाना चाहिए और उनसे बात करें, अगर मान जाएँ तो हमारा नाम बता दीजिए, अगर न मानें तो हमारा नाम ज़ाहिर न कीजिए।

हज़रत उमर रज़ि० तशरीफ़ लाए। हज़रत हफ़्सा रज़ि० ने कहा, "अब्बा जान! अब आप बूढ़े हो चुके हैं, आप ख़ादिम रख लें जो आपके लिए खाना पकाया करें। आप लिबास भी अच्छा पहना करें, आपके पास दूर-दूर से वफ़्द आते हैं। कुछ आराम भी कर लिया करें।

फ़रमाया, "हफ़्सा! यह बात किसने तुझसे कही है?"

फ़रमाया कि पहले आप यह बताओ, मानते हो कि नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, "अगर मुझे यह पता चल जाए कि यह बात किन लोगों ने कही है तो मैं मार-मार के उनके चेहरे लहूलुहान कर दूं। ऐ हफ़्सा! घरवालों को पता होता है कि घर का हाल क्या है, तू नबी सल्ल० की बीवी है। तुझे अच्छी तरह याद है कि हुज़ूर अकरम सल्ल० दुनिया से तशरीफ़ ले गए और कभी पेट भरकर खाना नहीं

खाया। ऐ हफ़्सा! तुझे अच्छी तरह याद है कि तूने एक मर्तबा छोटी-सी मेज़ पर नबी सल्ल० के लिए खाना रख दिया था और हुज़ूर सल्ल० आए थे और आप सल्ल० के चेहरे का रंग बदल गया था और आप सल्ल० ने फ़रमाया था कि खाना नीचे रखो, मैं मेज़ पर नहीं खाऊँगा। आप सल्ल० ने खाने को नीचे रखकर खाया था और हफ़्सा रज़ि० तुझे याद है, हुज़ूर के पास एक ही जोड़ा होता था जिसे वह धोकर पहनते थे और कभी ऐसा होता था कि अभी वह कपड़ा ख़ुश्क नहीं होता था कि नमाज़ का वक़्त हो जाता था और बिलाल रज़ि० आकर कहते थे : या रसूलल्लाह! अस्सलात, अस्सलात और आप सल्ल० इंतिज़ार करते रहते थे यहाँ तक कि जोड़ा ख़ुश्क होता था और उसी को पहनकर जाते थे।"

"ऐ हफ़्सा रज़ि०! तुझे अच्छी तरह याद है कि तेरे घर में एक टाट था जिसे तू दोहरा करके बिछाती थी, रात को आप सल्ल० के आराम के लिए एक रात तूने चौहरा करके बिछा दिया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ हफ़्सा! इस टाट को दोहरा कर दे, इसने रात को खड़ा होने से मुझे रोक दिया। ऐ हफ़्सा! तुझे अच्छी तरह याद है कि एक औरत ने हुज़ूर सल्ल० को दो चादरें हदिये में भेजी थीं। एक चादर पहले भेज दी, दूसरी चादर देर से भेजी, उस वक़्त आप सल्ल० के पास कोई कपड़ा नहीं था उसी चादर को आप सल्ल० ने काँटों से सीकर और गाँठ लगाकर उसे पहनकर नमाज़ पढ़ाई थी। ऐ हफ़्सा! घरवाला अच्छी तरह समझता है। और फिर रोना शुरू कर किया।

हज़रत हफ़्सा रज़ि० की भी चीख़ें निकलने लगीं। हज़रत उमर रज़ि० कि भी चीखें निकल रही हैं, और फ़रमाया! "हफ़्सा! सुन ले! मेरी मिसाल और मेरे साथियों की मिसाल ऐसी है— तीन राही हैं तीन मुसाफ़िर हैं। एक उठा और मंज़िल को चला, एक रास्ते पर चला और वह चलता-चलता मंज़िले मक़्सूद तक पहुंच गया। फिर दूसरा उठा मंज़िल को चला, एक रास्ते पर चला और वह चलते-चलते मंज़िले मक़्सूद तक पहुंच गया। अब तीसरे की बारी है, और मैं तीसरा हूँ। अल्लाह की क़सम! मैं अपने नफ़्स को मुजाहिदे पर रखूंगा और दुनिया की लज़्ज़तों से हटाकर

चलूंगा यहां तक कि मैं अपने साथियों के साथ मिल जाऊं। अगर मैंने अपने रास्ते को जुदा कर दिया तो मैं अपने साथियों से नहीं मिल सकता, मैं इसी तरह चलूंगा।"

हज़रत साअूद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत हफ़्सा रज़ि० बिन्ते उमर रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, "ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या ही अच्छा होता अगर आप इन (खुरदरे) कपड़ों से ज़्यादा नर्म कपड़े पहनते और अपने इस खाने से ज़्यादा उम्दा खाना खाते, क्योंकि अल्लाह तआला ने रिज़्क़ में बड़ी वुस्अत अता फ़रमा दी है और माल भी पहले से ज़्यादा अता फ़रमा दिया है।" हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, "तुम्हारे ख़िलाफ़ दलील तुमसे ही मुहैया करता हूँ। क्योंकि तुम्हें हुज़ूर सल्ल० की मशक़्क़त और सख़्तीवाली ज़िंदगी याद नहीं।" चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० उनको हुज़ूर सल्ल० की मईशत की तंगी के वाक़िआत याद दिलाते रहे, यहाँ तक कि वह रोने लगीं, फिर उनसे फ़रमाया कि तुमने मुझे यह कहा है लेकिन मेरा फ़ैसला यह है कि जहाँ तक मेरा बस चलेगा मैं मशक़्क़त और तंगीवाली हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० दोनों हज़रात जैसी ज़िंदगी गुज़ारूंगा ताकि मुझे आख़िरत में नेमतों और राहतोंवाली उन दोनों हज़रात जैसी ज़िंदगी मिल सके। हज़रत उमर रज़ि० के ज़ुहद के बाब में इस बारे में बहुत-सी मुख़्तसर और लम्बी रिवायतें गुज़र चुकी हैं। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 475)

(नोट : अल्फ़ाज़ मेरे ज़ाती हैं मज़्मून हयातुस्सहाबा में देखिए, मुरत्तब)

हज़रत उमर रज़ि० की वफ़ात का मंज़र

फिर अल्लाह ने दिखा दिया कि अल्लाह तआला ने हज़रत उमर रज़ि० को साथ मिला दिया, जब अबू लुअ्-लुअ ने ख़ंजर मारा और आप गिरे, आँतें कट गईं और ख़ून बहने लगा, ग़िज़ा खिलाई तो आँतों से बाहर निकल गई। पता चल गया कि अब मैं नहीं बच सकूँगा तो अपने बेटे को बुलाया और कहा कि ऐ अब्दुल्लाह! जाओ, हज़रत आइशा रज़ि० से जाकर इजाज़त लो। अमीरुल-मोमिनीन। नबी सल्ल० के पड़ोस में दफ़न होना चाहता है।

वह हज़रत आइशा रज़ि० के यहाँ हाज़िर हुए। दरवाज़े पर दस्तक दी। कहा कि अब्दुल्लाह हाज़िर है। अमीरुल-मोमिनीन यह इजाज़त चाहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के पड़ोस में दफ़न किए जाएँ।

हज़रत आइशा रज़ि० रोने लगीं और फ़रमाने लगीं, "ऐ अब्दुल्लाह! यह जगह मैंने अपने लिए रखी थी लेकिन मैं उमर रज़ि० को अपने ऊपर तर्जीह दूंगी, उमर रज़ि० को लाया जाए।"

वापस जाकर अपने अब्बा जान से फ़रमाया, "ख़ुशख़बरी हो आपको, इजाज़त मिल गई।"

फ़रमाया, "बेटा! नहीं, यह नहीं हो सकता है कि मेरी शर्म में आइशा रज़ि० ने इजाज़त दी हो, जब मैं मर जाऊँ तो मेरे जनाज़े को दरवाज़े पर रखना। फिर दोबारा इज़ाज़त माँगना। अगर इजाज़त दे दें तो दफ़न कर देना, वरना मुझे आम मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़न कर देना। जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो बेटे ने सर को गोद में रखा हुआ था, आप रज़ि० ने फ़रमाया, "बेटा मेरा सर ज़मीन पर रख दो।" हज़रत अब्दुल्लाह को समझ में नहीं आया क्या कह रहे हैं। कहा, "बेटा! मेरा सर ज़मीन पर रख और अब मुझे याद नहीं कि क्या लफ़्ज़ फ़रमाया : "तरबत यदा-क" या यूँ फ़रमाया, "सकलतक उम्म-क" तेरी माँ तुझे रोए, तेरे हाथ टूटे, मुझे ज़मीन पर डाल, मैं अपने चेहरे को ख़ाक आलूद करना चाहता हूँ ताकि मेरे मौला को मेरे ऊपर रहम आ जाए।

यह वह उमर रज़ि० हैं जिनके बारे में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होता। इंतिक़ाल हुआ, नमाज़े-जनाज़ा पढ़ी गई, जनाज़ा उठा, हुजर-ए-मुबारक के सामने जनाज़ा रखा गया। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, "ऐ उम्मुल-मोमिनीन! अमीरुल-मोमिनीन दरवाज़े पर आ चुके हैं और अन्दर जाने की इजाज़त माँगते हैं।"

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया : मरहबा अमीरुल-मोमिनीन! मरहबा अमीरुल-मोमिनीन! बेशक अमीरुल-मोमिनीन को अन्दर आने की इजाज़त है। अमीरुल-मोमिनीन को अन्दर आने की इजाज़त है।

मेरे भाइयो! अल्लाह ने दिखा दिया कि जो नबी सल्ल० के तरीक़े पर चलता है, उसे अल्लाह कैसे साथ मिलाता है। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० ने ओढ़नी सर पर रखी और बाहर निकल गईं और हज़रत उमर रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० के पड़ोस में दफ़न किया गया। आप सल्ल० ने फ़रमाया, "मैं क़ियामत के दिन उठुंगा और मेरे दाएँ तरफ़ अबू बक्र रज़ि० होंगे और बाएँ तरफ़ उमर रज़ि० होंगे, और बिलाल रज़ि० मेरे आगे-आगे अज़ान देते होंगे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, जब अबू लुअ्लुअ ने हज़रत उमर रज़ि० पर नेज़ा के दो वार किए तो हज़रत उमर रज़ि० को यह ख़याल हुआ कि शायद उनसे लोगों के हुक़ूक़ में कोई ऐसी कोताही हुई है जिसे वह नहीं जानते हैं। चुनांचे उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० को बुलाया। हज़रत उमर रज़ि० को उनसे बहुत मुहब्बत थी, वह अपने क़रीब उनको रखते थे, और उनकी बात सुना करते थे, उनसे फ़रमाया, "मैं यह चाहता हूँ कि तुम यह पता करो कि क्या मेरा यह क़त्ल लोगों के मशविरे से हुआ है?" चुनांचे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० बाहर चले गए। वह मुसलमानों की जिस जमाअत के पास से गुज़रते वह रोते नज़र आते। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में वापस आकर अर्ज़ किया, "या अमीरुल-मोमिनीन! मैं जिस जमाअत के पास से गुज़रा, मैंने उनको रोते हुए पाया। ऐसा मालूम हो रहा था कि जैसे आज उनका पहला बच्चा गुम हो गया हो।" हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, मुझे किसने क़त्ल किया है? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा के मजूसी गुलाम अबू लुअ्लुअ ने। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं (जब हज़रत उमर रज़ि० को पता चला कि उनका क़ातिल मुसलमान नहीं, बल्कि मजूसी है) तो मैंने उनके चेहरे में ख़ुशी के आसार देखे और वह कहने लगे, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरा क़ातिल ऐसे आदमी को नहीं बनाया जो 'ला इला-ह इल्लल्लाह' कहकर मुझसे हुज्जत बाज़ी कर सके। ग़ौर से सुनो! मैंने तुमको किसी अज्मी काफ़िर गुलाम को हमारे यहाँ लाने से मना किया था लेकिन तुमने

मेरी बात न मानी। फिर फ़रमाया, "मेरे भाइयों को बुला लाओ।" लोगों ने पूछा, वे कौन हैं? उन्होंने फ़रमाया, "हज़रत उसमान रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत तलहा रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि०, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० और हज़रत साअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०।" उन लोगों के पास आदमी भेजा। फिर अपना सर मेरी गोद में रख दिया। जब वे हज़रात आ गए तो मैंने कहा, ये सब आ गए हैं। तो फ़रमाया, अच्छा! मैंने मुसलमानों के मामले में ग़ौर किया है, मैंने आप छः हज़रात को मुसलमानों का सरदार और क़ाइद पाया है, और यह अम्र ख़िलाफ़त सिर्फ़ तुममें ही होगा। जब तक तुम सीधे रहोगे उस वक़्त तक लोगों की बात भी ठीक रहेगी। अगर मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ हुआ तो पहले तुममें होगा। जब मैंने सुना कि हज़रत उमर रज़ि० ने आपस के इख़्तिलाफ़ात का ज़िक्र किया है तो मैंने सोचा कि अगरचे हज़रत उमर रज़ि० यूँ कह रहे हैं कि अगर इख़्तिलाफ़ हुआ लेकिन यह इख़्तिलाफ़ ज़रूर होकर रहेगा क्योंकि बहुत कम ऐसा हुआ है कि हज़रत उमर रज़ि० ने कोई चीज़ कही हो और मैंने उसे न देखा हो। फिर उनके ज़ख़्मों से बहुत-सा ख़ून निकला जिससे वह कमज़ोर हो गए। वे छः हज़रात आपस में चुपके-चुपके बातें करने लगे कि यहाँ तक कि मुझे ख़तरा हुआ कि ये लोग अभी अपने में किसी एक से बैअ़त हो जाएंगे। इस पर मैंने कहा अभी अमीरुल-मोमिनीन ज़िन्दा हैं और एक वक़्त में दो ख़लीफ़ा नहीं होने चाहिएँ कि वे दोनों एक-दूसरे को देख रहे हों (अभी किसी को ख़लीफ़ा न बनाओ) फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि मुझे उठाओ। चुनांचे हमने उनको उठाया। फिर उन्होंने फ़रमाया, तुम लोग तीन दिन मशविरा करो और उस अर्से में हज़रत सुहैब रज़ि० लोगों को नमाज़ पढ़ाते रहें। उन हज़रात ने पूछा, हम किनसे मशविरा करे? उन्होंने फ़रमाया, "मुहाजिरीन और अनसार से और यहाँ जितने लश्कर हैं उनके सरदारों से।" उसके बाद थोड़ा-सा दूध मंगाया और उसे पिया तो दोनों ज़ख़्मों में से दूध की सफ़ेदी बाहर आने लगी जिससे हज़रत उमर रज़ि० ने समझ लिया कि मौत आनेवाली है। फिर फ़रमाया कि अब अगर मेरे पास सारी दुनिया हो तो मैं उसे मौत के बाद आनेवाली हौलनाक मनज़र की घबराहट के बदले में

देने को तैयार हूँ। लेकिन मुझे अल्लाह के फ़ज़्ल से उम्मीद है कि मैं ख़ैर ही देखूँगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा कि आपने जो कुछ फ़रमाया है उसका बेहतरीन बदला अल्लाह आपको अता फ़रमाए, क्या यह बात नहीं है कि जिस ज़माने में मुसलमान मक्का में ख़ौफ़ की हालत में ज़िंदगी गुज़ार रहे थे, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई थी कि आपको हिदायत देकर अल्लाह तआला दीन को और मुसलमानों को इज़्ज़त अता फ़रमाए। जब आप मुसलमान हुए तो आपका इस्लाम इज़्ज़त का ज़रिया बना और आपके ज़रिए से इस्लाम और हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा रज़ि० खुल्लम-खुल्ला सामने आए और आप सल्ल० ने मदीना को हिजरत फ़रमाई और आपकी हिजरत फ़तह का ज़रिया बनी। फिर जितने ग़ज़वात में हुज़ूर सल्ल० ने मुश्रिकीन से क़िताल फ़रमाया, आप किसी में ग़ैर हाज़िर न हुए। फिर हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात इस हाल में हुई कि वह आपसे राज़ी थे। फिर आपने हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े के मुताबिक़ हुज़ूर सल्ल० के बाद ख़लीफ़-ए-रसूल की ख़ूब ज़ोरदार मदद की और माननेवालों को लेकर आपने न माननेवालों का मुक़ाबला किया, यहाँ तक कि लोग तौअन व करहन इस्लाम में दाख़िल हो गए (बहुत-से लोग ख़ुशी से दाख़िल हुए, कुछ माहौल और हालात से मजबूर होकर दाख़िल हुए)। फिर उन ख़लीफ़ा का इस हाल में इंतिक़ाल हुआ कि वे आपसे राज़ी थे। फिर आपको ख़लीफ़ा बनाया गया और आपने उस ज़िम्मेदारी को अच्छे तरीक़े से अनजाम दिया और अल्लाह तआला ने आपके ज़रिए से बहुत-से नए शहर आबाद कराए। (जैसे कूफ़ा और बसरा) और (मुसलमानों के लिए रूम फ़ारस के) सारे अमवाल जमा कर दिए और आपके ज़रिए से दुश्मन का क़िला-क़ुमा कर दिया और अल्लाह तआला ने हर घर में आपके ज़रिए दीन को भी तरक़्क़ी अता फ़रमाई और रिज़्क़ में भी वुस्अत अता फ़रमाई और फिर अल्लाह तआला ने आपको ख़ातिमा में शहादत का मर्तबा अता फ़रमाया। यह मर्तब-ए-शहादत आपको मुबारक हो। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! तुम (ऐसी बातें करके) जिसे धोका दे रहे हो, अगर वह उन बातों को अपने लिए मान लेगा तो वह वाक़ई धोका खानेवाला इंसान है, फिर फ़रमाया, ऐ

अब्दुल्लाह! क्या तुम क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने भी मेरे हक़ में इन तमाम बातों की गवाही दे सकते हो? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, जी हाँ! फ़रमाया, ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है (कि मेरी गवाही देने के लिए हुज़ूर सल्ल० के चचाज़ाद भाई तैयार हो गए हैं, फिर फ़रमाया), ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर! मेरे रुख़्सार को ज़मीन पर रख दो, (हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं) मैंने उनका सर अपनी रान से उठाकर अपनी पिंडली पर रख दिया। तो फ़रमाया, नहीं! मेरे रुख़्सार को ज़मीन पर रख दो। चुनांचे उन्होंने उठाकर उनकी दाढ़ी और रुख़्सार को ज़मीन पर रख दिया, और फ़रमाया : ऐ उमर! अगर अल्लाह ने तेरी मग़फ़िरत न की तो फिर ऐ उमर! तेरी भी हलाकत है और तेरी माँ की भी हलाकत है। उसके बाद उनकी रूह परवाज़ कर गई। जब हज़रत उमर रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया तो उन हज़रात ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के पास पैग़ाम भेजा। उन्होंने कहा, हज़रत उमर! आप लोगों को हुक्म दे गए हैं कि आप लोग मुहाजिरीन और अनसार से और जितने लश्कर यहाँ मौजूद हैं उनके उमरा से मशविरा करें। अगर आप लोग यह काम नहीं करोगे तो मैं आप लोगों के पास नहीं आऊँगा। जब हज़रत हसन बसरी रह० से हज़रत उमर रज़ि० के इंतिक़ाल के वक़्त के अमल का और उनके अपने रब से डरने का तज़्किरा किया गया तो उन्होंने कहा, मोमिन ऐसे ही किया करता है कि अमल भी अच्छे तरीक़े से करता है, और अल्लाह से भी डरता है, और मुनाफ़िक़ अमल भी बुरे करता है, और अपने बारे में धोके में मुब्तला रहता है। अल्लाह की क़सम! गुज़िश्ता ज़माने में और मौजूदा ज़माने में मैंने यही पाया कि जो बन्दा अच्छे अमल में तरक़्क़ी करता है, वह अल्लाह से डरने में भी तरक़्क़ी करता है और जो बुरे अमल में तरक़्क़ी करता है उसका अपने बारे में धोका भी बढ़ता जाता है।

हज़रत अम्र बिन मैमून हज़रत उमर रज़ि० की शहादत का ज़िक्र करते हुए बयान करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से कहा, देखो! मुझपर कितना क़र्ज़ है, उसका हिसाब

लगाओ। उन्होंने कहा, छयासी हज़ार (86000)। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अगर उमर रज़ि० के ख़ानदान के माल से यह क़र्ज़ा अदा हो जाए तो उनसे माल लेकर मेरा यह क़र्ज़ा अदा कर देना। वरना (मेरी क़ौम) बनू अदी बिन काअ्ब से माँगना। अगर उनके माल से मेरा तमाम क़र्ज़ा उतर जाए तो ठीक है वरना (मेरे क़बीले) क़ुरैश से माँगना, उनके बाद किसी और से न माँगना लेकिन मेरा क़र्ज़ा अदा कर देना। और उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में जाकर सलाम करो और उनसे कहो, उमर बिन ख़त्ताब अपने दोनों साथियों (हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि०) के साथ (हुजर-ए-मुबारक में) दफ़न होने की इजाज़त माँग रहे हैं। उमर बिन ख़त्ताब कहना और इसके साथ अमीरुल-मोमिनीन न कहना, क्योंकि मैं आज अमीरुल-मोमिनीन नहीं हूँ। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में गए तो देखा कि वह बैठी हुई रो रही हैं। सलाम करके उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि उमर बिन ख़त्ताब अपने दोनों साथियों के साथ दफ़न होने की इजाज़त चाहते हैं। उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैंने इस जगह दफ़न होने की अपने लिए नीयत की हुई थी, लेकिन मैं आज हज़रत उमर रज़ि० को अपने ऊपर तर्जीह दूंगी। (यानी उनको इजाज़त है) जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० वापस आए तो हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा कि तुम क्या जवाब लाए हो? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, उन्होंने आपको इजाज़त दे दी है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया (इस वक़्त) मेरे नज़दीक एक काम से ज़्यादा ज़रूरी कोई चीज़ नहीं है। फिर फ़रमाया, जब मैं मर जाऊँ तो मेरे जनाज़े को उठाकर (हज़रत आइशा रज़ि० के दरवाज़े के सामने) ले जाना। फिर उनसे दोबारा इजाज़त तलब करना और यूँ कहना कि उमर बिन ख़त्ताब (हुजरे में दफ़न होने की) इजाज़त माँग रहे हैं, और अगर इजाज़त दे दें तो मुझे अन्दर ले जाना (और उस हुजरे में दफ़न कर देना) और अगर इजाज़त न दें तो मुझे वापस करके मुसलमानों के आम क़ब्रिस्तान में दफ़न कर देना। जब हज़रत उमर रज़ि० के जनाज़े को उठाया गया तो (सबकी चीख़ें निकल गईं और) ऐसा लगा कि जैसे आज ही मुसलमानों पर मुसीबत का पहाड़

टूटा है। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने सलाम करके अर्ज़ किया कि उमर बिन ख़त्ताब (अन्दर दफ़न होने की) इजाज़त तलब कर रहे हैं। हज़रत आइशा रज़ि० ने इजाज़त दे दी और इस तरह अल्लाह तआला ने हज़रत उमर रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साथ दफ़न होने का शर्फ़ अता फ़रमा दिया। जब हज़रत उमर रज़ि० के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आया तो लोगों ने कहा, आप किसी को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दें तो फ़रमाया मैं (इन छः आदमियों की) इस जमाअत से ज़्यादा किसी को भी अम्रे ख़िलाफ़त का हक़दार नहीं पाता हूँ कि हुज़ूर सल्ल० का इस हाल में इंतिक़ाल हुआ था कि वह इन छः से राज़ी थे। ये जिसे भी ख़लीफ़ा बना लें वही मेरे बाद ख़लीफ़ा होगा। फिर हज़रत अली, हज़रत उसमान, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत साअ़्द रज़ि० के नाम लिए। अगर ख़िलाफ़त हज़रत साअ़्द रज़ि० को मिले तो वही इसके मुस्तहिक़ हैं वरना उनमें से जिसे भी ख़लीफ़ा बनाया जाए वह उनसे मदद हासिल करता रहे क्योंकि मैंने उनको (कूफ़ा की ख़िलाफ़त से) किसी कमज़ोरी या ख़ियानत की वजह से माज़ूल नहीं किया था और हज़रत उमर रज़ि० ने (अपने बेटे) अब्दुल्लाह रज़ि० के लिए यह तै किया कि ये छः हज़रात इनसे मशविरा ले सकते हैं लेकिन इनका ख़िलाफ़त में कोई हिस्सा नहीं होगा। जब ये छः हज़रात जमा हुए तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने कहा कि अपनी राय को तीन आदमियों के हवाले कर दो। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने अपना इख़्तियार हज़रत अली रज़ि० को और हज़रत तलहा रज़ि० ने हज़रत उसमान रज़ि० को और हज़रत साअ़्द रज़ि० ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को दे दिया। जब इन तीनों को इख़्तियार मिल गया तो इन तीनों ने इकट्ठे होकर मशविरा किया और हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, क्या तुम इस बात पर राज़ी हो कि फ़ैसला मेरे हवाले कर दो और मैं अल्लाह से इस बात का अहद करता हूँ कि तुममें से सबसे अफ़ज़ल आदमी की और मुसलमानों के लिए सबसे ज़्यादा मुफ़ीद शख़्स की तलाश में कमी नहीं करूँगा। दोनों हज़रात ने कहा, "हम दोनों तैयार हैं।" फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत

अली रज़ि० से तनहाई में बात की और कहा कि आपको हुज़ूर सल्ल० से रिश्तेदारी भी हासिल है और इस्लाम में सबक़त भी। मैं अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि अगर आप को ख़लीफ़ा बना दिया जाए तो क्या आप इन्साफ़ करेंगे? और अगर मैं हज़रत उसमान रज़ि० को ख़लीफ़ा बना दूँ तो क्या आप उनकी बात सुनेंगे और मानेंगे? हज़रत अली रज़ि० ने कहा, जी हाँ। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत उसमान रज़ि० से तनहाई में बात की और उनसे भी यही पूछा। हज़रत उसमान रज़ि० ने जवाब में कहा, जी हाँ। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत उसमान रज़ि० से कहा, ऐ उसमान रज़ि०! आप अपना हाथ बढ़ाएँ। चुनांचे उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया और हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने उनसे बैअत की। फिर हज़रत अली रज़ि० और बाक़ी लोगों ने बैअत की।

हज़रत अमर रज़ि० से भी यह रिवायत है कि जब हज़रत उमर रज़ि० की मौत का वक़्त क़रीब आया तो आपने कहा, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत तलहा रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि०, हज़रत उसमान रज़ि० और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को मेरे पास बुलाकर लाओ। चुनांचे ये हज़रात आ गए, उन हज़रात में से सिर्फ़ हज़रत अली रज़ि० और हज़रत उसमान रज़ि० से गुफ़्तुगू फ़रमाई। चुनांचे हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया, "ऐ अली! ये हज़रात आपकी हुज़ूर सल्ल० से रिश्तेदारी को और उनके दामाद होने को भी जानते हैं और अल्लाह तआला ने आपको जो इल्म और फ़िक्ह अता फ़रमाया है उसे भी जानते हैं, लिहाज़ा अगर आपको ख़लीफ़ा बना दिया जाए तो अल्लाह से डरते रहना और बनू फ़ुलाँ (यानी बनू हाशिम) को लोगों की गर्दनों पर न बिठा देना।" फिर हज़रत उसमान रज़ि० से फ़रमाया कि ऐ उसमान रज़ि०! ये हज़रात अच्छी तरह जानते हैं कि आप हुज़ूर सल्ल० के दामाद हैं और आपकी उम्र ज़्यादा है और आप बड़ी शराफ़तवाले हैं, लिहाज़ा अगर आपको ख़लीफ़ा बना दिया जाए तो अल्लाह से डरते रहना और बनू फ़ुलाँ (यानी अपने रिश्तेदारों) को लोगों की गर्दनों पर न बिठा देना। फिर फ़रमाया, हज़रत सुहैब रज़ि० को मेरे पास बुलाकर लाओ। (वह आए तो) उनसे फ़रमाया, तुम लोगों

को तीन दिन नमाज़ पढ़ाओ। ये (छः) हज़रात एक घर में जमा रहें, अगर ये हज़रात किसी एक के ख़लीफ़ा होने पर मुत्तफ़िक़ हो जाएँ तो जो इनकी मुख़ालिफ़त करे उसकी गर्दन उड़ा देना।

हज़रत अबू जाफ़र रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़राते-शूरा से फ़रमाया, आप लोग अपने अम्रे-ख़िलाफ़त के बारे में मशविरा करें। (और अगर राय में इख़्तिलाफ़ हो और छः हज़रात) अगर दो और दो और दो हो जाएँ यानी तीन आदमियों को ख़लीफ़ा बनाने की राय बन रही हो तो फिर दोबारा मशविरा करना और अगर चार और दो हो जाएँ तो ज़्यादा की यानी चार की राय को इख़्तियार कर लेना। हज़रत असलम हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, "अगर राय के इख़्तिलाफ़ की वजह से ये हज़रात तीन और तीन हो जाएँ तो जिधर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० हों उधर की राय इख़्तियार कर लेना, और उन हज़रात के फ़ैसले को सुनना और मानना।"

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी वफ़ात से थोड़ी देर पहले हज़रत अबू तलहा (अंसारी रज़ि०) को बुलाकर फ़रमाया : "ऐ अबू तलहा रज़ि०! तुम अपनी क़ौम अनसार के पचास आदमी लेकर उन हज़राते-शूरा के साथ रहना। मेरा ख़्याल यह है कि यह अपने में से किसी एक के घर जमा होंगे; तुम उनके दरवाज़े पर अपने साथी लेकर खड़े रहना और किसी को अनदर न जाने देना और न उनको तीन दिन तक छोड़ना; यहाँ तक कि ये हज़रात अपने में से किसी को अमीर मुक़र्रर कर लें।"

ऐ अल्लाह! तू इनमें मेरा ख़लीफ़ा है।

(अल्फ़ाज़ ज़ाती हैं, मज़्मून देखिए हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 47-52)

हर मुश्किलात का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी पाक सल्ल० मुश्किल में यह दुआ फ़रमाते :

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا وَّاَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ اِذَا شِئْتَ سَهْلًا ۔

"ऐ अल्लाह! कुछ आसान नहीं, मगर जिसे आप आसान बना दें, आप ग़म को जब चाहें आसान बना दें।"

(इब्ने हिब्बान, जिल्द 3, पेज 974, इब्नेसुनी, 311, बसनद सहीह)

हर रंज व ग़म दूर करने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत मकहूल रह० फ़रमाते हैं कि जो यह कहेगा, अल्लाह उसके हक़ में मसाइब व आलाम के सत्तर दरवाज़े बन्द फ़रमा देगा (यानी तमाम दरवाज़े) जिसका अदना फ़ुक़्र है।

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا مَنْجَاً مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْهِ ۔

"न कोई क़ुव्वत है, न ताक़त है, सिवाय अल्लाह के। न कोई जाए-पनाह है अल्लाह से मगर उसी की तरफ़।"

(अबू नुऐम, जिल्द 3, पेज 1560, इब्ने अबी शैबा, जिल्द 10, पेज 429)

फ़िक्र दूर करने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुमको इस बात से कौन-सी चीज़ रोकती है कि जब तंगी-ए-मईशत हो और जब घर से निकलो तो यह पढ़ो :

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَمَالِىْ وَدِيْنِىْ ۔ اَللّٰهُمَّ رَضِّنِىْ بِقَضَائِكَ وَبَارِكْ لِىْ فِيْمَا
قُدِّرَلِىْ حَتّٰى لَا اُحِبُّ تَعْجِيْلَ مَا اَخَّرْتَ وَلَا تَاخِيْرَ مَا عَجَّلْتَ ۔

"अल्लाह का नाम अपनी जान, माल व दीन पर। ऐ अल्लाह अपने फ़ैसले से मुझे राज़ी फ़रमा दे, और जो मुक़द्दर फ़रमाए उसमें बरकत अता फ़रमा ताकि जिसे आप ताख़ीर से दें उसमें जल्दी और जिसे आप जल्दी नवाज़े उसमें ताख़ीर मैं न चाहूँ।"

(नुज़ूले अबरार, पेज 264, इब्ने सुनी, पेज 350)

इमाम हसन रज़ि० को आप सल्ल० ने ख़्वाब में अजीब दुआ सिखाई

हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० की तरफ़ से हज़रत हसन रज़ि० का वज़ीफ़ा मुक़र्रर था, एक लाख दिरहम। एक माह वज़ीफ़ा आने में देर हो गई और बड़ी तंगी आई तो ख़्याल आया कि ख़त लिखकर याद दिलाऊँ। क़लम और दवात मंगवाया, फिर एकदम छोड़ दिया। क़लम काग़ज़ सिरहाने रखकर सो गए। ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि हसन! मेरे बेटे होकर मख़्लूक़ से माँगते हो?

कहा, "तंगी आ गई है।"

तो फ़रमाया, "तू मेरे अल्लाह से क्यों नहीं माँगता?"

कहा, "क्या माँगूं?"

हुज़ूर सल्ल० ने ख़्वाब में नीचे लिखी दुआ सिखाई :

اَللّٰهُمَّ اقْذِفْ فِیْ قَلْبِیْ رَجَائَكَ، وَاقْطَعْ رَجَائِیْ عَمَّنْ سِوَاكَ حَتّٰی لَآ اَرْجُوْا اَحَدًا غَیْرَكَ ط اَللّٰهُمَّ وَمَا ضَعُفَتْ عَنْهُ قُوَّتِیْ وَقَصُرَ عَنْهُ اَمَلِیْ، وَلَمْ تَنْتَهِ اِلَیْهِ رَغْبَتِیْ وَلَمْ تَبْلُغْهُ مَسْاَلَتِیْ وَلَمْ یَجْرِ عَلٰی لِسَانِیْ مِمَّآ اَعْطَیْتَ اَحَدًا مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ مِنَ الْیَقِیْنِ فَخُصَّنِیْ بِهٖ یَا رَبَّ الْعَالَمِیْنَ ط

"ऐ अल्लाह! हमारे दिल को अपनी उम्मीदों से वाबस्ता फ़रमा, और अपने अलावा सबसे हमारी उम्मीदें ख़त्म फ़रमा, यहां तक कि तेरे अलावा किसी से उम्मीद न हो। ऐ अल्लाह! मेरी क़ुव्वत कमज़ोर हो गई, उम्मीद ख़त्म हो गई और मेरी रग़बत तेरी तरफ़ ख़त्म नहीं हुई। न मेरा सवाल तुझ तक पहुंच सका और न मेरी ज़बान पर वह यक़ीन जारी हो सका जो तूने अव्वलीन व आख़िरीन को दिया। ऐ रब्बुल आलमीन! मुझे भी उसके साथ ख़ास कर दे।"

क्या ज़बरदस्त दुआ है, बेटा यह दुआ मांग, चन्द दिन के बाद एक लाख के बजाय पंद्रह लाख पहुंच गए।

(अल-अर्ज़, इब्ने अबी दुनया 3/86, अद्दुआउल मस्नून, पेज 520)

नअ़्त

नबी ए अकरम शफ़ी-ए-आज़म, दुखे दिलों का सलाम ले लो
तमाम दुनिया के हम हैं सताए, खड़े हुए हैं पयाम ले लो

शिकस्ता कश्ती है तेज़ धारा, नज़र से रूपोश है किनारा
नहीं है कोई नाख़ुदा हमारा, ख़बर तो आली मक़ाम ले लो

क़दम-क़दम पर है ख़ौफ़े रहज़न, ज़मीन भी दुश्मन फ़लक भी दुश्मन
ज़माना हम से हुआ है बदज़न, तुम ही मुहब्बत से काम ले लो

अजीब मुश्किल में कारवां है, न कोई जादह है न पासबां है
ब-शक्ल रहबर छुपे हैं रहज़न, उठो ज़रा इंतिक़ाम ले लो

कभी तक़ाज़ा वफ़ा का हम से, कभी मज़ाक़ जफ़ा है हम से
तमाम दुनिया ख़फ़ा है हम से, ख़बर तो ख़ैरुल अनाम ले लो

यह कैसी मंज़िल पर आ गए हैं, न कोई अपना न हम किसी के
तुम अपने दामन में आज आक़ा, तमाम अपने ग़ुलाम ले लो

यह दिल में अरमां है अपने यूनुस, मज़ारे अक़दस पर जाके इक दिन
सुनाऊं उनको मैं हाल दिल का, कहूं मैं उनसे सलाम ले लो

नबी ए अकरम शफ़ी-ए-आज़म, दुखे दिलों का सलाम ले लो
तमाम दुनिया के हम सताए, खड़े हुए हैं पयाम ले लो

— क़ारी मुहम्मद तय्यब

यार रहे या रब तू मेरा

यार रहे या रब तू मेरा और मैं तेरा यार रहूं
मुझको फ़क़त तुझसे हो मुहब्बत, ख़ल्क़ से मैं बेज़ार रहूं
हर दम ज़िक्र व फ़िक्र में तेरे मस्त रहूं, सरशार रहूं
होश रहे न मुझको किसी का, तेरा मगर होश यार रहे

अब तो रहे ता दम आख़िर विर्दे ज़बान ऐ मेरे इलाह

ला इला-ह इल्लल्लाहु, ला इला-ह इल्लल्लाह।

तेरे सिवा माबूद हक़ीक़ी, कोई नहीं है कोई नहीं
तेरे सिवा मक़्सूद हक़ीक़ी, कोई नहीं है कोई नहीं
तेरे सिवा मौजूद हक़ीक़ी, कोई नहीं है कोई नहीं
तेरे सिवा मशहूर हक़ीक़ी, कोई नहीं है कोई नहीं

अब तो रहे ता दम आख़िर, विर्दे ज़बान ऐ मेरे इलाह
ला इला-ह इल्लल्लाहु, ला इला-ह इल्लल्लाह।

दोनों जहां में जो कुछ है, सब है तेरे ज़ेरे नगीं
जिन्न व इन्स व हूर व मलाइक, अर्श व कुर्सी चर्ख़ व ज़मीं
कौनो-मकां में लायके सज्दा, तेरे सिवा ऐ नूरे मुबीं
कोई नहीं है कोई नहीं, कोई नहीं है कोई नहीं

अब तो रहे ता दम आख़िर, विर्दे ज़बान ऐ मेरे इलाह
ला इला-ह इल्लल्लाहु, ला इला-ह इल्लल्लाह।

याद में तेरी सबको भुला दूं, कोई न मुझको याद रहे
तुझ पर सब घरबार लुटा दूं, ख़ान-ए-दिल आबाद रहे
सब खुशियों को आग लगा दूं, ग़म से तेरे दिल शाद रहे
सबको नज़र से अपनी गिरा दूं, तुझसे फ़क़त फ़रियाद रहे

अब तो रहे ता दम आख़िर विर्दे ज़बान ऐ मेरे इलाह
ला इला-ह इल्लल्लाहु, ला इला-ह इल्लल्लाह।

तेरा गदा बनकर मैं किसी का दस्ते-नगर ऐ शाह न होऊँ
बन्द-ए-मालो-ज़र न बनूं, तालिबे इज़्ज़ व जाह न होऊँ
राह पर तेरी पड़के क़ियामत तक मैं कभी बेराह न होऊँ
चैन न लूं मैं जब तक राज़े वहदत से आगाह न होऊँ

अब तो रहे ता दम आख़िर, विर्दे ज़बां ऐ मेरे इलाह
ला इला-ह इल्लल्लाहु, ला इला-ह इल्लल्लाह।

यार रहे या रब तू मेरा और मैं तेरा यार रहूं
मुझको फ़क़त तुझसे हो मुहब्बत, ख़ल्क़ से मैं बेज़ार रहूं

सख़्त बात से इस्लाह नहीं होती

नर्म और मीठी बात करने के लिए हक़ तआला ने बग़ैर हड्डी के ज़बान बनाई है, जिस तरह ज़बान में हड्डी नहीं होती इसी तरह तुम्हारी बात में भी हड्डी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि सख़्त बात से आम तौर पर इस्लाह नहीं होती।

अल्लाह तक पहुंचने के लिए बेशुमार रास्ते हैं

जब बन्दा अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने की कोशिश करता है तो अल्लाह भी उसे क़ुर्ब अता फ़रमाते हैं, हदीस पाक में है :

"जो मेरी तरफ़ एक बालिश्त बढ़ता है, मैं उसकी तरफ़ एक हाथ बढ़ता हूँ। जो मेरी तरफ़ चलकर आता है, मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूँ।"

देखिए! किस क़दर प्यार है अल्लाह को अपने बन्दों से, लेकिन अपनी तरफ़ से तलब तो हो; वह तो इस क़दर मेहरबान है कि हमारी तरफ़ से तलब में ज़रूर दस्तगीरी फ़रमाते हैं। इरशादे बारी तआला है :

"और जो लोग हमारी राह में मशक़्क़त करते हैं, हम उनको अपने रास्ते ज़रूर दिखलाते हैं।" (सूरह अनकबूत, आयत 69)

यानी जो लोग राहे ख़ुदा में जिद्दोजुहद करते हैं, उनके लिए रास्ते खोल दिए जाते हैं। बुज़ुर्गों का क़ौल है :

मालूम हुआ कि अल्लाह तक पहुंचने के लिए बेशुमार रास्ते हैं, ज़रूरी नहीं कि हर एक के लिए एक ही तरीक़ा हो, बल्कि हालात व सलाहियत के लिहाज़ से रास्ता अलग-अलग हो सकता है, आलिम के लिए अलग, अल्लाह के इल्मवाले के लिए अलग, और कम फ़ुर्सत वाले के लिए अलग तरीक़े होंगे। ताहम शर्त एक है, तलब हो, उसकी फ़िक्र और लगन हो।

तलब मजनूँ की तरह

दर राह लैला ख़तरा अस्त बिजां
शर्त अव्वल आं कि तू मजनूं बाशी

यानी "लैला की राह में जान को ख़तरा है, शर्त यह है कि तू मजनूं बन जाए।"

लिहाज़ा पहले हमें अल्लाह की राह का मजनूं बनना पड़ेगा, और जिसके पास अल्लाह की मुहब्बत है, उसके पास उठना-बैठना पड़ेगा। उलमा, सुल्हा और बुज़ुर्गों के पास बैठना पड़ेगा, उनकी मज्लिसों में आना-जाना होगा। फिर इंशा-अल्लाह तुमको भी वह मुहब्बत की आग लग जाएगी। उसके बाद तो दिल की दुनिया बदल जाएगी।

जो ख़ासियत आग की है वह ख़ासियत इश्क़ की है
एक ख़ाना-ब-ख़ाना है एक सीना-ब-सीना है

दुनिया की आग से जो क़रीब होता है वह आग उसको जला देती है, इस तरह जिन अल्लाहवालों के दिलों में इश्क़ की आग है वह उनसे क़रीब होता है।

असली और नक़ली मजनूँ

एक दफ़ा मजनूं एक जगह पर बैठा लैला-लैला कर रहा था, लैला ने अपने ख़ादिम को दूध देकर भेजा कि मजनूँ को पहुंचा आओ। एक शख़्स ने देखा कि मजनूँ के लिए दूध ले जा रहा है। रास्ते में बनावटी मजनूँ बनकर बैठ गया, ख़ादिम ने मजनूं समझकर उसको ही दूध दे दिया। उसने पी लिया। ख़ादिम जब वापस पहुंचा तो लैला ने पूछा, क्या हुआ? उसने कहा, मजनूँ को दे दिया और उसने पी लिया। दूसरी दफ़ा फिर भेजा, फिर वही बनावटी मजनूँ पी गया। तीसरे दिन भी वही पी गया। लैला ने सोचा कि इम्तिहान लेना चाहिए। चुनांचे ख़ादिम को छूरी और गिलास देकर भेजा और कहा कि जाओ, मजनूँ से कहना कि लैला बीमार है और हकीम ने कहा है कि मजनूं का ख़ून पिएगी तो सेहतयाब होगी, लिहाज़ा लैला को तेरे ख़ून की ज़रूरत है। अब ख़ादिम ने उससे जाकर

कहा। उसने कहा कि भाई! मैं तो दूध पीनेवाला मजनूं हूँ, ख़ून देनेवाला मजनूं नहीं। वह तो जंगल में बैठा है, चुनांचे ख़ादिम असल मजनूं के पास पहुंचा तो उसने फ़ौरन अपने बदन पर चाक़ू चलाया, लेकिन ख़ून नहीं निकला, क्योंकि लैला के इश्क़ में उसके बदन का सारा ख़ून ख़त्म हो गया था।

इश्क़ मौला कि कम अज़ इश्क़ लैला बूद
कूए कश्तन बहराव ऊला बूद

अंदाज़ा लगाइए कि लैला के इश्क़ में मजनूं कितना बेक़रार हुआ कि उसके बदन का सारा ख़ून ख़त्म हो गया। यह दुनिया की मुहब्बत का हाल है, असल अल्लाह की मुहब्बत हासिल करनी चाहिए।

मुहब्बते इलाही के साथ मुहब्बते नबवी

अल्लाह की मुहब्बत के साथ रसूले अकरम सल्ल० की मुहब्बत भी पैदा करनी ज़रूरी है। हुज़ूर अकरम सल्ल० इरशाद फ़रमाते हैं :

"तुममें से कोई शख़्स उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि उसके वालिद, औलाद और सारे लोगों के मुक़ाबले में मैं सबसे ज़्यादा महबूब न बन जाऊं।"

(मुस्लिम शरीफ़, 49)

यानी जब हर एक के मुक़ाबले में सबसे ज़्यादा मुझसे मुहब्बत होगी तो ही इत्तिबा व इताअत हो सकेगी, जिसको इताअत की तौफ़ीक़ मिल जाए, नमाज़ रोज़ा की तौफ़ीक़ हो जाए तो फ़ख़्र नहीं करना चाहिए, और जो नमाज़ और ज़कात का पाबन्द नहीं है, उसको हक़ीर नहीं समझना चाहिए बल्कि प्यार व मुहब्बत से समझाना चाहिए कि इताअत वाली ज़िंदगी में रंग आ जाए।

अर्श जब मैदाने महशर में उतरेगा सारे फ़रिश्ते अजीब तस्बीह पढ़ेंगे

इमाम इब्ने जरीर रह० ने यहां पर एक लम्बी हदीस लिखी है, जिसमें

सूरह् वग़ैरह का मुफ़स्सल बयान है, जिसके रावी हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० हैं। मुस्नद वग़ैरह में यह हदीस है। इसमें है कि जब लोग घबरा उठेंगे तो अम्बिया अलैहि० से शफ़ाअत तलब करेंगे। हज़रत आदम अलैहि० से लेकर एक-एक पैग़म्बर के पास जाएंगे और वहां से साफ़ जवाब पाएंगे, यहां तक कि हमारे नबी अकरम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० के पास पहुंचेंगे। आप सल्ल० जवाब देंगे कि मैं तैयार हूं, मैं ही इसका अहल हूं। फिर आप सल्ल० जाएंगे और अर्श तले सज्दे में गिर पड़ेंगे और अल्लाह तआला से सिफ़ारिश करेंगे कि वह बन्दों का फ़ैसला करने के लिए तशरीफ़ लाए। अल्लाह तआला आपकी शफ़ाअत क़बूल फ़रमाएगा और बादलों के सायबान में आएगा। आसमाने दुनिया टूट जाएगा और उसके तमाम फ़रिश्ते आ जाएंगे। फिर दूसरा भी फट जाएगा और उसके फ़रिश्ते भी आ जाएंगे। इसी तरह सातों आसमान शक़्क़ हो जाएंगे और उनके फ़रिश्ते आ जाएंगे। फिर अल्लाह तआला का अर्श उतरेगा और बुज़ुर्गतर फ़रिश्ते नाज़िल होंगे और ख़ुद वह जब्बार ख़ुदा तशरीफ़ लाएगा। फ़रिश्ते सबके सब तस्बीहख़्वानी में मशग़ूल होंगे। उनकी तस्बीह उस वक़्त यह होगी :

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ الْحَیِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ، سُبْحَانَ الَّذِیْ یُمِیْتُ الْخَلَائِقَ وَلَا یَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ، سُبْحَانَ رَبِّنَا الْاَعْلٰی، سُبْحَانَ ذِی السُّلْطَانِ وَالْعَظَمَةِ، سُبْحَانَهٗ سُبْحَانَهٗ اَبَدًا اَبَدًا ؀

(تفسیر ابن کثیر، جلد۱، صفحہ ۲۸۸)

औरतों के बारे में अल्लाह से डरते रहो

सहीह मुस्लिम में हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हिज्जतुल विदाअ के अपने ख़ुत्बे में फ़रमाया, "लोगो! औरतों के बारे में अल्लाह से डरते रहो, तुमने अल्लाह की अमानत से उन्हें लिया

है और अल्लाह के कलिमे से उनकी शर्मगाहों को अपने लिए हलाल किया है। औरतों पर तुम्हारा यह हक़ है कि वे तुम्हारे फ़र्श पर किसी ऐसे को न आने दें जिससे तुम नाराज़ हो। अगर वे ऐसा करें तो उन्हें मारो लेकिन ऐसी मार न हो कि ज़ाहिर हो। उनका तुम पर यह हक़ है कि उन्हें अपनी बिसात के मुताबिक़ खिलाओ-पिलाओ, पहनाओ-ओढ़ाओ।" एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० से दरयाफ़्त किया कि हमारी औरतों के हम पर क्या हक़ हैं? आप सल्ल० ने फ़रमाया, "जब तुम खाओ तो उसे भी खिलाओ, जब तुम पहनो तो उसे भी पहनाओ, उसके मुंह पर न मारो, उसे गालियां न दो, उससे रूठकर और कहीं न भेज दो, हाँ, घर में ही रखो।" इसी आयत को पढ़कर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाया करते थे कि मैं पसन्द करता हूं कि अपनी बीवी को ख़ुश करने के लिए मैं भी अपनी ज़ीनत करूं जिस तरह वह मुझे ख़ुश करने के लिए अपना बनाव शृंगार करती है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 313)

आप सल्ल० बहुत रोए

इब्ने मर्दूया में है कि हज़रत अता रह० हज़रत इब्ने उमर रज़ि०, हज़रत उबैद बिन उमैर रह० हज़रत आइशा रज़ि० के पास आए। आपके और उनके दर्मियान पर्दा था। हज़रत सिद्दीक़ा रज़ि० ने पूछा, "उबैद! तुम क्यों नहीं आया करते?" हज़रत उबैद ने जवाब दिया, "अम्मां जान! सिर्फ़ इसलिए कि किसी शायर का क़ौल है : 'ज़ुरग़िब्बन तज़दद हुब्बन' यानी "कम-कम आओ ताकि मुहब्बत बढ़े।" हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, अब इन बातों को छोड़ दो। माई साहिबा! हम यह पूछने के लिए हाज़िर हुए हैं कि सबसे ज़्यादा अजीब बात जो आपने आंहज़रत सल्ल० की देखी हो वह हमें बताओ। हज़रत आइशा रज़ि० रो दीं और फ़रमाने लगीं, "हुज़ूर सल्ल० के तमाम काम अजीबतर थे। अच्छा एक वाक़िआ सुनो, एक रात मेरी बारी में हुज़ूर सल्ल० मेरे पास आए और मेरे साथ सोए। फिर मुझसे फ़रमाने लगे, आइशा! मैं अपने रब तआला की कुछ इबादत करना चाहता हूं, मुझे जाने दो। मैंने कहा, या रसूलल्लाह सल्ल०! ख़ुदा

तआला की क़सम! मैं आप सल्ल० का क़ुर्ब चाहती हूं और यह भी मेरी चाहत है कि आप अल्लाह तआला की इबादत भी करें। अब आप सल्ल० खड़े हुए और एक मश्क में पानी लेकर आप सल्ल० ने वुज़ू किया और नमाज़ के लिए खड़े हो गए, फिर जो रोना शुरू किया तो इतना रोए कि दाढ़ी मुबारक तर हो गई, फिर सज्दे में गए और इस क़दर रोए कि ज़मीन तर हो गई, फिर करवट के बल लेट गए और रोते ही रहे यहां तक कि (हज़रत) बिलाल रज़ि० ने आकर नमाज़ के लिए बुलाया और आप सल्ल० के आंसू रवां देखकर दरयाफ़्त किया कि ऐ खुदा तआला के सच्चे रसूल सल्ल०! आप क्यों रो रहे हैं? अल्लाह तआला ने तो आप सल्ल० के तमाम अगले-पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा दिए हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया, बिलाल! मैं क्यों न रोऊं! मुझ पर आज की रात यह आयत उतरी है : "इन-न फ़ी ख़ल्क़िस समावाति..." (सूरह आले इमरान का आख़िरी रुकूअ) यानी हलाकत है उस शख़्स के लिए जो इसे पढ़े और फिर उसमें ग़ौर व तदब्बुर न करे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 495)

मेहमान को खिलाओ, अल्लाह के मुक़र्रब बन जाओगे

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत इबराहीम अलैहि० की आदत थी कि मेहमानों के साथ खाते। एक दिन आप मेहमान की जुस्तुजू में निकले लेकिन कोई न मिला। वापस आए, घर में दाख़िल हुए तो देखा कि एक शख़्स खड़ा है। पूछा, ऐ अल्लाह के बन्दे। तुझे मेरे घर में आने की इजाज़त किसने दी? उसने कहा कि इस मकान के हक़ीक़ी मालिक ने। पूछा, तुम कौन हो? कहा, मैं मलकुल मौत हूं, मुझे अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे के पास इसलिए भेजा है कि मैं उसे यह बशारत सुना दूं कि ख़ुदा ने उसे अपना ख़लील बना लिया है। यह सुनकर हज़रत इबराहीम अलैहि० ने कहा, "फिर तो मुझे ज़रूर बताइए कि वह बुज़ुर्ग कौन हैं, ख़ुदा की क़सम चाहे वे ज़मीन के किसी दूर के गोशे में हों, मैं ज़रूर जाकर उनसे मुलाक़ात करूंगा, फिर अपनी बाक़ी ज़िंदगी उनके

क़दमों में ही गुज़ारूंगा।" यह सुनकर हज़रत मलकुल मौत ने कहा, "वह शख़्स ख़ुद आप हैं।" आपने फिर दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या सचमुच मैं ही हूं? फ़रिश्ते ने कहा कि हां, आप ही हैं। आपने फिर दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या आप मुझे यह भी बताएंगे कि किस बिना पर, किन उमूर पर अल्लाह तआला ने मुझे अपना ख़लील बनाया? फ़रिश्ते ने फ़रमाया कि इसलिए कि तुम हर एक को देते रहते हो और किसी से ख़ुद कुछ तलब नहीं करते।

रिवायत में है कि जब से हज़रत इबराहीम अलैहि० को ख़लीले ख़ुदा के मुमताज़ और मुबारक लक़ब से ख़ुदा ने मुलक़्क़ब किया तब से उनके दिल में इस क़दर ख़ौफ़े-ख़ुदा और हैबते-रब समा गई कि उनके दिल का उछलना दूर से इस तरह सुना जाता था जिस तरह फ़िज़ा में परिन्द की परवाज़ की आवाज़। सहीह हदीस में जनाबे रसूले आख़िरुज़्ज़मां सल्ल० की निस्बत भी वारिद है कि जिस वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा आप पर ग़ालिब आ जाता था तो आपके रोने की आवाज़ जिसे आप ज़ब्त करते जाते थे इस तरह दूर व नज़दीकवालों को सुनाई देती थी जैसे किसी हंडिया की खदबदी की आवाज़ हो। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 644)

तौबा की पुख़्तगी के लिए अल्लाह के रास्ते में निकलना बड़ा ज़रिया है

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि निन्यानवे (99) क़त्ल करनेवाले ने सोचा कि तौबा कर लूं। किसी अनपढ़ से पूछा कि तौबा करना चाहता हूं, तो उसने कहा, आपकी कोई तौबा नहीं।

उसने कहा फिर सौ क़त्ल पूरे कर दूं? तो उसको भी ख़त्म कर दिया तो सौ हो गए।

फिर किसी आलिम से पूछा कि मेरी तौबा हो सकती है, उन्होंने कहा, "हां, तौबा तो है" लेकिन यह जगह छोड़कर कहीं नेक लोगों की सोहबत में चले जाओ।

अब तो मुसीबत यह है कि नेक लोगों की बस्ती कहां है, तो उस आलिम ने कहा, "बेटा! बस्ती छोड़ दो।" उसने कहा, "बख़्शिश हो जाएगी तो मैं तैयार हूं।" चल पड़े, रास्ते में मौत आ गई और सफ़र अभी थोड़ा ही तै हुआ था।

अल्लाह तआला ने क़ियामत तक के लिए नमूना बनाया था। दो फ़रिश्ते आ गए जन्नत के भी और दोज़ख़ के भी। दोज़ख़वाला कहता है कि यह हमारा है और जन्नतवाला कहता है कि यह हमारा है। जन्नत वाले कहते हैं कि तौबा कर ली है। दोज़ख़ वाले कहते हैं कि तौबा पूरी ही नहीं हुई, वहां जाकर पूरी होनी थी। तो अल्लाह तआला ने तीसरा फ़रिश्ता भेजा। उसने कहा, "उसके सफ़र की मुसाफ़त को नापो, अगर यह यहां से घर के क़रीब है तो दोज़ख़ी, अगर नेक लोगों की बस्ती के क़रीब है तो जन्नती।"

जब फ़ासला नापने लगे तो नेक लोगों की बस्ती का फ़ासला ज़्यादा था और अपनी बस्ती का फ़ासला थोड़ा था। अल्लाह तआला ने घर की तरफ़ वाली ज़मीन से कहा, फैल जाओ और बस्ती वाली ज़मीन से कहा सुकड़ जाओ तो वह फैलती गई और यह सुकड़ती चली गई।

यहां चारों तरफ़ गन्द ही गन्द है, तो अल्लाह तआला ने इस वक़्त हमें एक माहौल दिया है, दस-बारह आदमी एक ईमानी फ़िज़ा बनाकर चल रहे होते हैं उसके अंदर जो चला जाता है तो एक ऐसी फ़िज़ा में आ जाता है उनके आमाल अगरचे कमज़ोर होते हैं, उसके अंदर आहिस्ता-आहिस्ता उसके दिल व दिमाग़ में तौबा की ताक़त पैदा कर देते हैं। अल्लाह तआला ने चलता-फिरता माहौल हमें अता फ़रमा दिया है।

नोट : अल्फ़ाज़ ज़ाती हैं, यह हदीस बुख़ारी और मुस्लिम में है।

आप सल्ल० ने क़ब्रिस्तान में अजीब बयान किया

बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं कि हम एक अंसारी के जनाज़े में नबी करीम सल्ल० के साथ चल रहे थे, और क़ब्र तक पहुंचे तो

आंहज़रत सल्ल० वहां बैठ गए। हम भी आप सल्ल० के इतराफ़ बैठे थे और ऐसे ख़ामोश गोया परिन्दे हमारे सरों पर बैठ गए हैं। (हमें ख़ामोश व बेहरकत देखकर) आप सल्ल० के हाथ में एक लकड़ी थी, ज़मीन पर उससे एक शग़ल के तौर पर लकीरें खींच रहे थे। फिर आप सल्ल० ने अपना सर उठाया और फ़रमाने लगे, "अज़ाबे क़ब्र से ख़ुदा की पनाह मांगो!" दो या तीन दफ़ा फ़रमाया। फिर इरशाद हुआ कि मोमिन जब दुनिया से उठने लगता है और आख़िरत का रुख़ करता है तो आसमान से रौशन चेहरेवाले फ़रिश्ते उतरते हैं, जन्नत का कफ़न लिए हुए होते हैं और जन्नत की ख़ुश्बुएं साथ लाते हैं। इतने ज़्यादा होते हैं कि जहां तक नज़र काम करती है फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते होते हैं, फिर मलकुल मौत आकर उसके सरहाने बैठते हैं और कहते हैं : "ऐ मुत्मइन रूह! मग़फ़िरत ख़ुदावंदी की तरफ़ चल!" यह सुनते ही रूह निकल पड़ती है जैसे मशक के मुंह से पानी के क़तरे निकलने लगते हैं, रूह निकलते ही चश्मे ज़दन में वह उसको जन्नती कफ़न पहना देते हैं और जन्नती ख़ुश्बू में उसको बसाते हैं। वह मुशक की ऐसी बेहतर ख़ुश्बू होती है कि दुनिया में जो बेहतरीन हो सकती है उसको लेकर आसमान पर चढ़ने लगते हैं। जहां कहीं से गुज़रते हैं, फ़रिश्ते कहते हैं कि यह किसकी पाक रूह ले जा रहे हो? कहा जाता है कि फ़लां इब्ने फ़लां की। आसमान तक पहुंच कर दरवाज़ा खोल दिया जाता है, उनके साथ दूसरे तमाम फ़रिश्ते भी आसमाने दोम तक साथ आते हैं। इसी तरह आसमान-ब-आसमान सातवें आसमान तक पहुंचते हैं। अब अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे इस बन्दे को इल्लिय्यीन के दफ़्तर में लिख लो और ज़मीन की तरफ़ वापस कर दो। क्योंकि मैंने इसको मिट्टी ही से पैदा किया है। उसी के अंदर इसको वापस करता हूं और फिर दूसरी बार उसी के अंदर से इसको उठाऊंगा। अब उसकी रूह वापस की जाती है, यहां दो फ़रिश्ते आते हैं, उसके पास बैठते हैं और पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है? वह कहता है कि अल्लाह तआला मेरा रब है। फिर पूछते हैं, तुम्हारा दी कौन-सा है? वह कहता है, इस्लाम मेरा दीन है। फिर पूछते हैं, वह कौन शख़्स हैं जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए थे। वह कहता है कि वह ख़ुदा के रसूल थे। फिर

पूछते हैं कि तुम्हारा ज़रिया इल्म क्या था? वह कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी थी, उस पर ईमान लाया था। अब आसमान से एक निदा आती है कि मेरे बन्दे ने सच कहा। इसके लिए जन्नत का फ़र्श लाओ, जन्नत के कपड़े पहनाओ और जन्नत का एक दरवाज़ा उसके लिए खोल दो ताकि जन्नत की हवा और ख़ुश्बू उसको पहुंचती रहे। उसकी क़ब्र ताहदे निगाह कुशादा हो जाती है। एक ख़ूबसूरत शख़्स अच्छे लिबास में ख़ुश्बू में बसा हुआ इसके पास आता है और कहता है ख़ुश हो जाओ कि तुमसे जो वादा किया गया था आज पूरा किया जाता है। वह पूछेगा, तुम कौन हो? वह शख़्स कहेगा, मैं तुम्हारा अमले सालेह हूं। तो मुतवफ़्फ़ी कहेगा, ऐ ख़ुदा! इसी वक़्त क़ियामत क़ायम कर दे, मैं अपने अहल और माल से मिलूंगा। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि काफ़िर जब दुनिया से मुंह मोड़ने लगता है तो सियाह रंग के फ़रिश्ते टाट लिए हुए आ पहुंचते हैं और ताहदे नज़र होते हैं। अब मलकुल मौत आते हैं और कहते हैं कि ऐ ख़बीस रूह! निकल और ख़ुदा की नाराज़ी और ग़ज़ब की तरफ़ जा तो वह जिस्म के अंदर घुसने लगती है। फ़रिश्ते उसको खींच कर निकालते हैं जैसे कि लोहे की सीख़ भीगे हुए बालों के अंदर से निकाली जाती है। वह उसको लेते ही तरफ़तुल-ऐन में टाट के अंदर पलेट लेते हैं, उसके अंदर से सड़े हुए मुर्दार की तरह बदबू निकलती है, उसको लेकर आसमान पर चढ़ते हैं और जहां कहीं से गुज़रते हैं फ़रिश्ते पूछते हैं, यह किसकी ख़बीस रूह है? कहा जाता है कि फ़ुलां इब्ने फ़ुलां की। और जब आसमान पर पहुंचकर कहते हैं कि दरवाज़ा खोल लो! तो नहीं खोला जाता है। फिर आप सल्ल० ने ला तुफ़त्तहु वाली आयत पढ़ी। अब अल्लाह पाक फ़रमाता है कि इसको ज़मीन के तब्क़े "सिज्जीन" में ले जाओ। चुनांचे उसकी रूह वहां फेंक दी जाती है। फिर आप सल्ल० ने यह आयत तिलावत फ़रमाई कि "जो अल्लाह का शिर्क करता है गोया आसमान से गिर पड़ा और परिन्दे उसका गोश्त नोच रहे हों या हवाएं दूर-दराज़ उसको लिए उड़ रही हों।" उसकी रूह उसके जिस्म में वापस कर दी जाती है, दो फ़रिश्ते आकर पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह कहता है, अफ़सोस मैं नहीं जानता। फिर पूछते हैं, तेरा दीन कौन-सा है?

वह जवाब देता है, हाय! मैं वाक़िफ़ नहीं। अब दरयाफ़्त करते हैं कि तेरी तरफ़ कौन भेजा गया था? वह कहता है, अफ़सोस, मुझे इल्म नहीं। अब आसमान से निदा आती है कि मेरा बन्दा झूठ कहता है, इसके लिए दोज़ख़ का फ़र्श लाओ और दोज़ख़ का दरवाज़ा इस पर खोल दो ताकि इसको दोज़ख़ की हरारत और गर्म हवा पहुंचती रहे। उसकी क़ब्र उस पर तंग हो जाती है और इतना दबाती है कि हड्डी-पस्ली मिल जाए। एक क़बीह चेहरेवाला मैले-कुचेले कपड़े पहने बदबूदार उसके पास आता है और कहता है तुझे अपनी बदबख़्तियों की बशारत है, यह वही दिन है जिसका तुझसे वादा था। वह पूछता है, तू कौन है? वह कहता है, मैं तेरा अमले बद हूं। काफ़िर कहने लगता है कि ख़ुदा करे क़ियामत क़ायम न हो (ताकि मुझे दोज़ख़ में न जाना पड़े)। बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं कि हम आंहज़रत सल्ल० के साथ बाहर निकले, जनाज़े के साथ थे, (बाक़ी बयान साबिक़ा बयान की तरह है) यहां तक कि मोमिन की रूह जब निकलती है तो आसमान व ज़मीन के फ़रिश्ते उसके लिए रहमत की दुआ करते हैं, उसके लिए आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं, सारे फ़रिश्तों की दुआ यही होती है कि उसकी रूह को हमारे सामने से लेते जाएं। काफ़िर की रूह पर एक ऐसा फ़रिश्ते मुतय्यन होता है जो अंधा, बहरा और गूंगा है। उासके हाथ में गुर्ज़ होता है कि अगर पहाड़ पर मारे तो रेज़ा-रेज़ा हो जाए, फिर वह जैसा था वैसा बहुक्म ख़ुदा बन जाता है। फिर एक और मार पड़ती है, वह चीख़ उठता है कि जिन्न व इन्स के सिवा हर मख़्लूक़ सुनती है। अब दोज़ख़ का दरवाज़ा खुल जाता है और आग बिछ जाती है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 2, पेज 172)

आसमान के फ़रिश्ते ज़र्रात ज़मीन से ज़्यादा तादाद में हैं

कअ्ब अहबार रज़ि० कहते हैं कि सूई की नोक बराबर भी कोई जगह ज़मीन में ऐसी नहीं जहां कोई फ़रिश्ता तस्बीह ख़ुदा में मसरूफ़ न हो और आसमान के फ़रिश्ते ज़र्राते ज़मीन से ज़्यादा तादाद में हैं और

अर्श के हामिल फ़रिश्तों के टख़ने से साक़ तक की मुसाफ़त एक सौ साल की मुसाफ़त है।

हकीम बिन हज़ाम रज़ि० से मरवी है कि हम रसूलुल्लाह सल्ल० के पास बैठे हुए थे कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम वह सुनते हो जो मैं सुनता हूं? तो लोगों ने कहा कि हम तो कुछ नहीं सुन रहे हैं। तो नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं आसमान का चरचराना सुन रहा हूं, और वह क्यों न दबे और क्यों न चरचराए, आसमान में बालिश्त भर जगह भी तो ऐसी नहीं जहां कोई न कोई फ़रिश्ता सज्दा या क़याम में मौजूद न हो। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 2, पेज 418)

एक आयत उतरी और सारे जिन्नात शहरों से निकल पड़े

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ط مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْ ۢبَعْدِ اِذْنِهٖ ط ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ط اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ○ (سورہ یونس، آیت ۳)

"बिला शुबहा तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा कर दिया फिर अर्श पर क़ायम हुआ। वह हर काम की तदबीर करता है। उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई उसके पास सिफ़ारिश करनेवाला नहीं, ऐसा अल्लाह तुम्हारा रब है सो तुम उसकी इबादत करो, क्या तुम फिर भी नसीहत नहीं पकड़ते!"

इरशादे बारी तआला है कि अल्लाह तआला तमाम आलम का परवरदिगार है। उसने ज़मीनों और आसमानों को छः दिन में पैदा किया। कहा गया है कि यह दिन हमारे दिनों के जैसे थे और यह भी कहा गया है कि हज़ार साल का एक दिन था, जिसका बयान आगे आएगा, फिर वह अर्शे अज़ीम पर मुतमक्कन हो गया और अर्श सब मख़्लूक़ात में सबसे बड़ी मख़्लूक़ है, वह सुर्ख़ याक़ूत का बना हुआ है या यह कि वह

भी ख़ुदा का एक नूर है, ख़ुदा सारे ख़लाइक़ का मुदब्बिर, सरपरस्त और कफ़ील है। उसकी निगहदाश्त से ज़मीन या आसमानों का एक ज़र्रा भी बचा या छूटा नहीं। एक तरफ़ की तवज्जोह उसको दूसरी तरफ़ की तवज्जोह से नहीं रोक सकती। उसके लिए कोई बात भी ग़लत तौर पर बाक़ी नहीं रह सकती। पहाड़ों, समुन्द्रों, आबादियों और जंगलों कहीं भी कोई बड़ी तदबीर छोटी तरफ़ ध्यान से उसको नहीं रोक सकती, कोई जानदार भी दुनिया में ऐसा नहीं जिसका रिज़्क ख़ुदा के ज़िम्मे न हो। एक चीज़ भी हरकत करती है, एक पत्ता भी गिरता है तो वह उसका इल्म रखता है। ज़मीन की तारीकियों में कोई ज़र्रा ऐसा नहीं और न कोई तर व ख़ुश्क ऐसा है जो उसके लौहे-महफ़ूज़ यानी किताबे इल्म में न हो, जिस वक़्त यह आयत उतरी :

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ...الخ

मुसलमानों को एक बड़ा क़ाफ़िला आता दिखाई दिया, मालूम हो रहा था कि बदवी लोग हैं। लोगों ने पूछा, तुम कौन लोग हो? तो कहा, हम जिन्न हैं इस आयत के सबब हम शहर से निकल पड़े हैं।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 2, सफ़ा 434)

अल्लाह की क़ुदरत

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَمَا تُغْنِی الْاٰیٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا یُؤْمِنُوْنَ○ فَهَلْ یَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَیَّامِ الَّذِیْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ط قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ○ ثُمَّ نُنَجِّیْ رُسُلَنَا وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ج حَقًّا عَلَیْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِیْنَ○ (سورہ یونس، آیت ۱۰۱ تا ۱۰۳)

"आप कह दीजिए कि तुम ग़ौर करो कि क्या क्या चीज़ें आसमानों में और ज़मीन में हैं, और जो लोग ईमान नहीं लाते उनको निशानियां और धमकियां कुछ फ़ायदा नहीं पहुंचातीं, सो वे लोग सिर्फ़ उन लोगों के से वाक़िआत का इंतिज़ार कर रहे हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि अच्छा

तो तुम इंतिज़ार में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करनेवालों में हों। फिर हम अपने पैग़म्बरों को और ईमानवालों को बचा लेते थे। इसी तरह हमारे ज़िम्मे है कि हम ईमानवालों को नजात दिया करते हैं।''

तशरीह : अल्लाह तआला अपने बन्दों की रहनुमाई फ़रमा रहा है कि सारी कायनात में हमारी जो निशानियां जैसे आसमान, सितारे, सय्यारे, शम्स व क़मर, लैल व नहार फैली हुई हैं उनपर नज़रे बसीरत डालो कि रात में दिन कैसे दाख़िल हो जाता है, और दिन में रात कैसे दाख़िल हो जाती है, कभी दिन बड़ा और कभी रात बड़ी। आसमान की बुलन्दी और फैलाओ, सय्यारों से उसकी ज़ेब व ज़ीनत, आसमान से पानी बरसना, ज़मीन का सूख जाने के बाद फिर ज़िंदा सर-सब्ज़ हो जाना। दरख़्तों में फल, फूल, कलियां पैदा होना, मुख़्तलिफ़ नबाताब का उगना। मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवर, उनकी शक्लें अलग-अलग, उनके रंग, उनके अफ़ादात सब अलग-अलग, पहाड़, चटियल मैदान, जंगल, बाग़, आबादियां और वीराने, समुन्द्र की तह के अजाइबात, मौजें, उनके मद्द व जज़र, उसके बावजूद सफ़र करनेवालों के लिए समुन्द्र का मस्ख़्ख़र हो जाना, जहाज़ों का चलना यह सब ख़ुदाए क़ादिर की निशानियां हैं जिसके सिवा कोई दूसरा ख़ुदा है ही नहीं। लेकिन अफ़सोस कि यह सारी निशानियां काफ़िरों के ग़ौर व फ़िक्र का कुछ भी सबब नहीं बनतीं। ख़ुदा की दलील साबित हो चुकी है, ईमान नहीं लाते हैं न लाएं, ये लोग तो उन्हीं अज़ाब के दिनों का इंतिज़ार कर रहे हैं जिससे साबिक़ा पहले की क़ौमों को पड़ा था। ऐ नबी! कह दो कि वक़्त का इंतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूं और जब ख़त्मे इंतिज़ार पर अज़ाब आ जाएगा तो फिर हम अपने रसूलों को बचा लेंगे और उनकी उम्मत को भी। और पैग़म्बरों का इंकार करनेवालों को हलाक कर देंगे। अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे ले लिया है कि मोमिनीन को बचा ले। जैसे कि नेकोकारों पर रहमत अपने ज़िम्मे ले ली है। सहीहैन में है कि आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह की किताब लौहे-महफ़ूज़ जो अर्श पर है उसमें मक्तूब है कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 2, पेज 476)

मुहम्मद बिन क़ासिम का एक घर उजड़ गया और लाखों करोड़ों इंसान इस्लाम में आ गए

मुहम्मद बिन क़ासिम रज़ि० जिनके ज़रिए से सिंध और पंजाब मुसलमान हुआ उनकी शादी को चार महीने हो गए थे, उनके चचा हज्जाज बिन यूसुफ़ ने अपनी बेटी निकाह में दी थी, चार महीने बाद उनको भेजा था, सवा दो साल तक वह यहां रहे हैं। आज तक मुसलमानों के नामाए आमाल उनके नाम पर चल रहे हैं, ढाई साल बाद गिरफ़्तार हुए, सुलैमान के ज़ुल्म का शिकार हुए, जेल में शहीद हुए, अपने घर को सिर्फ़ चार महीने आबाद देख सके, और हमेशा के लिए दुनिया छोड़ गए लेकिन करोड़ों इंसानों की हिदायत का अज्र व सवाब अपने नामाए आमाल में लिखवा गए और अभी तक लिखा जा रहा है।

जब उनको शहीद किया जाने लगा तो कहने लगे : उन्होंने मुझे ज़ाया किया और कैसे जवान को ज़ाया किया जो उनकी हुदूद की हिफ़ाज़त करता था और मुश्किल वक़्त में उनके काम आता था, आज उसको उन्होंने ज़ाया कर दिया। मुहम्मद बिन क़ासिम रह० का एक घर उजड़ गया और लाखों करोड़ों इंसान इस्लाम में आ गए।

(इस्लाही वाक़िआत, पेज 276)

एक अल्लाहवाले ने मालिक काफ़ूर अहमद बिन तोलून को नसीहत की तो उसको गुस्सा आ गया, उनके हाथ और पांव बांध के भूखे शेरों के सामने डाल दिया और एलान करा दिया कि बादशाह के सामने गुस्ताख़ी करनेवाले का अंजाम ऐसा होता है। जब सब इकट्ठे हो गए तो एक भूखा शेर आकर अपनी ज़बान से उनके पांव और हाथों को चाटने लगा जैसे जानवर अपने बच्चों को ज़बान से चाटते हैं।

यह जानवर की मुहब्बत और प्यार का तरीक़ा है, वह शेर उस अल्लाहवाले के पैर चाट रहा था तो उन पर भी लरज़ा तारी हो गया कि मैं अभी इसके मुंह में जाऊंगा उसके बाद उनके हाथ और पांव खोलकर बाहर लाया गया और उनसे पूछा गया कि जब शेर आपके पांव चाट रहा

था तो आप अपने दिल में क्या सोच रहे थे तो उन्होंने कहा कि मैं यह सोच रहा था कि मेरे पांव पाक हैं या नापाक हैं। अल्लाह की अज़्मत दिल में उतर जाती है तो शेर को भी अल्लाह तआला बकरी बना देता है और हम इंसाननुमा बकरियों से डरते हैं और अल्लाह से नहीं डरते हैं।

(इस्लाही वाक़िआत, पेज 278)

जो हद से ज़्यादा ख़र्च करता है वह थककर बैठ जाता है

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً إِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ○ إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ ط إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا م بَصِيْرًا ○

(سورہ بنی اسرائیل، آیت ۲۹، ۳۰)

हुक्म हो रहा है कि ज़िंदगी में अपनी मयाना रविश रखो, न बख़ील बनो, न मुसर्रफ़। हाथ गर्दन से न बांध लो, यानी बख़ील न बनो कि किसी को कुछ न दो। यहूदियों ने भी इसी मुहावरे को इस्तेमाल किया है और कहा है कि ख़ुदा के हाथ बंधे हुए हैं। उन पर ख़ुदा की लानतें नाज़िल हों कि यह ख़ुदा को बख़ील की तरफ़ मंसूब करते हैं, जिससे अल्लाह तआला करीम व वह्हाब पाक और बहुत दूर है। पस बुख़्ल से मना करके फिर इसराफ़ से रोकता है कि इतना खेल न खेलो कि अपनी ताक़त से ज़्यादा दे डालो। फिर उन दोनों हुक्मों का सबब बयान फ़रमाता है कि बख़ील से तो मलामती बन जाओगे। हर एक की उंगली उठेगी कि यह बड़ा बख़ील है। हर एक दूर हो जाएगा कि यह महज़ बेफ़ैज़ आदमी है। जैसे ज़ुहेर ने अपने मुअल्लक़ा में कहा है :

وَمَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّيَبْخَلْ بِمَالِهٖ
عَلٰى قَوْمِهٖ يُسْتَغْنَ عَنْهُ وَيُذْمَمْ

यानी जो मालदार होकर बख़ील हो लोग उससे बेनियाज़ होकर उसकी बुराई करते हैं। पस बख़ीली की वजह से इंसान बुरा बन जाता है और लोगों की नज़रों से गिर जाता है। हर एक उसे मलामत करने लगता

है और जो हद से ज़्यादा ख़र्च कर गुज़रता है वह थक कर बैठ जाता है। उसके हाथ में कुछ नहीं रहता, ज़ईफ़ और आजिज़ हो जाता है, जैसे कोई जानवर जो चलते-चलते थक जाए और रास्ते में उड़ जाए।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 197)

☆☆☆